CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिफला

(ज्योतिष)

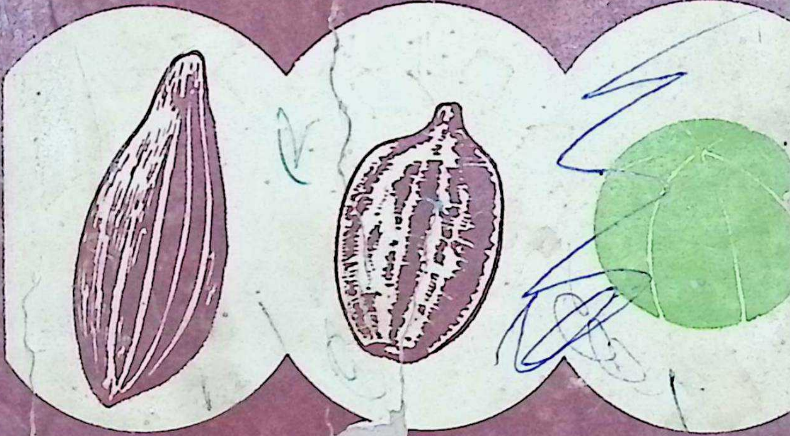

सुश्लोकशतक … राजमंजरी पेडाजातक

फलि… प्राचीन ग्रंथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिफला (ज्योतिष)

सुश्लोकशतक, शतमंजरी राजयोग, तथा वेडाजातक—
तीन प्राचीन संस्कृत ग्रंथों की हिन्दी में व्याख्या।

व्याख्याकार
ज्योतिष कलानिधि, दैवज्ञशिरोमणि
पंडित गोपेशकुमार ओझा, एम० ए०, एल-एल० बी०
हस्तरेखा विज्ञान, अंक-विद्या (ज्योतिष), सुगम-ज्योतिष प्रवेशिका, व्यापार-रत्न (दूसरा भाग), फलदीपिका (भावार्थबोधिनी), जातकादेशमार्ग (चन्द्रिका), 1000 Aphorisms on Love and Marriage (Part I Western Astrology, Part II Hindu Astrology), Prediction (Hindu Astrology) आदि पुस्तकों के रचयिता।

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली : : वाराणसी : : पटना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

©मोतीलाल बनारसीदास
मुख्य कार्यालय : बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७
शाखाएँ (१) चौक, वाराणसी (उ० प्र०)
(२) अशोक राजपथ, पटना (विहार)

प्रथम संस्करण
१९७१
मूल्य : ८ रुपया

Rs 1
Rs - 12

सुन्दरलाल जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर दिल्ली-७ द्वारा प्रकाशित तथा शांतिलाल जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७ द्वारा मुद्रित ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फर्माबरदारी में कमी करता है । यदि कन्या राशि का बुध हो तो मनुष्य त्यागी, विद्वान्, भयरहित, सुखी, क्षमावान्, युक्तिकुशल तथा बहस करने में भयरहित होता है ।

यदि बुध धनु अथवा मीन राशि का हो तो ऐसे जातक पर राजा की कृपा होती है क्योंकि ऐसा व्यक्ति विद्वान् तथा प्रामाणिक बात बोलने वाला होता है । मीन का बुध होने से मनुष्य दूसरे के आराधन में दक्ष और अन्य मनुष्य की सेवा-प्रसाधन कर उसको प्रसन्न करने में चतुर होता है ।

यदि मकर या कुम्भ का बुध हो तो मनुष्य परिश्रमी, ऋणवान् (कर्ज़दार) निर्धन तथा दूसरे की सेवा करने वाला होता है ।

बृहस्पति का विविध राशिगत फल—यदि मेष या वृश्चिक में हो तो जातक, धन व स्त्री, पुत्र आदि के सुख से युक्त क्षमावान्, दाता, तेजस्वी, औदार्य आदि गुणों से सम्पन्न, अनेक लोगों पर हुकूमत करने वालाहोता है । ऐसे व्यक्ति को नौकर भी अच्छे मिलते हैं । यदि वृषभ या तुला का बृहस्पति हो तो जातक स्वस्थ शरीर वाला, धन, मित्र एवं पुत्रसुख से सम्पन्न, त्यागी और लोकप्रिय होता है । यदि मिथुन या कन्या में बृहस्पति हो तो पहरने, बिछाने आदि के भोगोपकरण वस्त्रों से युक्त, मित्र-पुत्र आदि के सुख से सम्पन्न, प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला सुखी होता है । यदि कर्क का बृहस्पति हो तो मनुष्य रत्न, सुत, स्त्री आदि के वैभव से युक्त सुखी होता है। ऐसा मनुष्य अत्यन्त प्राज्ञ (बुद्धिमान) भी होता है । यदि सिंह का बृहस्पति हो तो उसकी मातहती में बहुत से लोग कार्य करते हैं । एवं कर्क राशि का जो ऊपर फल बताया गया है वह सब भी उस मनुष्य को प्राप्त होता है । यदि बृहस्पति धनु या मीन का हो तो मनुष्य अनेक ग्रामों का स्वामी या अनेक ग्रामों पर हुकूमत करने वाला, राजा का मंत्री या सेनापति, या इसी प्रकार का कोई उच्च पदाधिकारी और धनवान होता है । कुम्भ राशि का बृहस्पति हो तो वही फल होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है जो कर्क राशि का बताया गया है। "कुम्भे कर्कटवत्"। यदि मकर का बृहस्पति हो तो मनुष्य थोड़े धनवाला, सुख-हीन होता है

शुक्र का विविध राशिगत फल—यदि मेष या वृश्चिक राशि में हो तो किसी दूसरे की पत्नी के मामले में, मुक़दमा या बहस में द्रव्य का नाश होता है। ऐसे मनुष्य को बदनामी भी प्राप्त होती है। यदि वृषभ या तुला का शुक्र हो तो मनुष्य बलशाली, बुद्धिमान् धनी, राजा का पूज्य, प्रसिद्ध, निर्भय और अपने व्यक्तियों पर हुकूमत करने वाला होता है। यदि मिथुन का शुक्र हो तो मनुष्य धनी, कलाकुशल और राजा की नौकरी करने वाला होता है। यदि कन्या का शुक्र हो तो मनुष्य नीच कर्म करने वाला (अनुचित व्यापार) करने वाला तथा धनहीन होता है। यदि मकर या कुम्भ का शुक्र हो तो मनुष्य सुन्दर, स्त्रियों से जीता हुआ किन्तु 'कुनारी' में रत होता है। 'कुनारी' के दो अर्थ हो सकते हैं। एक तो यह कि वह स्त्री स्वभाव या आचार की अच्छी न हो; दूसरा यह कि देखने में अच्छी न हो। यदि कर्क का शुक्र हो तो ऐसे मनुष्य की प्रायः दो पत्नी होती हैं और ऐसा व्यक्ति कुछ डरपोक तथा दूसरे से याचना करने वाला अर्थात् धन या वस्तु माँगकर लेने की इच्छा करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति का 'मद' और 'शोक' प्रबल होते हैं। यदि सिंह का शुक्र हो तो स्त्री के पास से धन प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति की पत्नी किसी ऊँचे कुल की पुत्री होती है। लेकिन पुत्र थोड़े होते हैं। यदि धनु का शुक्र हो तो जातक, 'गण' (जनसमूह) द्वारा पूज्य तथा धनी होता है। मीन में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, धन-समृद्ध, राजा द्वारा सम्मानित और स्वयं बहुत सुन्दर होता है।

शनि का विविध राशिगत फल—यदि मेष का शनि हो तो मनुष्य बंधु-रहित, मित्र-रहित कपटी, वृथा भ्रमण करने वाला और अज्ञ (ज्ञानरहित) होता है। यदि वृश्चिक का शनि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो तो बंधन और वध के मामले में फँसता है। अर्थात् दुष्ट फल समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति चपल तथा निर्दयी भी होता है। यदि मिथुन या कन्या में शनि हो तो जातक लज्जारहित, धन-हीन होता है, संतान-सुख में भी कमी होती है। लिखने में गलती भी करता है लेकिन दूसरों की रक्षा करने का कार्य उसको प्राप्त होता है अर्थात् जहाँ अनेक भृत्य कार्य करते हैं, वहाँ, ऐसे विभाग का अध्यक्ष होता है। यदि वृष राशि का शनि हो तो 'वर्ज्य' (जिनसे प्रेम नहीं करना चाहिए) स्त्रियों का बहुत इष्ट, धन-रहित होता है, किंतु उस व्यक्ति की अनेक पत्नियाँ होती हैं। यदि शनि तुला का हो तो मनुष्य विख्यात, धनी और अनेक व्यक्तियों किंवा ग्रामों अथवा नगर के लोगों का पूज्य होता है। यदि कर्क का शनि हो तो मनुष्य ज्ञान-हीन, अल्प मातृसुख वाला, धनरहित, अल्प पुत्र-सुख वाला हो तथा उसके दाँत विरल (छीदे) होते हैं। यदि सिंह का शनि हो तो घोर परिश्रम करने वाला, बोझा उठाने वाला, सुखरहित होता है। ऐसे व्यक्ति को दाम्पत्य-सुख और पुत्र-संतान-सुख थोड़ी मात्रा में प्राप्त होता है। यदि धनु या मीन का शनि हो तो ऐसा मनुष्य बुढ़ापे में भी सुखी रहता है। किसी जन-समूह का, शहर का या ग्रामो के समूह का नेता होता है और राजदरबार में उसका विश्वास किया जाता है। ऐसे व्यक्ति को स्त्री-पुत्रादिकों का सुख भी अच्छा प्राप्त होता है। यदि मकर या कुंभ राशि का शनि हो तो जातक अन्य व्यक्ति की स्त्री में रत, धन से समृद्ध. किसी जनसमूह नगर, या ग्रामों के समूह का नेता, मलिन, अलस दृष्टि, धन और वैभव भोग करने वाला होता।

राहु का विविध राशिगत फल—'सारावली' में लिखा है कि यदि लग्न में मेष, वृष या कर्क का राहु हो तो समस्त पीड़ाओं से रक्षा करता है। राहु की उच्च राशि तथा स्वराशि के सम्बन्ध में भी मतभेद है। राहु-केतु का फल प्रायः भावानुसार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेष मिलता है।

बहुत से व्यक्ति मिथुन को राहु का उच्च तथा धनु को केतु का उच्च मानते हैं। दूसरे सम्प्रदाय वाले वृषभ को राहु का उच्च और वृश्चिक को केतु का उच्च मानते हैं एवं उनके मत से कन्या राहु का स्वगृह और कुम्भ राहु का मूल त्रिकोण होता है। इसी प्रकार मीन केतु का स्वगृह तथा सिंह केतु का मूल त्रिकोण होता है।

तेरहवां प्रकरण

ग्रहों के भाव-फल

किस भाव में रहने से कौनसा ग्रह क्या प्रभाव दिखलाता है यह नीचे बताया जाता है। यदि लग्न में सूर्य हो तो जातक शूर-वीर, रण निर्भय, कठोर हृदय होता है। दूसरे व्यक्ति उसे विचलित नहीं कर सकते। यह सामान्य फल है। यदि लग्न में मेष राशि का सूर्य हो तो मनुष्य धनी होता है। किंतु नेत्रों में अँधेरा आ जाता है। अर्थात् नेत्र-सम्बन्धी बीमारी होती है। यदि लग्न में सिंह-राशि का सूर्य हो तो उसे रात्रि में दिखलाई नहीं देता* (यह एक प्रकार की नेत्र की बीमारी है जिसे 'रतौंधी' कहते हैं)। यदि तुला राशि का सूर्य लग्न में हो तो मनुष्य धनशून्य होता है और वृद्धावस्था में अंधा होने का भय भी रहता है। यदि कर्क राशि का सूर्य लग्न में हो तो आँख में 'फूला' रोग होने का भय रहता है। यदि द्वितीय स्थान में सूर्य हो तो ऐसे मनुष्य के पास बहुत द्रव्य रहता है किंतु उसे सरकार की ओर से धन-दंड (इनकम टैक्स आदि) लगता है, मुख-सम्बन्धी रोग भी होते हैं।

सूर्य. यदि तृतीय भाव में सूर्य हो तो मनुष्य मतिमान् और पराक्रमी

*नोट—नेत्र सम्बन्धी रोग प्रायः वृद्धावस्था में होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता है। यदि चौथे भाव में सूर्य हो तो ऐसा व्यक्ति सुखहीन तथा 'पीड़ित मानस' (जिसके चित्त में सदैव संताप हो) होता है। पंचम में सूर्य होने से उदर रोग करता है। मनुष्य धनहीन होता है और संतान-कष्ट भी करता है। छठे में सूर्य होने से आदमी अपने शत्रुओं को जीतता है और बलवान् होता है। किन्तु यदि सूर्य दुर्बल हो तो ऐसा व्यक्ति शत्रुओं से बहुत पीड़ा पाता है। यदि सप्तम स्थान में सूर्य हो तो ऐसा जातक स्त्रियों से अपमानित या तिरस्कृत होता है (अपनी पुरुषार्थ-हीनता के कारण या अन्य किसी कारण से) अर्थात् स्त्री-सुख में कमी होती है। यदि अष्टम में सूर्य हो तो संतान थोड़ी हो और और नेत्र विकार हो। नवम में सूर्य होने से संतान, सौख्य और धन—इन तीनों की प्राप्ति होती है। जिस व्यक्ति के दशम में सूर्य होता है वह शूरवीर होता है और बहुत विद्वत्ता की बातों को सुनता है अर्थात् शास्त्र श्रवण करने वाला होतां है। एकादश स्थान को लाभ स्थान भी कहते हैं। इस घर में सूर्य होने से मनुष्य बहुत धनशाली होता है। द्वादश में सूर्य होने से मनुष्य पतित-कर्मा और भ्रष्ट होता है।

चन्द्रमा **चंद्रमा का द्वादश भावगत फल**—यदि लग्न में चंद्रमा हो तो जातक में निम्नलिखित योगों में से एक या अधिक योग घटित हों—मूक (गूँगा), उन्मत्त (पागल), जड़ (मूर्ख) अंध (अंधा), बधिर (बहरा) या प्रेष्य (नौकर) या नीच (अनुचित कर्म करने वाला) हो। बहुत से रोगों का प्रादुर्भाव वृद्धावस्था में होता है। यदि बलवान चंद्रमा हो या बृहस्पति या अन्य शुभ ग्रहों से से दृष्ट हो तो दुष्ट फल स्वल्प मात्रा में होता है। यदि मेष, वृष या कर्क राशि का चंद्रमा लग्न में हो तो उपर्युक्त प्रकार के अनिष्ट फल नहीं होते बल्कि मनुष्य धनवान् होता है। यदि चंद्रमा द्वितीय स्थान में हो तो मनुष्य धनी, बहुत पुत्र वाला और कुटुम्बी (बड़े

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिवार वाला) होता है। यदि तृतीय स्थान में चंद्रमा हो तो जातक हिंसाशील होता है। यदि चौथे में चंद्रमा हो तो जातक को उन सब बातों का सुख प्राप्त होता है जिनका चतुर्थ भाव से विचार किया जाता है अर्थात् भवनसुख, मित्रसुख आदि प्राप्त होते हैं। यदि पाँचवें स्थान में चंद्रमा हो तो मनुष्य बुद्धिमान् होता है तथा उसे संतान-सुख भी प्राप्त होता है। यदि छठे स्थान में चंद्रमा हो तो ऐसे आदमी की पाचन-शक्ति मंद होती है और रति की इच्छा में भी न्यूनता रहती है। ऐसा व्यक्ति आलसी किंतु बहुत तीक्ष्ण होता है और उसके बहुत से शत्रु होते हैं। यदि सप्तम स्थान में चंद्रमा हो तो मनुष्य का चित्त स्त्री या स्त्रियों में आसक्त होता है। वह तीव्र मदवाला तथा ईर्ष्याशील होता है। किन्तु अष्टम में चंद्रमा हो तो जातक बहुत बुद्धिमान होता है तथा व्याधि-पीड़ित रहता है। जिसके नवम में चंद्रमा हो उसे पुत्र, मित्र, बंधु, धन आदि का उत्तम सुख प्राप्त होता है। जिसकी जन्म-कुंडली में दशम में चंद्रमा हो वह व्यक्ति धनवान्, बुद्धिमान, वीर और धार्मिक होता है और उच्च पदवी प्राप्त करता है। एकादश में चंद्रमा होने से आय अच्छी हो और विख्यात हो। ग्यारहवें घर से जो बात देखते हैं उनका प्रायः सुख उपलब्ध होता है। जिसके बारहवें घर में चंद्रमा हो वह क्षुद्र, निकृष्ट, अंगहीन (नेत्र आदि में विकलता) हो।

मगल **मंगल का विविध भावगत फल**—यदि लग्न में मंगल हो तो शरीर में क्षत हो, अर्थात् व्रण हों। चोट से या बीमारी से। द्वितीय स्थान में मंगल होने से कुत्सित अन्न भोजन करने वाला होता है। नवम स्थान में मंगल होने से मनुष्य दुष्कर्मा-पापकृत् होता है। शेष स्थानों में जो सूर्य का फल कहा है वही मंगल का भी समझना चाहिए।

बुध का विविध भावगत फल—जन्म-कुंडली में बारह भाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होते हैं। बुध का प्रत्येक भाव में स्थित होने का फल क्रमशः नीचे दिया जा रहा है।

(१) विद्वान्, (२) धनी, (३) प्रबल, (४) पंडित, (५) मंत्री, (६) शत्रु, रहित, (७) मर्मज्ञ (सुरतोपचारकुशल अथवा हास्य प्रिय), (८) विख्यात, (९) नवें भाव से लेकर द्वादश भाव तक वही फल जो सूर्य का बताया गया है।

बृहस्पति का विविध भावगतफल—बृहस्पति का विविध भावगत फल निम्नलिखित होता है। (१) विद्वान्, (२) सुवाक्य (शीरींसखुन) अच्छी वाणी बोलने वाला, (३) कृपण, (४) सुखो, (५) बुद्धिमान्, (६) शत्रु रहित, (७) अपने पिता, पितामह आदि से अधिक गुणवान्-पदवी प्राप्त करने वाला, (८) नीच दुष्कर्म करने वाला किन्तु स्वराशि या उच्च-राशिं का बृहस्पति हो तो अनिष्टकर्मा नहीं होता अर्थात् जिसके कामों को लोग पसन्द न करें। (९) तपस्वी, (१०) धनी, (११) अपरिमित आय सहित, (१२) खल (दुष्ट)।

शुक्र का विविध भावगत फल—शुक्र का द्वादश भाव में क्या फल होता है यह नीचे दिया जाता है।

शुक्र यदि प्रथम भाव में हो तो जातक कामकला में निपुण और सुखवान् होता है। यदि सप्तम स्थान में शुक्र हो तो वह कलह-प्रिय या प्रिया से कलह करने वाला तथा सदैव रति की इच्छा करने वाला होता है। यदि पंचम स्थान में शुक्र हो तो मनुष्य सुखी होता है। लेकिन यदि नीच का शुक्र हो तो उतना शुभ फल नहीं दिखावेगा। बाकी भावों में शुक्र का वही फल होता है जो बृहस्पति का।

शनि का विविध भावगत फल—यदि लग्नमें शनि हो तो मनुष्य नित्य दरिद्र, रोगी और कामपीड़ित होता है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त नीच और बचपन में व्याधियुक्त भी होता है। ऐसे व्यक्ति को बातचीत करने में प्रगल्भता भी प्राप्त नहीं होती। किन्तु यदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुला, धनु, मकर या कुंभ या मीन राशि का शनि लग्न में हो तो ऊपर जितने भी अनिष्ट फल कहे हैं उनमें से कोई भी अनिष्ट फल नहीं होता बल्कि मनुष्य किसी ग्राम या शहर का स्वामी होता है तथा वह विद्वान् एवं रूपवान् भी होता है।

लग्न में शनि का जो दुष्ट फल कहा है वह तब ही पूर्ण रूप से घटित होता है जब शनि बहुत ही निर्बल हो। बृहस्पति आदि की शुभ दृष्टि होने से मनुष्य तपस्वी, मुमुक्षु (मोक्ष की इच्छा रखने वाला) आदि हो जाता है।

राहु॥ **राहु का विविध भावगत फल**—यदि जातक के प्रथम भाव में राहु हो तो वह सर्वदा रोगी, व्यर्थ बोलने वाला तथा नीच कर्म करने वाला होता है। परन्तु साथ-ही-साथ साहसिक कार्य करने वाला तथा कुटुम्ब का पालन करने वाला भी होता है। जिस मनुष्य के द्वितीय भाव में राहु हो वह घमंडी, निकृष्ट पदार्थ का सेवन करने वाला, सदैव दुःखी तथा नीच व्यक्ति के संसर्ग में रहने वाला होता है। यदि तृतीय भाव में राहु हो तो जातक धन, स्त्री-पुत्र, मित्र आदि के सुख से पूर्ण रहे परन्तु साथ-ही-साथ भ्रातृ कष्ट भी हो। यदि राहु उच्च का हो तो जातक को सेवक तथा सवारी का सुख प्राप्त होता है। जिसके चतुर्थ भाव में राहु हो ऐसा व्यक्ति धनहीन, भाइयों से अलग रहने वाला, पिशुन व नीच व्यक्तियों का साथी होता है।

पंचम में राहु हो तो उदर-विकार, क्रूर मति और पुत्र-कष्ट करता है। छठे स्थान में राहु बहुत प्रशस्त माना गया है। पुत्र-सुख, धन-सुख तथा शत्रु-नाश होता है। छठे स्थान में राहु की विशेष प्रशंसा की गई है क्योंकि यह मनुष्य को विजयी बनाता है और सब प्रकार के अनिष्टों को दूर करता है। यदि इस स्थान पर मिथुन का राहु हो तो कष्टों को दूर कर अन्य स्त्रियों का सुख भी देता है। यदि सप्तम में राहु हो तो स्त्री-सुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा पति सुख में कमी करे, धन-हानि भी होती है। ऐसा व्यक्ति यदि साझेदारी में कार्य करे तो उसे हानि हो। अष्टम भाव का राहु अनिष्ट माना गया है।

राहुः सदा चाष्टममन्दिरस्थो रोगान्वितं पापरतं प्रगल्भम्।
चौरं कृशं कापुरुषं धनाढ्यम् मायामतीतं पुरुषं करोति।।

अर्थात् ऐसा व्यक्ति रोगी हो या निन्दित कर्म करे या मायावी अर्थात् छली हो।

नवम स्थान में राहु दुर्गा में भक्ति करता है, किन्तु भाग्य की वृद्धि में बयालीस वर्ष तक रुकावट पैदा होती है। ऐसा व्यक्ति हिंसक प्रवृत्ति का तथा पिशुन भी होता है। दशम में राहु बहुत अभ्युदय करता है किन्तु पितृ-सुख में कमी करता है। ग्यारहवें स्थान में राहु बहुत लाभकारक होता है। ऐसे व्यक्तियों को उचित तथा अनुचित दोनों मार्गों से धन की विशेष प्राप्ति होती है। व्यय या बारहवें भाव में राहु का दुष्ट फल होता है। बहुत निरर्थक भ्रमण कराता है और शारीरिक क्लेश तथा द्रव्य-हानि-कारक भी होता है। यदि किसी ग्रह के साथ राहु न हो तब उपर्युक्त फल होगा। यदि किसी ग्रह के साथ हो तो उस ग्रह के प्रभाव से राहु का फल मिश्रित हो जावेगा। राहु के विशेष विचार के लिए चोदहवाँ प्रकरण देखिये।

केतु का विविध भावगत फल—यदि लग्नमें हो तो व्याकुलता रहे शरीर में वातविकार या पीड़ा हो और स्त्री-पुत्रादि के सम्बन्ध में निरंतर चिन्ता बनी रहे। द्वितीय में केतु होने से केतु की दशांत-र्दशा में धन-नाश हो। अपनी वाणी या वचनों के कारण दूसरों से विरोध हो और संग्रहीत धन नष्ट हो जाये। तृतीय भाव में केतु लोगों से विवाद कराता है किन्तु जातक की विजय होती है। ऐसे व्यक्ति को बाहु-पीड़ा होने की आशंका रहती है और चित्त में उद्वेग (चिन्ता) और भय भी रहता है। यदि चतुर्थ में केतु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो तो माता के सुख में न्यूनता हो और पैतृक सम्पत्ति की हानि हो; किन्तु उच्च राशि स्थित केतु हो तो केवल शुभ फल की प्राप्ति होगी। पंचम में केतु संतान-कष्ट करता है। भाइयों से कलह हो और स्वयं को वायु-विकार और पेट ठीक न रहे।

छठे स्थान में केतु शत्रु का नाशक और पराक्रम-वृद्धि-कारक है किन्तु ऐसे व्यक्ति को अपने मामाओं से आदर प्राप्त नहीं होता। चौपायों (गाय-भैंस, घोड़े आदि) से सुख हो। सप्तम में केतु स्त्री-कष्ट करता है। ऐसे व्यक्ति को सदैव सफर की चिन्ता रहती है। अष्टम भाव में केतु बवासीर आदि रोग उत्पन्न करता है। किसी सवारी से गिरने का डर भी रहता है। अष्टम में प्रायः अनिष्ट फल करता है किन्तु यदि मेष, वृष, मिथुन, कन्या और वृश्चिक— इन पाँचों राशियों में से किसी में केतु हो तो अष्टम में होता हुआ भी धन-लाभ करता है :—

भवेदष्टमे राहुपुच्छेऽर्थलाभः सदा कीट कन्या जगोयुग्मकेतुः

नवम भाव में केतु क्लेश नाश करता है। म्लेच्छ जाति के द्वारा भाग्य में वृद्धि हो। सहोदर भाई-बहन के कारण मन में व्यथा हो और बाहु रोग हो। यदि दशम भाव में केतु हो तो पिता का सुख कम होता है। अड़तालीसवें वर्ष के बाद विशेष पराक्रम-वृद्धि हो। यदि मेष, वृष, कन्या या वृश्चिक का केतु दसवें घर में बैठा हो तो शत्रुओं का नाश करता है। ग्यारहवें भाव में केतु हर प्रकार से भाग्योदय करता है और लाभकारक होता है। किन्तु सन्तान की उन्नति-कारक नहीं होता। व्यय भाव का केतु कष्टकारक है। किसी-न-किसी प्रकार का प्रबल रोग उसको घेरे रहता है। पैर, नेत्र या गुदा में रोगकारक होता है। व्यर्थ में अपव्यय होता है।

साधारण नियम यह है कि जिस भाव में सौम्य ग्रह हो उस भाव-सम्बन्धी शुभ फल तथा जिस-जिस भाव में पाप ग्रह हो उस भाव-सम्बन्धी कष्ट फल होता है। ऊपर जो भाव-फल बताये गये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं उनमें भी, किस भाव का स्वामी होकर ग्रह बैठा है, किस राशि में बैठा है, आदि के तारतम्य से फल में भिन्नता हो जाती है। उच्चराशि स्थित ग्रह प्रायः शुभ फल करते हैं। स्वराशि स्थित ग्रह उत्तम फल ही करते हैं। मित्र-राशि या अधिमित्र राशि में क्रमशः शुभता अधिक होती है, पापफल कम होता है शत्रुराशि या अधिशत्रु राशि में क्रमशः शुभता कम होती है, पाप-फल अधिक होता है।

ग्रहों के विशेष वर्ष—सूर्य का २२वाँ, चन्द्रमा का २४वाँ, मंगल का २८वाँ, बुध का ३२वाँ, बृहस्पति का १६वाँ, शुक्र का २५वाँ, शनि का ३६वाँ, राहु का ४२वाँ, केतु का ४८वाँ वर्ष होता है।

उदाहरण—यदि सूर्य बलवान् होकर चतुर्थ में बैठा है या चतुर्थ का स्वामी है तो २२वें वर्ष में स्थान-प्राप्ति, भवन-सुख, वाहन-सुख आदि करावेगा। यदि सूर्य निर्बल होकर चौथे का स्वामी है या चौथे में बैठा है तो २२वें वर्ष में मकान या भूमि की हानि, मातृ-कष्ट आदि अशुभ फल करेगा। यदि चन्द्रमा सप्तम में बलवान् होकर बैठा है या सप्तम का स्वामी है तो २४ वें वर्ष में विवाह-कारक होगा अर्थात् विवाह करावेगा। शनि यदि चतुर्थ में है या चतुर्थ का स्वामी है तो ३६ वें वर्ष के बाद भूमि, मकान आदि की प्राप्ति विशेष रूप से करेगा। राहु नवम में हो तो ४२वें वर्ष के बाद भाग्योदय होगा—आदि भाव, भावेश, भाव पर दृष्टि, भावेश पर दृष्टि आदि का विचार कर फल कहना चाहिए।

चौदहवाँ प्रकरण

भावाधीश विचार

वैसे तो फलित ज्योतिष के अनेक ग्रंथ हैं और अनेक सम्प्रदाय हैं किन्तु पराशर ऋषि-प्रणीत ग्रंथों का सर्वोपरि आदर और प्रचार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। इस ग्रंथ-समुदाय से कुछ थोड़े से अमूल्य मोती चुन कर एक पृथक् लड़ी के रूप में किसी अनुभवी विद्वान् ने संकलित किये है जिस को "उडुदाय-प्रदीप" कहते हैं। 'उडु' कहते हैं नक्षत्र को। नक्षत्र के आधार पर जो दशा लगाई जाती है—वह किसको कैसी जावेगी यही विचार इसमें है। इसी "उडुदाय प्रदीप" का प्रचलित नाम 'लघु पाराशरी' भी है।

नक्षत्र-दशा भी अनेक प्रकार की है। किन्तु 'उडुदाय–'प्रदीप' में कौन-सी दशा लेना—इसके सम्बन्ध में ग्रंथकार कहते हैं कि विंशोत्तरी दशा का ग्रहण करना चाहिए। विंशोत्तरी दशा कैसे निकाली जाती है यह १०वें प्रकरण में बताया जा चुका है।

द्वादश भाव स्पष्ट कैसे करना है तथा किस भाव से क्या-क्या विचार करना यह भी छठे तथा नवें प्रकरण में बताया जा चुका है।

केन्द्र-त्रिकोण—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम भावों को केन्द्र कहते हैं। पंचम तथा नवम भावों को त्रिकोण कहते हैं। बहुत से विद्वानों के मतानुसार लग्न केन्द्र भी है और त्रिकोण भी है।

शुभ-पाप, क्रूर-सौम्य—यह प्रसिद्ध ही है कि शनि, मंगल राहु और केतु क्रूर ग्रह हैं तथा बृहस्पति और शुक्र शुभ ग्रह हैं। चन्द्रमा के विषय में यह सिद्धान्त है कि यदि यह क्षीण हो (कृष्ण पक्ष की दशमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी तक) तो क्रूर और यदि पक्ष-बल-सहित हो (शुक्ल दशमी से कृष्ण पंचमी तक) तो शुभ होता है। बहुत से विद्वान् शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की अष्टमी तक चन्द्रमा को शुभ और बाकी समय में क्रूर मानते हैं। यदि शुक्ल पक्ष या कृष्ण पक्ष का तारतम्य नहीं किया जावे तो चन्द्रमा शुभ ग्रह ही समझा जाता है। बुध अपने स्वभाव से पूर्ण शुभ ग्रह ही माना जाता है किन्तु बुध का विशेष गुण है कि जैसे ग्रह के साथ होगा उसका स्वभाव ग्रहण कर लेगा। फलतः शनि व मंगल के साथ रहने से अशुभ तथा बृहस्पति-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुक्र आदि शुभ ग्रह के संग में शुभ हो जाता है। सूर्य क्रूर ग्रह माना जाता है। यदि हम स्थूल रूप से ग्रहों को सौम्य और क्रूर इन दो भागों में बाँटें तो चं०, बु०, बृ०, शु० सौम्य तथा सू०, मं०, श०, रा० के० क्रूर माने जावेंगे। इसमें तारतम्य यह है कि मं० श०, रा० और केतु क्रूर के साथ पाप भी हैं। किन्तु सूर्य हमारा प्राणदाता है यह पाप नहीं है—केवल क्रूर है।

दृष्टि—सूर्य आदि सातों ग्रह जिस राशि में बैठे हों उस राशि से ७ वीं राशि को देखते हैं और उस सातवीं राशि में स्थित ग्रहों को भी देखते हैं। यह सातों ग्रहों के लिए सामान्य नियम है। विशेष नियम यह है कि इस सातवीं दृष्टि के अलावा मंगल की ४थी और ८ वीं राशि पर भी पूर्ण दृष्टि होती है। अन्य ग्रहों की ४थी और ८वीं राशि पर केवल $\frac{3}{4}$ (पौनी) दृष्टि होती है। बृहस्पति की ५ वीं और ९ वीं पूर्ण दृष्टि होती है। अन्य ग्रहों की इन दो स्थानों पर केवल आधी दृष्टि होती है। शनि की तृतीय और दशम स्थानों पर पूर्ण दृष्टि होती है। अन्य ग्रहों की केवल $\frac{1}{4}$ (चौथाई) दृष्टि होती है। आगे जो दृष्टिजनित अर्थात् ग्रहों की परस्पर-दृष्टि होने के कारण जो योग बताये गये हैं वे सब केवल पूर्ण दृष्टि होने पर घटित होते हैं। यह नहीं समझना चाहिए कि आधी दृष्टि होने से योग का आधा फल होगा, चौथाई दृष्टि होने से योग का चौथाई फल होगा।

भावाधिप होने के कारण शुभता—कौन से ग्रह शुभ हैं और कौन से पाप; ये सामान्य नियम ऊपर बताये गये हैं। अब 'पराशर' के अनुसार कौनसा ग्रह शुभ फल देगा तथा कौनसा अनिष्ट फल देगा इसका विशेष निर्णय बताते हैं :

त्रिकोण के अर्थात् नवम और पंचम भाव के स्वामी कोई भी

नोट—भाव का स्वामी, भावेश, भावाधिप, भावाधिपति सब का एक ही अर्थ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह हों वे शुभ फल ही देते हैं।

तृतीय, छठे तथा ग्यारहवें के स्वामी—"पाराशरी" का श्लोक हैः—

"पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदाः।"

इसका साधारणतः प्राचीन और अर्वाचीन विद्वान् यही अर्थ करते हैं कि जो ग्रह लग्न से तृतीय, षष्ठ और एकादश भावों के स्वामी हों वे पापफल देने वाले होते हैं। * किन्तु इस श्लोकांश की व्याख्या करते हुए पं० विनायक शास्त्री उपनाम वेताल शास्त्री लिखते हैं कि पाप ग्रह यदि तृतीय, छठे या ग्यारहवें के स्वामी हों तो शुभ फल नहीं देते अर्थात् यदि इन भावों के स्वामी शुभ ग्रह हों तो अपने शुभ स्वभाव का सामान्य शुभ फल देते हैं। वेताल शास्त्री तथा अन्य संस्कृत टीकाकारों में बहुत मतभेद है। हमारा विचार यही है कि यदि तृतीय, षष्ठ या ग्यारहवें का स्वामी बली शुभ ग्रह हो तो अच्छा फल देगा। यदि निर्बल शुभ ग्रह है और षष्ठेश है तो शत्रु-पीड़ा उत्पन्न करेगा और कुछ रोग भी उत्पन्न कर सकता है। साथ-ही-साथ साधारण शुभ फल भी होगा। यदि तृतीय और एकादश का स्वामी है और निर्बल शुभ ग्रह है तो

---

* देखिये "भैरवदत्त कृतोद्योत संस्कृत टीका" पृष्ठ १२, "सज्जन रञ्जनी संस्कृत टीका" पृष्ठ ६३ तथा "सुश्लोक शतक" संस्कृत टीका पृष्ट ६४।

टिप्पणी—यदि शुभ ग्रह बलवान् हो और एकादश का स्वामी होने से उसे पाप मान कर अनिष्ट फल देने वाला मान लिया जावे तो :

लाभेशे लाभ भावस्थे लाभः सर्वेषु कर्मसु।
पाण्डित्यं च सुखं तस्य वर्द्धते च दिने दिने ॥

(बृहत्पाराशर, पृ० १३१)

यदि ११वें स्थान का स्वामी ११वें स्थान में हो तो सब कार्यों में लाभ होगा और उसके पांडित्य और सुख में दिनानुदिन वृद्धि होगी—ये सब शुभ फल कैसे घटित होंगे?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किंचित् लाभ करेगा। यदि निर्बल पाप ग्रह है तो तृतीय, छठे और एकादश का स्वामी होने से बहुत पाप फल देने वाला होगा। यदि बलवान् पाप ग्रह हैं (स्वगृही है, उच्च का है, अच्छे स्थान में स्थित है) तो जिस भाव में बैठा है उस स्थान को थोड़ा बिगाड़ेगा किन्तु जिस स्थान का स्वामी है उस भाव की वृद्धि करेगा।

केन्द्रों के स्वामी–'पराशर' का श्लोक है :

"न दिशंति शुभं नृणां सौम्याः केन्द्राधिपा यदि।
क्रूराश्चेदशुभं ह्येते प्रबलाश्चोत्तरोत्तराः॥"

इसका भी अधिकतर संस्कृत टीकाओं में यही अर्थ किया गया है कि यदि केन्द्रों के स्वामी सौम्य ग्रह हों तो वे शुभ फल नहीं देते और केन्द्रों के स्वामी यदि क्रूर ग्रह हों तो वे अशुभ फल नहीं देते। पं० गिरिजाप्रसादजी द्विवेदी, ज्योतिषविभागाध्यक्ष संस्कृत कॉलेज, जयपुर ने अनेक संस्कृत टीकाओं के आधार पर इस श्लोक का निम्नलिखित अर्थ किया है :

"जो शुभ ग्रह केंद्र अर्थात् १, ४, ७ और १० स्थान के स्वामी हों तो वे शुभ फल नहीं देते। यदि पाप ग्रह अर्थात् सूर्य, भौम (मंगल), शनि, क्षीण चंद्र केंद्र के स्वामी हों तो वे अशुभ फल नहीं देते। अर्थात् शुभ ग्रह केन्द्राधिपति होने से शुभ फल और अशुभ ग्रह भी केन्द्राधिपति होने के कारण अशुभ फल नहीं देते। अर्थात् पराशर के मत में केवल संज्ञा-मात्र से कोई ग्रह शुभ या पाप नहीं हैं, किन्तु अपनी स्थिति के अनुसार शुभ ग्रह अशुभ एवं अशुभ ग्रह शुभ-फलकारक माने गये हैं। इसलिए 'सुश्लोकशतक' में लिखा है–**केंद्राधिपतयः पापा भवन्त्यत्र शुभा यतः।**"

किन्तु पंडित वेताल शास्त्री की संस्कृत टीका के अनुसार "जो शुभ ग्रह केंद्र अर्थात् ४ थे, ७ वें, १० वें के स्वामी हों तो शुभ फल नहीं देते। इन्हीं स्थानों के स्वामी पाप ग्रह हों तो अशुभ फल नहीं देते।" दोनों अर्थों में अन्तर यह है कि (१) वेताल शास्त्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ने इस श्लोक में लग्नेश को केन्द्रेश इसलिए नहीं माना है कि लग्नेश सदैव शुभ ही होता है; यह आगे बताया गया है। (२) बहुत से लोग यह समझते हैं कि "अशुभ फल नहीं देते" इसका अर्थ हुआ शुभ फल देते हैं और "शुभ फल नहीं देते" इसका अर्थ हुआ अशुभ फल देते हैं—ऐसा अर्थ समझना भ्रममूलक है।

भावेशों की परस्पर बल-तुलना—(क) पंचम की अपेक्षा नवम विशेष बलवान् होता है।

(ख) तृतीय की अपेक्षा छठा विशेष बलवान् और छठे की अपेक्षा ११वाँ बिशेष बलवान् होता है।

(ग) ४थे से ७वाँ विशेष बलवान्, सातवें से १०वाँ विशेष बलवान् होता है।

(घ) त्रिकोणेश से त्रिषडायपति (३, ६, ११ का स्वामी) पाप-ग्रह विशेष पापी है। और त्रिषडायपति पाप ग्रह से केंद्रेश शुभ ग्रह अधिक पापी है।

(ङ.) केंद्रेश शुभ ग्रह से त्रिषडायमति पाप ग्रह शुभ है और इससे (त्रिषडायपति पाप ग्रह से) त्रिकोणेश अधिक शुभ है।

(च) यदि कोई ग्रह दो स्थानों का स्वामी होने से शुभ सिद्ध हो तो उसे अधिक शुभ-फलकारक समझना चाहिए।

(छ) यदि कोई ग्रह दो स्थानों का स्वामी होने से अधिक अशुभकारक हो तो उसे अधिक अनिष्टकारक समझना चहिए।

(ज) ग्रह दीप्त, स्वस्थ आदि अवस्था का है तथा षड्वर्ग में, शुभवर्गों में या स्ववर्ग में है या शत्रुवर्ग, में है—इन सब विचारों को निरंतर ध्यान में रखना चाहिए।*

द्वितीय तथा द्वादश स्थान के स्वामी—अब २रे तथा १२ वें स्थान के स्वामी कब शुभ और कब अशुभ होते हैं यह बताया जाता

*देखिये १७ वें प्रकरण का अन्तिम भाग, ८ वाँ प्रकरण तथा २४ वें प्रकरण का प्रारम्भिक भाग।

(घ) और (ङ) में पं० वेताल शास्त्री जी का मत दिया है। हमारे विचार से केन्द्रेश-शुभ ग्रह होकह सप्तमेश हो तभी विशेष पाप फल कर सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। इन दोनों घरों के स्वामी दूसरे जैसे ग्रह के साथ बैठे हों उसके अनुसार फल देते हैं। अर्थात् यदि द्वितीयेश शुभग्रह के साथ हो तो शुभ फल देता है; यदि अशुभ ग्रह के साथ हो तो अशुभ फल देता है। दूसरी बात यह है कि द्वितीयेश या व्ययेश अन्य ग्रह के साथ जिस भाव में बैठे हों उस भाव के गुणानुसार फल देते हैं। यदि मित्र-राशि में द्वितीयेश बैठा है तो मित्र से धन मिलेगा। यदि व्ययेश शत्रु की राशि में बैठा है तो शत्रु के द्वारा व्यय होगा। (इसके अतिरिक्त यदि दीप्त या स्वस्थ ग्रह के साथ बैठा हो तो शुभ फल; विकल या दु:खित ग्रह के साथ बैठा हो तो अनिष्ट फल; यह साधारण सिद्धान्त भी लागू करना चाहिए)।

यहाँ जो शुभ ग्रह या अशुभ ग्रह कहा गया है वह साधारण शुभ-अशुभ नहीं समझना चाहिए। त्रिकोणेश शुभ होते हैं। लग्नेश भी शुभ होता है, यह अर्थ समझना चाहिए।

व्ययेश के सम्बन्ध में दक्षिण के ज्योतिष-ग्रन्थों में तथा पराशर के मत में भिन्नता है। ६,८,१२ स्थानों को 'त्रिक' कहते हैं। दक्षिण भारत से प्रकाशित अनेक ग्रंथों में* ६, ८, १२वें के स्वामी को त्रिकेश होने के कारण महान् अनिष्टकारक कहा है किन्तु पराशर के मतानुसार यदि व्ययेश भी शुभग्रह के साथ शुभ स्थान में बैठें तो शुभ फल ही करेगा। हम पराशर के मत को विशेष मान्य मानते हैं।

अष्टमेश का विचार—आठवाँ स्थान भाग्य स्थान से १२ वाँ है। वैसे तो प्रत्येक स्थान (भाव) से १२ वाँ स्थान उस भाव के लिए हानिकारक होता है—लग्न से १२वाँ स्थान शरीर का व्यय करेगा;

*"षष्ठ द्वादशमष्टमं च मुनयो भावानानिष्टान्विदुः
तन्नाथान्वितवीक्षिता यदधिपा ये वा च भावाः स्वयम्।
तत्रस्थाश्च यदीश्वरास्त्रय इमे नो सन्ति भावा नृणां।
जाता वा विफला विनष्टविकलास्तत्रातिकष्टोऽष्टमः॥ जातकादेशमार्ग १०-३४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धन से १२ वाँ स्थान लग्न है इसकारण लग्नेश की दशा में धन का विशेष व्यय हो—आदि, किंतु भाग्य स्थान से १२वाँ स्थान भाग्य का व्यय करता है। इसको मृत्यु स्थान भी कहते हैं। भाग्य के व्यय को सबसे अनिष्ट क्यों माना ? भाग्य स्थान को धर्म स्थान भी कहते हैं। नवम स्थान को 'जय' स्थान भी कहते हैं। जब तक धर्म रहता है—धर्म का प्रभाव रहता है तब तक आयु भी रहती है। जब समस्त धर्म का व्यय हो जाता है तो आयु भी समाप्त हो जाती है। इसी कारण अष्टम को सबसे अधिक अनिष्ट कहा है। यहाँ यह भी कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि नवम स्थान को धर्म स्थान तथा जय स्थान होने के कारण "यतो धर्मस्ततो जयः" यह सिद्धान्त भी लागू होता है। 'पाराशरी' का श्लोक है कि :

भाग्यव्ययाधिपत्येन रन्ध्रेशो न शुभप्रदः ।
स एव शुभसन्धाता लग्नाधीशोऽपि चेत् स्वयम् ।।

श्री वेताल शास्त्रीजी इस श्लोक का अर्थ करते हैं कि, "भाग्य का व्यय अर्थात् अष्टम—उसका स्वामी होने से अष्टमेश अत्यन्त अशुभ है। सब व्ययों से भाग्य का व्यय मृत्यु-स्वरूप है इसलिए अत्यन्त अशुभ है। वह अष्टमेश ही लग्न का भी स्वामी हो तो शुभ फल से योग कराता है पूर्ण शुभ नहीं होता। साराश—अष्टमेश जैसे पापी को शुभ योग कराने वाला लग्नेश अत्यन्त शुभ है यह भी स्पष्ट है।" इस प्रकार वेताल शास्त्रीजी भी अष्टमेश होने के कारण थोड़ी सी अशुभता मानते हैं। उनके विचार से किंचित् अशुभता लग्नेश होने की अतिशय शुभता में विलीन हो जाती है। किंतु मन्त्रेश्वर के विचार से कोई ग्रह यदि लग्नेश हो तो वह चाहे किसी भी स्थान का स्थामी हो शुभ फल ही करेगा। वह कहते हैं कि लग्नेश यदि क्रूरग्रह भी हो तो भी वह जिस भाव में बैठेगा उस भाव की वृद्धि ही करेगा। यदि वह किसी दुःस्थान का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(अनिष्ट भाव) का भी स्वामी है तो भी कोई हानि नहीं करेगा। उदाहरण के लिए यदि मेष लग्न या वृश्चिक लग्न हो तो मंगल एक शुभ भाव का (लग्न का) और एक अशुभ भाव का स्वामी होगा किंतु ऐसा मंगल यदि पंचम में बैठा हो और शुभवीक्षित हो तो पुत्र-प्राप्ति करायेगा। संतान के लिए अहितकारक नहीं होगा।*

इस प्रकार केंद्र, त्रिकोण, ३, ६, ११, २, १२, ८ तथा लग्न के स्वामी का साधारण विचार कर अब केंद्रों के स्वामी का पुनः विचार किया जाता है।

शुभग्रह यदि केंद्रों के स्वामी हों :

केंद्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरुशुक्रयोः।
मारकत्वेपि च तयोर्मारकस्थानसंस्थितिः॥
बुधस्तदनु चंद्रोपि भवेत्तदनु तद्विधः।
न रंध्रेशत्वदोषस्तु सूर्याचन्द्रमसोर्भवेत्॥

पंडित वेताल शास्त्रीजी के मतानुसार केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह औरों से अधिक पापी होते हैं। शुभ ग्रहों में यह क्रम रखा है—बृहस्पति और शुक्र उसके बाद बुध, उसके बाद चन्द्रमा भी। यदि ये शुभ ग्रह द्वितीय या सप्तम स्थान में हों (और केन्द्र के स्वामी तो हों ही तो प्रबल मारक होते हैं) प्रायः सभी टीकाकारों ने—शुभ ग्रह यदि केन्द्र का स्वामी हो और मारक स्थान (२,७) में पड़ा हो तो उसे--प्रबल मारक कहा हैं। (किन्तु हमारे विचार से यदि बृहस्पति, शुक्र या बुध लग्न के स्वामी होने के साथ-साथ अन्य केन्द्र के स्वामी हों तो उनमें मारकता नहीं होगी। लग्न शरीर है, लग्नेश शरीर का पोषक है)।

अष्टमेश होने का दोष बहुत अधिक है यह पहले बताया जा

*विशेष विवरण के लिए देखिये हमारी "फल दीपिका (हिन्दी)" १५ वाँ अध्याय। हमारी 'भावार्थ बोधिनी फल दीपिका' (हिन्दी) गोयल एण्ड कम्पनी पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता, दरीबा कलां दिल्ली से मंगावें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चुका है। इस साधारण नियम का एक अपवाद ऊपर के श्लोक में भी बताया गया है कि यदि सूर्य या चंद्रमा अष्टम भाव का स्वामी हो तो उनको अष्टमेश होने का दोष नहीं लगता। यदि मकर लग्न हो तो सूर्य अष्टमेश होगा; यदि धनु लग्न हो तो चंद्रमा अष्टमेश होगा। श्लोक में तो स्पष्ट कहा गया है कि अष्टमेश होने का दोष सूर्य और चन्द्रमा को नहीं होता और "सुश्लोक शतक" में भी स्पष्ट है कि— **'अष्टमेशोविधुर्वार्को नो पापः शुभ एव सः'** किन्तु "सज्जन-रंजनी" की टीका में स्पष्ट कहा गया है कि सूर्य और चंद्रमा यदि अष्टमेश हों तो प्रायः शुभ होते हैं, किन्तु कुछ दोष होता ही है। इसके लिए कोई हेतु न बतलाकर वह लिखते हैं, "इतिगुर्वाज्ञा" अर्थात् गुरु की आज्ञा है। वेताल शास्त्री जी भी लिखते हैं : "अष्टमेश होने का भारी दोष सूर्य-चंद्र को नहीं होता सामान्य दोष तो रहता ही है।

अब मंगल के विषय में विशेष विचार उपस्थित करते हैं :

कुजस्य कर्मनेतृत्वप्रयुक्ता शुभकारिता।
त्रिकोणस्यापि नेतृत्वे न कर्मेशत्वमात्रतः॥

भिन्न-भिन्न भावों के स्वामी होने से शुभता होती है या अशुभता, यह बता चुकने पर अब यह बताते हैं कि यदि एक भाव का स्वामी होने से शुभता हो और दूसरे भाव का स्वामी होने से अशुभता हो तो ऐसी स्थिति में किस नतीजे पर पहुँचना चाहिए।

(१) यदि कुम्भ लग्न हो तो मंगल तृतीय तथा दशम का स्वामी हुआ। क्रूर ग्रह होने से दशम (केन्द्र) का स्वामी होना अच्छा हैं, तृतीय का स्वामी होने से पाप फल देता है। नतीजा यह निकला कि फल शुभ नहीं होगा। (मंगल अशुभ)

(२) कर्क लग्न वाले का, मंगल पंचम और दशम का स्वामी है। केन्द्र का स्वामी क्रूर ग्रह अच्छा है और त्रिकोण (पंचम) का स्वामी तो अच्छा होता ही है इस कारण मंगल शुभ है। (मंगल शुभ)

(३) सिंह लग्न में मंगल चतुर्थ तथा नवम का स्वामी हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चतुर्थ केन्द्र है इस कारण क्रूर ग्रह को इसका स्वामित्व प्राप्त होने से शुभ फल हुआ तथा नवम का—त्रिकोण का स्वामी तो शुभ होता ही है इस कारण मंगल पूर्ण शुभ हुआ। (मंगल शुभ)

(४) मेष लग्न में शनि केन्द्रेश होने से शुभ किन्तु एकादश का स्वामी होने से अशुभ हुआ—परिणाम अशुभ। (शनि अशुभ)

(५) वृष लग्न होने से नवम दशम का स्वामी होने से शनि शुभ हुआ। (शनि शुभ)

(६) तुला लग्न वाले को शनि चतुर्थ तथा पंचम का स्वामी होने से पूर्ण शुभ हुआ। केन्द्र का स्वामी क्रूर ग्रह होने के कारण शुभता तथा त्रिकोणाधिप होने की शुभता। दोनों दृष्टिकोणों से शुभ है। (शनि शुभ)

इस प्रकार विचार करते हुए यह देख लेना चाहिए कि पाप ग्रह केन्द्रेश होने के साथ-साथ त्रिकोण का भी स्वामी हो तो शुभ फल देता है। केवल केन्द्रेश हो तो शुभ फल नहीं देता। यदि पाप ग्रह केन्द्रेश होकर ३, ६, ८ या ११ का भी स्वामी हो तो पाप फल ही देता है। इसी को स्पष्ट करते हुए "सुश्लोक शतक" की टीका में लिखा है :

> धर्मस्याप्यष्टमस्येह पतिरेकः खलः स्मृतः।
> युग्मलग्ने शनिः पापः स एकोऽष्टमधर्मपः॥
> केन्द्रकोणाधिपो यो हि स भवेत्त्रिषडायपः।
> दोषयुक् स तु विज्ञेयः पाराशरमुनेर्मतम्॥
> केन्द्राधिपः शुभश्चेत्स्यात् स एव त्रिषडायपः।
> पाप एव स विज्ञेयः पापश्चेच्छोभनः स्मृतः॥

अर्थात् यदि अष्टम और नवम का स्वामी एक ही ग्रह हो (मिथुन लग्न में शनि होता है) तो वह पापी होता है। यदि कोई ग्रह केन्द्र या कोण का स्वामी होने के साथ-साथ ३, ६, ११ का स्वामी हो तो वह दोषयुक्त हो जाता है—यह पराशर का मत है। यह "सुश्लोक शतक"-कार ने लिखा है। किन्तु वेतालशास्त्री के मत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से शुभ ग्रह ३, ६, ११ का स्वामी होकर कोण का स्वामी हो तो दोषयुक्त नहीं होता। जैसे कर्क लग्न वाले को बृहस्पति ६ठे और ९वें का स्वामी होता है। यह स्वभावतः शुभ ग्रह है इस कारण इस का दोष नहीं होगा। हमारा भी यही मत है। यदि शुभ ग्रह केन्द्र का स्वामी होने के साथ-साथ ३, ६, ११ का स्वामी हो तो केन्द्र का स्वामी होने के कारण दोषयुक्त हो जावेगा।

यहाँ पर मन्त्रेश्वर ने कुछ अपने विचार भी दिये हैं। वे लिखते हैं कि :

(१) यदि कोई ग्रह दो भावों का स्वामी हो तो यह देखना चाहिए कि उसकी मूल त्रिकोण, राशि कहां पड़ी है। ३१वें पृष्ठ पर यह बताया गया है कि मूल त्रिकोण राशि कौन-सी है और स्वराशि कौन-सी। यह मूल त्रिकोण राशि जहाँ पर पड़ी हो अर्थात् जो भाव वहाँ पर हो उसी के हिसाब से शुभाशुभत्व स्थिर करना चाहिए। मुख्यता मूल त्रिकोण राशि की होती है।

(२) यदि कोई ग्रह—जो दो राशियों का स्वामी होता है, अपनी दोनों राशियों में से किसी एक में स्थित है तो दोनों राशियों के स्वामित्व का प्रभाव उस ग्रह की दशान्तर्दशा में होगा। लग्न से गिनने पर पहले जो राशि आवे—दशा या अन्तन्तर्दशा के पूर्वार्द्ध में उसका फल और जो राशि बाद में आवे उसका फल उत्तरार्द्ध में समझना चाहिए। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति का तुला लग्न है तो पहले वृश्चिक आई, इस कारण पूर्वार्द्ध में वृश्चिक का फल और उत्तरार्द्ध में मेष का फल होगा।

(३) मन्त्रेश्वर का यह भी मत है कि यदि किसी ग्रह की दो राशियों में से एक अच्छे भाव में पड़े और एक अनिष्टभाव में पड़े और ग्रह इष्ट भाव वाली राशि में पड़ा हो तो अच्छा ही फल करेगा। जो दूसरा अनिष्ट भाव है उसके स्वामित्व का कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति का कन्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्न हो और शनि मकर में हो तो वह पंचम और षष्ठ दो भावों

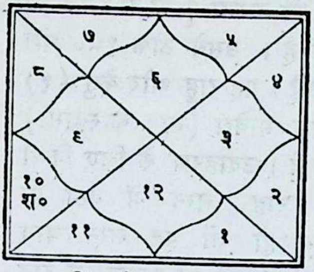

का स्वामी हुआ। पंचम इष्ट अच्छा (शुभ) भाव है। षष्ठ-अनिष्ट (खराब, अशुभ) भाव है ऐसी स्थिति में यदि शनि मकर में हो तो वह पाँचवें घर के मालिक होने का शुभ प्रभाव ही करेगा। छठे घर के मालिक होने का दुष्प्र-भाव नहीं करेगा।

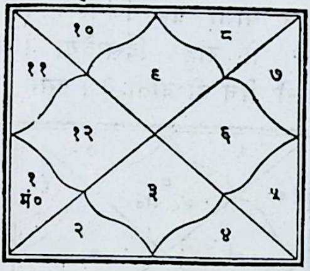

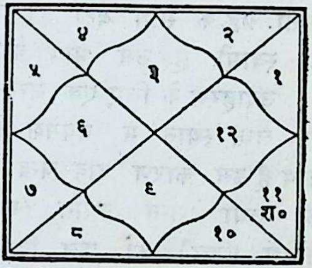

उपर्युक्त धन लग्न वाली कुण्डली में मङ्गल पाँचवें और १२वें घर का स्वामी है किन्तु पाँचवें घर में बैठा है। पंचम शुभ स्थान है द्वादश अशुभ स्थान है इसका कारण उसे शुभाशुभ दोनों प्रभाव दिखाना चाहिए किन्तु वह मेष में बैठा है इस कारण पाँचवें घर के मालिक होने का शुभ प्रभाव ही दिखलायेगा। इसी प्रकार मिथुन लग्न वाली कुण्डली में यदि शनि कुम्भ में बैठा हुआ नहीं होता तो अनिष्ट प्रभाव दिखलाता किन्तु कुम्भ में बैठने से नवम (त्रिकोण) स्वामित्व का शुभ प्रभाव दिखलायेगा। अष्टमेश होने का दोष नहीं होगा। मीन लग्नको लिए बुध मिथुनमा रहेको आती

नोट:—विशेष विवरण के लिए देखिए हमारी "भावार्थ बोधिनी फल दीपिका" (हिन्दी) का अध्याय १६वाँ, पुस्तक-प्राप्ति स्थान: गोयल एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राहु और केतु का विचार—राहु और केतु दिखाई देने वाले ग्रह नहीं हैं। जिस स्थान पर चन्द्रमा का रास्ता पृथ्वी के रास्ते को काटता है उस स्थान का नाम राहु है। उससे ठीक १८० अंश दूरी का बिन्दु (स्थान) केतु कहलाता है। यह राहु और केतु (१) जिस-जिस भाव में हों, (२) जिस-जिस भावेश (भाव के स्वामी) के साथ हों उसका-सा फल दिखलाते हैं। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति की जन्म-कुण्डली में राहु लग्न में बैठा हो और किसी अन्य ग्रह के साथ न हो तो वह लग्न स्थान और लग्नेश का फल दिखावेगा। यदि किसी की कुण्डली में राहु किसी ग्रह के साथ बैठा हो तो साथ वाला ग्रह जिस भाव का स्वामी है उस भाव का फल भी राहु दिखावेगा।

उदाहरण के लिए एक जन्म-कुण्डली नीचे दी जाती है। इसमें राहु लग्न स्थान में नवमेश के साथ है इस कारण राहु चन्द्रमा का तथा लग्न स्थान (एवं लग्नेश मंगल) का फल दिखलावेगा। इसी प्रकार सप्तम स्थान में केतु बृहस्पति के साथ है। इस कारण केतु बृहस्पति का

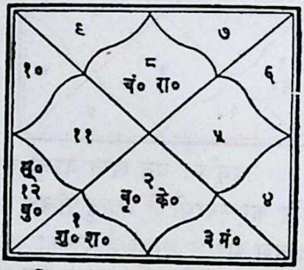

(बृहस्पति दूसरे और पाँचवें घर का मालिक है इस कारण) दूसरे और पाँचवें घर के मालिक का तथा सप्तम स्थान का और (सप्तम स्थान का स्वामी शुक्र है) कारण इस शुक्र का फल प्रवलता से दिखायेगा।

आगे यह बताया जायेगा कि ग्रहों का सम्बन्ध किस प्रकार युति-दृष्टि द्वारा होता है। बहुत से विद्वान् तो यह मानते हैं कि यदि अन्य ग्रह से राहु-केतु दृष्टि द्वारा भी 'संयुक्त' हों तो भी सम्बन्ध हुआ, किन्तु कुछ अन्य विद्वानों का मत है कि राहु-केतु की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किसी ग्रह से युति हो तभी सम्बन्ध मानना चाहिए। यदि दृष्टिवश सम्बन्ध माना जाये तो राहु या केतु से जो सप्तम ग्रह हो उस ग्रह को भी राहु-केतु का ही सम्बन्धी मानकर-उस ग्रह का भी राहु-केतु पर प्रभाव होगा, यह मानना पड़ेगा। "सुश्लोक शतक" में लिखा है कि :

यत्र भावे स्थितौ राहुकेतू तत्फलदायकौ।
यद्ग्रहस्य तु सम्बंधी तत्फलाय तमो ग्रहः॥
यद्युक्तः सप्तमो यस्मात् तत् सम्बंधी तमोग्रहः।

यदि यह सिद्धान्त माना जाये तो ऊपर दी हुई कुण्डली में राहु न केवल लग्न–लग्नेश तथा चन्द्रमा का फल करेगा किन्तु बृहस्पति का भी फल करेगा क्योंकि राहु से सप्तम बृहस्पति है।

(१) यदि राहु या केतु त्रिकोण में बैठे हों और किसी केन्द्रेश से सम्बन्ध करते हों अर्थात् केन्द्रेश भी त्रिकोण में बैठे हुए राहु या केतु के साथ हो तो राजयोग होता है अर्थात् ऐसा त्रिकोण में बैठा हुआ राहु या केतु अपनी दशांतर्दशा में उत्तम फल दिखाता है। राजयोग का फल किस प्रकार का होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि पंचम में बैठा है या नवम में–तथा लग्नेश, चतुर्थेश, सप्तमेश या दशमेश किसके साथ बैठा है। इन विचारों के अतिरिक्त जिस ग्रह के साथ बैठा है वह किस-किस बात का कारक है यह भी विचार करना चाहिए। (देखिए पृष्ठ ७०-७१)

(२) यदि राहु या केतु केन्द्र में बैठे हों और त्रिकोणेश (नवम या पंचम के स्वामी) के साथ हों तो भी विशेष राजयोग होता है। जैसा ऊपर बताया गया है–किस केन्द्र में बैठा है और किस त्रिकोणेश के साथ बैठा है इस तारतम्य से किस प्रकार का राजयोग होगा यह निर्णय करना पड़ेगा।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिष अध्ययन अनुसन्धान केन्द्र
क्रा. जि. ३३ नं. वाड नगर पचायत
१०/१०० ज्ञानेश्वर काठमाण्डौ
नेपाल

पन्द्रहवां प्रकरण

राजयोग-विचार

केन्द्रेश और त्रिकोणेश का आपस में सम्वन्ध होना 'योग' कहलाता है। 'राज' शब्द ऐश्वर्य-बोधक है इस कारण कुण्डली में कोई भी योग हो, यदि उसका फल शुभ, धनकारक, समृद्धि या उत्कर्ष करने वाला होता है तो उसे ज्योतिषियों की भाषा में 'राजयोग' कहते हैं। ऐसा राजयोग किस हद तक फल दिखायेगा यह सारी कुण्डली की वलशालिता पर, अन्य ग्रहों के बलाबल पर, राजयोग के खंडन करने वाले योगों पर तथा देश, काल, पात्र पर निर्भर होता है। योगों की संख्या अपरिमित है। यहाँ केवल त्रिकोण और केन्द्र के स्वामी का योग 'राजयोग' होता है, यह वतलाया जाता है। बहुत से लोग केन्द्रेश व त्रिकोणेश योग को "लक्ष्मी-विष्णु संयोग" भी कहते हैं। शुभ फल होना स्वाभाविक ही है। किसी भी केन्द्रेश का किसी भी त्रिकोणेश से संवन्ध हो तो वह राजयोगकारक होता है। केन्द्रेश-त्रिकोणेश में भी तारतम्य होता है। नवमेश-दशमेश का संवन्ध जितना योगकारक हो सकता है उतना चतुर्थेश-पंचमेश का नहीं। इसी प्रकार किसी व्यक्ति की जन्म-कुण्डली में नवमेश-दशमेश दोनों एक साथ दशम में बैठे हों तो अधिक योगकारक होंगे। यही दोनों ग्रह यदि एक साथ अष्टम में बैठे हों तो उतना शुभ फल कैसे दिखा सकते हैं? यह सब अपनी वुद्धि से ऊहापोह करके समझना चाहिए। इसके अतिरिक्त एक बात की ओर विशेष ध्यान दिलाया जाता है।

"केन्द्रेश-त्रिकोणेश का योग जब अन्य दुष्ट योग से दूषित न हो तब ही विशेष फलदायक होता है।" इसके दो अर्थ हैं:

(१) यदि केन्द्रेश-त्रिकोणेश का योग होने के साथ-साथ ३, ६,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

११ का पाप ग्रह स्वामी हो, उसके साथ भी सम्बन्ध होता हो या अष्टमेश (चाहे वह शुभ हो या पाप हो) उससे भी सम्बन्ध होता हो तो विशेष फलदायक नहीं होता।

(२) दूसरा अर्थ यह है कि त्रिकोणेश का केन्द्रेश से तो संबंध हुआ परन्तु केन्द्रेश पापग्रह है और ११ वें का भी स्वामी है तो यह योग विशेष फलदायक नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए मेष लग्न वाले व्यक्ति को सूर्य-शनि का योग उतना फलदायक नहीं हो सकता क्योंकि सूर्य त्रिकोणेश अवश्य है। किन्तु शनि केन्द्रेश (दसवें का मालिक) होने के साथ-साथ 'आय-पति' (ग्यारवें का मालिक) भी है। या दूसरा उदाहरण मेष लग्न वाले का ही लीजिए—शनि और बृहस्पति का सम्बन्ध हो तो, बृहस्पति नवमेश के साथ-साथ १२वें घर का मालिक हो जाता है और १२ वें घर का मालिक होना अच्छा नहीं समझा जाता, इस कारण शनि-बृहस्पति योग नवमेश-दशमेश योग होने के साथ-साथ व्ययेश—एकादशेश योग, दशमेश-व्ययेश (१२ वें का मालिक) योग करता है। इस कारण "विशेष फलदायक" नहीं हो सकता। यहाँ "विशेष फलदायक"—इन शब्दों की ओर ध्यान दिलाया जाता है। फलदायक तो होगा किन्तु उतना नहीं।

(३) पहले बता चुके हैं कि केन्द्रेश यदि शुभग्रह हो तो शुभ नहीं करता—यह एक प्रकार का दोष हुआ। अन्य प्रकार के दोष ७०वें पृष्ठ पर बताये गये हैं—(जैसे कोई ग्रह नीच हो) अस्तंगत हो, शत्रुराशि में हो—नीचवर्ग में हो आदि। ये सब दोष हों—तो इस प्रकार के कोई दोष मौजूद होने पर भी केन्द्र त्रिकोण का सम्बन्ध शुभ फलदायक होगा—"विशेष फलदायक" नहीं होगा—फलदायक तो होगा ही। इसीलिए "सुरलोक शतक" में लिखा है :

नोट—योगों की विशेष जानकारी के लिए देखिए लेखक की अन्य पुस्तक—'योग रत्नाकर'। जिसमें एक सहस्र से अधिक योगों का संग्रह है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आयुस्त्रिषष्ठायेशानामसम्बन्धी च यो ग्रहः ।
पुनस्तादृशकेन्द्रेशसम्बन्धी स तु राज्यदः ।
चन्द्रज्ञगुरु काव्यानां मध्ये य केन्द्रनायकः ।
स दुष्टोपि च केन्द्रेशसम्बन्धी राज्यदायकः ।
आयुस्त्रिषष्ठलाभेशः स एव यदि केन्द्रपः ।
दोषयुक्तोप्ययं राज्यं दत्ते संबन्धितस्ततः ।।
एवं त्रिकोणनाथोऽपि दोषयुक्तोऽपि राज्यदः ।
एवं त्रिकोणकेन्द्रेशौ द्वावपीह तु राज्यदौ ।।

सम्बंध किसे कहते हैं—सम्बन्ध चार प्रकार का होता है :

(१) यदि दो ग्रह एक राशि में बैठे हों तो दोनों में पूर्ण सम्बन्ध हुआ। जैसे मेष राशि में सूर्य-मंगल बैठे हों, या तुला राशि में चंद्रमा-बृहस्पति बैठे हों इत्यादि।

(२) यदि ग्रह 'क' जिस राशि में बैठा है उस राशि का स्वामी 'ख' ऐसी राशि में बैठा हो जिसका स्वामी 'क' हो, तो अन्योन्याश्रय सम्बन्ध हुआ। जैसे सूर्य वृश्चिक में बैठा हो, और वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल सिंह राशि में हो। अर्थात् सूर्य मंगल के घर (राशि) में और मंगल सूर्य के घर (राशि) में। इसे भी पूर्ण सम्बन्ध माना है।

(३) तीसरा दृष्टि-सम्बन्ध–जब दोनों ग्रह एक-दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखते हों तो दोनों में सम्बन्ध माना जाता है। दोनों ग्रहों में परस्पर पूर्ण दृष्टि तभी होगी जब एक-दूसरे से सातवीं राशि में

नोट—इस तृतीय प्रकार के सम्बन्ध का विचार करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि केवल सप्तम दृष्टि होने पर ही सम्बन्ध होता है। यदि नवम, पंचम दृष्टि हो तो आधी दृष्टि हुई, इसलिए योग या सम्बन्ध का आधा फल होगा यह समझना गलत है। योग का फल तभी पूरा होता है जब हरेक शर्त पूरी हो। जैसे आधी चीनी डालने से दूध कुछ तो मीठा हो जायेगा, ऐसे चौथाई या पौनी दृष्टि होने से कुछ तो योग का फल होगा, यह नहीं समझना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हों। उदाहरण के लिए सूर्य मिथुन में हो, चन्द्रमा धनु में हो तो दोनों की एक-दूसरे पर पूर्ण (सप्तम) दृष्टि हुई, इस कारण सूर्य-चंद्रमा में पूर्ण सम्बन्ध हुआ।

(४) चौथा सम्बन्ध तब होता है जब ग्रह 'क' जिस राशि में बैठा है उस राशि के स्वामी 'ख' को पूर्ण दृष्टि से देखता हो किंतु ग्रह 'ख' ग्रह 'क' को—पूर्ण दृष्टि से न देखे। उदाहरण के लिए मंगल सिंह राशि में है और सूर्य मीन में है तो मंगल तो सूर्य के घर में बैठकर सिंह को पूर्ण दृष्टि से देखता है किन्तु सूर्य मंगल को नहीं देखता।

इन चारों प्रकारों के सम्बन्ध में सबसे अधिक बलवान् नं० (२) उसके बाद नं० (३) है। संबन्ध नं० (४) मध्यम बलवान् है और नं० (१) सबसे कम बलवान् है:

मुख्यश्चान्योन्यभे खेटौ चान्योन्यं वापि पश्यतः।
संबंधो मध्यमश्चान्यो द्वयोरेकतरो यदा ॥१॥
भवेदेकतरस्थाने तं चापि यदि पश्यति।
एकराशौ यदा द्वौचेत् तदा तेभ्योऽधमः स्मृतः ॥२॥

प्रबल राजयोग—यदि दशम और नवम स्थान के स्वामी एक-दूसरे के स्थान में हों अर्थात् दशमेश नवम में और नवमेश दशम में हो तो प्रबल राजयोग होता है।

(२) यदि दशमेश नवमेश दोनों नवम स्थान में हो तो भी प्रबल राजयोग होता है।

(३) यदि दशमेश नवमेश दोनों दशम स्थान में हों तो प्रबल राजयोग होता है।

नोट—मंगल की ८ वीं दृष्टि भी पूर्ण होती है।

नोट—दशमेश-नवमेश दोनों एक साथ किसी भी स्थान में हों या परस्पर सम्बन्ध करते हों तो शुभ फल देने वाला योग होता है। यह पहले बताया जा चुका है, किन्तु वह प्रबल राजयोग की गणना में नहीं आता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) "पाराशरी" की "उद्योत टीका" के अनुसार यदि नवमेश-दशमेश दोनों में से एक भी अपने स्थान में हो तो प्रबल राज योग होता है ।

"......उभयोर्मध्ये एक एव वा निजस्थाने निवसेत्तदापि राजयोगकारकौ भवतः ।"

किन्तु विनायक शास्त्री जी की संस्कृत टीका के अनुसार यदि दशमेश नवम में हो या नवमेश दशम में हो तभी प्रबल राजयोग होता है । पंडित विनायक शास्त्री के मतानुसार दशमेश किसी भी त्रिकोण में हो और नवमेश किसी भी केन्द्र में हो तो भी राजयोग होता है

"......यथा कर्कलग्ने केन्द्रेशो भौमो नवमे योगकारकः ।

"अथवा त्रिकोणेशो गुरुः सप्तमे योगकारकः ।।"

(५) 'प्रकाशा' नामक संस्कृत टीका के अनुसार—"केन्द्रेश त्रिकोण में हो और त्रिकोणेश केन्द्र में हो यह एक योग हुआ । पहले से यह कुछ न्यून है । केन्द्रेश—त्रिकोणेश दोनों केन्द्र में हों या त्रिकोण में हों यह दूसरा योग हुआ । यह उससे भी न्यून है । केवल केन्द्रेश त्रिकोण में हो अथवा केवल त्रिकोणेश केन्द्र में हो यह तीसरा योग है । यह सबसे न्यून है ।"

(६) यदि दशमेश का नवम या पंचम किसी भी त्रिकोणेश से सम्बन्ध हो तो राजयोग-कारक होता है । "पाराशरी" में शब्द हैं 'बली केन्द्रनाथ' इसका टीकाकारों ने यह अर्थ किया है कि चतुर्थ की अपेक्षा सप्तम; सप्तम की अपेक्षा दशम बलवान् होता है । इसलिए 'दशमेश' अर्थ लेना । किन्तु इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि यदि किसी भी त्रिकोणेश का "बली केन्द्रनाथ" (उच्च, स्वगृही स्वनवांश, शुभस्थान-स्थित, शुभग्रह-दृष्टि आदि के कारण बलवान्) के साथ सम्बन्ध हो तो भी सुयोग होता है । इस मत के अनुसार यदि बली केन्द्रेश का सम्बन्ध नवमेश से हो या पंचमेश का बली दश-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेश से सम्बन्ध हो तो भी विशेष राजयोग होता है।

(७) यदि योगकारक ग्रह जैसे वृष और तुला लग्न वाले को शनि, कर्क और सिंह लग्न वाले को मंगल, कुंभ लग्न वाले को शुक्र अपनी उच्च, स्वगृह, मूल त्रिकोण, स्ववर्ग (नवांश आदि में हों) तो भी उत्तम योग होता है।

(८) यदि राजयोग-कारक नवमेश या दशमेश की दशा हो और शुभग्रह की अन्तर्दशा हो तो—ऐसे शुभ ग्रह का चाहे नवमेश या दशमेश से सम्बन्ध न होता हो तो भी योगफल होता है। इसी प्रकार यदि किसी शुभग्रह की महादशा हो और उससे नवमेश या दशमेश का सम्बन्ध न भी हो तो भी नवमेश या दशमेश की अन्तर्दशा में शुभफल होता है।

(९) जो ग्रह स्वयं पापी भी हैं वे (अपने दशा-काल में) यदि योगकारक से सम्बन्ध रखते हों तो भी उन योगकारक ग्रहों की अन्तर्दशा में योगफल देते हैं।

(१०) यदि कोई केन्द्रेश एक ही त्रिकोणेश से सम्बन्ध करे तो राजयोग और यदि दोनों त्रिकोणेश से सम्बन्ध करें तो विशेष राजयोग होता है। इसी प्रकार यदि पंचमेश केवल एक ही केन्द्रेश से योग करे तो साधारण राजयोग; एक से अधिक केन्द्रेशों से सम्बन्ध करे तो विशेष राजयोग समझना चाहिए। इसी प्रकार यदि नवमेश एक केन्द्रेश से सम्बन्ध करे तो राजयोग; एक से अधिक केन्द्रेशों से सम्बन्ध करे तो विशेष राजयोग समझना चाहिये।

नवमेश, दशमेश की शुभकारिता का अपवाद :

(१) ऊपर नवमेश-दशमेश-सम्बन्ध को बहुत ही प्रबल राज-

नोट—उपर्युक्त (८) और (९) में अन्तर यह है कि योगकारक ग्रह के साथ शुभग्रह का सम्बन्ध हो या न हो, उस शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में भाग्योदय हो जाता है। किन्तु पापग्रह की महादशा में यदि उस पापग्रह का योगकारक ग्रह से सम्बन्ध हो तभी योगकारक की अन्तर्दशा में योगफल होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योग बता चुके हैं। किंतु इसका अपवाद भी है। यदि कोई ग्रह नवमेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी हो तो वह योगकारक नहीं हो सकता। जैसे मिथुन लग्न वाले व्यक्ति की कुण्डली का विचार करते समय शनि को त्रिकोणेश मानकर किसी शुभ योग का विचार नहीं करना। इसी प्रकार मेष लग्न वाले व्यक्ति की कुण्डली में दशम और लाभ दोनों का स्वामी शनि होता है; इस कारण मेष लग्न की कुण्डली में शनि से—दशमेश सम्बन्धी जितने योग कहे हैं उन सब का विचार नहीं करना। कन्या लग्नमा शनि, बृहस्पति योग राजयोग हुदैन.

(२) बहुत से विद्वानों के अनुसार यदि (क) दशमेश लाभेश से सम्बन्ध करे तो भी राजयोग भंग होता है और (ख) नवमेश अष्टमेश से सम्बन्ध करे तो भी शुभ फल भग होता है।

(३) जब नवमेश, दशमेश—सबल त्रिकोणेश और केन्द्रेश की—अष्टमेश, लाभेश होने के कारण ऐसी दुर्दशा मान ली गई कि उनको योगकारक होकर शुभ फल करने में अक्षम मान लिया तो फिर कोई अन्य त्रिकोणेश, अष्टमेश हो—या कोई अन्य केन्द्रेश, लाभेश हो तो वह कैसे राजयोग देने में समर्थ होंगे? अर्थात् नहीं होंगे। इस कारण प्रबल राजयोग-सम्बन्धी जो विचार दिये गये हैं उनमें उपर्युक्त प्रकार से दूषित केन्द्रेश, त्रिकोणेश की योगकारकता का विचार नहीं करना चाहिए। श्री वेताल शास्त्री लिखते हैं कि "जो त्रिकोणेश अष्टमेश भी हो अथवा जो केन्द्रेश लाभेश भी हो उनके मात्र सम्बन्ध से योग नहीं होता। जो अन्य त्रिकोणेश अथवा अन्य केन्द्रेश का भी सम्बन्ध हो तो अवश्य योग होगा।" मेष लग्नमा शनि र बृहस्पतिबाट योग हुदैन

पंडित वेताल शास्त्री जी के मतानुसार हम एक उदाहरण

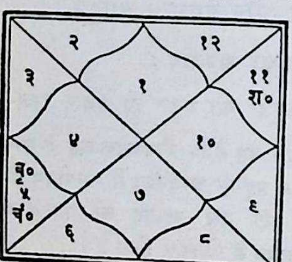

उपस्थित करते हैं। मेष लग्न वाली साथ की कुण्डली में शनि दशमेश होने के साथ-साथ लाभेश भी है, इस कारण शनि और वृहस्पति का सम्बन्ध (बृहस्पति नवमेश है) योगफल नहीं उत्पन्न कर सकता किंतु बृहस्पति नवमेश है और चंद्रमा चतुर्थेश है इस कारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बृहस्पति चंद्रमा का योग तो शुभ फल करेगा ही यह बात ११७ वें पृष्ठ पर समझाई गई है। साधारण फल तो होगा ही—विशिष्ट राजयोग फल नहीं होगा यह स्मरण रखना चाहिए।

बहुत विशिष्ट राजयोग—(१) यदि लग्नेश और दशमेश दोनों एक साथ लग्न में हों तो ऐसा मनुष्य बहुत विख्यात होता है।

(२) यदि लग्नेश और दशमेश दोनों दशम में हों तो भी उपर्युक्त (१) में कहा गया शुभ फल होगा।

(३) यदि लग्नेश दशम में और दशमेश लग्न में हो तो भी विशिष्ट राजयोग फल होता है।

(४) नवमेश, दशमेश दोनों (क) दशम में हों या (ख) दोनों नवम में हों या (ग) नवमेश दशम में; दशमेश नवम में हो तो विशिष्ट राजयोग होता है।

ऐसे योग वाले व्यक्ति विशिष्ट ख्यातिमान्, विजयी, वीर्यवान्, पराक्रमी, संग्राम, विवाद आदि में जयशाली होते हैं।

इसी प्रकार लग्नेश व चतुर्थेश के सम्बन्ध से मनुष्य सुखी होता है। लग्नेश व पंचमेश का सम्बन्ध होने से मनुष्य विद्वान् और बुद्धिमान् होता है। लग्नेश, सप्तमेश सम्बन्ध से सत्कलत्रवान् (अच्छी पत्नी वाला) और सत्कर्म करने वाला होता है। लग्नेश-सप्तमेश सम्बन्ध होने से मनुष्य भाग्यवान् होता है। पंचम-दशमेश सम्बन्ध से राजकार्यों में बुद्धिमान् होता है, पंचमेश-चतुर्थेश सम्बन्ध से बुद्धि का सदुपयोग करने के कारण सुखी होता है। पंचममेश-सप्तमेश सम्बन्ध से बुद्धिमती पत्नी प्राप्त होने के कारण सद्गृहस्थ होता है। नवम-चतुर्थेश सम्बन्ध होने से भाग्योदय होने के कारण सुखी होता है तथा नवमेश-सप्तमेश सम्बन्ध से भाग्यशाली पत्नी की प्राप्ति से सद्गृहस्थ होता है। नवमेश-दशमेश सम्बन्ध से भाग्यसुख और राज्यसुख प्राप्त होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोलहवाँ प्रकरण

मारक-विचार

जन्म-लग्न से ८वें भाव को आयु का स्थान कहते हैं और इस आठवें भाव से आठवें (अर्थात् जन्म लग्न से तीसरे) भाव को भी आयु-स्थान कहते हैं। आयु विचार में इन दोनों में मुख्यता आठवें भाव की है। इनके व्यय स्थान (१२वें स्थान) को मारक-स्थान कहते हैं — आयु का व्यय – खर्च हो जाना, समाप्त हो जाना ही मृत्यु है। इसी कारण आठवेंका व्यय स्थान (आठवें से बारहवाँ स्थान) लग्न से सप्तम हुआ तथा तृतीये से व्यय स्थान (तृतीय से बारहवाँ स्थान) लग्न से द्वितीय स्थान हुआ। ये दोनों स्थान लग्न से द्वितीय और सप्तम हैं। सप्तम स्थान प्रत्येक कुण्डली में "मारक स्थान" होता है। मारक स्थान का स्वामी मारक होता है अर्थात् मारने वाला होता है। मृत्यु सबसे अधिक कष्टदायक वस्तु है। उसकी अपेक्षा धन-नाश, मान-नाश अप्रतिष्ठा, दीनता आदि कम कष्टदायक हैं। इस कारण प्रत्येक मारक की दशा में जब मारक की अन्तर्दशा आती है तब मृत्यु नहीं होती, किन्तु विपत्ति, उलझन, कलह, रोग, मान-नाश, धन-नाश आदि घटनायें अपना फल दिखाती हैं। ऊपर दो आयु के स्थान बताये गये हैं। उन दोनों में चूँकि अष्टम तृतीय की अपेक्षा प्रबल है इसी कारण अष्टम से बारहवाँ अर्थात् लग्न से सप्तम, तृतीय से द्वादश—अर्थात् लग्न से द्वितीय की अपेक्षा विशेष बलवान् है।

यह बतलाने का तात्पर्य यह है कि वैसे तो अस्त, नीच, शत्रु-राशि-स्थत, दुःस्थान-स्थित आदि अनेक कारणों से ग्रह अनिष्ट प्रभाव दिखलाता है और द्वितीयेश और सप्तमेश में जो अधिक दुष्ट और अधिक अनिष्ट हो वह अधिक प्रभाव दिखलावेगा। किंतु यदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दोनों एक ही कक्षा के हों तो उन दोनों में कौन विशेष मारक-प्रभाव दिखावेगा यह स्पष्ट करने के लिए बताया है कि द्वितीयेश की अपेक्षा सप्तमेश विशेष मारक होता है।

द्वितीय स्थान या सप्तम स्थान के न केवल स्वामी ही मारक होते हैं किन्तु उनसे सम्बन्ध रखने वाले ३, ६, ११ के स्वामी यदि पापग्रह हों तो वे भी अपनी दशान्तर्दशा में मारक प्रभाव दिखाते हैं। इसके अतिरिक्त यदि ३, ६, ११ के स्वामी पापग्रह होकर द्वितीय या सप्तम स्थान में बैठे हों तो भी वे मारक का-सा ही प्रभाव दिखाते हैं। यहाँ तीन बातें बतलाई गई हैं—(क) द्वितीयेश, और सप्तमेश का मारक होना। (ख) द्वितीय और सप्तम स्थानों में स्थित पापग्रहों का मारक होना। (ग) द्वितीयेश और सप्तमेश से सम्बन्ध रखने वाले पापग्रहों का मारक होना। सम्बन्ध चार प्रकार का होता है यह ११८-१९ पृष्ठ पर बताया जा चुका है। बहुत-से विद्वानों का मत यह है कि पाप-ग्रह द्वितीय और सप्तम के स्वामी के साथ हो तभी मारक प्रभाव दिखाता है। अन्य तीन प्रकार के सम्बन्ध होने से मारक प्रभाव नहीं दिखाता।

किस ग्रह की दशांतर्दशा मृत्यु करेगी—यह निर्णय करने के पहले यह विचार करना चाहिए कि इस व्यक्ति की अल्पायु है, या मध्यायु या दीर्घायु।

अल्पायु, मध्यायु व दीर्घायु विचार—(१) यदि लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश बलवान् हों तो प्रायः दीर्घायु होती है। किन्तु लग्नेश को अष्टमेश की अपेक्षा विशेष बलवान् होना चाहिए।

(२) केन्द्र में शुभग्रह हों और पापग्रह (मंगल- शनि, राहु) ३, ६, ११वें स्थान में हों तो मनुष्य प्रायः पूर्ण आयु पाता है।

(३) यदि पुरुष की कुण्डली में सूर्य और स्त्री की कुण्डली में चंद्रमा बलवान् हो तो ऐसा पुरुष या स्त्री प्रायः दीर्घायु होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) **बहुत से आयु के योग**—६०, वर्ष की आयु हो,—७० वर्ष की आयु हो—आदि योग अनेक संस्कृत ग्रंथों में स्थान-स्थान पर प्राप्त होते हैं। इन आयु-योगों का, राजयोगों का, धन-योगों का, दरिद्र-योगों का तथा विविध प्रकार के योगों का संग्रह हमारे "योग रत्नाकर" नामक ग्रंथ में देखिए।

जैमिनि का मत—आयु-विचार में प्रायः जैमिनि का मत विशेष प्रचलित है — (१) लग्नेश, अष्टमेश, (२) लग्न, चन्द्रमा, (३) लग्न, होरा लग्न से आयु का विचार किया जाता है। होरा लग्न बनाना आगे बताया गया है। (देखिये पृष्ठ १२७)

यहाँ पुनः इस ओर ध्यान आर्कषित किया जाता है कि मेष, कर्क, तुला और मकर—ये चार 'चर' राशि हैं। वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ—ये चार 'स्थिर' राशि हैं। मिथुन, कन्या, धनु और मीन—ये चार 'द्विस्वभाव' राशि हैं।

(क) यदि लग्नेश और अष्टमेश दोनों चर राशि में हों या एक स्थिर राशि में, दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो तो दीर्घायु योग होता है। यदि दोनों द्विस्वभाव राशियों में हों अथवा एक चर राशि में, दूसरा स्थिर राशि में हो तो मध्यायु योग होता है। यदि दोनों स्थिर राशि में हों, या एक चर राशि में, दूसरा द्विस्वभाव में हो तो अल्पायु योग होता है। लग्नेश और अष्टमेश—इन दोनों से उपर्युक्त विचार करना चाहिए।

(ख) जैसे ऊपर लग्नेश और अष्टमेश से विचार करना बतलाया गया है, उसी प्रकार लग्न और चंद्रमा दोनों चर, स्थिर या द्विस्वभाव, किन राशियों में हैं इस से भी दीर्घायु योग बनता है, या मध्यायु, या अल्पायु यह निर्णय करना उचित है।

(ग) किसी-किसी विद्वान् के मत से लग्न और चन्द्रमा की बजाय शनि और चंद्रमा से भी विचार करना विशेष उपयुक्त है।

(घ) जैसे ऊपर लग्नेश और अष्टमेश से विचार करना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बताया गया है उसी प्रकार जन्म-लग्न और होरालग्न से भी विचार करना उचित है कि दोनों चर, स्थिर, द्विस्वभाव—किस प्रकार की राशियों में हैं।

होरा लग्न—होरा लग्न बनाना नीचे बताया जाता है।*

सूर्योदय से कितनी देर बाद जन्म हुआ है यह देखिये। अर्थात् इष्टकाल क्या है ? मान लीजिए किसी का इष्टकाल ३० घड़ी ५६ पल है इसको १२ से गुणा करने से अंश हुए—३७१–४८ (३७१ अंश ४८ कला); इन अंशों में ३० का भाग देने से आया १२ राशि ११ कला ४८ विकला। राशियों में १२ का भाग देना चाहिए जो शेष बचे वह स्थापित करना उचित है। राशियों में १२ का भाग देने से शेष बचा ०—११—४८। मान लीजिए किसी का जन्मकालीन तात्कालिक सूर्य ७—२६—५१—२४ है। इस तात्कालिक सूर्य में जो ऊपर ०—११—४८ आया है वह जोड़िए। लग्न विषम सूर्यको लग्न 10–20–24–30/

	रा०	अ०	क०	वि०
	७	२६	५१	२४
	०	११	४८	०
योग—	८	११	३६	२४

यह होरा लग्न स्पष्ट हुआ अर्थात् होरा लग्न 'धनु' हुआ। जैसे लग्नेश-अष्टमेश से दीर्घायु, मध्यायु, अल्पायु विचार करना बताया गया है उसी प्रकार जन्म-लग्न तथा होरा-लग्न से भी विचार करना चाहिए कि दीर्घायु, मध्यायु और अल्पायु कौनसा योग बनता है।

* यह उदाहरण "जैमिनि पद्यामृत" नामक संस्कृत ग्रंथ से लिया गया है। विशेष विवरण के लिए देखिए जैमिनि सूत्रानुसार आयुविचार के सिद्धान्त जो महामहोपाध्याय स्वर्गीय पंडित दुर्गाप्रसाद जी द्विवेदी ने उपर्युक्त संस्कृत-ग्रंथ में विस्तार से समझाये हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊपर जो चार प्रकार बताये गये हैं उनमें से तीन से जो योग आवे वह मानना चाहिए। यदि किसी से दीर्घायु, किसी से मध्यायु और किसी से अल्पायु आवे तो दो मतों से जो आवे वह मान्य है। यदि दो मतों से एक योग (दीर्घायु आदि) और अन्य दो मतों से (अल्पायु या मध्यायु)—भिन्न-भिन्न 'आयु' आवे तो यह देखिये कि बृहस्पति केन्द्र में है या नही। (१) बृहस्पति केन्द्र में हो तो अधिक आयु वाला मत मानना चाहिये। (२) यदि लग्न या सप्तम में चन्द्रमा बैठा हो और दो मत से आयु का एक निर्णय आवे—अन्य दो मत से भिन्न निर्णय आवे, तो लग्न और होरालग्न से जो निर्णय आवे उसे मानना चाहिये।

३२ वर्ष तक अल्पायु; ३२ से ६४ वर्ष तक मध्यायु; ६४-से ९६ वर्ष तक दीर्घायु होती है। यहाँ जैमिनि द्वारा आयु-विचार की झलक-मात्र दिखाई गई है। पूर्ण आयु-विचार बहुत कठिन है। बहुत से विद्वानों के अनुसार पिण्डायु, निसर्गायु,अंशायु आदि बनाकर आयु निर्णय करना चाहिए। परन्तु उतनी ज्योतिष की प्रौढ़ता केवल उन विद्वानों को हो सकती है जो वर्षों तक केवल इस ज्योतिष-विद्या में अपना तन, मन, धन, लगावें। ज्योतिष के साधारण प्रेमियों के लिए जो जैमिनि के नियम ऊपर बताये गये हैं—वे ही पर्याप्त हैं।

इस प्रकार जब यह समझ में आ जावे कि दीर्घायु, मध्यायु तथा अल्पायु में कौनसा योग आता है, उस समय में मारक की महादशा और मारक की अन्तर्दशा आवे तब मृत्यु होती है।

यदि वह मारक की दशा तृतीय, पंचम या सप्तम हो तो उसमें मृत्यु होने की विशेष संभावना होती है। ७२वें पृष्ठ पर यह बताया गया है कि महादशा का क्रम निम्नलिखित है :

सू० चं० मं० रा० वृ० श० बु० के० शु० सू० चं० मं० रा० वृ० श०

जन्म के समय यदि राहु की दशा है तो पहली दशा राहु की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीसरी शनि की, पाँचवीं केतु की सातवीं सूर्य की हुई। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिए। अल्पायु, मध्यायु, दीर्घायु, विचार से जो महादशा 'मारक' मानी है—वह यदि तीसरी, पाँचवीं, सातवीं हो तो विशेष अनिष्ट प्रभाव दिखलाती है।

मारकेश

१२४वें पृष्ठ पर यह बताया गया है कि कौन, कौन से ग्रह मारक होते हैं—मारक ग्रह की दशा में मारक ग्रह की अन्तर्दशा मृत्युकारक होती है। यदि दीर्घायु हो और मध्यायु (३२-६४ के बीच में), या अल्पायु (३२ से पहले) के समय मारकग्रह की महादशा—अन्तर्दशा हो तो ऐसी दशा केवल रोग, क्लेश, ऑपरेशन आदि कष्टकारक होती है—जान से नहीं मारती।

यदि उस काल में मारकेश की दशा न आवे—

जैमिनि तथा अन्य मत से किसी की आयु-निर्णय करने के उपरान्त यदि उस समय द्वितीपेश या सप्तमेश की दशा न आती हो तो :—

(१) और यदि बृहस्पति या शुक्र केन्द्र के मालिक होकर मारक स्थान में बैठे हों तो मारक हो सकते हैं—इसमें भी हमारे मत से यह तारतम्य है :—

(क) यदि लग्नेश होकर मारक स्थान में भी बैठेगा तो मारक होने की सम्भावना न्यून है।

(ख) यदि सप्तमेश होकर मारक स्थान में बैठेगा तो संभावना विशेष है।

(२) किसी मारकेश की दशा न आती हो तो १२ वें घर का मालिक—व्ययेश (लग्न-शरीर है—शरीर के स्थान का व्यय—अर्थात् मृत्यु) की दशा में भी मृत्यु हो सकती है।

(३) यदि व्ययेश की दशा भी न आवे तो व्ययेश से सम्बन्ध करने वाले ग्रह की महादशा, अन्तर्दशा में मृत्यु हो सकती है।

(४) यदि व्ययेश के सम्बन्धी की दशा भी न हो तो शुभग्रह

---

*११०वें पृष्ठ पर सूर्य और चन्द्रमा के मारकत्व पर विशेष विचार किया है,—वह भी देखिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की दशा में भी—या अष्टमेश की दशा में भी मृत्यु हो सकती है।

(५) ऊपर जो 'मारकेश' तथा (१), (२) (३) व (४) में जो ग्रह बताये गये—उनकी—किसी की भी महादशा न हो तो—केवल मात्र जो पापी हैं उनकी महादशा तथा अन्तर्दशा में भी मृत्यु हो सकती है। शनि में मंगल, मंगल में शनि, मंगल में राहु, राहु में मंगल, शनि में राहु, राहु में शनि ये सब क्रूर महादशा में क्रूर अन्तर्दशा के उदाहरण हैं।

(६) सूर्य और चंद्रमा प्रायः मारक नहीं होते।

(७) यह भी स्मरण रखना चाहिये कि जो लग्नेश का अधि-मित्र या मित्र हो वह मित्र के घर (लग्न अर्थात् शरीर) का नाश नहीं करता—मारता नहीं है।

(८) जो लग्नेश का अधिशत्रु या शत्रु हो वह अपने शत्रु के घर को (लग्न अर्थात् शरीर को) नष्ट करता है—चाहे मार ही डाले या उतना प्रबल नहीं हो तो पीड़ा अवश्य पहुँचाता है।

शनि की विशेष मारकता—यदि कई ग्रहों की मारकता प्राप्त हो तो (अर्थात् कई ग्रह 'मारक' बनने के अधिकारी हों तो) उन सब में 'शनि' महाराज प्रबल मारकेश माने जाते हैं। जैसे फ़ौज के कई अफ़सर हों तो सबसे बड़ा अफ़सर सलामी लेता है—उसी प्रकार कई ग्रहों के मारक होने पर शनि महाराज को 'मारक' बनने का अधिकार प्राप्त होता है। इस कारण यदि शनि मारक ग्रहों से सम्बन्ध करता हो या स्वयं मारकेश हो तो "प्राण की भेंट" इन्हीं शनि देव को अर्पण की जाती है। उदाहरण के लिए यदि मारकेश की दशा जा रही है और बृहस्पति, शनि, बुध तीनों को 'मारक होने का अधिकार प्राप्त है तो न बृहस्पति मारक होगा (शनि महाराज आगे आकर अपनी भेंट (प्राण) लेने के लिए विराज-मान हैं—इस कारण बृहस्पति की अन्तर्दशा मारक नहीं होगा ?) न बुध; (क्योंकि चाहे बुध को अधिक मारकत्व प्राप्त हो किन्तु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शनि महाराज पहले ही सफ़ाया कर देंगे)।

किन्तु शनि तभी मारक होता है जब इसको स्वयं को मारकता प्राप्त हो या मारकों से सम्बन्ध करे। इसीलिए "सुश्लोक शतक" में लिखा है :

मारकेशस्य सम्बन्धी यदि पापः शनैश्चरः।
मारकः स शनिर्ज्ञेयो नान्ये मारकलक्षणाः ॥

यद्यपि कारक (शुभ प्रभाव दिखाने वाले) और मारक इन दोनों का काफ़ी विश्लेषण ऊपर किया गया है और पाठकों को इस नतीजे पर पहुँचने में कोई दिक्कत नहीं होगी कि कौनसा ग्रह अच्छा प्रभाव दिखलावेगा या कौनसा बुरा—किन्तु फलां ग्रह जान से मार ही डालेगा यह नवीन ज्योतिषियों को कहना उचित नहीं है; क्योंकि आयु-निर्णय करना बहुत कठिन बात है। ऋषियों ने स्पष्ट कहा है कि जन्म से ४ वर्ष तक—माता के दोष से मृत्यु होती है (अर्थात् माता की जन्म-कुण्डली में कोई क्रूर ग्रह पाँचवें भाव में पड़े हों या पाँचवें भाव को देखते हों या पंचमेश निर्बल, दोषयुक्त हो या बृहस्पति नीच, दुःस्थान गत हो)। ४ से ८ वर्ष की अवस्था तक पिता के दोष से बालक की मृत्यु होती है तथा ८ से १२ तक बालक की स्वयं की जन्म-कुण्डली में कोई अनिष्ट ग्रह पड़े हों—उस दोष से अकाल मृत्यु होती है। पराशर ऋषि ने कहा है कि दीर्घायु, मध्यायु, अल्पायु आदि का विचार २४ वर्ष की अवस्था के बाद करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त 'श्रीपतिपद्धति' में स्पष्ट कहा गया है कि 'जो धर्म-कर्म में निरत हैं, विजितेन्द्रिय हैं, पथ्य भोजन करते हैं, द्विजों और देवताओं के भक्त हैं (अर्थात् सदाचारी हैं) उनके विषय में आयु का विचार ठीक बैठता है। जैसे किसी घड़ी की गारंटी ५ वर्ष की है—आप उस घड़ी को अच्छी तरह रखेंगे तो ५ वर्ष चलेगी। अगर आप कभी उसे जेब से गिरा दें या बच्चे को खेलने को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दे दें या लापरवाही से ओस में रख दें तो ऐसी हरकतों से घड़ी जल्दी ही खराब हो जावेगी :

"ये पापलुब्धाश्चौरा ये देवब्राह्मणनिन्दकाः ।
बह्वाशिनश्च ये तेषामकालमरणं ध्रुवम् ॥"

"जो पापी, लोभी चोर या देवताओं और ब्राह्मणों के निन्दक होते हैं, बहुत खाने वाले होते हैं, उनकी अकालमृत्यु होती है ।"*

कहने का तात्पर्य यह है कि जो आयु हम अपने जन्म के समय विधाता से लेकर आते हैं और जो जन्म-कुण्डली से प्रकट होती है उसको हम यम, नियम, प्राणायाम, सदाचारपूर्वक उपभोग कर सकते हैं और मदिरापान आदि दुर्व्यसनों द्वारा—ब्लड प्रेशर, दिल की (और उदर) बीमारी आदि उत्पन्न कर आयु को कम भी कर देते हैं ।

———

सत्रहवां प्रकरण

महादशा तथा अन्तर्दशा का फल

पिछले प्रकरणों में यह बताया जा चुका है कि किस ग्रह को अच्छा समझना—कौनसा ग्रह शुभ फल दिखलावेगा; किसे खराब—अशुभ-फलकारक समझना । यह निर्णय करने के बाद इस नतीजे पर पहुँचना चाहिये कि शुभ फल क्या होगा या अशुभ फल क्या होगा ?

(१) प्रायः ग्रह जिस भाव या जिन भावों का स्वामी होता है उस भाव-सम्बन्धी फल दिखलाता है । स्वगृह, मूलत्रिकोण, उच्चको

(२) जिस भाव में बैठा हुआ होता है उस भाव-सम्बन्धी फल भी दिखलावेगा । बसेको भावको

(३) जिस भाव को देखता हो उस भाव-सम्बन्धी भी फल दिखलावेगा । देखेको भावको

६ लग्न उदाहरण के लिए यह किसी व्यक्ति की जन्म-कुण्डली में छठे तथा

* श्रीपति पद्धति, अध्याय ४, श्लोक ३७-३८ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नवें भाव का मालिक बृहस्पति दशम में बैठा है। और बृहस्पति यदि बलवान् है तो लग्न से द्वितीय स्थान (जहाँ बैठा है उससे पांचवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखने के कारण) धन-स्थान को बढ़ावेगा। दशम में बैठा है इस कारण दशम का फल करेगा और छठे तथा नवें भावों का स्वामी है तो उनका भी फल करेगा।

(४) जिन ग्रहों से सम्बन्ध करता है उन सम्बन्धियों के शुभाशुभ से भी प्रभावित होगा।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक ग्रह की कुछ विशेषता—कुछ खास तासीर होती है—कुछ अपना प्रभाव होता है। ग्रह कहीं भी बैठा हो कुछ विशेष बातों का कारक होता है। (देखिए पृष्ठ ७०-७१)

उदाहरण—कहने का तात्पर्य यह है कि ऊपर बताया गया है कि बृहस्पति पुत्रकारक है, तो यदि बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो चाहे वह पुत्र-भाव (पंचम स्थान) का स्वामी न भी हो, पंचमेश से सम्बन्ध न भी करता हो—न पंचम में बैठा ही हो तो भी अपनी अन्तर्दशा में पुत्रोत्पत्ति या पुत्र से लाभ या हर्ष करा सकता है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण लीजिए--चाहे शुक्र का सप्तम भाव या सप्तम भावेश से कोई सम्बन्ध न हो तो भी शुक्र की अन्तर्दशा में विवाह, स्त्री-लाभ, विवाह-सुख आदि करा सकता है। ऊपर जो उदाहरण दिए गए हैं वे यह मान कर कि बृहस्पति और शुक्र जन्मकुण्डली में अच्छे पड़े हैं (स्व-राशि, मित्र-राशि, स्व-नवांश आदि में स्थित होकर शुभ स्थान में स्थित हैं) यदि इसके विपरीत—बृहस्पति नीच या अष्टम या कष्टकारक अवस्था में पड़ा है तो पुत्र-जनित कष्ट करेगा-- शुक्र नीच, निर्बल, अशुभ और पीड़ाकारक पड़ा है तो स्त्री-जनित कष्ट का अनुभव करावेगा--यह ग्रह के बलाबल का विचार कर, अपनी बुद्धि से ऊहापोह कर निर्णय करना चाहिए। अस्तु, ऊपर दिए गए सिद्धांतों को विचार में रखते हुए किस ग्रह की महादशा में कौन सी अन्तर्दशा कैसे जावेगी--इसके कुछ नियम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नीचे बताये जाते हैं :

(१) ग्रहों का यह साधारण स्वभाव है कि अपनी महादशा में जब प्रारम्भ में अपनी अन्तर्दशा आती है--उस अन्तर्दशा के काल में--अपने स्वभाव के अनुसार अपना ही पूर्ण शुभ या अशुभ फल नहीं--केवल अपना सामान्य शुभ या अशुभ फल देते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे वर्षा ऋतु के प्रारम्भ होते ही इन्द्रदेव अपनी समस्त वर्षा प्रारम्भ के दिनों में ही नहीं बरसा देते, या गर्मी के प्रारम्भ होते ही सूर्यदेव अपनी समस्त गर्मी नहीं डाल देते--उसी प्रकार किसी ग्रह की महादशा लगते ही--अपनी अन्तर्दशा में ही--वह अपना पूर्ण फल नहीं देता है, सामान्य मात्र देता है।

यहाँ स्वभावतः यह शंका होती है कि जब अपनी ही महादशा और उसमें अपनी ही अन्तर्दशा में पूर्ण फल नहीं देता तो फिर किन ग्रहों की अन्तर्दशा में अपना पूर्ण फल देता है ? इसका उत्तर यह है कि महादशा जिसकी चल रही रही है, वह ग्रह

(क) अपने--आत्म सम्बन्धी, तथा

(ख) निज सधर्मी ग्रहों की अन्तर्दशा में अपना पूर्ण फल देते हैं।

आत्म-सम्बन्धी और सधर्मी कौन-कौन हैं :

(अ) जिनसे ४ प्रकार में से कोई से*प्रकार का सम्बन्ध हो वे आत्म सम्बन्धी हुए।

(आ) अपने सदृश जो योगकारक अन्य ग्रह है वे सधर्मी हैं।

(इ) शुभ ग्रहों के अन्य शुभ ग्रह सधर्मी हैं।

(ई) पाप ग्रहों के अन्य पापग्रह सधर्मी हैं।

(२) यह तो बताया अपनी महादशा में अपनी अन्तर्दशा का फल, अब अन्य अन्तर्दशाओं के सम्बंध में निम्नलिखित बातें याद रखनी चाहिए :

---

*देखिए पृष्ठ ११८-६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(क) शुभ महादशा हो–शुभ अन्तर्दशा हो तो निर्विवाद शुभ फल ही होगा।

(ख) पाप महादशा हो–पाप अन्तर्दशा हो तो निर्विवाद पाप फल ही होगा।

इसमें तो विशेष तारतम्य की आवश्यकता ही नहीं है। तारतम्य की आवश्यकता तो तब पड़ती है जब महादशा शुभ हो, अन्तर्दशा अशुभ हो, या महादशा अशुभ हो और अन्तर्दशा शुभ हो तबक्या परिणाम होगा— किसका प्रभाव विशेष होगा ?

यदि महादशानाथ और अन्तर्दशानाथ एकदूसरे के विरुद्ध धर्म वाले हों (एक शुभ एक अशुभ हो)

जो आत्म-सम्बन्धी तथा निजसधर्मी हैं उनकी अन्तर्दशा में क्या फल होगा यह ऊपर (१३४वें पृष्ठ पर) बता चुके हैं अब जो आत्म-सम्बन्धी भी नहीं है और निजसधर्मी भी नहीं हैं उनकी अन्तर्दशा में क्या फल होगा यह बताते हैं। ग्रहों को पहले दो भागों में विभक्त कीजिए (अ) सम्बन्धी और (आ) असम्बन्धी—इन दोनों प्रकार के ग्रहों को तीन-तीन भागों में विभक्त कीजिए (क) सधर्मी–अपने से धर्म (स्वभाव गुणवाले), (ख) असधर्मी (अपने से विरुद्ध गुण स्वभाव प्रभाव वाले), तथा (ग) जो न सधर्मी हों, न असधर्मी हों।

निम्नलिखित ६ विभाग हुए :

(क) सम्बन्धी—सधर्मी,
(ख) सम्बन्धी—असधर्मी,
(ग) सम्बन्धी—न सधर्मी, न असधर्मी;
(घ) असम्बन्धी—सधर्मी
(ङ) असम्बन्धी—असधर्मी
(च) असम्बन्धी—न सधर्मी, न असधर्मी

(क) विभाग के ग्रह की अन्तर्दशा में तो महादशा के अनुरूप फल होगा ही।

(ख) और (ग) विभाग वाले ग्रह की अन्तर्दशा में भी महादशा के फल की प्राप्ति होगी यह बताया जा चुका है :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योगकारक सम्बन्धात्
पापिनोऽपिग्रहाः स्वतः ।
तत् तत् भुक्त्यानु सारेण
दिशेयुर्योगजं फलम् ॥

अर्थात् 'दो योग कारकों की दशा व अन्तर्दशा के वीच में योग-कारकों से सम्बन्ध नहीं रखने वाले शुभों की दशा व अन्तर्दशा हो तो उसमें प्रायः योगफल होता है। ऐसे ही दो योगकारकों से सम्बंध करने वाले पापों की अन्तर्दशा हो तो उसमें निश्चय रूप से योगफल मिलता है।' विशेष विवरण के लिए देखिये पृष्ठ १२१।

अब (घ) असम्बन्धी—किन्तु सधर्मी और (च) असम्बन्धी किन्तु न सधर्मी न असधर्मी को लीजिए —तो इन दोनों प्रकार के ग्रहों की अन्तर्दशाओं में महादशा की अपेक्षा थोड़ा, किन्तु उसी प्रकार का फल होगा। कारण यह है कि (अ) सम्बन्धी की प्रधानता है (आ) सधर्मी की अप्रधानता है।

इस कारण (घ) में महादशा स्वामी ग्रह के अनुसार ही फल होगा।

(च) में भी महादशा स्वामी ग्रह के अनुसार फल होगा किन्तु (घ) और (च) में अन्तर यह है कि (घ) महादशानाथ का सधर्मी है इस कारण (च) की अपेक्षा (घ) में महादशानाथ का विशेष प्रभाव होगा।

(च) में अल्प फल होगा।

अब (ङ) को लीजिए–जो महादशा का असम्बन्धी भी है और उससे विरुद्ध धर्म वाला भी है। ऐसे ग्रह की अन्तर्दशा में मिश्र फल होगा अर्थात् मिल-जुला फल होगा–कुछ महादशा स्वामी का प्रभाव

नोट—योगकारक ग्रहों के योगकारक ग्रह सधर्मी हैं। शुभों के शुभ ग्रह सधर्मी हैं। 'सम' ग्रहों के सम ग्रह सधर्मी हैं। पाप ग्रहों के पापग्रह सधर्मी हैं। मारकों के मारक सधर्मी हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुछ अन्तर्दशा स्वामी का प्रभाव दोनों के बलाबल का विचार कर लेना चाहिए, जो बली विशेष हो उसका कुछ विशेष फल होगा।

केन्द्र के स्वामी की महादशा में त्रिकोण के स्वामी की अन्तर्दशा

यदि (अ) पापी केन्द्रेश की महादशा में त्रिकोणेश की अन्तर्दशा हो और इन दोनों का-केन्द्रेश और त्रिकोणेश-का सम्बन्ध न हो तो शुभ होगा। यह शुभ फल तभी होगा जब यह त्रिकोणेश पापी न हो। (आ) यदि केन्द्रेश के साथ-साथ त्रिकोणेश भी पापी हो तो शुभ फल नहीं होगा।

पापी कौन-कौन होते हैं :

(क) केन्द्र के स्वामी यदि बृहस्पति, शुक्र, बुध या चन्द्रमा हों।
(ख) ३, ६, ११, ८ का स्वामी भी हो।
(ग) शनि यदि ३ या ११ का स्वामी भी हो।
(घ) मंगल ३, १२ का भीं स्वामी हो।

सिंह लग्न वाले व्यक्ति को बृहस्पति पंचम का स्वामी होने के साथ-साथ अष्टम का स्वामी होने से—इस स्थल में पापी समझा जावेगा। कुंभ लग्न वाले को बुध पंचमेश होने के साथ अष्टमेश होने से यहाँ इसे पापी त्रिकोणेश कहेंगे। कन्या लग्न वाले व्यक्ति के शनि को पाँचवें तथा छठे का, मालिक होने से, तथा मिथुन लग्न वाले व्यक्ति को ८ वें तथा ९ वें घर का मालिक होने से पापी त्रिकोणेश कहेंगे।

केन्द्रेश पापी हो और त्रिकोणेश पापी न हो तो केन्द्रेश की दशा में व त्रिकोणेश की अन्तर्दशा में शुभ फल होगा–चाहे इन दोनों का सम्बन्ध न हो, किन्तु यदि केन्द्रेश तो पापी है ही—त्रिकोणेश भी पापी हो गया तो 'योगकारकता' समाप्त हो गई।

नोट – विरुद्धधर्मी (अ) योगकारक ग्रह और पापी ग्रह (आ) योगकारक और मारक ग्रह (इ) शुभ ग्रह और पाप ग्रह (ई) शुभ ग्रह और मारक ग्रह। ये चार विरुद्ध धर्मी ग्रहों के दृष्टान्त हैं। देखिये पृष्ठ १३६।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किन्तु यदि केन्द्रेश पापी न हो, केवल त्रिकोणेश पापी हो तो 'योगकारकता समाप्त नहीं होती। कारण ? केन्द्रेश पापी नहीं है !

यदि केन्द्रेश पापी न हो और त्रिकोणेश भी पापी न हो तब तो केन्द्रेश की महादशा में व त्रिकोणेश की अन्तर्दशा में पूर्ण शुभ फल होगा ही। इसमें तो विचारना ही क्या है।

त्रिकोणेश की महादशा में केंद्रेश की अन्तर्दशा

(क) त्रिकोणेश पापी हो, केन्द्रेश पापी न हो तो शुभ केन्द्रेश की अन्तर्दशा में शुभ फल होगा।

(ख) त्रिकोणेश साधारण पापी हो और केन्द्रेश भी पापी हो तो भी शुभ फल की संभावना है। किन्तु यदि त्रिकोणेश अष्टमेश भी हो और इसकी महादशा में पापी केन्द्रेश की अन्तर्दशा हो तो शुभ फल नहीं होगा।

(ग) त्रिकोणेश पापी न हो, केन्द्रेश पापी हो तो भी शुभ फल की सम्भावना है। इसकी विशेष सम्भावना तभी रहती है जब दोनों में चारों प्रकारों में से कोई सम्बंध हो।

मारक ग्रह की अंतर्दशा में राजयोग का आरम्भ—(१) यदि किसी मारक ग्रह की अंतर्दशा में राजयोग का प्रारम्भ हो तो 'राजयोग' (अमुक पद या प्रतिष्ठा-प्राप्ति हुई) की ख्याति-मात्र होकर रह जाती है। मारक ग्रह के प्रभाव के कारण राज्य सुख, तेज, बलबुद्धि आदि नहीं होती; (२) कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार यदि योगकारक ग्रह की महादशा और उस महादशा में उस महादशानाथ के सम्बंधी मारक ग्रह की अंतर्दशा हो तो उसमें भी राजयोग का प्रारम्भ हो सकता है।

योगकारक की और शुभग्रह की दशा-अंतर्दशा–(क) योगकारक ग्रह की महादशा में (१) सम्बंधी शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो तो

नोट न संधमा न असधमा : (अ) योगकारक और समग्रह (आ) शुभग्रह और समग्रह (इ) पापग्रह और समग्रह (ई) मारक ग्रह और समग्रह। देखिये पृ० १३५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्ण शुभ फल; (२) असम्बंधी शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो तो सामान्य से कुछ ही अधिक फल।

(ख) शुभग्रह की महादशा में (१) सम्बंधी योगकारक की अंतर्दशा हो तो पूर्ण शुभ फल; (२) असम्बंधी योगकारक की अंतर्दशा हो तो सामान्य से कुछ ही अधिक शुभ फल।

योगकारक की महादशा में ग्रहों की अन्तर्दशा का फल:

योगकारक ग्रह की महादशा है और उसमें (क) सम्बंधी मारक ग्रह की अन्तर्दशा हो तो राजयोग का प्रारम्भ हो सकता है।

(ख) सम्बंधी पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो (क) की अपेक्षा विशेष राजयोग हो सकता है।

(ग) सम्बन्धी शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो (ख) की अपेक्षा विशेष राजयोग का फल होगा।

यह (क) (ख) (ग) में जो शुभ फल ही लिखा है इसका हेतु 'योगकरक' की महादशा होना तथा अन्तर्दशानाथ का महादशानाथ से सम्बन्ध होना है। इसे विस्मरण नहीं करना चाहिए।*

राहु और केतु की महादशा तथा अन्तर्दशा राहु केतु को (महादशा)

इन ग्रहों की शुभाशुभता का विचार ११४-५ पृष्ठों पर बताया जा चुका है।

यदि राहु या केतु त्रिकोण में हो और किसी से सम्बन्ध न

नोट—पिछले ३ पृष्ठों में 'सम' का वह अर्थ नहीं है जो मित्र, सम, शत्रु के प्रकरण में बताया गया है। यहाँ सम वह है जो न योगकारक है, न शुभ है, न पाप है, न मारक है।

* नोट—शुभ ग्रह की महादशा में यदि योग कारक ग्रह की अन्तर्दशा आवे तो कहीं-कहीं योगफल हो जाता है। अन्तर्दशापति यदि स्वयं पूर्ण शुभ हो या योगकारक हो तो सबसे अच्छा योगफल प्राप्त होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करता हो (१) तो भी केन्द्रेश की महादशा में त्रिकोणस्थ राहु या केतु की अन्तर्दशा शुभ होती है। योग का फल मिलता है।

(२) त्रिकोणस्थ राहु या त्रिकोणस्थ केतु की महादशा में जब केन्द्रेश की अन्तर्दशा आती है तब योगफल हो जाता है।

(३) इसी प्रकार केन्द्र में बैठा हुआ राहु और केतु अपनी महादशा में त्रिकोणेश की अन्तर्दशा में शुभ फल देते हैं। इसी प्रकार त्रिकोणेश की महादशा में केन्द्र में बैठे हुए राहु व केतु अपनी अन्तर्दशा में शुभ फल देते हैं।

(४) यदि राहु और केतु शुभग्रह के साथ बैठे हों—या केन्द्र या त्रिकोण में बैठे हों और किसी पापी या पाप ग्रह से सम्बन्ध न करते हों तो ऐसे राहु या केतु की महादशा में जब योगकारक ग्रह की अन्तर्दशा आती है तो बहुत उत्तम फल (योगकारक ग्रह का शुभ फल) प्राप्त होता है।

(५) यदि राहु और केतु दुःस्थान (अष्टम या द्वादश) में बैठे हों या अष्टमेश आदि पापी के साथ हों, या पापग्रह के साथ हों तो इनकी दशा—अन्तर्दशा अच्छी नहीं होती। यदि महादशा राहु या केतु की हो तो साधारण प्रभाव—महादशा का प्रभाव—अनिष्ट होगा। इसके अन्तर्गत जो योगकारक, शुभग्रह, त्रिकोणेश आदि की अन्तर्दशा का समय होगा वह तो अच्छा जावेगा ही।

महादशानाथ यदि पापी हो

महादशानाथ यदि पापी हो तो भिन्न-भिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा निम्नलिखित प्रकार की जावेगी :

(क) शुभग्रह की अन्तर्दशा—किन्तु ऐसा शुभग्रह महादशानाथ से सम्बंध न करता हो—पाप का फल देने वाली होती है।

(ख) योगकारक ग्रह की अन्तर्दशा—यदि ऐसा योगकारक महादशानाथ से सम्बंध न करता हो तो अत्यन्त पापफल देने वाली होती है।

(ग) शुभग्रह की अंतर्दशा—यदि अंतर्दशानाथ और महादशानाथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का सम्बंध हो—मिश्र (मिला-जुला) फल देने वाली अर्थात् कुछ शुभ फल कुछ अशुभ फल।

√ (घ) योगकारक ग्रह की अंतर्दशा—यदि अंतर्दशानाथ और महादशानाथ का सम्बंध हो—तो भी मिश्र (मिला-जुला फल देने वाली) किंतु शुभ फल अधिक होगा।

(ङ) समग्रह की अंतर्दशा हो तो भी पाप फल होगा—किंतु पाप-फल न्यून होगा।

(च) पापग्रह की महादशा में पापग्रह की अंतर्दशा होने से—दोनों सधर्मी हुए, इस कारण महादशा के अनुरूप ही फल होगा, इसमें तो कहने की बात ही क्या है ?

इसी कारण कहा है :

पापा यदि दशानाथाः शुभानां तदसंयुजाम्।
भुक्तयः पापफलदाः तत्संयुक्शुभभुक्तयः॥
भवन्ति मिश्रफलदा भुक्तयो योगकारिणाम्।
अत्यंतपापफलदा भवन्ति तदसंयुजाम्॥

मारकग्रह की महादशा में मृत्यु किसकी अंतर्दशा में होती है?

जब आयु-विचार से यह निश्चय हो जावे कि अमुक ग्रह की महादशा मृत्युकारक होगी तब उसमें कौनसी अंतर्दशा कैसी जावेगी—अर्थात् कौन सी मृत्यु कर सकती है इसको स्पष्ट करते हुए कहते हैं :

सत्यपि स्वेन सम्बंधे न हन्ति शुभभुक्तिषु।
हन्ति सत्यप्यि सम्बंधे मारकः पापभुक्तिषु॥

अर्थात् यदि मारक ग्रह की महादशा चल रही हो तो चाहे शुभग्रह का मारकेश से सम्बन्ध भी हो किंतु ऐसे शुभग्रह की अंतर्दशा मृत्यु नहीं करती। और मारकग्रह की महादशा में यदि पापग्रह की अंतर्दशा आवे तो चाहे ऐसा पापग्रह महादशानाथ से सम्बन्ध न भी करता हो तो भी मृत्युकारक हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा और शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा :

शुक्रमध्ये गतो मन्दः शौक्रं शुक्रोऽपिमंदगः ।
मान्दं शुभाशुभं दत्ते विशेषेण न संशयः ।।

दशाफल के विचार में साधारणतः मुख्यता अन्तर्दशानाथ की ही होती है। किन्तु शनि-शुक्र इन दो ग्रहों में एक की महादशा दूसरे की अन्तर्दशा हो तो उपर्युक्त साधारण नियम का पालन न होकर कुछ विशेष नियम का अनुपालन होता है :

शनि. (क) यदि शनि की महादशा हो—और उसमें शुक्र की अन्तर्दशा हो तो शनि का ही प्रभाव (इष्ट या अनिष्ट—जैसा भी जन्म-कुंडली में पड़ा हो) विशेष रूप से घटित होगा।

शुक्र. (ख) यदि शुक्र की महादशा हो और—उसमें शनि की अन्तर्दशा हो तो—शुक्र का ही प्रभाव (अच्छा या खराब—जन्म-कुण्डली में जैसा शुक्र पड़ा हो) विशेष रूप से अपना फल दिखलावेगा।

विशेष विचार—इस प्रकार कोई ग्रह किस भवन का स्वामी है—तथा कोई ग्रह स्वाभाविक रूप से पापग्रह है या शुभग्रह, इसका ध्यान रखते हुए जन्म-कुंडली का पूर्ण विचार कर, यह निश्चय करना बतलाया गया है कि किस ग्रह की महादशा कैसी जावेगी और भिन्न-भिन्न प्रकार के ग्रहों की महादशा में भिन्न-भिन्न प्रकार के ग्रहों की अन्तर्दशा कैसी जावेगी। किंतु ऊपर जो बातें लिखी गई हैं उनका विचार करते समय यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि ग्रह उच्चराशिस्थित है या नीच—राशि स्थित, स्वगृही या मित्रगृही या शत्रुगृही; अस्त, आदि दोष से युक्त तो नहीं है। यह आगे बताया जाता है।

एक अन्य दृष्टिकोण

ग्रहों को फलादेश के विचार से निम्नलिखित नौ भागों में बांटा गया है :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

*(१) **दीप्त**—उच्च राशि में स्थित ग्रह दीप्त कहलाता है, किन्तु पूर्ण शुभ-फल तभी करेगा जब नवांश में नीच का न हो। उदाहरण के लिये यदि सूर्य के मेष राशि में २१ अंश हैं, तो उच्च-राशि (मेष) में होता हुआ भी तुला नवांश (नीच नवांश) में हुआ, ऐसा सूर्य दीप्त का फल नहीं करेगा।

(२) **स्वस्थ**—अपनी राशि में स्थित ग्रह स्वस्थ कहलाता है। ऐसा ग्रह शुभ फल देने में विशेष समर्थ होता है।

(३) **मुदित या प्रमुदित**:—जो ग्रह अपनी अधिमित्र राशि में हो वह मुदित कहलाता है। मित्रता नैसर्गिक तथा तात्कालिक दो प्रकार ही होती है। दोनों में मित्र होने से "अधिमित्र" होता है।

(४) **शांत**—'नैसर्गिक' तथा 'तात्कालिक' इन दोनों प्रकार के सम्बन्ध का यदि तारतम्य किया जावे तो 'नैसर्गिक' विशेष बलवान् है। नैसर्गिक मित्र राशि में यदि ग्रह हो तो शांत कहलाता है ग्रह जिसकी राशि में है वह मित्र होने के साथ-साथ शुभग्रह भी हो तो विशेष शुभ फल होगा।

(५) **दीन**—'सम' ग्रह (अर्थात् जो न मित्र है न शत्रु है) उसकी राशि में स्थित ग्रह 'दीन' कहलाता है। समग्रह यदि पापग्रह हो तो शुभ फल कम होता है, पाप फल अधिक।

(६) **शक्त**—जो सूर्य की किरणों से अस्त न हो उसे 'शक्त' कहते है और जो अस्त होता है उसे 'विकल'[१] कहते हैं। बहुधा पंचांगों में यह दिया रहता है कि कब कौनसा ग्रह उदित है कब कौनसा ग्रह अस्त है किन्तु इस विषय में साधारण नियम यह है:

(क) सूर्य से १७ अंश दूर मंगल अस्त हो जाता है।
(ख) सूर्य से ११ अंश की दूरी पर बृहस्पति अस्त हो जाता है।
(ग) सूर्य से १५ अंश की दूरी तक शनि अस्त रहता है।
(घ) सूर्य से १२ अंश के अन्दर चन्द्रमा अस्त रहता है।

*१. सारावली, अध्याय ५, श्लोक ४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ङ.) यदि शुक्र 'मार्गी' हो तो सूर्य से १० अंश तक अस्त रहता है, यदि शुक्र 'वक्री' हो तो सूर्य से ८अंश तक अस्त रहता है।

(च) यदि बुध 'मार्गी' हो तो सूर्य से १४ अंश तक अस्त रहता है किन्तु 'वक्री हो तो सूर्य से १२ अंश तक ही अस्त रहता है।

प्रसंग यहाँ था 'अस्त' ग्रह और 'उदित' ग्रह का। उदित ग्रह शुभ फल देने में शक्त होता है किन्तु अस्तग्रह पीड़ा पहुँचाता है। 'अस्त' ग्रह को 'मूढ़'[1] भी कहते हैं। कोई-कोई सूर्य-संयुत (अस्त) ग्रह को 'कोपी' भी कहते हैं। कुपित ग्रह कष्ट फल ही करता है।

(७) दुःखित - नैसर्गिक शत्रु की राशि में होने से ग्रह दुःखित कहलाता है, यह अनिष्ट-फल-कारक हैं। यदि पाप राशि हो तो और भी कष्टकारक होता है।

(८) विकल—पराशर के मतानुसार (अध्याय ४५, श्लोक ९) पापग्रह युत होने से ग्रह 'विकल' कहलाता है। यह अनिष्ट-फल-कारक है।

(९) खल—पापग्रह की राशि में स्थित होने से ग्रह 'खल' कहलाता है। यह भी अनिष्ट फल देता है। विशेषता यह है कि पापग्रह शुभ भवनों का स्वामी हो, शुभग्रह के वर्गों में हो या शुभ ग्रहों से वीक्षित हो तो उसकी उतनी 'खल' संज्ञा नहीं समझी जावेगी। यदि शनि या

नोट—जब ग्रह आगे की ओर चलता मालूम हो तो उसे 'मार्गी'— स्वाभाविक मार्ग पर—कहते हैं किन्तु जब ग्रह पीछे की ओर चलता मालूम हो तो उसे 'वक्री' – उलटा चलने वाला—कहते हैं। वास्तव में ग्रह सभी आगे की ओर ही चलते हैं किन्तु पृथ्वी पर से देखने से 'वक्री' प्रतीत होते हैं। सूर्य और चन्द्र कभी 'वक्री' नहीं होते। राहु-केतु सदैव वक्री रहते हैं।

१. 'फल दीपिका', अ० ६, श्लोक १९।

२. 'बृहत्पाराशर', अ० ४५, श्लोक ९।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मंगल की राशि में ग्रह हों—वह शनि या मंगल स्वयं पाप-राशि–पाप-वर्गों में स्थित होकर, पापग्रह से वीक्षित हो—या नीच आदि राशि में हो तो विशेष रूप से खलता होगी।

उदाहरण के लिए यदि सूर्य, शनि की राशि कुम्भ में है और वह शनि (कुम्भ का स्वामी) अपनी नीच राशि (मेष) में हो तो सूर्य को विशेष रूप से 'खल' कहेंगे। किन्तु यदि शनि बृहस्पति की राशि धनु में हो—धनु के नवांश में भी हो और बृहस्पति से पूर्ण दृष्ट हो तो शनि की राशि में स्थित होने से सूर्य खल तो हुआ किन्तु सूर्य का राशीश (शनि) शुभ ग्रह की राशि में—शुभ नवांश में—शुभ—वीक्षित है इस कारण सूर्य उतना खल नहीं समझा जावेगा। इन बातों का सूक्ष्म तारतम्य प्रत्येक स्थान पर कर लेना चाहिए।

जातक विचार का प्रथम भाग समाप्त करने के पहिले हम पाठकों का विचार निम्नलिखित सिद्धान्तों की ओर आकर्षित करना अपना विशेष कर्तव्य समझते हैं।

(१) ग्रहों की स्वाभाविक शुभता तथा क्रूरता को सदैव स्मरण रखिये। (२) किस गृह का या किन गृहों का स्वामी है, इस कारण शुभ हुआ या पाप। (३) राशि तथा होरा द्रेष्काण, नवांश आदि में-सप्तवर्गों में-बली है या निर्बल। (४) शुभ ग्रहों के वर्ग में स्थित होकर बलवान् शुभ ग्रहों से वीक्षित है या पाप ग्रहों के वर्ग में स्थित होकर पाप ग्रहों से वीक्षित है। (५) केन्द्र, त्रिकोण लाभ आदि शुभ स्थान में स्थित है या अष्टम, द्वादश आदि अनिष्ट स्थानों में। (६) दीप्त, स्वस्थ, मुदित आदि है या दुःखित, विकल आदि। (७) किन-किन ग्रहों से सम्बन्ध करता है—वे कैसे हैं?

सातों कसौटी पर कस कर अन्तिम निर्णय पर पहुँचिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिष अध्ययन अनुसन्धान केन्द्र
का. जि. ३३ नं. वाड नगर पंचायत
१०/१०० ज्ञानेश्वर काठमाडौं
नेपाल

द्वितीय भाग

वर्ष-फल-विचार

अठारहवाँ प्रकरण

वर्ष-कुण्डली का सिद्धान्त

वर्ष-कुण्डली बनाने का सिद्धान्त यह है कि जन्म के समय सूर्य जिस राशि, अंश, कला, विकला में स्थित था, उसी स्थल पर जब सूर्य पुनः घूमकर आ जाता है तब मनुष्य को एक विशेष शुभाशुभ शक्ति प्रदान करता है। वास्तव में भ्रमण तो पृथ्वी करती है परन्तु लोक-व्यवहार में सूर्य का ही भ्रमण कहलाता है।

सूर्य प्रायः एक वर्ष में उसी राशि, अंश, कला-विकला पर आ जाता है। किन्तु उसे ठीक कितना समय लगता है इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। 'सूर्य सिद्धान्तानुसार' ३६५ दिन १५ घड़ी, ३१ पल, ३० विपल में सूर्य उसी स्थान पर वापस आ पहुँचता है। किन्तु यह प्राचीन मत है। लन्दन, अमरीका, जर्मनी, रूस और भारतवर्ष में भी जो करोड़ों रुपये लगाकर वेंधशालायें (Observatories) बनी हैं इनमें अति सूक्ष्म दूरवीक्षक यन्त्र हैं, इनके आधार पर यह ऐकमत्य से सिद्ध हो चुका है कि सूर्य को उसी राशि, अंश, कला, विकला पर वापस आ पहुँचने में केवल ३६५ दिन १५ घड़ी २२ पल और ५७½ विपल लगते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि दोनों मतों में करीब ८½ पल या करीब ३⅖* मिनिट का अन्तर है। इस कारण यदि किसी ४० वर्ष के उम्र के व्यक्ति की वर्ष-कुण्डली

*८½ पल के ३⅖ मिनिट होते हैं। देखिये प्रकरण २।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बनाई जावे तो (४० × ३$\frac{१}{३}$ = १३३$\frac{१}{३}$ मिनिट = २ घण्टा १३$\frac{१}{३}$ मिनिट) करीब सवा दो घण्टे का वर्ष-प्रवेश-काल में अन्तर पड़ जावेगा। इसका परिणाम यह होगा कि एक मत से, वर्ष-प्रवेश लग्न कुछ होगा और दूसरे मत से, वर्ष-प्रवेश-लग्न (३$\frac{१}{३}$ मिनिट प्रतिवर्ष के हिसाब से अन्तर पड़ जाने से) कुछ और ही आ जावेगा।

प्राचीन मत वाले वर्ष-प्रवेशकाल-निकालने के लिए १४८ पृष्ठ पर दी गई सारिणी काम में लाते हैं।

प्राचीन मतानुसार वर्ष-कुंडली बनाने का प्रकार

मान लीजिए किसी व्यक्ति का २७, अगस्त, १९०८ बृहस्पतिवार को सूर्योदय से ४० घड़ी, ५३ पल, ३० विपल पर जन्म हुआ तो रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार इस क्रम से गणना करने पर बृहस्पतिवार पाँचवाँ वार होता है, इस कारण जन्म-काल के वार, घड़ी, पल, विपल की संख्या निम्नलिखित प्रकार से लिखेंगे :

जन्म ५–४०–५३–३० जन्मवार इष्टघटी पल.

२७ अगस्त १९५८ को यह ५० वाँ वर्ष समाप्त करेंगे और ५१ वें वर्ष में प्रवेश होगा। हमें ५१वें वर्ष की वर्ष-कुण्डली बनानी है तो गतवर्ष ५० होंगे, इस कारण पृ० १४८ में दी हुई सारिणी में ५० के नीचे लिखा है ६—५६—१५—० अतः इस संख्या को जन्म के समय की ५—४०—५३—३० संख्या में निम्नलिखित प्रकार से जोड़ेंगे।

	वार	घड़ी	पल	विपल
जन्म-काल के वारादि	५	४०	५३	३०
गतवर्ष (५०) के वारादि	+६	५६	१५	०
योग	५	३७	८	३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

वर्ष-प्रवेशसारिणी (प्राचीन मत से)

ग॰व॰	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
वा॰	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५
घ॰	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३१	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६
प॰	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८
वि॰	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

ग॰व॰	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४
वा॰	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३
घ॰	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३
प॰	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६
वि॰	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

ग॰व॰	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६
वा॰	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१
घ॰	४८	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०
प॰	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४
वि॰	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३० विपल में ०· विपल जोड़ें तो ३० विपल आये। १५ पल में ५३ पल जोड़ें तो ६८ पल आये। यह ६० से अधिक हैं। ६० पल की एक घड़ी होती है। इस कारण ६० से भाग देने पर १ घड़ी ८ पल आये। ८ को पल के नीचे लिखकर १ को हासिल मान-कर ४० में जोड़ने से ४१ हुए; ४१ और ५६ को जोड़ा तो ९७ हुए। यह संख्या ६० से अधिक है। ६० घड़ी का १ अहोरात्र (दिन-रात) होता है इस कारण ६० का भाग देने से ३७ बचे और हासिल १ आया—३७ को घड़ी के नीचे लिखा और १ हासिल को ५ में जोड़ने से ६ हुए; इन ६ को नीचे के ६ में जोड़ा तो १२ हुए। सप्ताह में ७ वार से अधिक नहीं होते इस कारण १२ में ७ का भाग देने पर शेष ५ बचे। इन ५ को वार के नीचे लिखा। यह जो योग संख्या ५ – ३७—८—३० आई। यह ५१वें वर्ष-प्रवेश का समय है अर्थात् २७ अगस्त १९५८ के आसपास (जिस अंग्रेजी तारीख को जन्म होता है प्रायः उसी अंग्रेजी तारीख के लगभग वर्ष-प्रवेश होता है।) जिस दिन बृहस्पतिवार होगा उस दिन (योग में ५ आया है; रविवार से गिनने पर ५वाँ वार बृहस्पति होता है इस कारण बृहस्पति कहा) ३७ घड़ी ८ पल पर (सूर्योदय के ३७ घड़ी ८ पल बाद) वर्ष-प्रवेश होगा। १९५८ को पंचाँग देखने से विदित हुआ कि २८ अगस्त, १९५८ को बृहस्पतिवार पड़ेगा। इस कारण २८–८–१९५८ को ३७ घड़ी ८ पल पर वर्ष-प्रवेश होगा। यह वर्ष-प्रवेश का इष्ट हुआ। अब जैसे जन्म के इष्टकाल का लग्न निकालना बताया गया है (देखिये ५वाँ प्रकरण,) उसी प्रकार इस इष्टकाल से लग्न निकालना चाहिए। इस प्रकार वर्ष-प्रवेश का लग्न मीन आवेगा और लग्न स्पष्ट ११ –२५ होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राचीन मत से वर्ष-कुण्डली

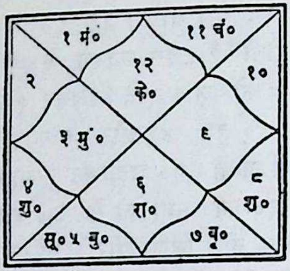

मुंथा कहां रखना ?

जिन सज्जन की ऊपर ५१वें वर्ष-प्रवेश की कुंडली बनायी है उनका जन्म-लग्न मेष है। मेष प्रथम राशि है इस कारण गत वर्ष ५० में १ जोड़ा (जन्म लग्न मेष है इस कारण १ जोड़ा है) तो ५१ हुए इसमें १२ का भाग देने से ३ शेष बचे तो मेष से गिनने पर मेष, वृष मिथुन-तृतीय राशि मिथुन हुई, इस कारण मिथुन में मुंथा रखी। मुंथा वर्ष-प्रवेश-कुण्डली में एक विशेष महत्व की वस्तु है। इसके सम्बन्ध में विशेष आगे बताया जावेगा। यहाँ केवल— वर्ष-कुण्डली में मुंथा किस राशि में रखना यह बताया गया है।

नवीन मतानुसार वर्षकुंडली

अब नवीन मतानुसार वर्ष-प्रवेश-कुण्डली बनाना बताया जाता है। पहले लिखा जा चुका है कि सूर्य के भ्रमण-काल के विषय में दोनों में मतभेद है। सर्वप्रथम काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय श्री बापूदेव जी शास्त्री ने नवीन मतानुसार शुद्ध वर्ष-प्रवेश-सारिणी अपने पंचाग में देना प्रारम्भ किया। श्री केतकर जी तथा भारत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध विद्वान् जो आधुनिक वैज्ञानिक युग के सत्य सिद्धांतों को मानते हैं—इसी नवीन सारिणी का उपयोग करते हैं। हमने इस विषय में एक लेख भी 'ज्योतिष्मती' में प्रकाशित कराया था और 'ज्योतिष्मती' के सुयोग्य सम्पादक 'श्री विश्व-विजय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पंचाग के निर्माता ज्योतिष-मार्तण्ड, दैवज्ञ-शिरोमणि पण्डित श्री हरदेवजी शर्मा ने भी नवीन सारिणी का ज़ोरदार शब्दों में समर्थन किया। १५२ वें पृष्ठ पर वर्ष-प्रवेश की वेध-सिद्ध नवीन सारिणी दी जा रही है।

अब जो पहले ५१ वें वर्ष की वर्ष-कुण्डली बनाई है (देखिए पृष्ठ १५०) वही ५१ वें वर्ष-प्रवेश की कुण्डली नवीन मतानुसार बनाना बताया जाता है।

	वार	घड़ी	पल	विपल
जन्म के समय का	५	४०	५३	३०
५१ वें वर्ष का प्रवेश अर्थात् गत वर्ष ५० के नीचे जो सारिणी में संख्या दी है। (पृष्ठ १५२)	६	४९	७	३०
योग	५	३०	१	०

अर्थात् बृहस्पतिवार २८ अगस्त, १९५८ को सूर्योदय के ३० घड़ी १ पल पर ५१ वाँ वर्ष-प्रवेश होगा। इस समय का लग्न निकालने से लग्न ९–२७ अर्थात् मकर लग्न के २७ अंश आये और प्रवेश-कुण्डली निम्नलिखित हुई :

नोट–मुंथा जन्म—लग्न से गणना करने पर जिस राशि में आती है उसमें लिखी जाती है। इस कारण मिथुन राशि में आई। इसमें कोई अंतर नहीं पड़ा।

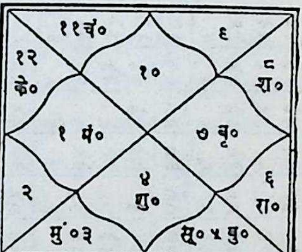

इस प्रकार नवीन मतानुसार मकर लग्न आया। अब आप

देखिए "ज्योतिष्मती" वर्ष १ संख्या २ यह ज्योतिष विषय की उत्कृष्ट पत्रिका है। प्राप्ति-स्थान—गोयल एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली।

उत्तम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Observatories. से प्राप्त

वेधसिद्ध नवीनवर्षमानानुसार वर्षप्रवेश सारिणी

गताब्दाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	२८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्दाः	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्दाः	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	४०	३	२६	४९	१२	४५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	३५	४२	३९	३६	३२	३०	३७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्दाः	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	४३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देखिए जो ज्योतिषी प्राचीन मतानुसार वर्ष-कुण्डली बना रहे हैं वे कितनी अशुद्ध गणना करते हैं। लग्न ही बदल जाता है। लग्न बदल जाने पर भी जो अशुद्ध वर्ष-कुण्डली बनाने वालों का फलादेश कुछ मिल जाता है उसका कारण यह है कि शुभग्रह लग्न में भी उत्तम, द्वितीय स्थान में भी उत्तम, चतुर्थ में भी उत्तम, पंचम में भी उत्तम; नवम में भी उत्तम, दशम में भी उत्तम, एकादश में भी उत्तम और पापग्रह द्वादश में भी खराब, धन स्थान में भी खराब—चतुर्थ में भी पीड़ाकारक, पंचम में भी पीड़ाकारक—सप्तम में भी अनिष्टकारक, अष्टम में भी अनिष्टकारक—इस प्रकार वर्ष-प्रवेश का अशुद्ध लग्न लाने पर भी—ग्रहों के भाव बदल जाने पर भी—कहीं-कहीं घुणाक्षर-न्याय से (लकड़ी में घुन लग जाती है तो कहीं संयोग से कोई अक्षर बन जाता है) उसी प्रकार फलादेश ठीक बैठ जाता है। आज बड़े-बड़े ज्योतिष के पंडित भी अशुद्ध वर्ष-कुण्डलियाँ बना रहे हैं; इस बात का विचार नहीं करते कि पृथ्वी की गति में सूक्ष्म अंतर आ गया है। इसका विचार करना चाहिए।

अशुद्ध वर्ष-कुंडली का एक अन्य कारण

आज जो बहुत-सी वर्ष-कुण्डलियाँ अशुद्ध बन रही हैं उसका एक अन्य कारण भी है। ऊपर के उदाहरण में तो ऐसे व्यक्ति की वर्ष-कुण्डली बनाई गई है जिसका जन्म भी दिल्ली में हुआ और जो ५१वें वर्ष-प्रवेश में भी दिल्ली में रहेंगे। अब मान लीजिए उक्त सज्जन का जन्म कलकत्ता में हुआ था और वह इस समय दिल्ली में हैं। तो वर्ष-प्रवेश का जो इष्ट ३० घड़ी १ पल आया है उसका अर्थ हुआ कि २८ अगस्त, १९५८ को कलकत्ता में जब सूर्योदय होगा उसके ३० घड़ी १ पल बाद या यह कहिये कि १२ घंटे २४ सैकिंड बाद (३० घड़ी के १२ घंटे, १ पल के करीब २४ सैकिंड) वर्ष-प्रवेश होगा। यदि २८ अगस्त, १९५८ को कलकत्ता में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५ बज-कर २१ मिनिट (भारतीय स्टैन्डर्ड टाइम) पर सूर्योदय हुआ तो वर्ष-प्रवेश-काल निम्नलिखित होगा

	भारतीय स्टैन्डर्ड टाइम घंटा मिनिट सैकिंड
कलकत्ता का सूर्योदय काल	५ — २१ — ०
३० घड़ी १ पल के= १२ घंटे २४ सैकिंड जोड़े	१२ — ० — २४
वर्ष-प्रवेश-काल	१७ — २१ — २४

इस प्रकार वर्ष-प्रवेश-काल सायंकाल ५ बजकर २१ मिनिट २४ सैंकड पर भारतीय स्टैंडर्ड टाइम आया।

अब यदि हमें विना इस बात का विचार किये हुए कि (वर्ष-प्रवेश-काल ३० घड़ी १ पल कलकत्ता-जन्म स्थान के सूर्योदय काल के बाद का समय है)—दिल्ली में यह इष्ट-काल कायम करना है तो दिल्ली का २८ अगस्त, १९५८ का सूर्योदय काल है ६ बजकर १ मिनिट (भारतीय स्टैंडर्ड टाइम) इसमें इष्टकाल जोडने से वर्ष-प्रवेश-काल निम्नलिखित होगा :

	भारतीय स्टैंडड टाइम घंटा मिनिट सैकिंड
दिल्ली का सूर्योदय काल २८ अगस्त, १९५८	६ — १ — ०
इष्टकाल ३० घड़ी १ पल के घंटे मिनिट सैकिंड बनाकर जोड़े	१२ — ० — २४
योग	१८ — १ — २४

इस प्रकार वर्ष-प्रवेश-काल आया सायंकाल के ६ वजकर १ मिनिट २४ सैंकड पर; अब आप देखिए कि जो ज्योतिषी वर्ष-कुण्डली बनाते हैं वे इस वात को भूल जाते हैं कि इष्ट इतने घड़ी इतने पल का अर्थ

नोट—सैकिंडा का स्थूल रूप से छोड़ भी सकते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है अमुक स्थान में सूर्योदय होने के उपरांत इतने घड़ी इतने पल बाद! परिणाम यह होता है कि इष्टकाल होता है बम्बई, कलकत्ता, मद्रास कश्मीर या अन्य स्थान का भी, किंतु उस इष्ट को दिल्ली का या जहाँ सर्वज्ञ ज्योतिषी जी विराजमान हों, वहीं का इष्टकाल मानकर धड़ाधड़ वर्ष-कुण्डली बना देते हैं और ग्राहक के मुख से उसकी भविष्य में उन्नति, अवनति आदि की क्या-क्या सम्भावना है यह सुनकर उसे ही अपने शब्दों में दोहरा देते हैं! अच्छा फल हुआ तो केन्द्रगत किसी शुभ ग्रह को सारा श्रेय मिल जाता है और यदि ज्योतिषी जी का अन्दाज है कि इस मुसीबत के मारे ग्राहक को और मुसीबत उठानी है तो मुन्था या मुन्थेश या कोई भी ग्रह जो अशुद्ध वर्ष-कुण्डली में ८ वें, १२वें हो उसे पकड़कर सारा दोष उस पर मढ़ देते हैं कि उसके कारण वर्ष में तकलीफ़ उठानी पड़ेगी !!!

कहने का तात्पर्य यह है कि वर्ष-प्रवेश-काल निकालने में वर्ष का इष्टकाल निकालकर एक संस्कार और करना चाहिए। यदि जन्म कलकत्ते का है तो वर्ष-प्रवेश-काल ३० घड़ी १ पल कलकत्ता के सूर्योदय काल के बाद आया।

(क) यदि आप—जातक कहीं भी हो (दिल्ली या कलकत्ता या बम्बई अथवा विलायत में) २८ अगस्त, १९५८ को कलकत्ते में क्या लग्न था यह निकालना चाहते हैं तो हो इष्टम् ३०।१ का कलकत्ते की सारिणी से लग्न निकालिये।

(ख) यदि आपका पक्ष यह है कि जातक दिल्ली में वर्ष-प्रवेश-काल के समय है इस कारण उस समय दिल्ली में क्या लग्न था यह निकाल कर वर्ष-कुण्डली बनानी चाहिए तो जिस समय कलकत्ते में सूर्योदय के बाद ३० घड़ी १ पल का समय होगा उस समय दिल्ली के सूर्योदय के बाद कितने घड़ी कितने पल होंगे यह निका-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिए और उस इष्टकाल का दिल्ली की सारिणी के अनुसार लग्न बनाइये।

इसका सबसे सरल तरीका यह है कि जैसे ऊपर पृष्ठ १५४ पर बताया गया गया है कि जहां जन्म-स्थान हो वहां का वर्ष-प्रवेश-काल घंटों तथा मिनिट में निकाल लेना चाहिए। उदाहरण के लिये कलकत्ते में जन्म हुआ हो तो वर्ष-प्रवेश-काल ५ बजकर २१ मिनट २४ सैकिंड सायंकाल आया (देखिए पृष्ठ १५४) यह भारतीय स्टेंडर्ड टाइम है। यह सर्वत्र समान है। इसलिए यदि यह सज्जन दिल्ली में हैं तो ५ बजकर २१ मिनिट २४ सैकिंड पर (भारतीय स्टेंडर्ड टाइम) दिल्ली में क्या लग्न था यह निकालिए और उसके अनुसार वर्ष-कुण्डली बनाइये।

———

उन्नीसवाँ प्रकरण

वर्ष-कुण्डली-विचार

भाव स्पष्ट और ग्रह स्पष्ट :

वर्ष-कुण्डली बनाने के उपरान्त जैसे जन्म-कुण्डली में ग्रह स्पष्ट और भाव स्पष्ट करना बताया गया है उसी प्रकार ग्रह स्पष्ट और भाव स्पष्ट कर लेने चाहिए। इसके बाद चलित चक्र में किस भाव में कौनसा ग्रह है इसका विचार करना।

(१) प्रायः अष्टम और द्वादश में सभी ग्रह अनिष्ट होते हैं।

(२) किन्तु यदि कोई ग्रह स्वगृही हो, तो वह कहीं भी पड़ा हो अच्छा ही फल करता है। उसे अनिष्ट नहीं गिनना चाहिए। यह अवश्य है कि १२वें घर का स्वामी यदि १२वें घर में हो तो बहुत खर्च कराता है। यदि शुभ ग्रह हो तो शुभ काम में व्यय करावे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विवाह, उत्सव, आमोद-प्रमोद, जेवर, कपड़ा, मोटर, मकान, तीर्थ-यात्रा, धार्मिक कार्य आदि में व्यय शुभ व्यय समझा जाता है। यदि पाप ग्रह व्यय में हो तो खराब कामों में पैसा बरबाद होता है— इनकमटैक्स दण्ड, राजदण्ड, फौजदारी या दीवानी मुकदमे में व्यय, जुए या सट्टे वा व्यापार में घाटा आदि अपव्यय कहलाते हैं।

(३) यदि शुभ ग्रह केन्द्र में और क्रूर ग्रह तृतीय, छठे या ग्यारहवें में हो तो शुभ है। ग्यारहवें में सभी ग्रह उत्तम माने जाते हैं।

(४) जन्म-कुण्डली-विचार के प्रकरण में तथा प्रश्न-खण्ड में भी यह बताया गया है (देखिये प्रकरण ९ तथा २५) कि किस भाव से क्या विचार करना चाहिए। जिस भाव में शुभ ग्रह हों उस भाव की वृद्धि होती है। जिस भाव में क्रूर ग्रह हों उस भाव की हानि होती है।

(५) सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु क्रूर ग्रह समझे जाते हैं। बहुत से लोग कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी तक चन्द्रमा को भी क्रूर मानते हैं। बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा चन्द्रमा प्रायः शुभग्रह माने जाते हैं।

(६) जब कोई क्रूर ग्रह किसी स्थान पर बैठा हो तो उसकी स्वाभाविक शुभता या क्रूरता के अतिरिक्त यह भी विचार कर लेना चाहिए कि वह किस भवन का स्वामी है। आगे दो कुण्डली दी जाती हैं।

(१)

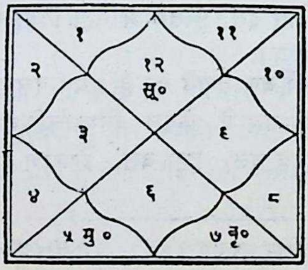

(२)

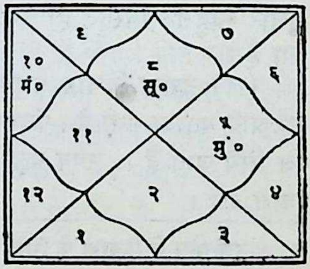

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दोनों कुण्डलियों में सूर्य लग्न में है किन्तु पहली कुण्डली में सूर्य लग्न में[1] निकृष्ट फल करेगा। छठे घर का स्वामी होकर लग्न में बैठा है। यदि सूर्य प्रथम भाव में अनिष्ट प्रभावकारक हो तो वात और पित्त से शरीर में पीड़ा, सिरदर्द, नेत्र-रोग, मुख में पीड़ा, उद्वेग आदि अशुभ प्रभाव करेगा। लग्नेश भी अष्टम गया है इस कारण इस फलादेश की पुष्टि होती है। किन्तु दूसरी कुण्डली में सूर्य लग्न में होते हुए भी लग्न और दशमेश का योग होता है। यदि लग्नेश और दशमेश दोनों का इत्थशाल* हो तो अवश्य ही लग्नस्थ सूर्य पद-प्राप्ति करावेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि यह तो साधारण नियम है कि जिस भाव में क्रूर ग्रह हो उस भाव को पीड़ा पहुँचाता है (उदाहरण के लिए मंगल पंचम में हो तो सन्तान-कष्ट, चोट लगने का डर, पेट में पीड़ा आदि); किन्तु यह विचार भी परमावश्यक है कि किस भवन का स्वामी है।

(७) ग्रहों के वर्ग—राशि, होरा, द्रेष्काण आदि भी बनाकर देखना चाहिए कि शुभ वर्गों में ग्रह है या अशुभ वर्गों में। 'ताजिक' में दो प्रकार से वर्गों का विचार किया जाता है।

(क) ग्रह, होरा, द्रेष्काण, चतुर्थांश, पंचमांश, षष्ठांश, सप्तमांश, अष्टमांश, नवमांश, दशमांश, एकादशांश तथा द्वादशांश बना कर देखना चाहिए कि इन १२ वर्गों में कितने शुभ वर्ग में ग्रह पड़ा है। जितने शुभ ग्रहों के वर्ग में हो उतना ही अच्छा। १२ वर्गों का विचार बहुत विस्तृत है इसलिए इस पुस्तक में नहीं दिया जा रहा है।

(ख) दूसरा विचार पंचवर्गी बल देखने का है। यह पंचवर्गी बल आगे बताया गया है। पंचवर्गी बल में केवल निम्नलिखित ५ बल लिये जाते हैं। उच्च बल, गृह बल, हद्दा बल, द्रेष्काण बल, नवांश बल।

---

* इस योग के विवरण के लिए देखिए प्रकरण २०। [1] अधम, नीच.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(८) इसके अतिरिक्त कुण्डली में एक विशेष बल और देखा जाता है। इसे हर्ष-बल कहते हैं।

(क) सूर्य को नवम में, चन्द्रमा को तृतीय में, मंगल को छठे में, बुध को प्रथम भाव में, बृहस्पति को ११वें, शुक्र को पाँचवें और शनि को १२वें भाव में हर्ष-बल प्राप्त होता है।

(ख) यदि कोई ग्रह स्वगृही (अपनी राशि में) या अपनी उच्च राशि में हो तो भी उसे हर्ष-बल प्राप्त होता है।

(ग) पुरुष ग्रह-सूर्य, मंगल, बृहस्पति इनमें से जो कोई चतुर्थ पंचम, षष्ठ, दशम, एकादश या द्वादश में हो वह हर्षित माना जाता है। ४, ५, ६, १०, ११, १२ /

स्त्री ग्रह—चन्द्रमा, शुक्र, बुध, शनि इसमें से जो ग्रह प्रथम द्वितीय, तृतीय, सप्तम, अष्टम या नवम में हो वह हर्षित माना जाता है। १, २, ३, ७, ८, ९ /

(घ) स्त्री ग्रह (चं०, बु०, शु०, श०) रात्रि में हर्षित माने जाते हैं अर्थात् यदि सूर्यास्त के बाद और सूर्योदय काल के पहले वर्ष-प्रवेश हो तो ये हर्षित माने जायेंगे। पुरुष ग्रह (सू०, मं०, बृ०), दिन में हर्षित होते हैं। अर्थात् यदि वर्ष-प्रवेश-काल सूर्योदय के बाद और सूर्यास्त के पहले हो तो ये हर्षित माने जायेंगे।

यदि कोई ग्रह उपर्युक्त चारों प्रकार से हर्षित हो तो पूर्ण हर्षित माना जाता है। यदि तीन प्रकार से भी हो तो भी अच्छा हो समझेंगे। दो प्रकार से भी हर्षित होना अच्छा होता है।

(९) आगे २०वें प्रकरण में जो षोडश योग बताये जाते हैं उन योगों से भी विचार करके देखना चाहिए कि कौनसे ग्रह सहायक हैं और कौनसे बाधक हैं। जो सहायक ग्रह हों उन्हें शुभ मानना चाहिए और जो बाधाकारक हैं उन्हें अशुभ।

(१०) इसके अतिरिक्त इस पुस्तक के १७वें तथा २४वें प्रकरण में ग्रहों की दीप्त, मुदित, स्वस्थ, अस्तंगत आदि जो दशायें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वताई गई हैं उनका भी उचित विचार करते हुए किस राशि या भाव में ग्रह है, किसका स्वामी है, किससे सम्बन्ध करता है, किस-किस घर को मित्र-दृष्टि से देखता है,किस-किस को शत्रु दृष्टि से,ग्रादि का उचित विचार कर प्रत्येक ग्रह का फलादेश करना उचित हैं।

'ताजिक' में मित्र-शत्रु-दृष्टि ग्रौर पंचवर्गी बल–

जो प्रथम खण्ड में नैर्सगिक मैत्री, तात्कालिक मैत्री ग्रौर पंचधा मैत्री का विचार वताया गया है उसको वर्ष-कुण्डली में लागू नहीं करना चाहिए। वर्ष-कुण्डली में ग्रहों की मित्रता, समता तथा शत्रुता का बिलकुल भिन्न सिद्धान्त है। ताजिक-शास्त्र में दृष्टि के निम्न-लिखित सिद्धान्त हैं :

(१) ग्रपने स्थान से नवम ग्रौर पचम प्रत्यक्ष स्नेह वाली, मेलापक, कार्य साधन करने वाली दृष्टि होती है। परन्तु यह दृष्टि केवल तीन चरण (ग्रर्थात ३।४) मानी जाती है।(रु १ मे १०० फ़ीसदी)

(२) ग्रपने स्थान से तृतीय या एकादश दृष्टि गुप्त स्नेहवाली, कार्य सिद्ध करने वाली मानी जाती है परन्तु तृतीय दृष्टि की मात्रा केवल दो तृतीयांश (ग्रर्थात् २।३) मानी जाती है। एकादश दृष्टि इसकी ग्रपेक्षा कुछ बलवान् है। इसकी मात्रा ५।६ है ग्रर्थात् तृतीय दृष्टि का प्रभाव रुपये में ६७ नये पैसे तो एकादश दृष्टि का प्रभाव ८४ नये पैसे।

(३) ग्रपने स्थान से चतुर्थ ग्रौर दशम दृष्टि गुप्त शत्रुता वाली दृष्टि कहलाती है। इसका प्रभाव १ रु० में २५ नये पैसे।

(४) प्रथम तथा सप्तम दृष्टि प्रत्यक्ष वैर वाली दृष्टि होती है, परन्तु सम्पूर्ण दृष्टि मानी जाती है। ग्रर्थात् इसका प्रभाव १०० फ़ीसदी होता है (१ रुपये में १०० नये पैसे के वरावर)। इसी ग्राधार पर मित्रामित्र चक्र वनाया जाता है। परिणाम यह निकला कि—

(क) यदि दो ग्रह प्रथम, चतुर्थ, दशम या सप्तम हों तो दोनों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शत्रु होते हैं।

(ख) यदि दो ग्रह परस्पर तृतीय, एकादश या नवम-पंचम हों तो मित्र होते हैं। तृतीय दृष्टि भन्दा एकादश दृष्टि बलवान् हुन्छ।

(ग) यदि दो ग्रह परस्पर छठे-आठवें हों या दूसरे-बारहवें हों तो वे सम (न मित्र, न शत्रु) समझे जाते हैं।

अब १५० वे पृष्ठ पर जो वर्ष-कुण्डली है उसके ग्रहों का उपर्युक्त सिद्धान्त पर मित्र सम-शत्रु चक्र बनाया जाता है।

मित्र-सम-शत्रु चक्र एक ग्रहबाट अर्को ग्रह

ग्रह	३, ५, ९, ११. मित्र	२, ६, ८, १२ सम	१, ४, ७, १०. शत्रु
सूर्य	मगल और बृहस्पति	शुक्र	चन्द्रमा, बुध, शनि
चन्द्र	मंगल और बृहस्पति	शुक्र	सूर्य, बुध, शनि
मंगल	सूर्य, चन्द्र, बुध	शनि	बृहस्पति, शुक्र
बुध	मंगल और बृहस्पति	शुक्र	सूर्य, चन्द्र, शनि
बृहस्पति	सूर्य, चन्द्र, बुध	शनि	मंगल और शुक्र
शुक्र	शनि	सू०, चं०, बु०	मंगल, बृहस्पति
शनि	शुक्र	मंगल, बृ०	सूर्य, चन्द्र, बुध

पंचवर्गी बल :

(१) उच्च बल—सूर्यादि सप्त ग्रहों के पूर्णोच्च स्थान अर्थात् जहाँ वह पूर्ण उच्च होते हैं ३१वें पृष्ठ पर बताये गये हैं। उनके परम नीच स्थान भी उसी पृष्ठ पर दिये गये हैं। जो ग्रह पूर्ण उच्च स्थान पर हो उसे पूर्ण बली कहते हैं। इसकी नाप २० है। अर्थात् उदाहरण के लिए यदि किसी की वर्ष-प्रवेश-कुण्डली में मंगल के मकर के २८ अंश हों तो उसे २० बल मिलेगा। यदि मंगल परम नीच स्थान में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो अर्थात् कर्क राशि के २८वें अंश पर हो तो उसे-उच्च बल के नाम से० प्राप्त होगा, मध्य में अनुपात से समझना चाहिए। परमोच्च और परम नीच में १८० अंश का अन्तर होता है। इसलिए यदि कोई ग्रह परमोच्च स्थान से ४५ अंश दूर हो तो उसे उच्च बल १५ प्राप्त होगा। यदि परमोच्च स्थान से ९० अंश दूर हो तो उच्च बल १० प्राप्त होगा। इसी प्रकार त्रैराशिक से* बल निकालना चाहिए।

(२) **स्वगृही बल :** यदि कोई ग्रह स्वराशि में हो तो उसे ३० बल प्रप्त होता है। यदि मित्र की राशि में हो तो २२½, यदि सम की राशि में हो तो १५, शत्रु की राशि में हो तो ७½।

हद्दा चक्र :

मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी.
बृ० ६	शु० ८	बु० ६	मं ७	बृ० ६	बु० ७	श० ६	मं० ७	बृ० १२	बु० ७	शु० ७	शु० १२
शु० ६	बु० ६	शु० ६	शु० ६	शु० ५	शु० १०	बु० ८	शु० ४	शु० ५	बृ० ७	बु० ६	बृ ४
बु० ८	बृ० ८	बृ० ५	बु० ६	श० ७	बृ० ४	बृ० ७	बु० ८	बु० ४	शु० ८	बृ० ७	बु० ३
मं० ५	श० ५	मं० ७	बृ० ७	बु० ६	मं० ७	शु० ७	बृ० ५	मं० ५	श० ४	मं० ५	मं० ९
श० ५	मं० ३	श० ६	श० ४	मं० ६	श० २	मं० २	श० ६	श० ४	मं० ४	श ५	श० २

* इसे बहुत से लोग 'इकाई' का नियम भी कहते हैं।

नोट—हद्दा चक्र का प्रयोजन पृष्ठ १६३ पर बताया गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) हद्दा बल—यदि ग्रह अपनी हद्दा में हो तो उसे १५ बल प्राप्त होता है। यदि मित्र की हद्दा में हो $११\frac{१}{४}$। यदि सम की हद्दा में हो तो $७\frac{१}{२}$, यदि शत्रु की हद्दा में हो तो $३\frac{३}{४}$। पृ० १६२ पर हद्दा चक्र दिया गया है अर्थात् मेष राशि में प्रारम्भिक ६ अंशों का स्वामी बृहस्पति,७ से १२तक शुक्र, १३ से २० तक बुध, २१ से २५ तक मंगल, २६ से ३० तक शनि। ऊपर जो मेष से मीन तक हद्दाओं के स्वामी दिये गये हैं उस चक्र से यह विचार करे कि विचारणीय ग्रह स्वयं अपनी या किसी अन्य ग्रह की हद्दा में है और जिसकी हद्दा में है वह विचारणीय ग्रह का मित्र, सम या शत्रु है।

(४) द्रेष्काण बल—यदि वर्ष-कुण्डली में ग्रह अपने द्रेष्काण में हो तो १० बल, मित्र के द्रेष्काण में हो तो $७\frac{१}{२}$, सम के द्रेष्काण में ५ और शत्रु के द्रेष्काण में $२\frac{१}{२}$ बल मिलता है।*

(५) नवांश बल—यदि ग्रह अपने नवांश में हो तो ५ बल, यदि मित्र के नवांश में हो तो $३\frac{३}{४}$, यदि सम के नवांश में हो तो $२\frac{१}{२}$ और यदि शत्रु के नवांश में हो तो $१\frac{१}{४}$ बल मिलता है।

इस प्रकार उच्च बल के २०, स्वगृही के ३०, हद्दा के १५, द्रेष्काण के १०, और नवांश के ५, कुल-पूर्ण संख्या ८० हुई। प्राचीन सम्प्रदाय यह है कि पहले बीघा का विशेष प्रचार था और १ बीघा में २० बिस्वा होते हैं इस कारण लोग बलाबल को २० बिस्वा, १५ बिस्वा, १० बिस्वा, ५ बिस्वा इस प्रकार की भाषा में व्यक्त करते थे।

अतः प्राचीन ग्रन्थों में लिखा है कि जितनी बल-संख्या आवे

---

*नोट यवन मतानुसार १२ राशियों के जो ३६ द्रेष्काण होते हैं उनके स्वामी निम्नलिखित हैं। (१) मं० सू० शु०, (२) बु० चं० श० (३) बृ० मं० सू० (४) शु० बु० चं० (५) श० बृ० मं (६) सू० शु० बु० (७) चं० श० बृ० (८) मं० सू० शु० (९) बु० चं० श० (१०) बृ० मं० सू० (११) शु० बु० चं० (१२) श० बृ० मं०। यही मत विशेष प्रचलित है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसके ४ से भाग देकर विस्वा बना ले। ८० पूर्ण संख्या है, ८० को ४ से भाग दिया तो २० विस्वा हुए, जिसका अर्थ है पूर्ण बली। इस प्रकार जितनी बल-संख्या किसी ग्रह को प्राप्त हो उसका चतुर्थांश कर विस्वा बनाना चाहिए।

(क) १५ विस्वा से २० विस्वा तक बल प्राप्त हो तो पूर्ण बली। (ख) १० विस्वा से १५ विस्वा तक हो तो बली। (ग) ५ बिस्वा से १० बिस्वा तक हो तो हीन बली। (घ) ५ बिस्वा से भी कम हो तो अत्यन्त निर्बल समझ लेना चाहिए।

वर्षेश-निर्णय

ऊपर जो पंचवर्गी बल विस्तार से बताया गया है इसके दो प्रयोजन हैं। एक तो यह कि जो ग्रह बली हो वह शुभ फल देता है, और जो निर्बल हो वह कष्टकारक सिद्ध होता है। दूसरा प्रयोजन यह है कि वर्ष-कुण्डली में यह विचार बहुत मुख्य है कि वर्षेश कौन-सा ग्रह है यह स्थिर किया जावे। वर्षेश होने के अधिकारी निम्नलिखित ५ ग्रह हो सकते हैं :

(१) जन्म-कुण्डली में जो लग्न का स्वामी हो उसे जन्म-लग्नपति कहते हैं।(२)वर्ष-कुण्डली में जो लग्न का स्वामी हो उसे वर्ष-लग्नपति कहते हैं।(३)यदि दिन में(सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच में) वर्ष-प्रवेश हो तो उसे दिवालग्न कहते हैं। यदि रात्रि में(सूर्यास्त के बाद सूर्योदय से पहिले) वर्ष-प्रवेश हो तो उसे रात्रिलग्न कहते हैं। तो इसके अनुसार निम्नलिखित वर्षेश होने का अधिकारी होता है।

वर्ष लग्न कौन है	मे०	वृ०	मि०	क०	सिं.	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी.
यदि दिवा लग्न हो :	सू०	शु०	श०	शु०	वृ०	चं०	बु०	मं०	श०	मं०	वृ०	चं०
यदि रात्रि लग्न हो :	वृ०	चं०	बु०	मं०	सू०	शु०	श०	शु०	श०	मं०	वृ०	चं०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस प्रकार दिन में वर्ष-प्रवेश है या रात्रि में वर्ष-प्रवेश है और वर्ष-लग्न कौन-सा आता है—इस विचार से जो ग्रह वर्षेश होने का अधिकारी होता है उसे त्रिराशिपति कहते हैं।

(४) (क)—दिन में वर्ष-प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी वर्षेश होने का अधिकारी होता है।

(ख)—यदि रात्रि मे वर्ष-प्रवेश हो तो चन्द्रमा वर्ष-कुण्डली में जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी वर्षेश होने का अधिकारी होता है।

(५) मुंथा जिस राशि में हो उस राशि के स्वामी को मुंथेश कहते हैं। मुंथा किस राशि में रखना है यह १५०वें पृष्ठ पर बताया जा चुका है। मुंथेश भी वर्षेश होने का अधिकारी होता है।

इस प्रकार ऊपर वर्षेश होने के पाँच अधिकारी या उम्मीदवार हो सकते हैं। अब यह देखना चाहिए कि इन पाँचों में कौन-कौन लग्न को देखते हैं। (पाँचों उम्मीदवारों में जो ग्रह लग्न को देखें उनका पंचवर्गी बल निकालकर यह देखना चाहिए कि सबसे बली कौन है)। जो सबसे बली होता है वही वर्षेश होता है। वर्षेश यदि पूर्ण बलवान् हो तो वर्ष शुभ जाता है। वर्षेश जिस भाव के स्वामी से इत्थशाल करता है (यह योग आगे २०वें प्रकरण में समझाया गया है) उस भाव-सम्बन्धी शुभ फल देता है। वर्षेश यदि निर्बल, अशुभ स्थान में अथवा पापग्रहों से आक्रान्त और दृष्ट हो तो वर्ष पीड़ाकारक, अनिष्ट प्रभाव उत्पन्न करने वाला होता है।

दीप्तांश

आगे के प्रकरण में इक्कबाल आदि १६ योग बताने के पहले यह स्पष्ट कर देना उचित है कि यद्यपि मित्र, सम, शत्रु दृष्टि-विचार में (देखिये पृष्ठ १६०) राशि से राशि गिनना बताया गया है किन्तु जहाँ योगों का विचार करना हो वहाँ वर्ष-कुण्डली में अंश-से-अंश गिनने चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साथ की कुण्डली देखिए। चन्द्रमा, सूर्य से नवें घर में है। लेकिन चन्द्रमा के ८° अंश हैं और सूर्य के २६°, इसलिए नवम-पंचम होते हुए भी दोनों के राशिगत अंशों में (२६-८)=१८ अंशों का फासला है। यह अत्यन्त अधिक होने के कारण जहाँ योगों का विचार करना हो वहाँ यह दृष्टि कारगर

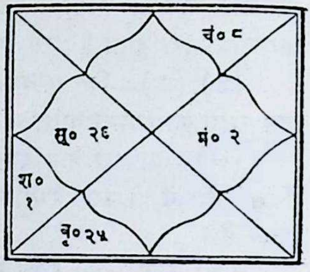

नहीं होगी। इसी प्रकार चन्द्रमा और बृहस्पति यद्यपि एक-दूसरे से सातवें हैं किंतु चंद्रमा के ८ अंश हैं और बृहस्पति के २५ अंश, इस कारण इन दोनों की दृष्टि भी पूर्ण कारआमद सिद्ध नहीं होगी। सूर्य और बृहस्पति दोनों एक-दूसरे से तृतीय-एकादश हैं। इस प्रकार एक-दूसरे को देखते हैं (ताजक में जातक से भिन्न दृष्टि के सिद्धांत हैं। यह १६०वें पृष्ठ पर बताया जा चुका है।) और सूर्य के—जिस राशि में वह है—उसमें २६ अंश हैं तथा बृहस्पति के २५ अंश। इस प्रकार दोनों के राशिगत अंशों में केवल १ अंश का अन्तर है इस कारण ऐसी दृष्टि, 'योग' में प्रभावोत्पादक मानी जायेगी। इसी प्रकार चंद्रमा के राशिगत अंश ८ हैं और मंगल के २, दोनों में राशिगत केवल ६ अंशों का अन्तर है। इस कारण यह दृष्टि भी 'योग' का प्रभाव उत्पन्न कर सकती है। सूर्य और शनि यद्यपि एक-दूसरे से बारहवें और दूसरे हैं और ताजिक शास्त्रानुसार दोनों में कोई दृष्टि नहीं है किंतु सूर्य शनि से पिछली राशि में २६ अंश पर है और शनि सूर्य से अग्रिम राशि में १ अंश पर, इस कारण दोनों में वास्तविक अन्तर केवल ५ अंशों का है। अतः

*इस वर्ष-कुण्डली में जो ग्रहों के साथ संख्या दी गई है वह ग्रहों के अंशों की है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दोनों में दृष्टि न होते हुए भी—वर्ष-कुण्डली में योगों के विचार से दोनों ऐसे अंशों के अन्तर्गत माने जायेंगे जहाँ एक ग्रह दूसरे को अपना तेज देने में समर्थ है। इन अंशों की संख्या को 'दीप्तांश' कहते हैं। कितने अंश हों जिनके अन्तर्गत होने से द्विर्द्वादश होने की स्थिति में भी, अथवा नवम, पंचम, तृतीयेकादश या एक दूसरे से सातवें होने पर या चतुर्थ-दशम दृष्टि होने पर या एक ही राशि में दो ग्रहों में 'योग' प्रभाव उत्पन्न हो सकता हैं? यह जो प्रश्न है, इसका उत्तर यह है कि भिन्न-भिन्न ग्रहों के दीप्तांश भिन्न-भिन्न हैं।

दीप्तांश चक्र

ग्रह	सू०	चं०	म०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०
दीप्तांश	१५	१२	८	७	९	७	९	१

दीप्तांश देखने का प्रकार—जिन ग्रहों में दृष्टि हो उनके दीप्तांशों को जोड़िये और उनको आधा कीजिए। उदाहरण के लिए आपको चंद्रमा और मंगल में दृष्टि देखनी है कि यह दृष्टि 'योग' फल उत्पन्न कर सकती है या नहीं। चंद्रमा के दीप्तांश १२ हैं, मंगल के ८, दोनों का योग २० हुआ, इसका आधा १०। तो चन्द्रमा और मंगल में १० अंशों तक राशिगत अन्तर होने पर दोनों दीप्तांश के अन्तर्गत माने जायेंगे। इस सिद्धांत के अनुसार १६६वें पृष्ठ पर जो कुण्डली बनायी गयी है—उसमें चन्द्रमा और मंगल के अपनी-अपनी राशिगत केवल ९ अंशों का अंतर है; इसी लिए दोनों दीप्तांश में हैं।

—·—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बीसवाँ प्रकरण

षोडश योग

इक्कबाल आदि षोडश योग

वर्ष-कुंडली में १६ योग बहुत महत्त्व के हैं। इनका न केवल वर्ष-कुंडली में विचार करना चाहिए अपितु प्रश्न कुंडली में भी विचार बहुत फलकारक सिद्ध होता है।

(१) **इक्कबाल योग**—ताजिक शास्त्र यवनों से लिया गया है इस कारण इसके योगों के नाम भी प्रायः फ़ारसी, अरबी आदि से लिये गये हैं। यदि सब ग्रह 1,4,7,10 केन्द्र और 2,5,8,11 पणफर में हों तो 'इक्कबाल' योग होता है। (केंद्र, पणफर, आपोक्लिम किन स्थानों को कहते हैं यह पृष्ठ ३८वें पर बता चुके हैं।) यद्यपि अष्टम स्थान पणफर स्थान है किंतु यह योग तब ही फलित होता है जब अष्टम स्थान के अतिरिक्त पणफर स्थान तथा केंद्रों में ही ग्रह हों। यह योग उन्नति और वृद्धिकारक है।

(२) **इन्दुवार**—यदि सब ग्रह आपोक्लिम स्थानों में हों तो 'इन्दुवार' योग होता है। जिस वर्ष में यह योग हो उस वर्ष में मानसिक चिन्ता, उद्वेग और अवनति होती हैं। ३,६,९,१२ स्थान

(३) **इत्थशाल**—यदि लग्नेश और किसी ग्रह में (क) परस्पर दृष्टि हो और (ख) दोनों ग्रह दीप्तांश के अन्तर्गत हों—जैसा कि १६६-७वें पृष्ठ पर समझाया गया है; और (ग) शीघ्र गति वाले ग्रह के राशिगत अंश कम हों और धीरे चलने वाले ग्रह के राशिगत अंश अधिक हों तो वर्ष-प्रवेश के आगे के दिनों में शीघ्र गति वाला ग्रह-विशेष तेजी से चलने के कारण उतने ही अंशों का हो जायेगा जितने अंशों का मंद गति ग्रह है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इत्थशाल योग

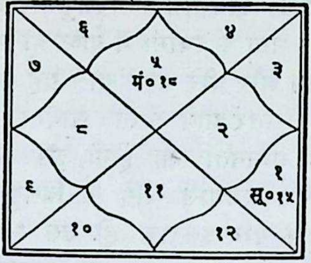

साथ की वर्ष-कुंडली में लग्नेश सूर्य के १५ अंश हैं और मंगल के १८ अंश हैं। यदि सूर्य प्रतिदिन १ अंश चलता है और मंगल प्रतिदिन ४५ कला चल रहा है तो दोनों की चाल में १५ कला का अंतर होगा। इस प्रकार सूर्य और मंगल की रफ़तार में अंतर होने की वजह से १२ दिन बाद मंगल—१२×४५=५४० कला=९ अंश आगे बढ़ जायेगा और उसके २७ अंश हो जायँगे और सूर्य प्रतिदिन १ अंश चलता है इस कारण १२ दिन बाद सूर्य के भी २७ अंश हो जावेंगे (१५+१२=२७)। मंगल और सूर्य के—अपनी-अपनी राशिगत अंश समान हो जाने से एक-दूसरे को अपना तेज दे सकेंगे। यदि मन्दगति वाला ग्रह थोड़े अंश का हो और शीघ्रगामी ग्रह अधिक अंश का हो तो दोनों के अंश समान नहीं हो सकते। किंतु यदि शीघ्रगामी ग्रह के अधिक अंश होने पर भी वह वक्री हो तो दोनों ग्रहों के समान अंश हो जावेंगे। इस कारण इत्थशाल योग हो जावेगा। लग्नेश का जिस भाव के स्वामी से इत्थशाल हो उस भाव का फल उस वर्ष में अवश्य होता है। अष्टम, द्वादश अशुभ भाव हैं। इन भावों के स्वामियों से इत्थशाल होना अच्छा नहीं। नवम भाव के स्वामी से लग्नेश का इत्थशाल होगा तो उस वर्ष भाग्य-वृद्धि होगी। जिस प्रकार लग्नेश से इत्थशाल देखते हैं उसी प्रकार वर्षेश से भी किस भाव के स्वामी का इत्थशाल होता है, यह विचार करना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) **इसराफ़**—इत्थशाल का बिलकुल उल्टा इसराफ़ है। जहाँ लग्नेश और अन्य भाव के स्वामी में दृष्टि हो किंतु शीघ्रगामी ग्रह के अधिक अंश हों और धीरे चलने वाले ग्रह के अंश थोड़े हों, वहाँ शीघ्रगामी ग्रह निरन्तर आगे बढ़ता जायगा और दोनों ग्रहों के राशिगत अंशों में समानता नहीं होगी, इस कारण 'इसराफ़' योग होगा। इसका फल इत्थशाल योग के बिलकुल विरुद्ध है। जिस भवन के स्वामी के साथ इसराफ़ हो उस भाव-सम्बन्धी फल की हानि होती है। कोई-कोई आचार्य यह मानते हैं कि लग्नेश का यदि शुभ ग्रह से इसराफ़ हो तो इतना हानिकारक नहीं होता।

(५) **नक्त योग**—यदि लग्नेश और कार्येश (जिस भाव-सम्बन्धी विचार करना हो उस भाव के स्वामी को कार्येश कहते हैं) में परस्पर दृष्टि न हो और उन दोनों के बीच में दीप्तांशों के अन्तर्गत ऐसा शीघ्रगामी ग्रह हो जो लग्नेश और कार्येश दोनों को देखता हो तो वह एक ग्रह के तेज को लेकर दूसरे को दे देता है। उदाहरण के लिए साथ की वर्ष-कुण्डली में बुध और बृहस्पति में दृष्टि नहीं है। बुध के ६ अंश और बृहस्पति के १२ अंश। यदि चन्द्रमा वृषभ राशि में ८ अंश का है तो वह बुध को भी देखता है और बृहस्पति को भी, और शीघ्र चलने वाले बुध का तेज लेकर धीरे चलने वाले बृहस्पति को दे देता है। ऐसा योग होने से किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा कार्य-सिद्धि होगी यह कहना चाहिए।

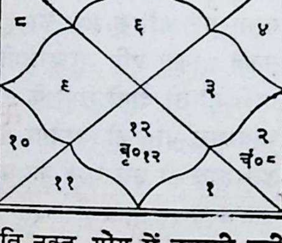

(६) **यमया योग**—जो परिस्थिति नक्त योग में बतायी गयी है वही परिस्थिति यमया योग में होती है। लग्नेश व कार्येश के अपनी-अपनी राशिगत अंश ऐसे होते हैं कि यदि लग्नेश-कार्येश में परस्पर दृष्टि होती तो इत्थशाल होता, किंतु लग्नेश व कार्येश में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दृष्टि नहीं है। अब इन दोनों की अपेक्षा मन्दगामी (धीरे चलने वाला ग्रह) किसी ऐसी राशि में है जहाँ से वह लग्नेश व कार्येश दोनों से दृष्टि करता है तो यमया योग हुआ। यमया योग और नक्त योग में अन्तर यह है कि यदि लग्नेश व कार्येश दोनों की अपेक्षा शीघ्रगामी ग्रह की सहायता से कार्य-सम्पादन हो तो नक्त योग। यदि दोनों की अपेक्षा मन्दगामी ग्रह यह कार्य सम्पादन करे तो यमया योग होता है।

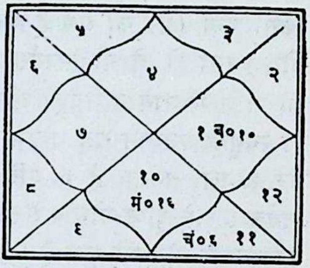

उदाहरण—लग्नेश चन्द्रमा के ६ अंश हैं, कार्येश मंगल के १६ अंश; यदि दोनों में दृष्टि होती तो इत्थशाल योग होता, किंतु इन दोनों में दृष्टि नहीं है। यहाँ बृहस्पति १०वें घर में है और दोनों को देखता है। दोनों से मन्दगामी है और दोनों के अंशों के बीच के इसके अंश हैं, इस कारण लग्नेश, कार्येश की दृष्टि न होते हुए भी अन्य व्यक्ति की सहायता से कार्यसिद्धि हो जावेगी।

(७) **मणऊ योग**—मणऊ योग का सिद्धान्त यह है कि यदि लग्नेश व कार्येश में इत्थशाल हो रहा हो किंतु कोई पापग्रह (मंगल या शनि) दोनों या एक को भी शत्रु-दृष्टि से देखता हो, और दीप्तांशों के अंतर्गत हो तो कार्य-नाश करता है। यह अशुभ योग है।

(८) **कम्बूल योग**—यदि लग्नेश और कार्येश में परस्पर इत्थशाल हो और इन दोनों में एक से भी चन्द्रमा इत्थशाल करता हो तो कम्बूल योग होता है। लग्नेश, कार्येश और चन्द्रमा तीनों उच्च राशि या स्वराशि के बलवान् हों तो बहुत बढ़िया कम्बूल योग बनता है। यदि नीचराशि, शत्रुराशि के निर्बल हों तो निर्बल कम्बूल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बनता है। लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल के द्वारा जो शुभता प्रकट होती है उसकी बहुत अधिक मात्रा में कम्बूल योग द्वारा पुष्टि होती है।

(६) **गैर कम्बूल**—यदि लग्नेश और कार्येश में दृष्टि हो, किंतु यदि चन्द्रमा लग्नेश और कार्येश से दृष्टि न करता हो (चन्द्रमा स्वराशि या उच्चराशि में न हो—राशि के अंतिम भाग में हो और किसी से दृष्टि न करता हो) किंतु अग्रिम राशि में जाकर किसी अन्य (ग़ैर का अर्थ है अन्य, दीग़र) बलवान् ग्रह से कम्बूल योग करता हो तो भी कार्यसाधक होता है। यदि चन्द्रमा आगे की राशि में जाने वाला हो और उस आगे की राशि में कोई उच्च या स्वगृही बलवान् ग्रह चन्द्रमा के दीप्तांश के अन्तर्गत हो तभी ग़ैर कम्बूल बनता है। यदि अग्रिम राशि में जाकर नीच या निर्बल ग्रह से दृष्टि-योग करे तो गैर कम्बूल योग नहीं बनता। गैर कम्बूल योग भी शुभ है। किसी अन्य की सहायता से कार्य बनता है।

(१०) **खल्लासर योग**—यह कार्यनाशक योग है। यदि लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल हो किंतु न चन्द्रमा कंबूल योग करता हों और न ग़ैर कम्बूल करता हो तथा चन्द्रमा अपनी राशि या उच्चराशि आदि में न होकर शून्य मार्ग में हो तो खल्लासर योग होता है। जब कोई ग्रह अधिकारहीन हो अर्थात् अपनी राशि, उच्च राशि आदि में न हो और न अपनी नीच राशि आदि में हो और किसी

नोट—यदि शीघ्रगति ग्रह ३, ६, ९, १२ इनमें से कहीं स्थित होकर केन्द्रस्थ धीरे चलने वाले ग्रह से इत्थशाल करे तो पहले कार्य में बाधा पड़ेगी किंतु बाद में सफलता मिलेगी। किंतु यदि मन्दगति ग्रह ३, ६, ९, १२ स्थान में स्थित हो और उससे इत्थशाल करने वाला शीघ्रगति केन्द्र में हो तो प्रारंभ में तो आशा दिखाई देगी किंतु कार्य बनेगा नहीं। इस योग का वर्ष-कुंडली तथा प्रश्न-कुंडली दोनों में उपयोग करना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह से दृष्टि भी न हो तो उसे शून्य मार्ग में स्थित कहते हैं।

(११) **रद्द योग**—रद्द योग शुभ योगों को रद्दी कर देता है। यदि इत्थशाल करने वाले दोनों ग्रह अस्त हों, नीच हों, शत्रु-राशि में हों, क्रूर ग्रहों के साथ हों, अष्टम आदि दुःस्थान में हों, या दोनों में से एक भी ऐसा हो तो कार्य नहीं बनता।

(१२) **दुफालिकुत्थ योग**—लग्नेश और कार्येश यदि इन दोनों में इत्थशाल हो और (१) इन दोनों में धीरे चलने वाला ग्रह अपनी स्वराशि या उच्चराशि, हद्दा, द्रेष्काण आदि में बलवान् हो तथा (२) शीघ्रगामी ग्रह अपनी उच्च, स्वराशि आदि में न हो और निर्बल हो तो दुफालिकुत्थ योग होता है। यह कार्यसाधक है।

(१३) **दुत्थकुत्थीर योग**—यदि लग्नेश व कार्येश दोनों निर्बली हों इस कारण इत्थशाल होने पर भी कार्य-सफलता उत्पन्न न कर सकते हों किंतु दोनों में से एक भी किसी स्वगृही, उच्च, बलवान् ग्रह से इत्थशाल करता हो तो किसी अन्य व्यक्ति की सहायता से कार्यसिद्धि होगी यह कहना चाहिये।

(१४) **शुभतम्बीर योग**—यदि लग्नेश और कार्येश दोनों में परस्पर दृष्टि न हो किंतु इन दोनों में से एक राशि के अंत में स्थित हो और आगामी (आगे की) राशि में स्थित बलवान् ग्रह से इत्थशाल करता हो तो शुभतम्बीर योग होता है। ऐसे योग में अन्य की सहायता से कार्यसाधन होता है।

(१५) **कुत्थ योग**—यदि वर्ष-कुंडली में लग्नेश, कार्येश आदि बलवान् हों तो कुत्थ योग होता है। केन्द्र (2,4,7,10) और पणफर (2,5,8,11) में स्थित,

---

नोट—शीघ्रगति ग्रह निर्बल हो इसका अर्थ केवल यह है कि वह पंचवर्गी बल के अनुसार कमजोर हो किंतु दोनों ग्रहों में से कोई भी वक्री या अस्तंगत या शत्रुराशिस्थ नहीं होना चाहिए।

नोट—अथवा कोई भी दो बलवान् ग्रह लग्नेश या कार्येश से इत्थशाल करते हों तो भी कार्य सिद्ध होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२,६,८,१२.

पंचवर्गी बल के अनुसार बलवान् ग्रह बली होता है। आपोक्लिम में स्थित वक्री या अस्तंगत तथा पंचवर्गी बल के अनुसार निर्बल ग्रह को निर्बल समझना चाहिए। चारों प्रकार के हर्ष बल का विचार भी कर लेना उचित है। (देखिये पृष्ठ १५६ से १६३ तक) कुत्थ योग होने से उस वर्ष में पूर्ण उन्नति, सफलता तथा हर्ष प्रदान करने वाले शुभ कार्य होते हैं।

(१६) **दुरूफ़ योग**—यह कुत्थ योग का उलटा है। इसका फल कष्ट, विपत्ति, शरीर-पीड़ा, मानसिक त्रास, धन-हानि, कलह आदि है। यदि वर्ष-कुंडली में सब ग्रह निर्बल हों तो यह योग होता है। निर्बल ग्रह किसे कहते हैं यह ऊपर दुत्थ योग के प्रसंग में बता दिया गया है।

ये १६ योग वर्ष के प्राण हैं। इनका उचित विचार कर फलादेश करना चाहिए। प्रश्न-कुण्डली में भी इनका विचार परमावश्यक है।

बहुत से व्यक्ति सहमों को भी बहुत प्रधानता देते हैं। किंतु वर्ष-कुण्डली में सहम-विचार तभी ठीक से किया जा सकता है जब जन्म-कुण्डली में सहम लगाये गए हों। जन्म-पत्रों में १ लाख कुण्डली में से एक में भी सहम नहीं लगाए जाते हैं। इस कारण यहाँ भी यह विषय नहीं दिया जा रहा है।

मुंथा विचार

मुंथा किस राशि में रखनी चाहिए यह १५० पृष्ठ पर बताया जा चुका है। यदि वर्ष-कुण्डली में मुंथा चौथे या सातवें घर में पड़े तो अशुभ फल देती है। यदि छठे या आठवें घर में पड़े तो शत्रु व रोग-वृद्धि, शरीर-पीड़ा आदि घोर कष्ट देती है। द्वादश में अनिष्टकारी है। बहुत व्यय-कारक होती है। यदि मुंथा पाप ग्रह के साथ हो तो शुभ-स्थित मुंथा भी शुभ फल देने में समर्थ नहीं होती और दुःस्थान स्थित मुंथा तो और भी अधिक पीड़ाकारक हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाती है। इसी प्रकार यदि मुंथा शुभ ग्रह के साथ हो और शुभ राशि में हो तो पूर्ण शुभ फल देती है। किंतु यदि ४, ६, ७, ८, १२ स्थान में स्थित हो और शुभ ग्रह से दृष्ट या युत हो तो उतना कष्ट नहीं पहुँचाती। जो पाप या शुभ ग्रह की युति का फल ऊपर बताया गया है उसी प्रकार जैसे ग्रह मुंथा को देखते हों उनकी दृष्टि के अनुसार भी फल होता है। यदि राहु के भोग्य अंश में मुंथा हो तो शुभ फल देती है। यदि राशि के जिन अंशों को राहु भोग कर चुका है (राहु उलटा चलता है यह याद रखना चाहिए) उनमें मुंथा हो तो अशुभ फल करती है। जिस प्रकार मुंथा का विचार करते हैं उसी प्रकार मुंथेश का भी विचार करना चाहिए। शुभ ग्रह से युत दृष्ट शुभ स्थान में स्थित शुभ होता है। पापग्रह से युत, दृष्ट दुःस्थान में स्थित मुंथेश अशुभ होता है।

त्रिपताकी चक्र

नीचे लिखे प्रकार से त्रिपताकी चक्र बनाना चाहिए।

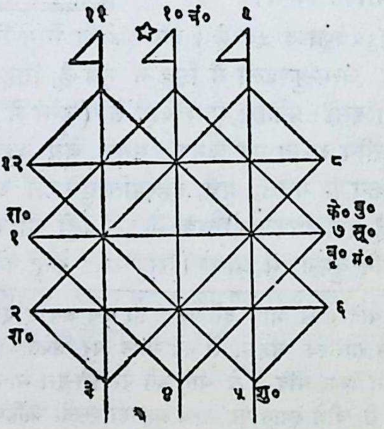

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्य में जहाँ * तारे का चिह्न है वर्ष-लग्न स्थापित कर जिस प्रकार वर्ष-कुण्डली लिखते हैं उस प्रकार अन्य राशियों की संख्या लिखिये। पृष्ठ १५१ पर जो वर्ष-कुण्डली बनाई है उसमें मकर लग्न आया है। इस कारण मध्य पताका के स्थान में १० लिखा। वर्ष-लग्न के अनुसार—त्रिपताकी चक्र में केवल लग्न भरा जाता है। वर्ष-कुण्डली के ग्रह इस पताकी चक्र में नहीं भरे जाते हैं। ग्रह भरने का निम्नलिखित प्रकार है।

जिन सज्जन की ५१ वें वर्ष-प्रवेश की वर्ष-कुण्डली १५१ पृष्ठ पर बनाई गई है। उनकी जन्म-कुण्डली निम्नलिखित है :

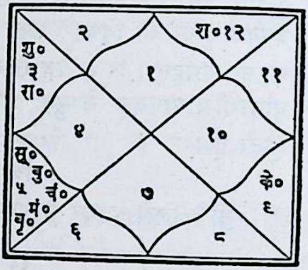

(क) ५१वें वर्ष-प्रवेश का त्रिपताकी चक्र बनाना है इस कारण ५१ में ९ का भाग दिया। शेष ६ बचे इस कारण जन्म-कुण्डली में जिस राशि में चंद्रमा है उससे छठे स्थान पर, अर्थात् सिंह से छठे मकर में चन्द्रमा स्थापित किया।

(ख) प्रवेशाब्द ५१ है। इसमें ४ का भाग दिया शेष ३ बचे। इस कारण जन्म-कुण्डली में सिंह में सूर्य है, सिंह से तीसरे तुला में सूर्य रखा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों से (जन्म में जिस राशि में जो ग्रह है) तृतीय स्थान पर क्रमशः मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थापित किए। मंगल, बुध, बृहस्पति तुला में आये, इसलिए जहाँ ७ लिखा है वहाँ त्रिपताकी चक्र में इन ग्रहों को रखा। शुक्र सिंह में तथा शनि वृषभ में आया। राहु और केतु को भी अपनी-अपनी

नोट—यदि ९ से भाग देने पर ९ ही बचे अर्थात् एक पूरा-पूरा भाग लग जाय तो जन्म राशिस्थ चंद्रमा से नवें स्थान पर त्रिपताकी चक्र में चंद्रमा रखना चाहिए। इसी प्रकार यदि ४ से भाग देने पर पूरा-पूरा भाग चला जाये तो जन्म-राशिस्थ ग्रह से चौथे स्थान पर अन्य ग्रह को रखना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्मस्थ राशि से तृतीय में रखना चाहिए। किन्तु राहु और केतु उलटा चलते हैं इस कारण मिथुन में राहु है—आगे की ओर न गिनकर पीछे की ओर गिनना चाहिए। मिथुन, वृषभ, मेष अर्थात् जहाँ १ लिखा है वहाँ त्रिपताकी चक्र में राहु स्थापित किया। इसी प्रकार जन्मस्थ धनु में केतु होने के कारण उलटा गिनने पर तुला आई इसमें केतु स्थापित किया।

त्रिपताकी चक्र से शुभाशुभ विचार

स्वर्भानुविद्धे हिमगौ त्वरिष्टं पातार्किविद्धे सरुजो भवंति।
महीजविद्धे तु शरीरपीड़ा शुभैश्च विद्धे बहुसौख्यलाभः।
शुभाशुभं व्योमगवीर्यतोऽत्र फलञ्च वर्षस्य वदेत् सुधीमान्॥

अर्थात् (अ) राहु और चंद्रमा का वेध होने से अरिष्ट (कष्ट) होता है।

(आ) चंद्रमा का यदि शनि या केतु से वेध हो तो शरीर-पीड़ा, रोग आदि होता है।

(इ) यदि चंद्र और मंगल का वेध हो तो भी शरीर-पीड़ा होती है।

(ई) यदि चंद्रमा का शुभ ग्रह से वेध हो तो बहुत सुख और लाभ होता है।

टिप्पणी—चंद्रमा का जिस ग्रह से वेध हो रहा है वह पूर्ण बलवान् और शुभ होगा तो सुख और लाभ भी अधिक होगा। निर्बल शुभ ग्रह से वेध होने पर थोड़ा लाभ होता है। इसी प्रकार पापग्रह वक्री, अस्तंगत, हीन-बली होकर चंद्रमा से वेध करे तो शरीर-पीड़ा विशेष होती है। यदि चंद्रमा कई पापग्रहों से वेध करे तो भी विशेष अरिष्ट समझना चाहिए। ऊपर जो ग्रह स्थापित किये गये हैं वे जब एक ही राशि में हों, या दायें, बायें या सामने जाने वाली लाइन जहाँ समाप्त होती है उस राशि में कोई ग्रह हो तो वेध कहे—अर्थात् वेध लाता है। उदाहरण के लिए पृष्ठ १७५ पर जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिपताकी चक्र दिया गया है उसमें शनि से जो तीन रेखायें चलती हैं उनके अन्त पर ९, ६, और ३, (अर्थात्, धनु, कन्या और मिथुन राशि हैं) इन तीनों राशियों में कोई ग्रह नहीं है इसलिए शनि का किसी ग्रह से वेध नहीं होता। चंद्रमा १० (मकर) राशि में है इससे ३ रेखायें चलती हैं एक, ७ (तुला), दूसरी ४ (कर्क), तीसरी १ (मेष) राशि पर समाप्त होती है। कर्क में कोई ग्रह नहीं है। किन्तु तुला में सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, केतु हैं—इनसे चंद्रमा का वेध होता है। मेष में राहु है इस कारण चंद्रमा और राहु का भी वेध होता है। प्रस्तुत त्रिपताकी चक्र में राहु, मंगल, केतु से चंद्रमा का वेध शरीर पीड़ा-कारक है। बुध, बृहस्पति से चंद्रमा का वेध शुभ–सौख्य, लाभ-कारक हैं।

———

इक्कीसवां प्रकरण

दशा-पद्धति

वर्ष में दशा लगाने का प्रकार

जिस प्रकार जन्म-कुण्डली में ४३ प्रकार की महादशाएँ बताई गई हैं किन्तु विंशोत्तरी* (१२० वर्ष की), अष्टोत्तरी* (१०८ वर्ष की) तथा योगिनी (३६ वर्ष की) दशा लगाने का विशेष प्रचार है। बाकी ४० प्रकार की दशा लगाना प्रायः लुप्त हो गया है। उसी प्रकार वर्ष में कुंडली में अनेक प्रकार की दशा लगाने का प्रचार था। अब प्रायः मुद्दा दशा और कहीं कही "हीनांशा, पात्यांशा" दशा भी लगाते हैं। मुद्दादशा लगाना नीचे बताया जाता है।

* * अधिकतर विंशोत्तरी दशा ही लगाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुद्दा दशा

इसको बहुत से लोग मुग्धा दशा भी कहते हैं। जन्म-नक्षत्र की संख्या में गत *वर्ष जोड़िये और उसमें से २ घटाकर ९ का भाग दीजिए। यदि एक शेष रहे तो सूर्य से दशा प्रारम्भ होगी, २ शेष रहे तो चन्द्रमा से, ३ बचने पर मंगल से, यदि ४ बाकी बचे तो सर्व-प्रथम राहु की दशा, ५ शेष रहे तो बृहस्पति से, ६ बाकी बचने पर शनि से, ७ शेष रहने से बुध से महादशा का प्रारम्भ गिनना चाहिए। यदि ८ शेष रहे तो केतु से महादशा प्रारम्भ होगी और यदि ९ से पूरा भाग चला जाय तो प्रारम्भ में शुक्र की दशा मानना चाहिए।

प्रत्येक ग्रह की महादशा का समय नीचे दिया जाता है :

सूर्य :	१८ दिन	बृहस्पति :	४८ दिन
चन्द्रमा :	३० दिन	शनि :	५७ दिन
मंगल :	२१ दिन	बुध :	५१ दिन
राहु :	५४ दिन	केतु :	२१ दिन
	शुक्र :	६० दिन	

इस प्रकार इन सब दिनों का योग ३६० होता है किन्तु वर्ष-प्रवेश ३६५ दिन, १५ घड़ी, २२ पल और ५७ विपल पर होता है जिसका मान ३६५$\frac{1}{4}$ दिन के करीब आया तब ५$\frac{1}{4}$ दिन किसकी दशा मानी जाय यह शंका होना स्वाभाविक है। इसका उत्तर यह है कि १२ राशि में ३६० अंश होते हैं। सूर्य जब १ अंश चल ले तब एक सौर (सूर्य का) दिन होता है। यह दशा अंशों के हिसाब से लगाई जाती है। उदाहरण के लिए यदि शुक्र की दशा ५/११, (अर्थात् सूर्य जब सिंह राशि पार कर कन्या राशि में ११ अंश

* जातक अपनी आयु के जितने वर्ष पूरे कर चुका है उसे गत वर्ष कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पार कर चुका) पर प्रारम्भ हुई तो इससें ६० अंश (६० सौर दिन) जोड़ने से ७।११ हुआ। इस कारण जब सूर्य के वृश्चिक राशि के ११ अंश पूरे होंगे तब शुक्र की दशा समाप्त होगी।

उदाहरण : जिन सज्जन की वर्ष-कुण्डली १५० पृष्ठ पर दी गई है उनका जन्म-नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी है। अश्विनी से गिनने पर पूर्वाफाल्गुनी की संख्या ११ आती है। हमें ५१वें वर्ष की कुंडली में मुद्दा दशा लगाना है तो गत वर्ष ५० होने से—५० में ११ जोड़े तो ६१ हुए, इसमें से २ घटाये तो ५९ बचे। ९ का भाग दिया, शेष ५ आये। १७९ पृष्ठ पर बताया गया है कि ५ शेष बचे तो बृहस्पति से महादशा गिननी चाहिए। इसलिए इन की वर्ष की दशा का चक्र निम्नलिखित होगा।

ग्रह	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०
सौर दिन	४८	५७	५१	२१	६०	१८	३०	२१	५४

वर्ष-कुण्डली में जो विविध विचार बताये गये हैं उनसे यह निर्णय करना चाहिए कि कौनसा ग्रह शुभ फल करेगा और कौन-सा कष्ट कारक होगा। जो शुभफल-कारक ग्रह है वह अपनी दशा में शुभ फल देगा। जो कष्टकारक ग्रह है वह अपनी दशा में कष्ट करेगा। शुभ फल क्या होगा और कष्ट-फल क्या होगा यह इस पर से निश्चय करना चाहिए कि ग्रह कौनसा है इसका गुण, प्रकृति कैसी है। वह किन-किन बातों का कारक है। किस राशि और किस भाव में है। किन ग्रहों से सम्बन्ध करता है; उन ग्रहों की क्या-क्या प्रकृति और गुण हैं।

जिस प्रकार त्रैराशिक द्वारा जन्म-कुंडली की महादशाओं में (सूर्य के ६ वर्ष चन्द्रमा, के १० वर्ष आदि) में अन्तर्दशा लगाई जाती है वैसे ही वर्ष-कुण्डली की दशा में अन्तर्दशा भी लगाते हैं। जिस ग्रह की दशा में अन्तर्दशा लगाना हो उसके प्रारम्भ में उसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह की अन्तर्दशा होगी। उदाहरण के लिए शुक्र की ६० सौर-दिन की दशा है इसमें अन्तर्दशाएं लगाना है तो चूंकि सम्पूर्ण वर्ष के ३६० सौर दिनों में शुक्र की दशा ६० दिन की अर्थात् षष्ठांश (छः) होती है इस अनुपात में से ६० को ६ से भाग देने से ६०÷६=१० सौर-दिनों की अन्तर्दशा शुक्र की होगी। शुक्र के वाद सूर्य की अन्तर्दशा होगी। सूर्य की वर्ष में दशा १८ दिन की होती है। यह वर्ष =३६० सौर दिन का २०वाँ हिस्सा है इसलिए शुक्र में सूर्य की अन्तर्दशा—

$$\frac{\text{शूक्र की महादशा}}{२०} = \frac{६०}{२०} = \text{३ सौर दिन हो गये}$$

इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह की महादशा में सब ग्रहों की अन्तर्दशा भी बहुत से ज्योतिषी लगाते हैं परन्तु मुख्यतः केवल महादशा लगाने का प्रचार है।

बाईसवाँ प्रकरण

गोचर-विचार

किसी व्यक्ति के संबंध में शुभाशुभ निर्देश करने के अनेक प्रकार हैं। जन्म-कुंडली द्वारा महादशा, अन्तर्दशा तथा प्रत्यन्तर्दशा आदि का विचार कर शुभाशुभ बताने का प्रकार पहले बताया जा चुका है। अब एक अन्य प्रकार बताया जाता है जिसे "गोचर" कहते हैं। 'गो' शब्द के अनेक अर्थ हैं। गो का प्रसिद्ध अर्थ "गौ" तो सबको मालूम है। किंतु गो का अर्थ 'तारे', 'अकाश', 'सूर्य', 'चन्द्र' 'प्रकाश की किरण' आदि भी होता है। इस कारण गोचर का अर्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुआ आकाश में चलने वाले। ज्योतिष में जब गोचर कहा जाय तब उसका अर्थ होता है आकाश में चलने वाले ग्रह। इन निरंतर चलने वाले ग्रहों का प्रत्येक मनुष्य पर प्रभाव पड़ता है। यदि आप साधारण मिर्च डली हुई पकौड़ियां दो व्यक्तियों को खिलायें और उनमें से एक तो मिर्च खाने का अभ्यस्त हो और स्वस्थ हो और दूसरा मिर्च खाने का अभ्यस्त न हो और उसके मुँह में छाले हों तो उन साधारण मिर्च डली हुई पकौड़ियों को खाने में एक को तो मज़ा आवेगा और दूसरा मुख की झल्लाहट से परेशान हो जावेगा। एक अन्य उदाहरण लीजिये। आप अपने प्रिय पात्र की पीठ पर प्रेम से हाथ रखते हैं तो उसे आनन्द का अनुभव होगा। किंतु यदि उसकी कमीज़ के नीचे जहाँ आपने हाथ रखा है, भयंकर फोड़ा हो तो वह दर्द के मारे चिल्ला उठेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ग्रह निरंतर चलते रहते हैं। सभी पर अपना निरंतर प्रभाव डालते हैं किंतु जिस व्यक्ति के (जन्म-कुंडली में पीड़ित) स्थान पर से जाते हैं उस मनुष्य को ज़ेरबार कर देते हैं और जिस मनुष्य के शुभस्थान में जाते हैं उसे निहाल कर देते हैं।

सूर्यादि नौ ग्रह इस समय कहाँ जा रहे हैं; यह विचार करने के लिए शुद्ध पञ्चांग पास में रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त जिस व्यक्ति के लिए शुभाशुभ विचार करना हो उसकी जन्म-कुंडली भी पास में होनी चाहिए। जन्म-कुंडली में प्रत्येक भाव का महत्व है। "प्रश्न मार्ग" में लिखा है कि जन्म-कुंडली के जिस भाव में शनि जा रहा हो—यदि उस भाव से अष्टमेश उस भाव में जा रहा हो तो उस भाव को बिगाड़ता है।

मूर्त्याद्या निजरन्ध्रपेण शनिना वा स्युर्यदा संयुता:
स्वस्वारिव्ययरन्ध्रपापहृतय-स्तत्स्थस्य वा चेत्तदा ।।
तत्तद्भावविपत्तिरस्ति नियमा-देवं वरांगादिषु ।
ब्रूयादंध्रियुगान्तिमेषु च वपु-र्भागेषु रोगान् सुधी: ।।
("प्रश्न मार्ग,–१४–४९)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् यदि किसी भाव में शनि गोचर-वश जा रहा हो या उस भाव से अष्टम का स्वामी उस भाव में गोचर से जा रहा हो और (क) उस भाव से छठे, आठवें या बारहवें के स्वामी पापग्रह की अन्तर्दशा हो या (ख) उस भाव से छठे, आठवें व बारहवें में जन्म-कुंडली में कोई पापग्रह हो और उसकी अन्तर्दशा हो तो कष्ट पहुचाता है। या शरीर के उस भाग में रोग करता है। इसको एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

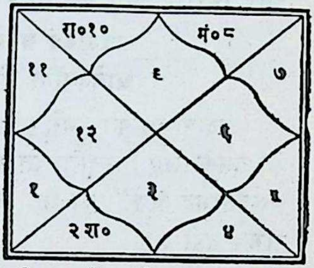

यदि किसी का जन्म-लग्न धनु है और सप्तम स्थान में गोचर-वश शनि मिथुन राशि में जा रहा है ऐसी स्थिति में यदि उस व्यक्ति को सप्तम स्थान से षष्ठ वृश्चिक के स्वामी मंगल की अंतर्दशा हो या सप्तम से अष्टम मकर के स्वामी शनि की अन्तर्दशा हो या सप्तम से द्वादश वृषभ राशि के स्वामी शुक्र की अन्तर्दशा हो या सप्तम स्थान से गिनने पर ६, ८, १२, इन स्थानों में स्थित (सप्तम स्थान से ६, ८, १२, स्थान हुए जन्म-कुण्डली के द्वादश, द्वितीय, और षष्ठ भाव) किसी पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो सप्तम भाव-सम्बन्धी विपत्ति होती है– स्त्री-कष्ट हो, मामले-मुकदमे में हार हो जाये, साझीदार बेईमानी करे, व्यापार में घाटा लगे–इनमें से कोई बात जातक को परेशान करेगी। कहने का तात्पर्य यह है कि शनि जन्म-कुंडली के जिस भाव में गोचर-वश भ्रमण करता है उसको प्रायः बिगाड़ता है। इसका एक ही अपवाद है। यदि शनि जन्म-कुन्डली में लग्नेश या योगकारक हो और गोचर-वश स्वराशि या उच्च राशि में जा रहा हो तो अनिष्ट फल नहीं करेगा।

भारतीय ज्योतिष में गोचर-विचार के कई प्रकार हैं: (१)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म-नक्षत्र द्वारा। मनुष्य का जो जन्म-नक्षत्र है वह तथा उससे दसवाँ, सोलहवाँ, उन्नीसवाँ आदि नक्षत्र जब पाप ग्रहों से विद्ध होते हैं तब मनुष्य को पीड़ा होती है। 'वाल्मीकि रामायण' अयोध्याकांड के चतुर्थ सर्ग में राजा दशरथ ने मृत्यु के कुछ पूर्व कहा है कि ज्योतिषी कहते हैं कि मेरा नक्षत्र सूर्य, अंगारक (मंगल) और राहु से पीड़ित होने वाला है। इसलिए मेरे लिए कोई विपत्ति का समय शीघ्र आने वाला है।

अवष्टब्धं च मे राम नक्षत्रं दारुणैर्ग्रहैः।
आवेदयन्ति दैवज्ञाः सूर्यांगारकराहुभिः ॥

नक्षत्र-वेध का सबसे अच्छा विचार "सर्वतोभद्र चक्र" द्वारा होता है इसके लिए निम्नलिखित ग्रन्थ देखिये। *इस छोटी सी पुस्तक में "सर्वतोभद्र चक्र" या अन्य नक्षत्रवेध-पद्धतियों* का विचार करना संभव नहीं।

(२) दूसरा विचार जन्म-स्थानीय सूर्यादि सातों ग्रहों तथा जन्म-लग्न से (इन आठों से) किया जाता है। कोई ग्रह इस समय किस राशि में जा रहा है—वह इस समय अमुक व्यक्ति की जन्म-कुंडली में जहाँ सूर्य स्थित है वहाँ से शुभ है या अशुभ, जन्मकालीन चंद्रमा से शुभ है या अशुभ, जन्मकालीन मंगल से शुभ है या अशुभ इस प्रकार सातों ग्रहों में देखने के उपरान्त जन्म-लग्न से शुभ है या अशुभ यह विचार कर जब यह निर्णय किया जाता है कि जन्म-कालीन सातों ग्रह और जन्म-लग्न इन आठों से परिणामतः शुभ

---

१. "सर्वतोभद्र चक्र" (१) देखिये "वृहद्दैवज्ञरंजनम्" प्रकरण
२. "जन्मपत्रिका विधान"
३. "फल दीपिका" ३२ तथा (२) "ज्योर्तिनिबंध"
४. "जातक सारदीप"

*अयोध्याकांड चतुर्थ, सर्ग, श्लोक १८।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

या अशुभ—यह वर्ग-विचार कहलाता है सूर्यादि-सातों ग्रहों तथा राहु-केतु का अष्टक वर्ग द्वारा विचार किया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित* ग्रंथ देखने चाहिए। यह बहुत विस्तृत विषय है। इस कारण इसका विवेचन यहाँ सम्भव नहीं है।

(३) तीसरा गोचर-विचार जन्म-राशि से किया जाता है। अर्थात् जन्म के समय चन्द्रमा जिस राशि में था उस राशि से—जन्मकालीन चन्द्र-स्थिति से यदि कोई ग्रह शुभस्थान पर जा रहा हो तो वह शुभ फल करता है। यदि कोई ग्रह अशुभस्थान पर जा रहा हो तो अशुभ फल करता है। भारतवर्ष में—भारतीय ज्योतिष में चन्द्रमा का विशेष महत्व है।

सर्वेषु लग्नेष्वपि सत्सु चन्द्रलग्नं प्रधानं खलु गोचरेषु।
तस्मात्तदृक्षादपि वर्तमानग्रहेन्द्र चारैः कथयेत्फलानि॥
("फलदीपिका"—२६—१)

इसका तात्पर्य यह है कि यद्यपि अन्य ग्रह भी हैं और जन्म-लग्न का भी अपना महत्व है किन्तु सब लग्नों की अपेक्षा चन्द्रलग्न की प्रधानता है। यही कारण है कि उत्तर भारत में जो कुंडलियाँ बनती हैं उनमें पहले जन्म-कुण्डली चक्र बनाया जाता है—जिसमें जन्म-लग्न से प्रारम्भ करते हैं और उसके नीचे चन्द्र-कुण्डली बनाई जाती हैं—जिसमें चन्द्रमा जन्म-काल में जिस राशि में होता है—उस राशि से प्रारम्भ करते हैं। तात्पर्य यह है कि चन्द्रमा मन है :

---

* १. 'बृहतपाराशर होराशास्त्र'। २. "बृहत्जातक" नवम अध्याय। ३. 'फल दोपिका' अध्याय २३ से २६ तक। ४. "जातक सार दीप" अध्याय ७६। ५. 'सारावली' अध्याय ५३। ६. 'अष्टक वर्गः' यह ३०० पृष्ठ की पुस्तक केवल अष्टक वर्ग के सम्बन्ध में है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"चन्द्रमा मनसो जातः"

यह वेद का वाक्य है। ज्योतिष शास्त्र में भी लिखा है 'मनस्तु हिमगुः (बृहज्जातक) "शीतकरस्तु चेतः" (सारावली)। चन्द्रमा मन है। जब मन पर दुःखद प्रभाव पड़े तो दुःख, जब सुखद प्रभाव पड़े तब सुख होता है। एक मनुष्य को लाखों का घाटा लग जाता है और वह सैर-सपाटे करता फिरता है। उसका मन खूब खुश रहता है। दूसरा मनुष्य चार हजार का वेतन पाता है—बंगला, कार, अधिकार, रुपया-पैसा सब कुछ है किन्तु एक विशिष्ट पद के लिए उसको न चुनकर उसके एक मातहत को चुन लिया जाता है। अपने न चुने जाने के कारण वह मनुष्य घोर दुःखी रहता है। इसी प्रकार बहुत सी परिस्थितियाँ हैं। बहुत बार हमारे दुःख के लिए कोई कारण न होने पर भी हमारा मन काल्पनिक या आशंकावश परम दुःखी रहता है। बहुत बार अनेक कष्टों से घिरे रहने पर भी हम लोग परवाह नहीं करते। कहने का तात्पर्य यह है कि मन पर ही सुख-दुःख की छाप पड़ती है और चन्द्रमा मन का अधिष्ठाता है, इस कारण जन्मकालीन चन्द्र राशि से गोचर का विचार किया जाता है। अंग्रेज लोग भी चन्द्रमा और मन का घनिष्ठ सम्बन्ध मानते हैं। चन्द्रमा को अंग्रेजी में "ल्यूना" कहते हैं। 'ल्यूनर' का अर्थ होता है चन्द्रमा-सम्बन्धी। इसी शब्द से "ल्यूनेसी" बना है जिसका अर्थ होता है पागलपन। जब दिमाग या मन खराब हो जाता है तब मनुष्य पागल हो जाता है। इसी कारण अन्य सब विचार छोड़कर केवल जन्म-राशि से (जन्म के समय जहाँ चन्द्रमा था) गोचर-विचार भारतवर्ष में बहुत प्रचलित है। जहाँ जन्म-राशि मालूम न हो वहाँ नाम के प्रथम अक्षर से ही विचार करना चाहिए। किस अक्षर से कौनसी राशि यह २५ वें पृष्ठ पर देखिए।

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे।
जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत ॥

("ज्योतिनिबन्ध"—पृष्ठ ६६)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोचर-विचार में प्रधानता जन्म-राशि की ही है। अब सूर्यादि नौ ग्रह गोचर-वश (अर्थात् चन्द्र राशि से गिनने पर इस समय कौनसी राशि पर हैं) क्या प्रभाव उत्पन्न करते हैं यह बताया जाता है।

मान लीजिए किसी की जन्म-राशि कर्क है और १७ जुलाई १९५८ को सूर्य कर्क में है, चन्द्रमा कर्क में, मंगल मेष में, बुध कर्क में, बृहस्पति कन्या में, शुक्र मिथुन में, शनि वृश्चिक में, राहु तुला में और केतु मेष में हो तो गोचर-विचार से भिन्न-भिन्न ग्रहों के निम्नलिखित स्थान हुए।

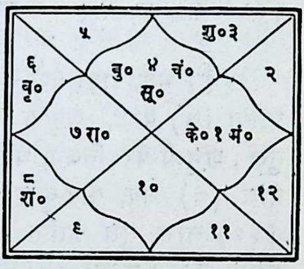

'४' से प्रारम्भ इसलिए किया गया है कि जिस मनुष्य की जन्म-राशि से गोचर का शुभाशुभ विचार कर रहे हैं उसकी जन्मराशि कर्क है और मेष, वृष, मिथुन, कर्क इस प्रकार गणना करने से कर्क की संख्या ४ आती है। इस प्रकार गोचर कुंडली बनाने से यह ज्ञात होता है कि १७ जुलाई, १९५८ को कर्क राशि वाले व्यक्ति के लिए सूर्य प्रथम स्थान में, चन्द्रमा प्रथम स्थान में, मंगल दशम स्थान में, बुध प्रथम स्थान में, बृहस्पति तृतीय स्थान में, शुक्र द्वादश स्थान में, शनि पंचम स्थान में, राहु चतुर्थ स्थान में और केतु दशम स्थान में है।

जन्म-राशि से गिनने पर प्रत्येक ग्रह किस स्थान पर क्या प्रभाव दिखाता है यह नीचे बताया जाता है :

: सूर्य :

(१) स्थान नाश, यात्रा, (२) हानि, भय (३) सुख लक्ष्मी-प्राप्ति (४) रोग भय, मान नाश (५) दीनता, अर्थनाश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) शत्रु नाश, सुख (७) गमन, धन हानि, (८) भय, रोग (९) कान्तिक्षय, पापवृद्धि (१०) सुख, कर्मसिद्धि (कार्य में सफलता) (११) धन प्राप्ति, सुख (१२) द्रव्य नाश, पीड़ा, भय—ये प्रभाव उत्पन्न करता है।

: चन्द्रमा :

(१) पुष्टि, लाभ (२) धन-लाभ, सुख (३) द्रव्य-प्राप्ति, सुख (४) रोग, धन-नाश, मान-नाश (५) सुख, कार्यनाश (६) वित्त (धन) लाभ (७) द्रव्य प्राप्ति, सुख (८) क्लेश, भय, मृत्यु (९) मान, नृप भय (१०) शुभ, सुख (११) अनेक प्रकार के लाभ (१२) रोग धन नाश—ये प्रभाव चन्द्रमा उत्पन्न करता है।

: मंगल :

(१) भय, पीड़ा (२) धन नाश, नेत्र पीड़ा (३) सुख, लक्ष्मी-प्राप्ति (४) कष्ट, शत्रु से भय (५) रोग भय, धन नाश (६) सुख, शत्रुओं पर विजय, धन लाभ (७) शरीर की कृशता, धन-नाश (८) भय, पाप-वृद्धि (९) रोग भय (१०) कष्ट, दुःख (११) लाभ, सुख प्राप्ति (१२) रोग, शोक, व्यय—मंगल ये प्रभाव उत्पन्न करता है।

: बुध :

(१) बंधन, भय (२) धन लाभ (३) शत्रु से भय (४) धन-प्राप्ति, सुख (५) रोग, शोक (६) लाभ स्थिति (७) झगड़ा, पीड़ा, भय (८) लाभ (९) रोग भय, धन नाश (१०) सुख, सुभोग (११) शुभ, धनागम (१२) शोक, धननाश—बुध ये प्रभाव करता है।

---

*टिप्पणी—गोचर प्रकरण में जहाँ-जहाँ मृत्यु शब्द आवे उसका अर्थ वास्तविक मृत्यु न समझकर शरीर-पीड़ा, चिन्ता, उद्वेग, मानहानि, धनहानि, संकट, असफलता आदि समझना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बृहस्पति :

(१) कष्ट, भय, (२) धन लाभ, समृद्धि, (३) भय, पीड़ा, रोग (४) शत्रु वृद्धि, धन-हानि, भय (५) लाभ, सुख (६) रोग, शोक (७) सम्मान, सुख (८) मृत्यु, भय, रोग, पीड़ा (९) सुख, सम्मान (१०) अति दीनता (मानसिक या आर्थिक) (११) सम्मान, सौख्य, धन प्राप्ति (१२) देह-पीड़ा, भय।

जन्म-राशि से गिनने पर जिस स्थान पर बृहस्पति जाता है उस स्थान के अनुसार उपर्युक्त फल करता है।

: शुक्र :

(१) सुख, शत्रु नाश (२) धन लाभ, सुख (३) धन लाभ, सुख (४) धनागम (५) लाभ, सन्तान सुख (६) शत्रु-वृद्धि, पीड़ा (७) शोक, अति भय (८) लाभ (९) सुख लाभ, वस्त्र-लाभ (१०) पीड़ा, धर्म नाश, असुख (कष्ट) (११) सुख, वित्त लाभ (१२) लाभ, धनागम। जन्म-राशि से गिनने पर शुक्र स्थानवश उपर्युक्त फल देता है।

: शनि :

(१) सर्वनाश, पीड़ा, भय, स्थान-हानि (२) क्लेश, शोक, धन-हानि, (३) सुख, धनलाभ, (४) पीड़ा, भय, शत्रु-वृद्धि, स्थान नाश (५) धन नाश, पुत्र कष्ट, उद्वेग (६) सुख, धन लाभ (७) दोष, पीड़ा, भय, स्त्री-सुख में हानि (८) पीड़ा, भय, शत्रु वृद्धि (९) धन नाश, पाप (१०) वैमनस्य, धन हानि (११) धन लाभ, सुख, (१२) क्लेश।

जब जन्म राशि से द्वादश, प्रथम (जन्म-राशि में) तथा जन्म-राशि से द्वितीय—इन तीनों राशियों में शनि रहता है उस समय को साढ़े साती शनि कहते हैं। इसका कारण यह है कि शनि प्रत्येक राशि में करीब ढाई वर्ष रहता है और ऊपर जो साढ़े साती की तीन राशि गिनाई गई हैं इन तीनों को पार करने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में शनि को करीब २½+२½+२½=७½ साढ़े सात वर्ष लगते हैं। यह साढ़े सात वर्ष का समय समान रूप से कष्टप्रद नहीं होता किन्तु माता-पिता, स्त्री-पति, पुत्र-पुत्री, भ्राता-भगिनी आदि किसी प्रिय जन की मृत्यु या तो साढ़े साती में होती है या मनुष्य घोर संकट, सर्वनाश, दिवाला आदि का शिकार होता है या अति रुग्ण रहता है, पद हानि होती है, नौकरी छूटती है, घोर अर्थ-संकट का सामना करना पड़ता है। एलेन लिओ ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि जब किसी कुटुम्ब में कई व्यक्तियों को एक साथ ज्योतिष के मत से कष्टप्रद समय आवे तब प्रायः बहुत विपत्ति का सामना करना पड़ता है। हमारे अनुभव में भी यही आया है कि जब एक कुटुम्ब में अनेक व्यक्तियों की एक राशि होती है तब उस कुटुम्ब के अधिपति को भी कष्ट उठाना पड़ता है।

: राहु :

राहु जन्म-राशि से गिनने पर गोचरवश निम्नलिखित प्रभाव दिखाताहै :

(१) हानि, कष्ट (२) निर्धनता, व्यय (३) निरोगता, धन-प्रप्ति (४) शोक, वैर (५) हानि, शोक (६) सुख, लक्ष्मी-प्राप्ति, (७) हानि कलह (८) रोग, भय (९) पाप कर्म (१०) वैर, सुख (११) सुख, धन प्राप्ति (१२) हानि, पीड़ा।

: केतु :

(१) हानि रोग, भय (२) वैर, वित्त नाश (३) सुख, लाभ, वृद्धि (४) भय, पीड़ा (५) शोक, धन नाश (६) सुख, धन-प्राप्ति (७) दुर्गति, पीड़ा, (८) पीड़ा, भय, हानि (९) पाप, दीनता (मानसिक या आर्थिक) (१०) भय, शोक (११) ख्याति, यश, धन-लाभ (१२). पीड़ा और वैर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रमा से (जन्म कुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा हो उससे) गिनने पर --जिस स्थान पर केतु हो उस स्थानवश केतु का उपर्युक्त गोचर फल होता है।

जब गोचर का विचार किया जावे तब चन्द्र राशि से तो गिनना ही चाहिए किन्तु जन्म-लग्न से भी यह विचार कर लेना चाहिए कि किस स्थान में ग्रह जा रहा है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित कुंडली पर दृष्टि डालिए।

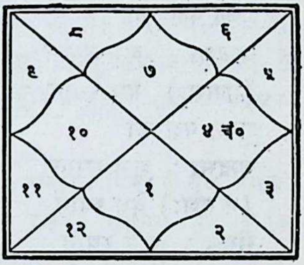

इस जन्म-कुंडली में जब गोचरवश शनि कर्क राशि में आवेगा तो चन्द्रमा से प्रथम राशि में रहने के कारण "सर्वनाश, पीड़ा, भय, स्थान हानि" आदि कष्ट-फल करेगा। इस जातक की कुंडली में कर्क राशि दशम में है जिससे पिता का विचार किया जाता है। इस कारण जब इस व्यक्ति के चन्द्रमा से प्रथम और लग्न से दशम (पिता का स्थान) पर शनि गोचरवश आया तब इसके पिता की तेरह वर्ष की लगी हुई अच्छी नौकरी छूट गई। कहने का तात्पर्य यह है कि चन्द्र राशि से गोचरवश ग्रह कहाँ जा रहा है यह निर्णय करने के उपरान्त यह भी देख लेना चाहिए कि जन्म-कुण्डली के किस भाव में जा रहा है। दोनों का सामंजस्य कर फल कहना उचित है।

वेध विचार

जिन-जिन ज्योतिष-ग्रंथों में गोचर-विचार दिए हैं उनमें वेध-विचार भी दिए हैं। वेध-विचार का अर्थ है कि "गोचर फल" के प्रभाव को रोकना। उदाहरण के लिए यदि नल को खोल दिया जाय तो पानी गिरना चाहिए किन्तु यदि नल के मुँह में कसकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कपड़ा ठूँस दिया जाय तो पानी नीचे नहीं गिरेगा। जब कोई एक प्रभाव उत्पन्न होने के लिए कारण होते हैं तब यह भी देख लेना चाहिये कि उस उत्पन्न करने वाले कारण के कोई अन्य बाधक कारण तो नहीं हैं। इसे वेध कहते हैं।

नीचे प्रत्येक ग्रह का शुभस्थान और वेध-स्थान दिया जाता है।

सूर्य : शुभ स्थान	३, ६, १०, ११
(क्रमश:) वेध स्थान	६, १२, ४, ५
कृष्ण पक्ष का	
चन्द्रमा : शुभ स्थान	१, ३, ६, ७, १०, ११
(क्रमश:) वेध स्थान	५, ९, १२, २, ४, ८
शुक्ल पक्ष का	
चन्द्रमा : शुभ स्थान	२, ५, ६,
(क्रमश:) वेध स्थान	१, ६, १०,
मंगल : शुभ स्थान	३, ६, ११,
(क्रमश:) वेध स्थान	१२, ६, ५
बुध : शुभ स्थान	२, ४, ६, ८, १०, ११
(क्रमश:) वेध स्थान	५, ३, ६, १, ८, १२
बृहस्पति : शुभ स्थान	२, ५, ७, ६, ११
(क्रमश:) वेध स्थान	१२, ४, ३, १०, ८
शुक्र : शुभ स्थान	१, २, ३, ४, ५, ८, ६, ११, १२
(क्रमश:) वेध स्थान	८, ७, १, १०, ६, ५, ११, ३, ६
शनि : शुभ स्थान	३, ६, ११
(क्रमश:) वेध स्थान	१२, ६, ५
राहु : शुभ स्थान	३, ६, ११
(क्रमश:) वेध स्थान	१२, ६, ५
केतु : शुभ स्थान	३, ६, ११
(क्रमश:) वेध स्थान	१२, ६, ५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साधारणतः 'गोचर' स्थान में कोई ग्रह हो और 'वेध' स्थान में भी कोई ग्रह हो तो 'गोचर' फल में रुकावट पैदा करता है।

वेध-विचार किस प्रकार किया जाता है यह अब समझाया जाता है। सूर्य जन्मराशि से तृतीय में गोचरवश शुभ फल देता है किन्तु यदि जन्म-राशि से नवम में (देखिये सूर्य के शुभ स्थान ३ के नीचे ९ की संख्या पृष्ठ १९२ पर दी गई है।) शनि के अतिरिक्त और कोई ग्रह हो तो सूर्य का जो गोचरवश शुभ फल कहा गया है वह नहीं होगा। इसी प्रकार चन्द्रमा से (जन्म-राशि से) छठे सूर्य हो तो शुभ फल होना चाहिए किन्तु यदि जन्म-राशि से द्वादश राशि में शनि के अतिरिक्त कोई ग्रह हो तो सूर्य का गोचर-फल नहीं होगा।

सूर्य पिता है शनि उसका पुत्र। चन्द्रमा पिता है बुध उसका पुत्र। पिता-पुत्र में वेध नहीं होता। इसका तात्पर्य यह है कि जन्म-राशि से यदि गोचरवश सूर्य तृतीय जा रहा हो और जन्म-राशि से नवम में यदि गोचरवश शनि हो तो सूर्य के गोचर फल को नहीं रोकेगा। अब एक अन्य उदाहरण लीजिए। बुध जन्म-राशि से चतुर्थ स्थान में गोचरवश शुभ फल करता है। किंतु चतुर्थ शुभ स्थान का वेध स्थान तृतीय है। इसलिए चन्द्रमा के अतिरिक्त (चन्द्रमा इसलिए नहीं है कि चन्द्रमा बुध का पिता है और पिता-पुत्र का वेध नहीं होता) कोई ग्रह यदि जन्म-राशि से तृतीय में हो तो बुध का शुभ फल नहीं होगा

पृष्ठ १९२ पर शुभ स्थान तथा वेध स्थान दिये गये हैं। उनको क्रमशः समझना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि बृहस्पति के शुभ स्थान और वेध स्थान का विचार करना है तो द्वितीय शुभ स्थान का वेध स्थान द्वादश, पञ्चम का चतुर्थ, सप्तम का तृतीय, नवम का दशम और एकादश का अष्टम समझना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"स्वजन्मराशेरिह वेधमाहुः
अन्ये ग्रहाधिष्ठितराशितः सः"

(मुहूर्त चिन्तामणि ४–५)

बहुत से विद्वान् वेध का विचार ही नहीं करते केवल गोचर का विचार करते हैं।

विपरीत वेध-विचार

जिस प्रकार गोचर के शुभ फल का बाधक वेध-स्थान-स्थित ग्रह होता है उसी प्रकार जब कोई ग्रह जन्म-राशि से अशुभ स्थान में गोचरवश हो और अशुभ फल कर रहा हो किंतु विपरीत वेध-स्थान में कोई अन्य ग्रह हो (यहाँ भी पिता-पुत्र का वेध नहीं होता इस कारण पिता-पुत्र के अतिरिक्त अन्य कोई ग्रह विपरीत वेध-स्थान में होना चाहिए) तो गोचरवश जो अशुभ फल होने को होता है उसमें बाधा हो जाती है अर्थात् अशुभ फल नहीं होता।

नीचे ग्रहों के अशुभ स्थान और उनके क्रमशः वेध स्थान दिये जाते हैं :

सूर्य : (चन्द्र राशि से गिनने पर) अशुभ स्थान ४–५–९ –१२
(तात्कालिक सूर्य राशि से गिनने पर) वेध स्थान ३–६–१०–११

चन्द्रमा : (जन्म राशि से गिनने पर) अशुभ स्थान १–४–५–८–९–१२
(कृष्णपक्ष) (तात्कालिक चन्द्रराशि से) वेध स्थान २–३–६–७–१०–११

नोट—ये शुभ स्थान तथा वेध स्थान—दोनों चंद्रमा से गिनने उपयुक्त हैं। किन्तु नारद, कश्यप, गुरु आदि विविध आचार्यों में मतभेद है। किसी-किसी का मत है कि शुभ स्थान तो चन्द्र राशि से गिने किन्तु वेध स्थान—जिस ग्रह का गोचरवश विचार किया जा रहा हो वह ग्रह फल विचार के समय जिस राशि में हो उस राशि से वेध स्थान गिनना चाहिए, किन्तु यह मत अधिक मान्य नहीं है। विशेष जिज्ञासु निम्नलिखित ग्रन्थ* देखें।

* १. मुहूर्त्त चिन्तामणि।
२. पीयूष धारा टीका, पृष्ठ १४०—१५०।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चंद्रमा :	(जन्म राशि से गिनने पर) अशुभ स्थान	४–६–८
(शुक्लपक्ष) :	(तात्कालिक चन्द्र राशि से वेध स्थान	२–५–६
मंगल :	(जन्म राशि से गिनने पर) अशुभ स्थान	५–६–१२
	(गोचरस्थ मंगल से गिनने पर) वेध स्थान	३–६–११
बुध :	(जन्म राशि से गिनने पर) अशुभ स्थान	३–६–७–६ –१२
	(गोचरस्थ बुध से गिनने पर) वेध स्थान	२–५–८ १०–११
बृहस्पति :	(जन्म राशि से गिनने पर) अशुभ स्थान	३–४–१०–१२
	(गोचरस्थ गुरु से गिनने पर) वेध स्थान	२–५–६–११
शुक्र :	(जन्म राशि से गिनने पर) अशुभ स्थान	६–७–१०
	(गोचरस्थ शुक्र से गिनने पर) वेध स्थान	२–५–६
शनि :	(जन्म राशि से गिनने पर) अशुभ स्थान	५–६–१२
	(गोचरस्थ शनि से गिनने पर) वेध स्थान	३–६–११
राहु :	(जन्म राशि से गिनने पर) अशुभ स्थान	५–६–१२
	(गोचरस्थ राहु से गिनने पर) वेध स्थान	३–६–११
केतु :	(जन्म राशि से गिनने पर) अशुभ स्थान	५–६–१२
	(गोचरस्थ केतु से गिनने पर) वेध स्थान	३–६–११

"दुष्टोऽपि खेटो विपरीतवेधात् शुभो……

विपरीत वेध का विचार करने में विशेषता यह है कि जन्म-कालीन चन्द्र राशि (जन्म-कुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा हो) उस राशि से तो गोचरस्थ ग्रह* गिना जाता है और विपरीत वेध-स्थान जन्मराशि से न गिनकर, गोचरस्थ ग्रह की राशि से गिनते हैं। उदाहरण—किसी की जन्मराशि कर्क है। मिथुन राशि में जब गोचरवश बृहस्पति आया तब उसे जन्मराशि से द्वादश होने के कारण अशुभ फल करेगा। किंतु यदि—बृहस्पति का विचार कर

* जिस ग्रह का गोचरवश शुभाशुभ विचार कर रहे हों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहे हैं इसलिए यह गोचरस्थ ग्रह है। यह मिथुन राशि में है इसलिए मिथुन राशि से एकादश अर्थात् मेष राशि में कोई ग्रह हो तो विपरीत वेध के सिद्धान्त के अनुसार अशुभ गुरु भी शुभ फल करेगा।

गोचर फलादेश में कुछ विशेष सिद्धान्त

गोचर फल, वेध-विचार तथा विपरीत वेध-विचार बताने के बाद अब गोचर फलादेश के सम्बन्ध में कुछ विशेष विचार बताये जाते हैं :

(१) जो ग्रह जन्म-कुण्डली में अशुभ भवन का स्वामी हो या दुःस्थान में पड़ा हो या दुर्बल, नीच राशि या नीच नवांश में हो वह गोचर-विचार से शुभ स्थान में होते हुए भी विशेष शुभ फल नहीं करता।

(२) जिस समय गोचर का विचार किया जा रहा हो उस समय भी यदि वह ग्रह नीच राशि, नीच नवांश अपने शत्रु से अवलोकित, अस्तंगत, क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो शुभ भाव में होने पर भी विशेष शुभ फल करने में अक्षम होता है। उपर्युक्त (१) तथा (२) में जो सिद्धान्त दिया गया है उसको एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जाता है। मान लीजिए आपका कोई मित्र है। आपके साथ सद्भाव रखता है किन्तु वह स्वयं निर्धन और दुर्बल है या दुष्टों से घिरा हुआ है (पापाक्रान्त पापदृष्ट है) तो भलाई की ओर प्रवृत्त होने पर भी वह आपकी क्या सहायता कर सकता है ?

(३) ऊपर (१) या (२) में जो कहा गया है उससे विपरीत जिस ग्रह का गोचर में विचार कर रहे हैं वह जन्म-कुण्डली में शुभ भवन का स्वामी, शुभस्थान में उच्च, स्वराशि या मित्र-राशि में है और गोचर के समय भी बलवान् (उच्च या स्वराशि में) शुभग्रह-युत शुभग्रह वीक्षित है तो वह पूर्ण शुभफल करेगा। यदि कोई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजा, महाराजा या करोड़पति स्वयं अत्यन्त धनी आप पर कृपालु हो तो विशेष चमत्कारिक फल उत्पन्न हो सकता है।

(४) यदि गोचरवश कोई ग्रह अशुभ फलकारक हो किंतु जन्म-कुण्डली में यह योग कारक हो, शुभ भाव का स्वामी, शुभ

उपरोक्त दशा का फल—गोचर पर से किया जाता है। अर्थात् जिस ग्रह की दशा च
उत्तम फल, मध्यम हो तो मध्यम फल तथा अशुभ हो तो अशुभ फल करता है। नोट-म

↓गोचर फल बोधक चक्र जो ग्रह जन्मपत्री में उत्तम स्थान में पड़ा होग
एवं जो ग्रह जन्म-पत्री में बिगड़ा होगा वह

(६) किंतु ऊपर (४) और (५) में जो स्थिति बतायी गयी है उससे विपरीत—जन्म-कुण्डली तथा गोचर के समय कोई ग्रह नीच राशि, शत्रु राशि, नीच नवांश में या अस्तंगत या क्रूर ग्रहों से युतव वीक्षित हो तो घोर अशुभ फल करता है :

सौम्येक्षितेऽनिष्टफलः शुभदः पापवीक्षितः।
निष्फलौ तौ ग्रहौ स्वेन शत्रुणा चावलोकितः॥

(मु० चि० पीयूषधरा टीका, पृ० १४४)

(७) जिस जन्म-कुण्डली में गोचर का विचार किया जा रहा है। उसमें गोचरस्थ राशि में ग्रह हैं या नहीं यह देखिये।

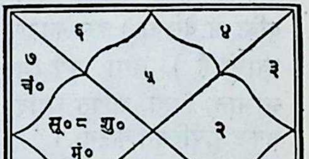

उदाहरण के लिए साथ की कुण्डली में वृश्चिक राशि में सूर्य मंगल व शुक्र हैं। सूर्य लग्नेश है। मंगल यद्यपि क्रूर ग्रह है तथापि सिंह लग्न वालों के लिए चतुर्थ और नवम का स्वामी होने के कारण योगकारक और शुभ है। शुक्र राज्येश और तृतीयेश है। इसलिए यदि तुला राशि से द्वितीय वृश्चिक राशि में जब बृहस्पति जावेगा तब जन्म-कुण्डली स्थित अन्य ग्रहों के ऊपर जाने से विशेष शुभ फल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहे हैं इसलिए यह गोचरस्थ ग्रह है। यह मिथुन राशि में है इसलिए मिथुन राशि से एकादश अर्थात् मेष राशि में कोई ग्रह हो तो विपरीत वेध के सिद्धान्त के अनुसार अशुभ गुरु भी शुभ फल करेगा।

४ २०२५ वार नि. स. २४६४ च
ता: १४ से बंगला (

पुष्य ११।१६ रा. | १० स्वा. ८।११ रा. | श्रवण ११।२० दि. | भरणी ८।५० रा.

(१) जो ग्रह जन्म-कुण्डली में अशुभ भवन का स्वामी हो या दुःस्थान में पड़ा हो या दुर्बल, नीच राशि या नीच नवांश में हो वह गोचर-विचार से शुभ स्थान में होते हुए भी विशेष शुभ फल नहीं करता।

(२) जिस समय गोचर का विचार किया जा रहा हो उस समय भी यदि वह ग्रह नीच राशि, नीच नवांश अपने शत्रु से अवलोकित, अस्तंगत, क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो शुभ भाव में होने पर भी विशेष शुभ फल करने में अक्षम होता है। उपर्युक्त (१) तथा (२) में जो सिद्धान्त दिया गया है उसको एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जाता है। मान लीजिए आपका कोई मित्र है। आपके साथ सद्भाव रखता है किन्तु वह स्वयं निर्धन और दुर्बल है या दुष्टों से घिरा हुआ है (पापाक्रान्त पापदृष्ट है) तो भलाई की ओर प्रवृत्त होने पर भी वह आपकी क्या सहायता कर सकता है?

(३) ऊपर (१) या (२) में जो कहा गया है उससे विपरीत जिस ग्रह का गोचर में विचार कर रहे हैं वह जन्म-कुण्डली में शुभ भवन का स्वामी, शुभस्थान में उच्च, स्वराशि या मित्र-राशि में है और गोचर के समय भी बलवान् (उच्च या स्वराशि में) शुभग्रह-युत शुभग्रह वीक्षित है तो वह पूर्ण शुभफल करेगा। यदि कोई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजा, महाराजा या करोड़पति स्वयं अत्यन्त धनी आप पर कृपालु हो तो विशेष चमत्कारिक फल उत्पन्न हो सकता है।

(४) यदि गोचरवश कोई ग्रह अशुभ फलकारक हो किंतु जन्म-कुण्डली में यह योग कारक हो, शुभ भाव का स्वामी, शुभ भाव में स्थित, लग्नेश का मित्र, षड्वर्ग में बलवान हो तो वह विशेष अशुभ फल नहीं करता।

(५) गोचर के समय भी यदि वह ग्रह स्वराशि या उच्च राशि में शुभ ग्रहों से वीक्षित हो तो विशेष अशुभ फल नहीं करता।

(६) किंतु ऊपर (४) और (५) में जो स्थिति बतायी गयी है उससे विपरीत—जन्म-कुण्डली तथा गोचर के समय कोई ग्रह नीच राशि, शत्रु राशि, नीच नवांश में या अस्तंगत या क्रूर ग्रहों से युतव वीक्षित हो तो घोर अशुभ फल करता है :

सौम्येक्षितेऽनिष्टफलः शुभदः पापवीक्षितः।
निष्फलौ तौ ग्रहौ स्वेन शत्रुणा चावलोकितः ॥

(मु० चि० पीयूषधरा टीका, पृ० १४४)

(७) जिस जन्म-कुण्डली में गोचर का विचार किया जा रहा है। उसमें गोचरस्थ राशि में ग्रह हैं या नहीं यह देखिये।

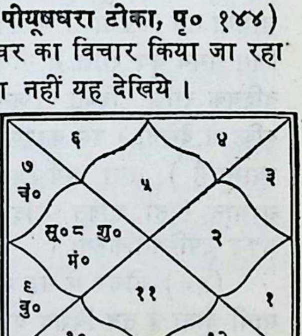

उदाहरण के लिए साथ की कुण्डली में वृश्चिक राशि में सूर्य मंगल व शुक्र हैं। सूर्य लग्नेश है। मंगल यद्यपि क्रूर ग्रह है तथापि सिंह लग्न वालों के लिए चतुर्थ और नवम का स्वामी होने के कारण योगकारक और शुभ है। शुक्र राज्येश और तृतीयेश है। इसलिए यदि तुला राशि से द्वितीय वृश्चिक राशि में जब बृहस्पति जावेगा तब जन्म-कुण्डली स्थित अन्य ग्रहों के ऊपर जाने से विशेष शुभ फल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करेगा और शनि जब वृश्चिक में जावेगा तब—सूर्य, मंगल आदि पर गुज़रने पर विशेष अशुभ फल करेगा।

(८) जब ग्रह गोचरवश शुभ जा रहा हो और अन्य भाव-स्थित (जन्म-कुण्डली में) ग्रह से अंशात्मक-दृष्टि योग करे तब विशेष शुभ फल करता है।

उपर्युक्त जन्म-कुण्डली में यदि बुध के १०° हों तो गोचरवश जब मिथुन राशि में बृहस्पति १०° का होगा तब बुध को अंशात्मक पूर्ण दृष्टि से देखेगा। चन्द्र राशि से नवम बृहस्पति शुभकारक तो है ही, जब लाभेश धनेश बुध को पूर्ण दृष्टि से देखेगा तब विशेष धनागम होगा।

(९) जैसे ऊपर (८) में अंशात्मक दृष्टियोग के प्रभाव से किस समय विशेष शुभ फल् होगा यह बताया गया है उसी प्रकार अंशात्मक दृष्टि योग से अशुभ फल भी होता है। उपर्युक्त कुंडली में मान लीजिये सूर्य के २१° हैं। जब गोचरवश शनि वृष राशि में जायेगा तब चन्द्रमा से अष्टम होने से अशुभ फल करेगा। अब जिस समय वृष राशि में गोचरवश शनि २१ अंश का होगा तब वृश्चिक राशि स्थित (जन्म-कुण्डली में) सूर्य को अंशात्मक पूर्ण दृष्टि से देखेगा। इस कारण लग्न-सम्बन्धी (क्योंकि सूर्य लग्न का स्वामी है) तथा सूर्य जिन-जिन का कारक हैं (आत्म प्रभाव, सम्मान, पिता, शक्ति आदि) उन-उन बातों सम्बन्धी कष्ट या संकट उपस्थित करेगा।

(१०) गोचर में ग्रह मार्गी से जब वक्री होता है या वक्री से मार्गी होता है तब विशेष प्रभाव दिखाता है।

(११) जब ग्रह अग्रिम राशि में चला जाता है और थोड़े अर्से के लिए वक्री होकर पिछली राशि में आ जाता है तब भी वह आगे की राशि का ही प्रभाव दिखाता रहता है।

(१२) जिसके जन्म-नक्षत्र पर (जन्म के समय चन्द्रमा जिस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नक्षत्र में हो) ग्रहण पड़ता है (सूर्य का ग्रहण हो तो सूर्य उस नक्षत्र में हो–चन्द्रमा का ग्रहण हो तो चन्द्रमा ग्रहण के समय उस नक्षत्र में हो) उस व्यक्ति को बहुत पीड़ा उठानी पड़ती है।

(१३) गोचर-विचार में कौन-कौनसे ग्रह राशि में प्रवेश करते ही फल दिखाते हैं—कौन-कौनसे ग्रह राशि के मध्य भाग में और कौनसे ग्रह राशि के अन्तिम भाग में—इस सम्बन्ध में प्राचीन मत यह है कि यदि राशि (३० अंशों को) तीन भागों में विभक्त किया जावे तो सूर्य और मंगल राशि में घुमते ही अर्थात् प्रथम दस अंशों में ही अपना फल दिखाते हैं। बृहस्पति और शुक्र राशि के मध्य भाग में अर्थात् १० अंश से २० अंश तक और चन्द्रमा तथा शनि राशि के अन्तिम तृतीयांश में–अर्थात् २० अंश से ३० अंश तक। बुध समस्त राशियों में भ्रमण करता हुआ अपना फल दिखाता रहता है। अर्थात् इसके लिए राशि का कोई विशेष भाग, जहाँ यह विशेष फल दिखावे निश्चित नहीं है। प्रायः यह मत 'बृहज्जातक', 'सारावली', 'होरामकरन्द', 'फलदीपिका', 'जातक-पारिजात' आदि सभी में दिया गया है। अन्य ग्रंथ राहु का गोचरवश कब विशेष प्रभाव दिखाता है इसका उल्लेख नहीं करते किन्तु 'फल दीपिका' के अनुसार राहु समस्त राशियों में गोचरवश अपना प्रभाव दिखाता रहता है। 'काल प्रकाशिका' का मत सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि के सम्बन्ध में तो वही है जो अन्य ग्रंथों में दिया गया है, किन्तु चन्द्रमा तथा राहु के सम्बंध में 'काल प्रकाशिका' का भिन्न मत है :

सूर्यारौ फलदावादौ गुरुशुक्रौ तु मध्यगौ।
मन्दाहौ फलदावन्त्ये बुधचंद्रौ तु सर्वदा ॥

अर्थात् सूर्य और मंगल आदि में फल दिखाते हैं। बृहस्पति और शुक्र मध्य में, शनि और राहु अंत में, बुध और चंद्र सर्वदा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संक्रातिवश गोचर-विचार

भारतीय ज्योतिष में यह भी विचार किया गया है कि कौन-सा सौर मास (सूर्य की एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति तक) कैसा जावेगा। यह जानने के लिए एक तो जिस मनुष्य के लिए विचार किया जा रहा हो उसका जन्म-नक्षत्र जानना आवश्यक है और जिस समय संक्रान्ति हो (सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में गोचरवश जा रहा हो) उस समय चन्द्रमा किस नक्षत्र में है यह ज्ञात होना चाहिए।

सूर्य-संक्रान्ति के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र में हो उसके पहले के नक्षत्र से गिनना प्रारंभ करना चाहिए और जिस का विचार करना हो उसके जन्म-नक्षत्र तक गिने और देखे कि कौनसी संख्या आई। संक्रान्तिको समय चन्द्रमा जुन नक्षत्रमा छ। त्स्को अगाडीको नक्षत्र बाट गणना गर्नु।

(क) यदि एक१से ३ तक संख्या आवे तो उस महीने में यात्रा होती है।

(ख) यदि ४ से ९ तक संख्या आवे तो सुख-प्राप्ति।

✓(ग) यदि १० से १२ तक संख्या आवे तो पीड़ा।

(घ) यदि १३ से १८ तक संख्या आवे तो वस्त्र-प्राप्ति अर्थात् शुभ समय।

✓(ङ) यदि १९ से २१ तक संख्या आवे तो धन-हानि।

(च) यदि २२ से २७ तक संख्या आवे तो धनागम।

उदाहरण—तारीख १६ जुलाई, १९५८ को दोपहर के १ बज कर २८ मिनिट पर (भारतीय स्टैन्डर्ड टाइम) सूर्य ने मिथुन राशि से निष्क्रमण कर कर्क राशि में प्रवेश किया। उस समय चन्द्रमा पुनर्वसु नक्षत्र में था। अब हमें किसी ऐसे सज्जन के लिए विचार करना है जिसका जन्म-नक्षत्र पुष्य है तो, संक्रान्ति के समय चन्द्रमा पुनर्वसु नक्षत्र में था इसलिए पुनर्वसु से पहले आर्द्रा नक्षत्र से गणना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रारम्भ करनी चाहिए। आर्द्रा से गिनने पर आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य—इस प्रकार पुष्य तीसरा नक्षत्र हुआ। अब ऊपर (क) में लिखा है कि १ से ३ तक संख्या आवे तो उस मास में यात्रा होती है, इस कारण संक्रान्ति गोचरवश यात्रा का फलादेश करना चाहिए।

———

तेईसवां प्रकरण

अरिष्ट-शान्ति

जब किसी अनिष्ट ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा हो या वर्ष-कुंडली में अनिष्ट स्थान स्थित हो या गोचरवश कोई ग्रह पीड़ा कर रहा हो तो निम्नलिखित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

सूर्य—माणिक्य, स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, गुड़, कषाय वस्त्र, रक्त वस्त्र, सवत्सा गौ, लाल चंदन, लाल पुष्प, घृत, केसर, मूँगा, नूतन गृह, कमल, ताँबूल।

इन वस्तुओं का प्रति रविवार को अन्यथा जितनी बार सम्भव हो दान करें। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित पदार्थों को जल में मिला कर—उसे छानकर—छने हुए जल से स्नान करें।

मैनसिल, मुलेठी, खस, केसर, देवदारु, रक्त कमल, रक्त-पुष्प, रक्त चंदन आदि।

चंद्रमा से संबंधित दान की वस्तुएं ये हैं—श्रीखंड (सफेद चंदन), बाँस के बने हुए पदार्थ, सफेद चावल, सफेद वस्त्र,

नोट—जन्म-कुंडली में, वर्ष-कुंडली में या गोचरवश कोई ग्रह पीड़ाकारक हो तो उसकी जप, दान, होम, स्नान, शांति पाठ, आदि उपायों से शांति करनी चाहिए। किस ग्रह के लिए किन वस्तुओं का दान दिया जावे या किन स्तुओं से स्नान किया जावे यह इन पृष्ठों में वताया गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्वेत पुष्प, सफेद बैल, घृत, शंख, मोती, कर्पूर, स्फटिक, सीपी।

जब चन्द्रमा की पूज्य महादशा या अन्तर्दशा हो तब इनमें से किसी-न-किसी वस्तु का (यदि हो सके तो प्रति सोमवार को) दान करता रहे। इसके अतिरिक्त पंचगव्य से स्नान (पंचगव्य को पानी में मिलाकर उसे छानकर) तथा शंख या सीपी के जल से स्वयं को जलसिञ्चन करना भी उत्तम है।

मंगल से सम्बन्धित दान की वस्तुएँ निम्नलिखित हैं। पृथ्वी (भूमि), मूँगा, सुवर्ण, ताँबा, गेहूँ, लाल वृषभ, गुड़, रक्त चन्दन, रक्त वस्त्र, केसर, कस्तूरी, मसूर, घी। ब्राह्मणों को मंगलवार को भोजन कराना चाहिए।

स्नान के लिए निम्न पदार्थ विहित हैं:

रक्त चंदन, बिल्व की छाल, सिगरफ, माल कंगनी, मौल-सिरी, धमनी।

बुध ग्रह-जनित पीड़ा के लिए निम्नलिखित पदार्थ श्रेयस्कर हैं।

दान—रत्न, सुवर्ण, पन्ना, हरित वस्त्र, काँसे के बरतन, हाथी-दाँत, मूँगा, सब पुष्प, कर्पूर, विविध फल, तुलसी के वृक्ष, षट्रस भोजन, खांड।

इन वस्तुओं के अतिरिक्त जल में गाय का गोबर, अक्षत, फल, गोरोचन, मधु मिलाकर उसे सुवर्ण तथा मोती की अंगूठी पहन हाथ से उस जल को चलाकर, छानकर स्नान करने से बुध-जनित पीड़ा की शांति होती है।

तुलसीपत्र के सेवन करने से बुध-शान्ति होनी चाहिए ऐसा हमारा विचार है। दक्षिण भारत के एक ज्ञानवयोवृद्ध ज्योतिषी ने हमें बताया कि 'मरवे' (जिसकी गंध से सर्प नहीं आता है) के पत्ते से स्नान करने से (उसे पानी में पीसकर उसका अनुलेपन कर स्नान करने से) बुध का दोष दूर होता है।

बृहस्पति से सम्बंधित दान की वस्तुएँ निम्नलिखित हैं:

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुखराज, सुवर्ण, भूमि, नमक, चीनी, हल्दी, घी, चना इत्यादि पीले अन्न, शहद, छतरी, पुस्तक, पीले वस्त्र, पीले पुष्प, पीले फल, काँसा, घोड़ा।

स्नान के लिए मालती पुष्प, मुलेठी, मधु, (शहद), हल्दी आदि उपयुक्त हैं।

वृहस्पति की शान्ति के लिए फलदार वृक्ष लगवाना तथा फलों का दान करना विशेष उपयुक्त है।

शुक्र—जिनको शुक्र की अनिष्ट दशा या अन्तर्दशा हो उन्हें निम्नलिखित वस्तुएँ जहाँ तक सम्भव हो दान करनी चाहिए।

सुवर्ण, हीरा, चाँदी, सफ़ेद चन्दन, चावल, सफ़ेद एवम् फूलदार (सफेद जमीन पर फूल) वस्त्र, रेशमी वस्त्र, कपूर, इत्र, फुलेल, सुगन्धित पदार्थ, चीनी, सवत्सा गाय, भूमि, मिश्री, दूध, घी, दही, सफेद घोड़ा, इलायची।

जिनको शुक्र ग्रह की पीड़ा हो उन्हें सफेद वस्त्र पहनने चाहिए तथा इत्र-फुलेल का विशेष इस्तेमाल करना चाहिए। केसर, इलायची, मैन्सिल आदि पदार्थों से मिश्रित जल से स्नान करना भी श्रेयस्कर है।

शनि—जिनको अनिष्ट शनि की दशा या अन्तर्दशा हो या जिन्हें गोचरवश अनिष्ट शनि हो उन्हें निम्नलिखित वस्तुएँ यथासम्भव दान करनी उचित हैं।

नीलम, लोहा, सुवर्ण, तिल, उड़द, कुलथी, कस्तूरी, काले वस्त्र, कम्बल, काली भैंस, काली गाय, जूते, काले पुष्प, तेल आदि।

प्राय: शनि का दान डाकोत (भराड़े) लेते हैं। इन वस्तुओं के अतिरिक्त तेल मालिश तथा सुरमा लगाना भी लाभप्रद होताहै।

निम्नलिखित वस्तुओं से स्नान भी पीड़ा में शांति करता है।

सौंफ़, खिल्ला, धमनी, कस्तूरी, मुत्थरां, लोबान।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राहु—राहु के दान के लिए निम्नलिखित वस्तु विहित हैं :

सुवर्ण, सप्तधान्य (उड़द, मूँग, चना, जौ, चावल, गेहूँ, कंगनी), उड़द, नीला वस्त्र, लोहा, तिल, कम्बल, शूर्प (छाजला), तिल भरा हुआ ताँबे का पात्र, तलवार, सोने का सर्प, सीसा, सरसों, घोड़ा।

जिन व्यक्तियों को शनि, राहु या केतु की पीड़ा हो उन्हें नित्य सायं-प्रातः लोबान की धूनी देनी उचित है। हाथीदाँत की वस्तुओं का व्यवहार तथा जिस जल से स्नान करे उसमें हाथीदाँत डालकर रखना भी उत्तम है।

मुत्थरा तथा तिल-पत्र जल में मिलाकर स्नान करना भी उत्तम है।

केतु—दान के लिए निम्नलिखित पदार्थ उत्तम हैं :

वैदूर्य मणि (लहसुनिया), सुवर्ण, लोहा, बकरा, सप्तधान्य, शस्त्र, तिल, तेल, उड़द, कम्बल, कस्तूरी।

जिसको केतु की बहुत पीड़ा हो उसको बकरे के मूत्र (पेशाब) से स्नान कराना भी उचित है। हमारा विश्वास है कि जिस टी० बी० (राजयक्ष्मा) के रोगी को केतु के प्रभाव से जीर्ण ज्वर का रोग हो, उसे यदि बकरे के मूत्र से स्नान कराया जाय, बकरी का दूध पिलाया जाय और नियमपूर्वक तीन-तीन घन्टे पर लोबान की धूप दी जाय तो वह अवश्य अच्छा हो सकता है। साथ ही छिन्न-मस्ता देवी की आराधना तथा केतु का जप भी आवश्यक है।

'तंत्रसार' में सब ग्रहों के तांत्रिक मंत्र दिये गये हैं। 'वैदिक मंत्र संहिता' में भी हैं। प्रत्येक ग्रह की जपसंख्या निम्नलिखित है।

सूर्य—७०००; चन्द्रमा—११,०००; मंगल—१०,०००; बुध—६०००; गुरु—१९,०००; शुक्र—१६,०००; शनि—२३,०००; राहु—१८,०००; केतु—१७,०००.

सूर्य का होम—अर्क (आक); चन्द्रमा का होम—पलाश की

लोबान :— सुगन्धित ...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लकड़ी; मंगल का खदिर(खैर); बुध का अपामार्ग (चिचिड़ा) की समिध (हवन में जो लकड़ी के टुकड़े जलाये जाते हैं); बृहस्पति के हवन के लिए पीपल की लकड़ी और शुक्र के हवन के लिए गूलर की लकड़ी काम में लायें। शनि-मंत्र से हवन करना हो तो शमी (खिजरे की लकड़ी) उपयुक्त है। राहु के लिए दूर्वा (दूब) और केतू के लिए कुश उपयुक्त है।

नवों ग्रहों की शान्ति के लिए जो स्नानार्थ भिन्न-भिन्न पदार्थ बताये गये हैं उनके अतिरिक्त एक विधान और है। किसी भी ग्रह की पीड़ा हो तो उसका दान करे और निम्नलिखित वस्तुओं को जल में मिलाकर छने हुए जल से स्नान करे।

सरसों, देवदारु, फलदीप, लोध्र, सरपुंखा, तीर्थों का जल, धानलावा, करील।

जिस ग्रह का जो रत्न या धातु बताया गया है वह शरीर पर धारण करना भी उपयुक्त है। जैसे सूर्य की प्रसन्नता के लिए सोना और माणिक; चन्द्रमा के लिए मोती और चाँदी इत्यादि।

मुन्था—यदि वर्ष-कुण्डली में मुन्था अनिष्ट स्थान में हो तो उस दोष की शान्ति के लिए निम्नलिखित दान उत्तम हैं:

सुवर्ण, मोती, घृत, श्वेत वस्त्र, काँसा, कर्पूर, हाथी-दाँत, मिश्री, चीनी, सफ़ेद चन्दन, श्वेत पुष्प। इसके अतिरिक्त यदि मुन्था का स्वामी भी पीड़ित हो तो जो मुन्था राशि का स्वामी हो उसी ग्रह के अनुसार जप आदि उचित है।

———

नोट—सर्व प्रकार की ग्रह-पीड़ाओं के लिए महामृत्युञ्जय, जप होम, रुद्राभिषेक, दुर्गापाठ, बहुत श्रेयस्कर है। 'श्रीमद्भागवत' का सप्ताह और 'वाल्मीकिरामायण' का नवाह, विशेषकर सुन्दर काण्ड का पारायण बहुत लाभप्रद सिद्ध होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिष अध्ययन अनुसन्धान केन्द्र
का. जि. ३३ नं. वाड नगर पंचायत
२०/१०० ज्ञानेश्वर काठमाण्डौ नेपाल

तृतीय भाग—प्रश्न-विचार परिचय

चौबीसवाँ प्रकरण

प्रश्न-पद्धति और ग्रह

ज्योतिष के तीन विभाग मुख्य हैं। जन्म-कुण्डली विचार, वर्ष-फल (ताजिक शास्त्र) तथा प्रश्न। गोचर। विचार तो वर्ष-फल के अन्तर्गत आ जाता है। प्रश्न इन सबसे स्वतन्त्र है।

जिस प्रकार बालक के गर्भाधान के समय की कुण्डली खींची जाती है या जिस प्रकार बालक के जन्म-समय की कुण्डली खींचकर बालक का भविष्य व शुभाशुभ फल कहा जाता है उसी प्रकार जिस समय प्रश्नकर्त्ता के मन में प्रश्न की उत्पत्ति हुई या जिस समय प्रश्नकर्त्ता ने प्रश्न किया उस समय की कुण्डली खींच कर यह विचार किया जाता है, कि इस प्रश्न का (हृदय में आये हुए या मुख से उच्चारण किये हुए विचार का) शुभाशुभ क्या होगा।

प्रश्न के विषय में तीन बात मुख्य हैं। एक तो यह कि शुद्ध सात्विक भाव से वास्तविक जिज्ञासा की समाधान के लिए प्रश्न किया जावे। दूसरा यह कि देश-काल-पात्र आदि के विचार का ज्योतिष शास्त्रीय सिद्धान्तों से सामंजस्य कर फल कहना उचित है। तीसरी आवश्यक बात है फलादेश करने वाले के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में। जितना ही मनुष्य सदाचारी, पंडित, धार्मिक वृत्ति का होगा उतना ही उसका फलादेश अधिक ठीक बैठेगा। ज्योतिष-शास्त्र के साधारण फलादेश में और विशेषतः प्रश्न के फल में ज्योतिषी का अतीन्द्रिय ज्ञान (इनट्यूशन) विशेष सहायक होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन बातों का विचार कर प्रश्न-शास्त्र का अभ्यास करना चाहिए। हाथ में फल, फूल, द्रव्य आदि लेकर ज्योतिषी के पास जा कर विनीत भाव से प्रश्न करना चाहिए। यदि प्रश्नकर्त्ता छल करने के लिए या दर्प (घमंड) से प्रश्न करता हो तो प्रश्न का उत्तर न दे। यदि लग्न में चन्द्रमा हो, केन्द्र में शनि हो, बुध सूर्य के साथ अस्त हो और मगल और बुध की लग्न और चन्द्रमा पर सम (तुल्य) दृष्टि हो तो समझना चाहिए कि प्रश्नकर्त्ता स्वच्छ हृदय से प्रश्न नहीं कर रहा है। यदि लग्न में क्रूर ग्रह हो या बुध या बृहस्पति इनमें से एक भी ग्रह सप्तमेश को चतुर्थ, सप्तम या दशम दृष्टि से देखता हो तो प्रश्नकर्त्ता कुटिल भाव से प्रश्न कर रहा है। किन्तु यदि लग्न और सप्तम भाव पर चन्द्रमा, बुध या बृहस्पति की दृष्टि हो या बुध और बृहस्पति इन दोनों में एक ही लग्न या सप्तम भाव में हो तो प्रश्नकर्त्ता वास्तविक जिज्ञासु है। साधु बुद्धि से प्रश्न कर रहा है; यह नतीजा निकालना चाहिए।

एक से अधिक प्रश्न—वैसे तो नियम यह है कि एक बार में एक ही प्रश्न किया जावे अनेक प्रश्नों का एक साथ विचार करना उचित नहीं। जब एक ही प्रश्न किया जाता है तो उस समय का लग्न स्पष्ट करके उस लग्न को कुण्डली मान प्रश्न पर विचार करना उचित है। किंतु यदि अनेक प्रश्न किये जावें तो प्रथम प्रश्न का विचार लग्न से, द्वितीय प्रश्न का चन्द्रमा से, तृतीय का सूर्य से, चतुर्थ का बृहस्पति से, और—शुक्र और बुध इन दोनों में जो बली हो उससे पंचम प्रश्न का विचार करना चाहिए। उदाहरण के लिए नीचे एक प्रश्न-कुण्डली दी जाती है :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्न ४ । ७

सूर्य ७ । २६

चन्द्रमा ११ । २१

मंगल ७ । १

बुध ८ । १२

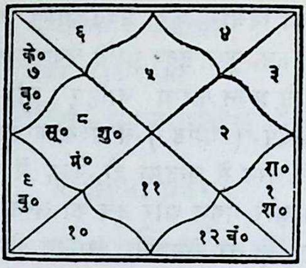

बृहस्पति ६ । १४

शुक्र ७ । २६

शनि ० । ७

राहु ०।२४

केतु ६ । २४

इस प्रश्न-कुण्डली में प्रथम प्रश्न का विचार सिह लग्न (७ अंश) से करना चाहिये । द्वितीय प्रश्न का विचार करते समय चन्द्रमा जिस राशि में हो उसे लग्न मान कर विचार करना चाहिये । यथा :—

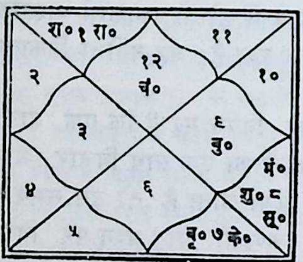

इस प्रश्न-कुण्डली का विचार करते समय लग्न के २१ अंश माने जावेंगे क्योंकि चन्द्रमा के मीन राशि में २१ अंश हैं ।

तृतीय प्रश्न का विचार सूर्य से किया जाता है । इस कारण तृतीय प्रश्न की कुडली निम्न प्रकार से होगी ।

तृतीय प्रश्न का विचार करते समय वृश्चिक लग्न के २६ अंश को प्रश्न-लग्न-अंश मानना होगा क्योंकि सूर्य स्पष्ट ७।२६ है ।

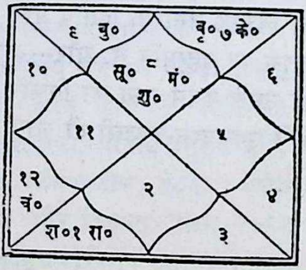

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसी प्रकार चतुर्थ तथा पंचम प्रश्न का विचार करने के लिये जिस ग्रह से विचार करना हो उसे लग्न में रख कर कुंडली-चक्र का न्यास करना चाहिये। शिष्ट सम्प्रदाय तो यही है कि एक वार एक ही प्रश्न करे किन्तु यदि एक से अधिक प्रश्न—एक बार में किये जावें तो उत्तर देने का प्रकार उपर्युक्त है।

ग्रहों के दीप्त आदि दश भेद

प्रश्न-विचार में यह बहुत आवश्यक है कि ग्रह किस दशा में है इसका विचार किया जाय।

(१) **दीप्त**—जो ग्रह अपनी उच्च राशि में हो वह दीप्त कहलाता है। ऐसा ग्रह कार्य-सिद्धि कराता है।

(२) **दीन**—जो ग्रह अपनी नीच राशि में हो वह दीन कहलाता है। ऐसा ग्रह दुःखकारक है।

(३) **मुदित**—जो ग्रह अपनी मित्र राशि में हो वह मुदित कहलाता है। ऐसा ग्रह आनन्द-प्राप्ति कराता है।

(४) **स्वस्थ**—यदि ग्रह अपनी राशि में हो तो उसे स्वस्थ कहते हैं। इसका फल है कीर्ति तथा लक्ष्मी-प्राप्ति।

(५) **सुप्त**—यदि ग्रह शत्रु राशि में हो तो उसे सुप्त कहते हैं। इसका फल है शत्रुभय।

(६) **निपीड़ित**—यदि ग्रह किसी अन्य ग्रह के साथ उसी राशि, उसी अंश और उसी कला में हो तो दोनों ग्रहों में जो ग्रह उत्तर क्रान्ति में आगे की ओर होता है वह विजयी और जिसकी क्रान्ति पीछे की ओर होती है वह हारा हुआ कहलाता है। ऐसा ग्रह धन-हानि कारक है। ऐसे ग्रह को पीड़ित या निपीड़ित कहते है। (पराजित)

(७) **मुषित**—जो ग्रह सूर्य के बहुत समीप होने के कारण अस्त हों वे अस्तंगत होते हैं। प्रायः सूर्य से १२° की दूरी पर चन्द्रमा। १०° की दूरी पर मंगल; बुध यदि वक्री हो तो १२° की दूरी पर यदि मार्गी हो तो १४° की दूरी पर। बृहस्पति ११° की दूरी पर। शुक्र

क्रान्ति= सूर्य से अन्तर... /क्रान्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि वक्री हो तो ८° की दूरी पर और यदि मार्गी हो तो १०° का दूरी पर तथा शनि १५° की दूरी पर अस्त होता है। अस्त का तात्पर्य यह है कि सूर्य के प्रकाश की प्रखरता के कारण —सूर्य के समीप रहने की वजह से वह ग्रह दिखलाई नहीं देता। ऐसा ग्रह कार्यनाश-कारक है।

हीन—जो ग्रह अवरोही होता है अर्थात अपनी नीच राशि की ओर जाने वाला होता है उसे हीन कहते हैं। ऐसा ग्रह अर्थनाश-कारक है। अवरोही

(४) **अधिवीर्य**—जो ग्रह शुभ ग्रहों के वर्ग में और अच्छी रश्मि वाला हो (अर्थात् अस्तंगत, पराजित आदि न हो) वह बली होता है और धन-सम्पत्ति प्राप्त कराता है। मान, इज्जत, पद-प्राप्ति कराने में अधिवीर्य ग्रह बलशाली समझा जाता है।

सुवीर्य—जो ग्रह उच्चाभिमुखी हो अर्थात् अपनी उच्चराशि की ओर जा रहा हो उसे सुवीर्य कहते हैं। ऐसा ग्रह भी शुभफल प्राप्तिकारक है। आरोही

ये ग्रहों की जो दश अवस्थाएँ बताई गई हैं इनका प्रयोजन आगे पड़ेगा। प्रायः लग्न, लग्नेश और कार्य तथा कार्येश की स्थिति और उनके परस्पर सम्बन्ध पर से प्रश्न-फल कहा जाता है। उदाहरण के लिये—मेरा विवाह होगा या नहीं ? यह प्रश्न हो तो विवाह का विचार सप्तम भाव से किया जाता है। इस कारण यदि लग्नेश सप्तमेश दोनों में सम्बन्ध न हो, ये ग्रह अनिष्ट-स्थान-गत हों, सप्तमेश नीच या अस्तंगत या अन्य दुर्दशा में हो तो विवाह नहीं होगा, ऐसा कहेंगे। शुक्र से भी स्त्री-लाभ का विचार किया जाता है। शुक्र भी नीच, अस्तंगत या पराजित हो और लग्न, लग्नेश अथवा सप्तमेश से सम्बन्ध न करता हो तो विवाह नहीं होगा; ऐसा कहेंगे। इसके विपरीत यदि लग्न लग्नेश तथा सप्तम सप्तमेश और शुक्र का परस्पर-सम्बन्ध हो, और इत्थशाल आदि योग बनते हों तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki-Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सप्तमेश उच्च, उच्चाभिमुख आदि हो तो अवश्य विवाह होगा, ऐसा कहेंगे। शुक्र भी उदित, बली और मित्र-राशि का हो तो उपर्युक्त फलादेश की पुष्टि होगी।

वर्ष के प्रकरण में जो इत्थशाल आदि षोडश योग बताये गये हैं उन्हें प्रश्न-कुडली में भी देखना चाहिए कि कोई योग मिलता है क्या? प्रश्न-कुण्डली में विशेषता यह है कि लग्न और लग्नेश को तो मुख्य मानते ही हैं साथ ही जिस भाव-सम्बन्धी प्रश्न हो उस भाव और भावेश का भी विचार किया जाता है। यदि भावेश शत्रु-राशि स्थित, नीच, अस्तंगत या पराजित ग्रह से सम्बन्ध करता है तो स्वयं निर्बल हो जाता है । यदि बली शुभ-ग्रह से इत्थशाल आदि योग करता है या बली शुभ-ग्रह उस भाव में बैठा हो (जिसके सम्बन्ध का विचार किया जा रहा हो) तो शुभता की वृद्धि होती है।

ग्रहों के स्वरूप और उनके कुछ लक्षण—कुल नौ ग्रह हैं और बारह भाव। इन्हीं से समस्त चराचर विश्व की वस्तुओं का विचार किया जाता है। इस कारण एक-एक ग्रह से अनेक वस्तुओं का विचार किया जाता है। उन सब का विशद वर्णन यहाँ सम्भव नहीं। कुछ स्थूल लक्षण बताये जाते हैं। सूर्य सात्विक ग्रह है, पूर्व दिशा का स्वामी है तथा इससे राजा, पिता आदि का विचार किया जाता है। इसकी पित्त प्रकृति है। क्षत्रियों का तथा ग्रीष्म ऋतुओं का अधिष्ठाता है। मधु (शहद) के समान इसके नेत्र हैं। यह पित्त-दोष कारक है। यह धातुओं का भी अधिष्ठाता है। इसके सिर पर थोड़े केश हैं।

इस स्वरूप और लक्षण बताने का तात्पर्य यह है कि यदि प्रश्न-कुण्डली में दशमेश सूर्य हो या दशम स्थान में सूर्य हो, या लग्न किंवा लग्नेश से सूर्य शुभ-सम्बन्ध करता हो तो राजा, महाराजा, सरकार से सम्बन्ध होगा। उनसे सम्बन्धित कार्य मिलेगा यह कहना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाहिए। लाभ-स्थान में सूर्य हो और प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न हो कि किस जाति के व्यक्ति से लाभ होगा तो कहेंगे क्षत्रिय जाति के व्यक्ति से। कब लाभ होगा तो ग्रीष्म ऋतु में (क्योंकि सूर्य ग्रीष्म ऋतु का अधिष्ठाता है)। यदि रोग-सम्बन्धी प्रश्न हो और षष्ठ स्थान या षष्ठेश का सूर्य से सम्बन्ध हो अथवा लग्न किंवा लग्नेश का सूर्य से अनिष्ट सम्बन्ध हो तो कहेंगे कि पित्त रोग होगा। पित्त रोग के अन्तर्गत सिर दर्द, पित्तज्वर, जिगर की बीमारी आदि अनेक रोग आते हैं। यहाँ केवल यह निर्देश-मात्र किया गया है कि सूर्य के जो शास्त्रोक्त लक्षण बताये गये हैं उनका प्रश्न-कुण्डली में कैसे उपयोग करना। अब अन्य ग्रहों के स्वरूप और लक्षण बताये जाते हैं।

चन्द्रमा—मृदु है। जलतत्व का अधिष्ठाता है। इसकी कफ़ प्रकृति है। वर्षा ऋतु का स्वामी है। इस के नेत्र सुन्दर हैं। वैश्य, गौर वर्ण, गोलाकार, वात प्रकृति आदि का विचार चन्द्रमा से करना चाहिए।

मंगल—तामसिक, रक्तवर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी, सेना का अधिप, क्रूर, पिंगल नेत्र वाला, युवावस्था का, धातुओं का स्वामी है। इसका अग्नि तत्व है।

बुध—लम्बे कद का है किंतु नपुंसक है। यह शरद् ऋतु, उत्तर दिशा तथा शूद्र जाति का स्वामी है। पीड़ित होने पर वात, पित्त कफ़ तीनों दोषयुक्त रोग उत्पन्न करंता है। राजकुमार, लिखने-पढ़ने में चतुरता, हिसाब, दलाली, राजदूत आदि का विचार बुध से करना चाहिए। कंदमूल का विचार भी बुध से किया जाता है।

बृहस्पति—ब्राह्मण वर्ण, पुरुष ग्रह है। यह ईशान कोण का स्वामी है। धन, खज़ाना, फल आदि का विचार बृहस्पति से करना चाहिए। इसका कद लम्बा है और इसके नेत्र शहद के समान हैं। इसका पुष्ट शरीर है और शीतल स्वभाव है।

शुक्र—इसका शान्त स्वभाव है। परन्तु स्त्री ग्रह है। यदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सन्तान-सम्बन्धी प्रश्न हो और पञ्चम से शुक्र का सम्बन्ध हो तो कन्या संतति कहना। छठे से सम्बन्ध हो तो स्त्री जैसे शब्द वाला लड़का हो यह फलादेश करना। यह राजसिक प्रकृति का है। चंचल, गौर वर्ण और आग्नेय कोण का स्वामी है। इसकी कफ़ प्रकृति है। काले घुंघराले केश हैं। खट्टा रस इसे प्रिय है।

शनि—यह तामसिक ग्रह है। शनि से वृद्ध, नपुंसक, आलसी, मैले कपड़े वाला, कृश व्यक्ति का अनुमान करना। यह शिशिर ऋतु का स्वामी है और वायु रोग, गठिया, बाय, लकवा, पेट में अफ़ारा आदि वात रोग करता है। पश्चिम दिशा का स्वामी है। इसकी क्रूर प्रकृति है। और इससे म्लेच्छों या हीन जाति के लोगों का विचार किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि प्रश्न-कुण्डली में बलवान शनि दशम या लाभ भाव से सम्बन्ध करता हो और लाभ-सम्बन्धी प्रश्न हो तो कहेंगे कि पश्चिमी पाकिस्तान से व्यापार करने से लाभ होगा।

राहु-केतु—राहु गेरु आदि धातु तथा मूल कन्दों का स्वामी है। और केतु मूल का। और सब लक्षण राहु-केतु के शनि के समान समझने चाहिए। प्रश्न-सम्बन्धी व्यक्ति के वर्ग का अनुमान लग्न से, या बुध से या केन्द्रगत ग्रह से या सबसे बलवान ग्रह से करना चाहिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देते समय अपनी बुद्धि से तारतम्य करके किस ग्रह का विशेष सम्बन्ध है, उस ग्रह की कैसी आकृति और स्वभाव आदि हैं, उनका विचार कर प्रश्न का उत्तर देना चाहिए। अब यह बताया जाता है कि बारहों भावों से क्या-क्या विचार करना है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिष अध्ययन अनुसन्धान केन्द्र
का. जि. ३३ नं. वाड नगर पचायत
२०/१०० ज्ञानेश्वर काठमाण्डौ
नेपाल

पच्चीसवाँ प्रकरण

प्रश्न-विचार

किस भाव से क्या विचार करना--इस पुस्तक के प्रथम भाग में यह बताया जा चुका है कि किस भाव से क्या विचार करना है। जातक शास्त्र और प्रश्न शास्त्र में कहीं-कहीं मतभेद है। इस कारण प्रश्न-कुंडली में किस भाव से क्या विचार करना यहाँ बताया जाता है।

(१) सुख, आयु (यह मनुष्य कितना जियेगा) वय, (इस समय इसकी उम्र कितनी है) अथवा किस उम्र का व्यक्ति है, जाति, स्वास्थ्य, आरोग्य, लक्षण, गुण, क्लेश, आकृति (शक्ल) रूप, वर्ण इन सब का विचार प्रथम भाव से करना चाहिए।

'प्रश्न-मार्ग' के अनुसार यश, शारीरिक सुख, श्रेय (कल्याण की बात) जय और शरीर-सम्बन्धी सब विचार भी लग्न से करना चाहिये।

(२) मोती, माणिक, रत्न, धातु, वस्त्र, मित्र का कार्य, मार्ग का विचार आदि द्वितीय भाव से करना उचित है।

'प्रश्न-मार्ग' के अनुसार समस्त पोष्य-वर्ग (जिनका भरण-पोषण कोई व्यक्ति करता हो), धन, वाणी, दक्षिण नेत्र तथा विविध विद्याओं का विचार भी द्वितीय स्थान से करना उचित है।

(३) बहन, भाई, भृत्य (नौकर), दास (गुलाम), मजदूर आदि का विचार तृतीय भाव से करना उचित है।

'प्रश्न मार्ग' के अनुसार धैर्य, वीर्य (उत्साहशीलता), दुर्बुद्धि, दाहिना कान और सहायक का विचार भी तृतीय स्थान से करना उचित है। हमारे विचार से पड़ोसी, पत्र-पत्रिका, तार, चिट्ठी आदि का विचार भी इसी भाव से होना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) बगीचा, खलिहान, खेत, औषधि, निधि (गड़ा हुआ धन), छिद्र आदि में प्रवेश का विचार चतुर्थ भाव से करना चाहिए।

'प्रश्न मार्ग' के अनुसार माता, मित्र, मामा, भानजा, सुख, वाहन, आसन, लालित्य, जल, शयन, वृद्धि, पशु आदि तथा जन्म-गृह (जिसमें मनुष्य पैदा हुआ हो अथवा अपना प्राचीन मकान) का विचार चतुर्थ भाव से करना चाहिए।

(५) गर्भ, संतान, इधर-उधर ले जाने की वस्तु, मन्त्र, मैत्री, विद्या, बुद्धि, ग्रन्थ (अपने निर्माण किये हुए का विचार), पञ्चम भाव से करना उचित है।

'प्रश्न मार्ग' के मतानुसार प्रज्ञा, प्रतिभा, मेधा, विवेक-शक्ति, पूर्व पुण्य (पिछले जन्म में किया हुआ पुण्य), सौमनस्य, मन्त्री-पद का विचार भी पंचम भाव से करना उचित है।

(६) चोर, भय, शत्रु, संग्राम, गधा, ऊँट, क्रूर कर्म, मामा, आतङ्क और भृत्य इनका विचार षष्ठ से करना चाहिए।

'प्रश्न मार्ग' के अनुसार आधि (मन का दुःख), विघ्न, व्याधि, शारीरिक चोट तथा शत्रु के शस्त्र से घायल होकर मरने का विचार भी छठे से करना उचित है। कुछ विद्वान् ऋण का विचार भी छठे से करते हैं।

(७) वाणिज्य (व्यापार), व्यवहार, लेनदेन, दूसरों से विवाद, आना-जाना तथा स्त्री (किंवा पति) का विचार प्रश्न-कुंडली के सप्तम भाव से करना उचित है। 'प्रश्न मार्ग' के अनुसार विवाह, भार्या, भर्त्ता, शय्या, स्त्री का अपने पति के अतिरिक्त अन्य पुरुष से समागम, पुरुष का अपनी पत्नी के अतिक्ति अन्य स्त्री से समागम, नष्ट वस्तु (चोरी, गई वस्तु आदि) तथा स्त्री-पुरुष के प्रेम-सम्वन्धी सब बातों का विचार सप्तम से करना चाहिए।

(८) नदी के पार जाना, रास्ते का संकट, दुर्ग (किला), शत्रु द्वारा उपस्थित किया हुआ संकट, व्याधि, नष्ट धन, अनिष्ट कार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुप्त कार्य, छिद्र आदि का विचार अष्टम भाव से करना उचित है। 'प्रश्न मार्ग' के अनुसार मृत्यु का हेतु और स्थान, विपत्ति, अपवाद (तोहमत या बदनामी), दास, मठ, उपगृह (प्रधान घर के अतिरिक्त रहने का स्थान), बीमारी, विघ्न आदि का विचार भी अष्टम स्थान से करना चाहिए।

(९) बावड़ी, कुआँ, नल, मंदिर, दीक्षा, यात्रा, धार्मिक स्थान आदि का विचार नवम से करे। 'प्रश्न मार्ग' के अनुसार भाग्य, धर्म, दया, पुण्य, तप, पिता, पौत्र-पौत्री, दौहित्र-दौहित्री, दान, उपासना तथा सुशीलता व गुरुओं का विचार नवम से करना चाहिए। हमारे विचार से यदि धर्मार्थ कुआँ वनवाया जाय तो उसका नवम से किन्तु यदि अपने घर में कुआँ खुदवाया जाय तो उसका चतुर्थ से विचार करना चाहिए।

(१०) राज्य, मुद्रा (द्रव्य तथा मोहर—अर्थात् अधिकार), विशेष पुण्य, स्थान (स्थान-प्राप्ति,—पद-प्राप्ति, ओहदा मिलना), पिता, प्रयोजन, वृष्टि आदि आकाश-सम्बन्धी विचार दशम भाव से करना चाहिए। 'प्रश्न मार्ग' के अनुसार देवालय, महन्त पद, नगर सभा, म्युनिसिपैलिटी, कॉरपोरेशन, एसेम्बली, लेजिस्लेटिव कौंसिल, विधान सभा, लोक सभा, राज्य सभा आदि, मार्गालय-होटल धर्मशाला आदि, आज्ञा, आलम्बन (जिसका आश्रय लिया जावे) ऐसे विशिष्ट व्यक्ति का विचार दशम से करना चाहिए।

(११) हाथी, घोड़े, सवारी, वस्त्र, सुवर्ण, अन्न, कन्या, विद्या और धन का लाभ एकादश भाव से देखे। 'प्रश्न मार्ग' के अनुसार सब प्रकार का अभीष्ट आगम, ज्येष्ठ भ्राता, जो पुत्र उत्पन्न हो चुके हैं, बायें कान और धन-लाभ का विचार एकादश से करना उचित है।

(१२) त्याग, भोग, विवाद, दान, इष्टकर्म, खेती आदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विविध कार्यों में व्यय–किसी भी प्रकार का व्यय हो तो बारहवें भाव से विचार करना चाहिए। शुभ ग्रह शुभ काम में खर्च कराते हैं–वस्त्र, आभूषण, सवारी, मकान, जायदाद, विवाह, उत्सव, यज्ञ, धार्मिक संस्थाओं को दान आदि शुभ व्यय हैं। पाप ग्रह अशुभ कार्यों में व्यय कराते हैं—बीमारी में व्यय, राजदंड, जुर्माना, इनकम-टैक्स में दंड, सट्टे का घाटा, चोरी या लूट-मार में धन का लुट जाना ये सब अनिष्ट व्यय हैं। 'प्रश्न मार्ग' के अनुसार स्थान-भ्रंश होना अपने मकान या जगह से पृथक् हो जाना, विकलता, पाप, नरक में गिरना, तथा वाम नेत्र का विचार बारहवें भाव से करना चाहिए।*

भावों से कार्य की सफलता और असफलता का ज्ञान

(१) जो भाव अपने स्वामी से युत (सहित) हो, (२) या अपने स्वामी से दृष्ट हो, (३) सौम्य ग्रह, ग्रहों से युत हो, (४) सौम्य ग्रह, ग्रहों से दृष्ट हो, उसकी वृद्धि होती है। इसी प्रकार जो भाव पाप ग्रह या पाप ग्रहों से युत अथवा दृष्ट होता है उसकी हानि होती है। किन्तु यदि कोई पाप-ग्रह अपनी राशि में बैठा हो तो उस भाव की वृद्धि करता है, उसको बिगाड़ता नहीं।

इस प्रश्न-कुण्डली में सप्तम भाव में शनि मकर का है। साधारणतः क्रूर ग्रह होने के कारण शनि जहाँ बैठता है उस भाव को दूषित करता है। किंतु यहाँ स्वगृही होने के कारण यह सप्तम भाव की वृद्धि करेगा हानि नहीं।

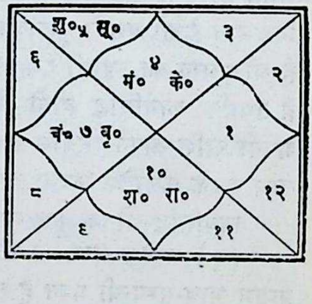

---

* किस भाव से क्या विचार करना है इस संबंध में ६वाँ प्रकरण भी देख लीजिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि कोई शुभ-ग्रह लग्न में हो और साथ ही अपने वर्ग (नवांश) आदि में भी हो तो और भी शुभता बढ़ जाती है। जिस समय प्रश्नकर्ता प्रश्न करे उस समय यदि शीर्षोदय उदित हो तो कार्यसिद्धि का द्योतक है। मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ ये छहों राशि शीर्षोदय हैं। इस कारण प्रश्न-लग्न इनमें से कोई आवे और उसमें शुभ-ग्रह बैठा हो और शुभ-ग्रह भी अपने वर्ग में हो तो अवश्य कार्यसिद्धि होती है। बहुत से विद्वानों का मत है कि लग्न के अंश निकालने पर यदि वह अंश शुभ ग्रह के नवांश में पड़ता हो तो भी कार्यसिद्धि का द्योतक है। उदाहरण के लिए यदि प्रश्न-लग्न कन्या आवे और बुध २८° का होकर लग्न में पड़ा हो और प्रश्न-लग्न के अंश भी २८ हों तो अवश्य कार्यसिद्धि होगी ऐसा कहेंगे। इसके विपरीत यदि पृष्ठोदय राशि उदित हो अर्थात् मेष, वृष, कर्क, धनु या मकर राशि उदित हो और लग्न में पाप ग्रह हो या पाप ग्रह का नवांश उदित हो तो कार्य में सिद्धि नहीं होगी या कठिनता से सिद्धि होगी यह कहना चाहिए।

अपवाद या विशेष नियम—मान लीजिये कि प्रश्न-लग्न मकर आता है तथा दो अंश उदित होते हैं और प्रथम नवांश में शनि विद्यमान है तो यद्यपि पृष्ठोदय राशि उदित है, क्रूर ग्रह लग्न में है और लग्न का स्वामी एवं लग्न-नवांश का स्वामी शनि क्रूर ग्रह है तथापि कार्यसिद्धि होगी ऐसा कहना पड़ेगा। क्योंकि क्रूर ग्रह अपनी राशि—अपने नवांश का है। इस प्रकार अपनी बुद्धि से तारतम्य करके फलादेश करना चाहिए।

कार्यसिद्धि-द्योतक कुछ मुख्य योग बताये जाते हैं :

(१) लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखे। यदि सप्तम भाव-सम्बन्धी प्रश्न है तो सप्तमेश कार्येश हुआ और सप्तम-भाव कार्य-भाव हुआ। यदि पुत्र-सम्बन्धी प्रश्न है तो पञ्चमेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कार्येश हुआ और पञ्चम भाव कार्य-भाव हुआ।

(२) यदि लग्नेश कार्य-भाव को देखे और कार्य-भाव का स्वामी लग्न को देखे।

(३) यदि लग्नेश कार्येश को देखे और कार्येश लग्नेश को देखे और इन दोनों ग्रहों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो— तो इन तीनों दशाओं में कार्यसिद्धि होती है।

यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि प्रश्न-कुण्डली तथा वर्ष-कुंडली दोनों में चन्द्रमा की दृष्टि का बहुत महत्व है। चन्द्रमा की दृष्टि होने से कार्यसाधक ग्रहों को बल प्राप्त होता है। लग्नेश और कार्येश को यदि बली चन्द्रमा की दृष्टि प्राप्त हो तो सिद्धिकारक योग बनाता है। चन्द्रमा की दृष्टि का विवरण वर्ष-खंड में कम्बूल योग के अन्तर्गत विस्तार से बताया गया है।

आंशिक कार्यसिद्धि योग—ऊपर जो योग बताये गए हैं वे तीनों ही पूर्ण सिद्धिकारक हैं। अब कुछ ऐसे योग बताये जाते हैं जिनसे यह तो अनुमान नहीं निकाला जा सकता कि पूर्ण कार्य-सिद्धि होगी किंतु उन्हें आंशिक सफलता का द्योतक समझ सकते हैं।

(१) यदि लग्न को लग्नेश न देखता हो किंतु लग्न को अन्य कोई शुभ ग्रह देखता हो तो रुपये में चार आना कार्यसिद्धि।

(२) लग्न तथा लग्नेश को कोई एक शुभ-ग्रह या दो शुभ-ग्रह देखते हों तो रुपये में आठ आना कार्यसिद्धि।

(३) यदि कोई एक ही शुभ-ग्रह लग्न और लग्नेश दोनों को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो रुपये में बारह आना कार्यसिद्धि।

(४) यदि दो या तीन शुभ-ग्रह लग्न तथा लग्नेश दोनों को देखते हों तो भी बहुत अधिक मात्रा में कार्यसिद्धि का द्योतक है। अर्थात् रुपये में १२ आना से भी अधिक।

ऊपर जो चार परिस्थितियाँ बतायी गयी हैं उनमें यदि

दशा = अवस्था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रमा बलवान् हो और उस पर केवल शुभ-ग्रहों की दृष्टि हो (किसी पाप-ग्रह की चन्द्रमा पर दृष्टि न हो) तो कार्यसिद्धि की विशेष सम्भावना समझनी चाहिए।

पूर्ण कार्यसिद्धि तभी द्योतित होती है जब लग्नेश लग्न में हो या लग्न को देखता हो और अन्य शुभ ग्रह भी लग्न तथा लग्नेश को देखते हों और शुभ-ग्रह से दृष्ट बलवान् चन्द्रमा कम्बूल योग करता है+। बारम्बार यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि दीन, सुप्त, निपीड़ित, मुषित, परिहीन तथा क्रूर ग्रह कार्य-नाशक होते हैं। यदि लग्न किंतु लग्नेश ऐसे ग्रहों से युत वा दृष्ट हों तो कार्य में बाधा समझनी चाहिए।

समरसिंह का उदाहरण

(१) यदि कोई प्रश्न करे कि मेरा अमुक कार्य कब सिद्ध होगा और प्रश्न-कुण्डली वनाने पर लग्नेश कार्य-भाव को देखे तो कार्य-सिद्धि होती है।

(२) यदि कार्येश (जिस भाव-सम्बन्धी प्रश्न हो उस भाव का स्वामी) लग्न में स्थित होकर कार्येश को देखे तो तुरन्त कार्यसिद्धि का द्योतक है।

(३) यदि कार्येश लग्न के अतिरिक्त अन्य किसी भाव में हो और कार्येश को देखे तो विलम्ब से कार्यसिद्धि होगी।

(४) यदि कार्येश, लग्न, लग्नेश और चन्द्रमा तीनों को देखे तो कार्य सफल होगा।

(५) यदि लग्न व कार्येश दोनों एक ही स्थान पर हों तो कार्य-सिद्धि होगी।

(६) यदि लग्नेश व कार्येश दोनों लग्न में या कार्य-भाव में हों तो अवश्य कार्यसिद्धि होगी।

(७) यदि लग्न या लग्नेश को कार्येश न देखे, न इनसे युत हो तो कार्यसिद्धि नहीं होती।

+ पृष्ठ १७१ देखो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ताजिक के योगों का उपयोग—ताजिक (वर्षफल) के प्रकरण में सोलह योग बताये गये हैं। उन योगों को प्रश्न-कुण्डली में भी लगाना चाहिए। जहाँ लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल हो वहाँ कार्य-सिद्धि योग बलवान् होता है। यदि लग्नेश कार्येश में दृष्टि न हो और कार्येश पाप-ग्रह से योग करता हो तो कार्यहानि समझनी चाहिए। यदि लग्नेश और कार्येश में दृष्टि न हो किंतु कोई अन्य शुभ-ग्रह एक ग्रह का तेज लेकर दूसरे को देता हो (लग्नेश का तेज कार्येश को या कार्येश का तेज लग्नेश को) तो नक्त योग बनता है। ऐसी स्थिति में दूसरे के द्वारा कार्यसिद्धि होगी यह समझना चाहिए। वर्ष-कुंडली के १६ योगों में से शुभ योग प्रश्न-कुण्डली में शुभ परिणाम प्रकट करते हैं किंतु यदि मणउ, रद्द, खल्लासर आदि अशुभ योग प्रश्न-कुंडली में बनते हों तो कार्य का परिणाम अशुभ है अर्थात् कार्यसिद्धि नहीं होगी यह नतीजा निकालना चाहिए।

यहाँ पर लग्नेश और कार्येश यही दोनों शब्द बारम्बार दोहराये गये हैं किंतु लग्नेश अति निर्बल, साधारण बली और पूर्ण बली हो सकता है। इसी प्रकार कार्येश भी अति निर्बल, निर्बल, साधारण, बली और पूर्ण बली हो सकता है। बुद्धिमान् पाठकों को उचित है कि अपनी बुद्धि से ऊहापोह करके इस निर्णय पर पहुँचें कि कार्य-साधक योग कितना बलवान् बैठता है। यदि प्रश्न के समय कर्क लग्न हो, पूर्ण बली चन्द्रमा और बृहस्पति दोनों कर्क के प्रथम नवांश में हों और नवम भाव-सम्बन्धी प्रश्न हो तो अवश्य-अवश्य कार्य-सिद्धि होगी ऐसा कहेंगे। किंतु यदि प्रश्न-लग्न के समय सिंह लग्न आवे। सप्तम भाव-सम्बन्धी प्रश्न हो और लग्नेश तथा सप्तमेश (सूर्य और शनि) मेष राशि में नवम में हों, चन्द्रमा वृश्चिक राशि का चतुर्थ में हो, सूर्य और शनि का इसराफ़ होता हो तो लग्नेश और कार्येश (सूर्य और शनि के एक साथ विद्यमान होने पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भी सप्तम भाव-सम्बन्धी असफलता रहेगी यह कहना पड़ेगा।

यह उदाहरण देकर यह समझाया गया है कि प्रथम तथा द्वितीय भागों में ग्रहों के बलाबल-सम्बन्धी जो नियम बताये गये हैं उनको प्रश्न-प्रकरण में भी उपयोग में लाना चाहिए।

भूत, भविष्य, वर्तमान-सम्बन्धी प्रश्न

(१) लग्नेश का जिस भाव के स्वामी से इसराफ योग होता हो उससे भूत फल का अनुमान करना।

(२) जिस ग्रह से इत्थशाल होता हो उससे वर्तमान फल कहना।

(३) जिस ग्रह से भविष्य इत्थशाल होता हो उससे भविष्य-फल कहना।

(४) भूत, भविष्य या वर्तमान कोई भी फल देखना हो तो लग्नेश और चन्द्रमा का बल अवश्य विचार करना चाहिए।

(क) यदि दोनों बली हों, शुभ-ग्रहों से युत दृष्ट हों तो तीनों काल में शुभ फल।

(ख) यदि दोनों निर्बल हों, पाप ग्रह से युत दृष्ट हों तो अशुभ फल।

(ग) लग्नेश व चन्द्रमा की केवल राशि ही नहीं अपितु उनकी नवांश स्थिति पर भी विचार करना चाहिए।

एक बात पर मैं बार-बार ज़ोर देना चाहता हूँ। सारी प्रश्न-कुंडली एक तरफ और लग्नेश व चन्द्रमा एक तरफ। मान लीजिये किसी मनुष्य को किसी सवारी में जाना है–इक्का, टाँगा, बस, मोटर रेल, हवाई जहाज आदि पर उसका आराम निर्भर है किंतु यदि उसका शरीर ही बीमार है या मन ही दुःखी है तो कैसी भी बढ़िया सवारी में जावे यात्रा अच्छी नहीं होगी। यही हाल प्रश्न-कुण्डली का है। कार्येश बलवान हो, कार्य-भाव बलवान हो तो उत्तम फल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कार्यभाव दुर्बल हो, कार्येश दुर्बल हो तो अधम फल। किन्तु लग्नेश शरीर है। चन्द्रमा मन है। इन दोनों के बल को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। लग्नेश व चन्द्रमा प्रश्न-कुण्डली में प्राण हैं।

छब्बीसवाँ प्रकरण

१, २, ३ भाव-सम्बन्धी प्रश्न

प्रथम भाव-सम्बन्धी प्रश्न—यदि प्रथम भाव-देह-सम्बन्धी प्रश्न हो तो मुख्य रूप से लग्न और लग्नेश का विचार करना चाहिए। यदि लग्नेश लग्न में ही हो तो भलाई प्रकट करता है। यदि लग्न और लग्नेश दोनों शुभ हों और शुभ-ग्रहों से युत तथा वीक्षित हों तो भी शुभ फल होता है। यदि लग्न में पाप-ग्रह हो या लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो या लग्नेश दु:स्थान में हो (छठे, आठवें, बारहवें स्थान को दुःस्थान कहते हैं) या लग्नेश पाप-ग्रहों से युत वीक्षित हो तो अशुभ फल समझना चाहिए। यदि कोई पाप ग्रह अपने घर में लग्न में हो तो वह शुभ फल ही करेगा क्योंकि प्राचीन वचन है कि :

'पापोऽपि स्वगृहस्थश्चेद्
भाववृद्धिं करोत्यलम्।

यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि पापग्रह यदि शुभ-वर्गों में बैठे हों और शुभग्रहों से वीक्षित हों तो उतना पाप-फल नहीं करते। इसके विपरीत यदि शुभग्रह पापग्रहों के वर्गों में हो और पापग्रहों से वीक्षित हों तो उतना शुभ फल नहीं करते। शुभता या पापता स्वाभाविक तो होती ही है किन्तु साहचर्य तथा जिन ग्रहों से देखा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाये और जिन ग्रहों के वर्ग में हो उनसे बहुत अधिक मात्रा में प्रभावित होती है :

पापग्रहा बलयुताः शुभवर्गसंस्थाः
सौम्या भंवन्ति शुभवर्गगसौम्यदृष्टाः ।
प्रायेण पापगणगा त्रिबलाश्च सौम्याः
पापा भवन्त्यशुभवर्गगपापदृष्टाः ।।

द्वितीय भाव—जो सिद्धान्त प्रथम भाव के विचार में बताया गया है उस सिद्धान्त या उन सिद्धान्तों को सभी भावों के विचार में उपयोग में लाना चाहिए। यदि धनस्थान तथा धनेश शुभ ग्रह से युत व वीक्षित हो तो शुभ फल; पापग्रह से युत व वीक्षित हो तो अशुभ फल । यह स्मरण रखना चाहिए कि लग्नेश चाहे मंगल हो चाहे शनि, कभी पाप नहीं होता । लग्नेश सदा शुभ समझा जाता है । ग्रहों में स्वाभाविक, शुभत्व तथा पापत्व तो होता ही है—जिस स्थान के वे अधिपति हैं उन स्थानों के कारण भी वे शुभ और पापी समझे जाते हैं। उदाहरण के लिए त्रिक * का स्वामी पापी समझा जाता है। नवम का स्वामी शुभ समझा जाता है । किन्तु यदि कोई ग्रह लग्न के स्वामी के साथ-साथ किसी दुष्ट भाव का स्वामी भी हो तो वह शुभ ही समझा जावेगा । मेष लग्न में मंगल प्रथम तथा अष्टम का स्वामी होता है किन्तु सर्वथा शुभ माना जाता है । वृषभ लग्न में शुक्र, लग्न तथा षष्ठ का स्वामी होता है, किन्तु शुभ माना जाता है । कुंभ लग्न में शनि लग्न तथा द्वादश का स्वामी होता है परन्तु शुभ माना जाता है । कहने का तात्पर्य यह है कि प्रश्न-कुंडली में प्रत्येक भाव का जब विचार करना हो तब लग्नेश को सदैव शुभ ही मानना चाहिए, अशुभ नहीं । धन भाव-सम्बन्धी प्रश्न में यदि धनेश लग्नेश और चन्द्रमा से इत्थशाल करे तो शुभ फल समझना चाहिए ।

* छटे, आठवें, बारहवें को त्रिक कहते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जहाँ धनेश और लग्नेश का इत्थशाल होता हो तो यह देखिए कि दोनों में मन्द गति (अर्थात् धीरे चलने वाला) कौनसा ग्रह है। उस भाव-सम्बन्धी व्यक्ति से लाभ होगा। उदाहरण के लिए यदि धनेश और लग्नेश इन दोनों में जो मन्दगति ग्रह हो वह पंचम में हो तो विद्या, पुत्र, लाटरी आदि से लाभ, यदि चतुर्थ में हो तो माता, भूमि, वाहन आदि से लाभ।

धन-भाव विचार-सम्बन्धी कुछ अन्य योग भी नीचे दिये जाते हैं। इनका भी प्रश्न-कुण्डली में ध्यान रखना चाहिए।

(१) यदि लग्न में बुध हो और उसे चन्द्रमा या अन्य क्रूरग्रह देखते हों तो धन-लाभ तो शीघ्र होता है किन्तु प्रश्नकर्त्ता को कुछ अनिष्ट फल भी होगा यह कहना चाहिए।

(२) यदि लग्नेश, धनेश और चन्द्रमा युत हों या परस्पर एक-दूसरे या तीसरे को देखें और धनस्थान किंवा केन्द्र या त्रिकोण, इनमें से किसी भी स्थान पर हों तो शीघ्र धन-लाभ कहना चाहिए।

(३) चन्द्रमा यदि चौथे या सातवें हो, सूर्य दशम में हो और लग्न में शुभ ग्रह हो तो धन-लाभ। बृहस्पति यदि लग्न में हो तो प्रायः धन-लाभ करता है।

(४) यदि विशेष गंभीरता से विचार करना हो तो लग्न स्पष्ट करने पर यह देखना चाहिए कि वह शुभ ग्रहों के वर्ग में है या पाप ग्रहों के वर्ग में। यदि शुभ ग्रहों के वर्ग में हो तो शुभ फल। यदि पाप ग्रहों के वर्ग में हो तो अशुभ फल।

तृतीय भाव-सम्बन्धी विचार

यदि तृतीय भाव-संबंधी प्रश्न हो तो तृतीय भाव तथा तृतीयेश को देखना चाहिए। यदि ये दोनों शुभग्रह से, या शुभग्रहों से संबंध करते हों तो शुभफल, पाप ग्रहों से या सम्बन्ध करते हों तो पापफल। यदि भाई-बहन-सम्बन्धी प्रश्न हो और (१) तृतीयेश छठे स्थान में हो, (२) या षष्ठेश के साथ इत्थशाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करता हो, (३) या षष्ठेश तृतीय स्थान में हो और तृतीय भवन का स्वामी पापग्रह से युत व वीक्षित हो तो जिस पापग्रह से युत वीक्षित हो उस ग्रह से संबंधित रोग करता है या जो ग्रह षष्ठेश हो उस ग्रह-संबंधी रोग करता है। इस प्रकरण के आरम्भ में हम बता चुके हैं कि सूर्य और मंगल पित्तकारक, चन्द्रमा और शुक्र वात तथा कफ़ प्रकृति के हैं, बुध पित्त कफ़, वात प्रकृति है, बृहस्पति कफ़ प्रकृति है तथा शनि वात प्रकृति है।

यदि तृतीयेश अस्तंगत हो तो भाई-बहन के लिए विशेष कष्ट-दायक समझना चाहिए। तृतीय भाव का ही क्या-सभी भावों का विचार करते समय यह देखना चाहिए कि इस भवन का स्वामी दीप्त है या दीन, मुदित है या अस्तंगत आदि। इसी प्रकार तृतीय भवन का ही स्वामी क्या जिस भाव का स्वामी छठे, आठवें, बारहवें पड़ा हो या छठे, आठवें भाव के स्वामी से इत्थशाल करता हो उसका अनिष्ट फल ही कहना चाहिए। उदाहरण के लिए तृतीयेश, षष्ठेश या अष्टमेश से इत्थशाल करता हो तो भाई-बहन को कष्ट; चतुर्थेश षष्ठेश या अष्टमेश से इत्थशाल करता हो तो मातृ-कष्ट, पञ्चमेश ६, ८ के स्वामी से इत्थशाल करता हो तो पुत्र-कष्ट और सप्तमेश त्रिक भवन के स्वामी से इत्थशाल करता हो तो स्त्री-कष्ट। वैसे तो छठा, आठवाँ और बारहवाँ तीनों ही स्थान अनिष्ट हैं। इन स्थानों में जो ग्रह बैठ जायें वे अनिष्ट-फल देते हैं। ६,८,१२ के स्वामी जहाँ बैठ जावें उन भावों को बिगाड़ते हैं। ६,८,१२, के स्वामी जिन भावों को देखें या जिन भावों के स्वामियों को देखें, उनको भी बिगाड़ते हैं। उस भाव-सम्बन्धी शुभ फल नहीं होता या कष्टकारक फल होता है। यह साधारण नियम है। ६,८,१२ तीनों ही अनिष्ट स्थान होते हुए भी सबसे अनिष्ट अष्टम स्थान है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

षष्ठं द्वादशमष्टमं च मुनयो भावाननिष्टान् विदु
स्तन्नाथान्वित वीक्षिता यदधिपा ये वा च भावाः स्वयम् ।
तत्रस्थाश्च यदीश्वरास्त्रय इमे नश्यन्ति भावा नृणां
जाता वा विफला विनष्टविकलास्तत्रातिकष्टोष्टमः ।।
'प्रश्न मार्ग' अध्याय (१४ श्लोक २६)

———

सत्ताईसवाँ प्रकरण

४,५,६, भाव सम्बन्धी प्रश्न

चतुर्थ भाव-सम्बन्धी विचार

चतुर्थ भाव से मुख्यतः भूमि, मकान, कृषि आदि का विचार किया जाता है। प्राचीन समय में कृषि (खेती) सम्बन्धी बहुत से प्रश्न किये जाते थे। अब भी भारत कृषि-प्रधान देश ही है। यदि कोई प्रश्न करे कि भूमि व मकान का लाभ होगा या नहीं तो लग्नेश चतुर्थेश एवं चन्द्रमा इन पर दृष्टि डालिए। यदि ये तीनों चतुर्थ भाव में हों या परस्पर इत्थशाल करते हों तो भूमि लाभ होगा। किन्तु यदि ये पापग्रहों से युत अथवा दृष्ट हों तो भूमि, मकान का लाभ नहीं होता। खेती-सम्बन्धी प्रश्न में लग्न से खेती करने वाले का विचार, चतुर्थ से खेत का विचार, सप्तम से खेती की उपज (अन्नादि) का विचार और दशम से वृक्षों का विचार करना चाहिए। यदि लग्न का पापग्रह से सम्बन्ध हो तो खेती में चोरी होगी यह कहना चाहिए। यदि लग्न शुभ ग्रह से युत वीक्षित हो तो खेती करने वाले को लाभ होगा। चतुर्थ स्थान का यदि पापग्रह से योग हो तो कृषक जमीन छोड़ कर चला जावेगा, सप्तम भाव का शुभग्रह से सम्बन्ध होने से अन्नादि की उपज अच्छी होगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि इसके विपरीत सप्तम भाव पापग्रह से युत वीक्षित हो तो उपज में हानि कहनी चाहिए। जिन देशों में बाढ़ से हानि होती है वहाँ जल-राशि और जलग्रह से बाढ़ द्वारा क्षति कहना। वायुग्रह से वायु द्वारा तथा जिन प्रदेशों में वर्षा कम होती हो वहाँ प्रश्न-लग्न में सप्तम भाव का सूर्य मंगल से सम्बन्ध होने से खेती जल जावेगी। सूर्य की अधिक गर्मी से या वर्षा के अभाव में, यह कहना चाहिए। इसी प्रकार जैसे सप्तम से कृषि की उपज का विचार किया है दशम भाव से वृक्षों का भीं विचार करना चाहिए। विशेष यह है कि बुध से पत्तेदार वृक्ष, शुक्र से पुष्पदार वृक्ष तथा बृहस्पति से फलदार वृक्षों का विचार किया जाता है। इस पुस्तक के २३वें अरिष्टशांति प्रकरण' में जिस ग्रह का जिस अन्न से सम्बन्ध वताया गया है उसे कृषि प्रश्न में ध्यान में रखना चाहिए।

मकान और किरायेदार-सम्बन्धी प्रश्न* : लग्न से प्रश्नकर्त्ता के शुभाशुभ का विचार करे, सप्तम से किराये का दशम भाव से किरायेदारी की शुरुआत का और चतुर्थ भाव से किरायेदारी के अन्त का विचार करना चाहिए। जो-जो भाव और भावेश शुभ ग्रह से युत और दृष्ट हों उनका शुभ फल, पाप ग्रह से सम्बन्ध होने से अशुभ फल। लग्न और लग्नेश से फ़रीक अव्वल समझना चाहिए; सप्तम भावसे फ़रीक दोयम। प्रथम भाव से मुद्दई; सप्तम भाव से मुद्दायला। जो भाव और भावेश बलवान, शुभ ग्रह से दृष्ट, युत होते हैं उस भाव-सम्बन्धी पक्ष की जय होती है। यदि प्रश्न-लग्न में यह पाया जावे कि लग्नेश और सप्तमेश तात्कालिक मित्र होकर एक-दूसरे से इत्थशाल करते हैं और दोनों चन्द्रमा से भी मुथशीली हों और उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो दोनों में सौमनस्य—समझौता हो जावेगा।

*** भूभाटक पृच्छायां लग्नं प्रष्टा च भाटकं द्यूने।**
तस्योत्पत्तिर्दशमे तथाऽवसानं चतुर्थे स्यात्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'वर्ष फल' के प्रकरण में शुभाशुभ विचार करने के जो सोलह योग बताये गये हैं उनका विचार प्रश्नकुंडली में भी करना चाहिए।

पञ्चम भाव-सम्बन्धी प्रश्न—यदि सन्तान-सम्बन्धी प्रश्न हो तो लग्न और लग्नेश, पञ्चम और पञ्चमेश तथा चन्द्रमा का विचार कीजिये। चन्द्रमा की दृष्टि का प्रश्न-कुंडली में विशेष महत्व रहता है।

चन्द्रदृष्टिं विनाऽन्यस्य शुभस्य यदि दृग्भवेत्।
शुभं प्रयोजनं किंचिदन्यदुत्पद्यते तदा॥
(भुवन दीपक)

अर्थात् यदि प्रश्न-कुंडली में चन्द्रमा की दृष्टि न हो तो पूर्ण प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। 'भुवन दीपक' के निर्माता पद्मप्रभुसूरि लिखते हैं कि "यदि अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो और चन्द्रमा की दृष्टि न हो तो अन्य प्रकार से कोई शुभ कार्य हो जावे यह सम्भव है। किन्तु जो कार्य मन में है—मन में जिस कार्य की इच्छा है उसकी पूर्ति चन्द्रमा के संयोग (दृष्टि, युति) से ही होती है।"

इसलिए संतान-सम्बन्धी प्रश्न में :

(१) यदि लग्न और चन्द्रमा पञ्चमेश से इत्थशाल करें, या (२) पञ्चम स्थान का स्वामी लग्न में हो और लग्न स्थान का स्वामी पंचम में और दोनों चन्द्रमा से कम्बूल योग करें तो सन्तान अवश्य होगी। इसके अतिरिक्त (३) लग्नेश लग्न को देखे और पञ्चमेश पंचम को देखे अथवा (४) लग्नेश पंचम को देखे या (५) लग्नेश-पञ्चमेश दोनों शुभ स्थान में बैठकर परस्पर मुथशिली हों तो भी पंचम भाव-सम्बन्धी सफलता कहनी चाहिए, यह प्रश्न शास्त्र का साधारण नियम है। बृहस्पति पुत्रकारक होता है, इस कारण लग्न या पंचम पर बृहस्पति की दृष्टि हो और लग्नेश अथवा पञ्चमेश से इत्थशाल करता हो तो सन्तान-सम्बन्धी प्रश्न में विशेष शुभता आ जाती है। (६) यदि 'नक्त' योग बनता हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तो विलम्ब से सन्तान होगी यह कहना ।

चन्द्रमा से पुत्र-कन्या ज्ञान

(१) चन्द्रमा यदि मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु या कुंभ में हो और सूर्य, मंगल या बृहस्पति से इत्थशाल करता हो तो पुत्र होगा यह कहना चाहिए ।

(२) चन्द्रमा यदि वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर या मीन राशि में स्थित होकर शुक्र या बुध से इत्थशाल करता हो तो कन्या ही कहना चाहिए ।

(३) यदि प्रश्न लग्न मेष, मियुन, सिंह, तुला, धनु या कुम्भ हों और लग्न के अंश सूर्य की होरा में पड़े तो पुत्र ।

(४) यदि प्रश्न-लग्न वृष,कर्क,कन्या,वृश्चिक, मकर और मीन इनमें से कोई हो और लग्न के अंश चन्द्रमा की होरा में पड़ें तो कन्या कहना चाहिए ।

(५) यदि प्रश्न मध्याह्न के वाद किया जावे और कृष्ण पक्ष में प्रश्न किया गया हो तो कन्या ।

(६) यदि पूर्वाह्न (दोपहर से पहले) में प्रश्न किया गया हो और प्रश्न के दिन शुक्ल पक्ष हो तो पुत्र ।

विशेष यह है कि लग्न-लग्नेश का पुरुष ग्रहों से विशेष सम्बन्ध हो तो पुत्र किंतु यदि लग्न लग्नेश का सम्बन्ध स्त्री या नपुंसक ग्रहों से हो तो कन्या ।

प्रायः प्रश्न-लग्न में यह कठिन होता है कि सब लक्षण पुत्र-सम्बन्धी ही घटित्त हों या कन्या-सम्बन्धी ही घटित हों । ऊपर जो अनेक नियम बताये गये हैं उनमें से कुछ पुत्र-सम्बन्धी लक्षण पाये जावें और कुछ कन्या सम्बन्धी तो लग्न पंचम और चन्द्रमा केवल इन तीनों को आधार मानकर देखना चाहिए कि विषम (ऊनी)

नोट—यदि लग्न के अतिरिक्त अन्य स्थान में स्थित शनि से इत्थशाल करे तो भी कन्या ही कहना चाहिए ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राशि में हैं या सम (पूरी) में और पुरुष ग्रहों से विशेष सम्बन्ध करते हैं या स्त्री ग्रहों से, इसी आधार पर प्रश्न का निर्णय करना उचित है।

संतान जीवित रहेगी या नहीं—यदि कोई यह प्रश्न करे कि सन्तान जीवित रहेगी या नहीं—या जीवित है या नहीं—तो बारहवें स्थान के स्वामी से विचार करे।

(१) यदि द्वादश भवन का स्वामी शुभ ग्रह से युत दृष्ट केन्द्र में हो, चन्द्रमा भी शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो और शुक्ल पक्ष में प्रश्न किया जाय तो सन्तान जीवित है व रहेगी, यह उत्तर देना चाहिए।

(२) यदि द्वादशेश छठे, आठवें में हो, चन्द्रमा भी पाप ग्रहों से युत व वीक्षित दुःस्थान में हो और कृष्ण पक्ष में प्रश्न किया जाय ता अशुभ फल कहना चाहिए।

(३) यदि द्वादशेश तृतीय या नवम में भी पापग्रह से युत व वीक्षित हो तो अशुभ फल कहना चाहिए।

अमुक स्त्री गर्भवती है या नहीं—प्रायः ऐसे प्रश्न का उत्तर ज्योतिष की अपेक्षा लेडी डाक्टर अच्छा दे सकती है तथापि ज्योतिष का विचार भी लिखा जाता है।

(१) यदि लग्नेश या चन्द्रमा पंचम भाव में है तो गर्भवती है।

(२) यदि पंचम भवन का स्वामी प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम या पंचम में बैठकर लग्नेश और चन्दमा से इत्थशाल करे तो गर्भवती है।

(३) यदि पंचमेश न लग्न को देखे, न पञ्चम को देखे तथा लग्नेश से भी सम्बन्ध न करे तो गर्भवती नहीं है।

(४) यदि पंचमेश तीसरे, छठे, आठवें होकर लग्नेश या चन्द्रमा से कोई सम्बन्ध न करे तो गर्भवती नहीं है।

(५) यदि प्रश्न-लग्न मेष, कर्क, तुला या मकर हो और चन्द्रमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पापग्रह से इत्थशाल करता हो तो गर्भ नष्ट होगा।

(६) यदि चर लग्न हो (ऊपर ५ में जो बताये गये हैं) और पंचमेश वक्री होकर लग्नेश व चन्द्रमा से इत्थशाल करता हो तो गर्भ नष्ट होगा।

(७) प्राय: शनि मंगल दोनों यदि पंचम भाव में हों या दोनों पञ्चम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखते हों तो भी गर्भ नष्ट-कारक योग बनाते हैं।

प्रसव कब होगा ?

प्रश्न-लग्न निकालकर यह देखना चाहिए कि कितने नवांश व्यतीत हो चुके हैं। जितने नवांश व्यतीत हो चुके हों उतने ही मास का गर्भ है यह निश्चय करना चाहिए। लग्न में जितने नवांश शेष हों उतने मास बाद सन्तान होगी। भुवनदीपककार ने प्रसव का मास जानने के लिए लिखा है कि प्रश्न-लग्न से जितने भाव दूर शुक्र हो उतने ही मास के बाद प्रसव होगा। उदाहरण के लिए मेष लग्न आया और सप्तम में तुला का शुक्र है तो ७ मास बाद प्रसव होगा यह कहना चाहिए। किन्तु यदि नवम भाव से किसी आगे के भाव में शुक्र हो तो लग्न से न गिनकर पञ्चम भाव से गिनना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि मेष लग्न का प्रश्न है और मकर का शुक्र दशम में है तो पंचम से दशम छठा हुआ इसलिए यह कहना उचित है कि ६ मास बाद प्रसव होगा।

दिन में प्रसव होगा या रात्रि में

प्रश्न-लग्न व लग्नेश दिवाबली हों तो दिन में प्रसव। यदि रात्रिबली हों तो रात्रि में प्रसव। प्रश्न-लग्न का स्वामी तथा जिस होरा में प्रश्न किया जाय उसके स्वामी का विचार भी कर लेना चाहिये कि वह किस समय विशेष बलवान होता है।

इस वर्ष में गर्भ होगा या नहीं

इस प्रकार के प्रश्न में यदि (१) आगे कहे दो योगों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) लग्नेश और पंचमेश में इत्थशाल होता हो, या

(२) लग्नेश पंचम में, पंचमेश लग्न में हो तो उस वर्ष में अवश्य संतान होगी।

यदि पंचम का स्त्री ग्रहों से सम्बन्ध हो तो कन्या-संतति और यदि पुरुष ग्रहों से हो तो पुत्र होगा यह जानना चाहिये।

यह स्त्री प्रसूता है या नहीं

(१) यदि किसी अपरिचित स्त्री के विषय में शंका हो कि वह मिथ्या भाषण कर रही है और यह निश्चय करना हो कि उसके बच्चा हुआ है या नहीं तो यह देखना चाहिए कि पंचमेश और षष्ठेश उदित हैं क्या (अस्त तो नहीं हैं)। यदि अस्त होने के उपरान्त उदित हो गये हों तो यह निश्चय करना चाहिए कि इस स्त्री के बच्चा हो चुका है।

(२) यदि बुध, बृहस्पति और शुक्र तीनों ग्रह उदित हों (अस्त न हों) तो भी स्त्री प्रसूता है यह उत्तर देना चाहिए।

यदि उपर्युक्त कोई योग घटित न हों तो स्त्री अप्रसूता है यह निश्चय करना उचित है।

षष्ठ भाव-सम्बन्धी प्रश्न

(१) यदि रोग-विषयक प्रश्न हो तो लग्न से डाक्टर का, चतुर्थ से दवा का, सप्तम से बीमारी का और दशम भाव से बीमार का विचार करना चाहिए। यदि प्रथम भाव में शुभ-ग्रह हो, शुभ-ग्रह की दृष्टि हो तो जिस डाक्टर का इलाज किया जा रहा है उससे लाभ होगा। यदि प्रथम भाव पापदृष्ट, पापाक्रान्त हो तो उस डाक्टर से लाभ नहीं होगा। इसी प्रकार चतुर्थ भाव शुभ-युत-दृष्ट हो तो जो औषधि ली जा रही है उससे लाभ होगा। यदि यह चतुर्थ भाव पापदृष्ट, पापाक्रान्त हो तो औषधि से लाभ नही होगा। यदि सप्तम में पापग्रह हो तो एक रोग से अनेक रोगों की उत्पत्ति होगी। यदि दशम भाव पापयुत हो तो समझना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाहिए कि रोगी के अपने कर्म (कुपथ्य) आदि से रोग बढ़ेगा। यदि समस्त केन्द्रों में शुभ-ग्रह हों तो पूर्ण लाभ कहना चाहिए। समस्त केन्द्र पापदृष्ट व पापाक्रान्त हों तो अशुभ फल। यदि प्रश्न लग्न चर आवे और प्रश्न-कुण्डली शुभ-लक्षण-युत हो तो शीघ्र रोग-मुक्ति होगी। यदि स्थिर लग्न आवे तो देर से कार्य होता है।

(२) यदि लग्नेश और चन्द्रमा का इत्थशाल हो तो शीघ्र ही रोग-मुक्ति होती है।

लग्नेशेन्द्वो : सौम्येत्थशालतो रोगनाशनं वाच्यम्।

यदि साथ ही शुभग्रहों की इन दोनों पर दृष्टि हो तो निश्चय ही रोग का नाश होगा यह कहना।

(३) यदि लग्न चतुर्थ, सप्तम या दशम में पापग्रह वक्री हो और अन्य लक्षण रोग-नाश के भी हों तो यह समझना चाहिए कि रोग अच्छा होने के बाद पुनः रोग होगा। यदि इस प्रकार का वक्री ग्रह प्रथम, चतुर्थ या सप्तम में स्थित होकर चन्द्रमा से इत्थशाल करे और प्रश्न-कुण्डली में अन्य अशुभ लक्षण भी हों तो रोग सांघातिक होगा। अष्टम मृत्यु भाव है। इसलिए यदि अष्टमेश लग्न में हो या अष्टमेश, लग्नेश और चन्द्रमा से अष्टम में हो तो विशेष अशुभ होता है।

(४) यदि सिंह लग्न प्रश्न-कुण्डली में आवे और चन्द्रमा शनि से इत्थशाल करता हो या कोई भी लग्न हो और सप्तमेश छठे भाव में स्थित हो तो अशुभ फल कहना।

(५) यदि लग्नेश और अष्टमेश दोनों केन्द्र में स्थित होकर परस्पर इत्थशाल करते हों और पापग्रहों से पराजित हों या अस्तंगत हों तो रोगी की मृत्यु कहना चाहिए। यदि अष्टमेश निर्बल हो और लग्नेश भी निर्बल हो तब भी मृत्यु-फल कहना उचित है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) यदि अष्टमेश दीन, सुप्त, निपीड़ित, मुषित या परिहीन होकर किसी भी स्थान में हो और केन्द्र में स्थित निर्बल लग्नेश से इत्थशाल करे तो भी मृत्युफल कहना चाहिए अर्थात् रोगी की मृत्यु होगी।

(७) यदि लग्नेश सूर्य के द्वादशांश में हो तो भी अशुभ फल होता है।

अमुक व्यक्ति को रोग है या नहीं

(१) यदि इस प्रकार का प्रश्न किया जावे तो लग्नेश, चन्द्रमा और षष्ठेश को देखिये। यदि लग्नेश या चन्द्रमा दोनों में से कोई भी अस्त हो या षष्ठेश से इत्थशाल करता हो तो व्यक्ति रोगी है अन्यथा नहीं।

रोगकाल

कितने दिन तक रोग रहेगा यदि यह प्रश्न किया जाये तो प्रश्न-लग्न पर दृष्टि डालिये। यदि प्रश्न-लग्न स्थिर हो तो रोग भी स्थिर रहेगा। चन्द्रमा यदि वक्री ग्रह से इत्थशाल करता हो तो भी रोग स्थिर रहेगा। किन्तु यदि प्रश्न-लग्न मेष, कर्क, तुला या मकर हो और नवांश भी चर हो तो शीघ्र रोग-मुक्ति होगी ऐसा कहना चाहिए। यदि प्रश्न-लग्न चर हो और नवांश स्थिर हो तो यह फल कहना उचित है कि बाहर से तो रोग शमन हो जावेगा किन्तु शरीर के भीतर व्याधि का अंकुर कायम रहेगा। यदि द्विस्वभाव लग्न आवे तो दो रोग होंगे या जो रोग चल रहा है वह तो शांत हो जावेगा और अन्य कोई रोग हो जावेगा।

(२) जिस दिन प्रश्न किया जाये उसके सात दिन पहले तक तथा आगे के चार दिन तक सूर्य और चन्द्रमा किन ग्रहों से सम्बन्ध रखते थे, रखेंगे यह विचार करना चाहिए। यदि सूर्य इस ११ दिन के समय में सर्वथा शुभयुत, दृष्ट रहा है रहेगा और चन्द्रमा शुभ-युत रहा है, रहेगा तो शुभ फल अन्यथा पापग्रह से सूर्य-चन्द्र का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योग होने पर अशुभ फल कहना चाहिए ।

'प्रश्न भूषण' के अनुसार प्रश्नोपयोगी विशेष योग :

(१) यदि प्रश्न लग्न मेष, वृश्चिक, मकर या कुम्भ हों और अपने स्वामी के अतिरिक्त अन्य पापग्रह से युत या दृष्ट हों और साथ ही अष्टम स्थान भी पापयुत, दृष्ट हो या सप्तम, नवम दोनों स्थानों में पापग्रह हों और चन्द्रमा अष्टम में हो या पापयुत चन्द्रमा अष्टम में हो तो शीघ्र ही रोगी का मृत्यु-योग बनता है । इस योग में मुख्य तीन बातें हैं । लग्न का पापाक्रान्त होना और चन्द्रमा का पाहग्रह के साथ अष्टम में होना । यदि चन्द्रमा अकेला अष्टम में हो और सप्तम तथा नवम दोनों स्थानों में पापग्रह हों तो भी पाप-कर्तरी योग बन जाता है ।

(२) यदि प्रश्न के समय (क) पापग्रह द्वादश या अष्टम स्थान में हों और (ख) साथ ही पापाक्रान्त या पापदृष्ट चन्द्रमा लग्न षष्ठ, सप्तम या अष्टम में हो तो मृत्यु-योग होता है । यदि ऐसा न हो तो रोग अच्छा होता है ।

(३) यदि चन्द्रमा लग्न में और सूर्य सप्तम में हो तो शीघ्र ही रोगी की मृत्यु होती है ।

(४) यदि मंगल मेष राशि में स्थित होकर अष्टम (वृश्चिक) नवांश में हो और चन्द्रमा से युत हो तो रोगी की मृत्यु होती है ।

(५) यदि लग्न से सातवें शुभ ग्रह हों तो रोग-शांति होती है । यदि सप्तम में पापग्रह हों तो रोग-वृद्धि होती है । यदि उभय प्रकार के ग्रह हों तो मिश्रित फल होता है । किन्तु यदि सप्तम में केवल पापग्रह हों और लग्नेश भी पापग्रहों से युत हो तो मृत्यु-रोग समझना चाहिए :

प्रश्नलग्नाद्यदा सप्तमे सद्युते,
रोगिणो भद्रमुक्तं न पापग्रहैः ।
मिश्रखेटैर्विमिश्रं फलं सूरिभि—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्तत्र लग्नेश्वरे पापयुक्ते मृतिः ॥

(६) यदि लग्नेश्वर निर्बल हो और अष्टमेश बलवान् हो और चन्द्रमा दुर्बल होकर छठे किंवा आठवें स्थान में स्थित हो तो रोगी की मृत्यु होती है।

(७) यदि लग्नेश अस्तंगत न हो, अष्टमेश दुर्बल हो और एकादश भाव का स्वामी बलवान् हो तो शीघ्र ही रोग नष्ट हो जाता है और रोगी व्यक्ति दीर्घायु होता है।

ग्रहों से रोग निदान

यदि अष्टम स्थान में सूर्य, मंगल हों तो रक्त और पित्त का प्रकोप, सूर्य व राहु यदि अष्टम या षष्ठ में हो तो कुष्ठ, बुध अष्टम में हो तो सन्निपात, यदि राहु और शनि दोनों अष्टम में हों तो वायु-विकार, लकवा आदि, यदि चन्द्रमा और शुक्र दोनों अष्टम में हों तो सन्निपात। यदि निर्बल पापाक्रान्त शुक्र अष्टम में हो तो शुक्र-सम्बन्धी रोग व राजयक्ष्मा आदि समझना चाहिए।

नौकरी-विषयक प्रश्न-निरूपण

षष्ठ स्थान से सेवक का विचार किया जाता है और सेवा का भी। यदि कोई यह प्रश्न करे कि मुझे इसी स्वामी के पास रहना होगा या दूसरी जगह नौकरी करनी पड़ेगी तो लग्नेश को देखिये।

(१) यदि लग्नेश केन्द्र में हो और छठे किंवा बारहवें घर के स्वामी से इत्थशाल करता हो तो दूसरे व्यक्ति के यहाँ आकर नौकरी करनी पड़ेगी। यदि इत्थशाल न होता हो तो यहीं नौकरी कायम रहेगी।

(२) लग्नेश यदि वक्री हो और तीसरे या नवें घर में स्थित किसी ग्रह से इत्थशाल करता हो तो अन्य स्थान में (अन्य व्यक्ति के पास) नौकरी करनी होगी।

(३) यदि लग्नेश का स्वामी केन्द्र में हो, और अस्त हो, क्रूर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह द्वादश, तृतीय या षष्ठ स्थान में हो तो समस्त जीवन वहीं नौकरी करता रहेगा (जहाँ इस समय कर रहा है) ।

इस समय का स्वामी अच्छा है या बाद का अच्छा होगा :

यदि कोई यह प्रश्न करे कि जिसके पास इस समय नौकरी में हैं वह व्यक्ति मेरे लिए विशेष लाभप्रद है या जिसके यहाँ मैं नौकरी करने का विचार कर रहा हूँ वह विशेष लाभप्रद होगा—तो इस समय के स्वामी का लग्नेश से विचार करना चाहिए और भविष्य के स्वामी का सप्तमेश से। यदि लग्मेश का चन्द्रमा से कम्बूल योग होता हो तो इस समय का स्वामी अच्छा है, यदि सप्तमेस का चन्द्रमा से कम्बूल होता हो तो भविष्य का स्वामी अच्छा रहेगा।

शत्रु से झगड़े का प्रश्न

इस सम्बन्ध का विशेष विचार आगे बताया जावेगा। यहां केवल 'भुवन दीपक' का निम्नलिखित श्लोक दिया जाता है :

विवादे शत्रुहनने रणे संकटके तथा ।
क्रूरे मूर्तौ जयो ज्ञेयः क्रूरदृष्ट्या पराजयः ॥

अर्थात् विवाद में, शत्रु को मारने में, रण तथा संकट (लड़ाई-झगड़े में) के प्रश्नों में यदि लग्न में क्रूरग्रह हो तो जय किन्तु यदि लग्न में क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

शत्रु के गमन तथा आगमन -सम्बन्धी प्रश्न

(१) यदि प्रश्न-लग्न से चतुर्थ भाव में कर्क, वृश्चिक, कुम्भ या मीन राशि पड़ें तो प्रश्नकर्त्ता शत्रु पर विजयी होता है।

(२) यदि चतुर्थ भाव में मेष, वृष, सिंह या धनु के १५ अंश से ३०° तक पड़ें (केवल धनु का अन्तिम आधा हिस्सा) तो शत्रु भाग जाता है।

(३) यदि पापग्रह पञ्चम या षष्ठ में हों तो शत्रु की सेना लौट जाती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) यदि पापग्रह चतुर्थ भाव में हो तो शत्रु संग्राम में हार जाता है।

(५) यदि प्रश्न-लग्न स्थिर हो (२, ५, ८, ११) और चंद्रमा द्विस्वभाव राशि में हो (३, ६, ९, १२) तो शत्रु की सेना काफ़ी आगे तक आकर भी लौट जाती है।

(६) यदि प्रश्न-लग्न द्विस्वभाव हो (३, ६, ९, १२) और चन्द्रमा चर राशि में हो (१, ४, ७, १०) तो भी उपर्युक्त (५) के अनुसार ही फल होता है।

(७) यदि प्रश्न-लग्न द्विस्वभाव हो (३, ६, ९, १२) और चन्द्रमा स्थिर राशि में हो तो शत्रु गाँव या शहर में प्रवेश कर जाता है।

(८) यदि प्रश्न-लग्न चर हो (१, ४, ७, १०) और चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि में हो (३, ६, ९, १२)तो भी उपर्युक्त (७) के अनुसार ही फल होता है।

(९) यदि लग्न स्थिर हो, शनि और बृहस्पति की दृष्टि हो, तो शत्रु नहीं आता। किन्तु यदि (क) उपर्युक्त योग में तृतीय, पंचम और षष्ठ स्थान में खलग्रह हों तो शत्रु के साथ संगम होता है। (ख) यदि (क) में वर्णित योग न हो और उपर्युक्त योग में चतुर्थ में पापग्रह हों तो शत्रु लौट जाता है।

(१०) **चन्द्रादित्यौ चतुर्थस्थौ नायाति रिपुवाहिनी।**
शुक्रज्ञ गुरवौ बन्धा वरमायाति पृच्छतः॥

अर्थात् (क) यदि सूर्य और चन्द्र चौथे हों तो शत्रु की सेना नहीं आती (ख) यदि बुध, बृहस्पति, शुक्र चतुर्थ हों तो शत्रु की सेना शीघ्र आती है।

(११) **चलितो न रिपुर्जीवो मन्दो वाऽपि स्थिरोदये।**
चरोदये चेदादित्यो जीवो वा याति सत्वरम्॥

अर्थात् यदि बृहस्पति या शनि लग्न में हों और प्रश्न-लग्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थिर हो तो यह कहना चाहिए कि शत्रु अपने स्थान से नहीं चला। किन्तु यदि प्रश्न-लग्न चर हो और लग्न में सूर्य या बृहस्पति हो तो शत्रु शीघ्र ही आ पहुँचता है।

---

२८ वां प्रकरण

७, ८, ९, भाव-सम्बन्धी प्रश्न

मुकदमे के लिए यात्रा-सम्बन्धी प्रश्न

यदि किसी व्यक्ति का मुकदमा हो और वह पेशी के लिए जा रहा हो तो प्रश्न-लग्न बनाकर निम्नलिखित विचार करना चाहिए।

(१) यदि प्रश्न-लग्न स्थिर हो और लग्न में पापग्रह हो तो भी यात्रा करने वाले की विजय होती है।

(२) यदि चर लग्न हो और लग्न में शुभग्रह हो तो भी 'यात्री' (जाने वाले की)—यात्रा करने वाले की विजय होती है।

(३) यदि चर लग्न में पापग्रह हो तो यात्री की पराजय होती है।

(४) यदि चर लग्न हो और चन्द्रमा स्थिर राशि में हो तो यह सुनने पर भी कि मुदायला नहीं आवेगा – वह आ जाता है।

(५) यदि प्रश्न-लग्न स्थिर हो और चन्द्रमा चर राशि में हो तो यदि यह भी सुना जाय कि मुदायला आ गया है तो भी वह नहीं आवेगा।

विवाह तथा स्त्री-सम्बन्धी प्रश्न

स्त्री-लाभ-सम्बन्धी प्रश्न में लग्नेश, सप्तमेश और चन्द्रमा से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विचार करना चाहिए। यदि इन तीनों में इत्थशाल हो तो बिना प्रार्थना के ही युवती स्त्री का लाभ होता है।

'प्रश्न शास्त्र' का यह सिद्धान्त है कि जिस-जिस का लग्न या लग्नपति से सम्बन्ध हो (दृष्टि, युति, इत्थशाल अथवा एक-दूसरे के केन्द्र में होने से) उस-उस भाव-सम्बन्धी अनुभव (प्राप्ति) होता है।

यस्य यस्य विलग्पेन सम्बंधो लग्नपेन वा।
दृग्योग केन्द्र गत्याद्यैः स स भावोनुभूयते ॥

(प्रश्नमार्ग १४–४३)

(२) यदि लग्नेश या चन्द्रमा सप्तम भाव में हों तो जिस स्त्री से प्रार्थना करता है (जिसे चाहता है और जिसकी कोशिश कर रहा है) वह प्राप्त हो जाती है।

(३) यदि चन्द्रमा और लग्नेश का परस्पर इसराफ़ हो और चन्द्रमा और सप्तमेश का इत्थशाल हो तो भी स्वयं स्त्री का लाभ होता है। (अर्थात् विना विशेष चेष्टा के)।

(क) यदि अष्टमेश कोई पापग्रह हो और सप्तम में बैठा हो तो कोई अन्य स्त्री ही बाधा उपस्थित करेगी।

(ख) यदि तृतीयेश पापग्रह हो और सप्तम में बैठा हो तो भाई के द्वारा विघ्न उपस्थित होगा।

(ग) यदि चतुर्थेश पापग्रह होकर सप्तम में बैठा हो तो पिता

नोट—उपर्युक्त तीनों योगों में चन्द्रमा यदि किसी अस्त, पापदृष्ट, या पापी ग्रह से इत्थशाल करे तो स्त्री-लाभ-सम्बन्धी कार्य नष्ट हो जाता है (अर्थात् स्त्री-प्राप्ति नहीं होती है)। यह जो स्त्री-लाभ-सम्बन्धी कार्य में विघ्न उपस्थित होगा वह किसके द्वारा? इस प्रश्न का विचार करते समय यह देखना चाहिए कि निम्नलिखित योगों में से कौनसा योग या कौन-कौनसे योग वनते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से बाधा उपस्थित होकर कार्य-नाश होता है।

(घ) यदि किसी अन्य भवन का स्वामी पापग्रह हो और सप्तम में बैठा हो तो उस-उस सम्बन्धी द्वारा बाधा उपस्थित होगी (जैसे षष्ठेश से मामा, मौसी, चाची आदि, व्ययेश से चाचा आदि। उपर्युक्त जो (क, ख, ग, घ) में बाधा का विचार किया गया है वहाँ यदि सप्तम स्थान में स्थित पापग्रह पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो बाधा होने पर भी अन्ततोगत्वा कार्यसिद्धि तो हो जायगी ऐसा ऊहापोह करके विद्वान् ज्योतिषी को विचार करना चाहिए। यदि किसी शुभ भवन का स्वामी शुभग्रह सप्तम में बैठा हो और सप्तमेश से इत्थशाल करता हो तो उस सम्बन्धी द्वारा स्त्री-लाभ में सहायता प्राप्त होगी। यह निर्णय करना उचित है।

द्रष्टव्य—(भारतीय ज्योतिष में चतुर्थ से माता और दशम से पिता लेते हैं। पाश्चात्य ज्योतिष में चतुर्थ से पिता और दशम से माता लेते हैं। यवन ज्योतिष पाश्चात्य ज्योतिष और भारतीय ज्योतिष की खिचड़ी है। यह प्रश्न-विषयक विचार दोनों प्रकार के ज्योतिष का सम्मिश्रण है इस कारण चतुर्थेश से पिता द्वारा बाधा का विचार किया गया।)

'भुवन दीपक' का मत

स्थाने चतुर्थेसौम्यत्वमापन्ने ललना धृता।
सप्तमे सौम्यतां प्राप्ते प्रष्टुः कांता विवाहिता ।।
क्रूरिते च चतुर्थे स्यात्परिणीता नितंबिनी।
सप्तमे क्रूरिते वा स्याद्धतैव हि कुटंबिनी ।।
उभयो : सौम्यतां प्राप्ने द्वे स्तो धृतविवाहिते।
उभयोः क्रूरतां प्राप्ते न धृता न विवाहिता ।।
न धृता परिणीता वा योगेऽत्र सुखदायिका।
परिणीता धृता वाऽपि पाश्चात्ये सुखदायिका ।।

(श्लोक ६१—६४)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'भुवन दीपक' में इस बात का विशेष विचार किया गया है कि जो स्त्री प्राप्त होगी वह विवाहिता पत्नी के रूप में या रखैल के रूप में। वास्तव में इस प्रश्न का उत्तर प्रश्नकर्त्ता स्वयं दे सकता है क्योंकि वह परिस्थिति से पूर्ण परिचित रहता है। जो स्त्री केवल विवाहिता पत्नी के रूप में प्राप्त हो सकती है वह रखैल के रूप में प्राप्त होना संभव नहीं तथा जिससे विवाह नहीं किया जा सकता वह केवल रखैल के रूप में प्राप्त हो सकती है तथापि उपर्युक्त शास्त्रोक्त विचार दिया जाता है।

(१) यदि चतुर्थ स्थान सौम्य ग्रह से शुभयुत हो तो रखैल-प्राप्ति। यदि सप्तम भाव शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो विवाह द्वारा स्त्री-प्राप्ति।

(२) यदि चतुर्थ भाव क्रूर ग्रह-युत व दृष्ट हो तो विवाह द्वारा स्त्री-प्राप्ति। यदि सप्तम स्थान क्रूरयुत दृष्ट हो तो रखैल स्त्री की प्राप्ति।

(३) यदि चतुर्थ और सप्तम दोनों स्थान शुभग्रह युत दृष्ट हों तो विवाह द्वारा तथा रखैल भी दोनों प्रकार की स्त्री-प्राप्ति। यदि चतुर्थ और सप्तम दोनों भाव क्रूरयुत व दृष्ट हों तो न विवाह द्वारा स्त्री-प्राप्ति, न रखैल ही।

(४) चतुर्थ या सप्तम इन दोनों में से किसी में जब क्रूर ग्रह होता है तो यदि किसी प्रकार की स्त्री-प्राप्ति हो भी जाये पर सुख प्राप्त नहीं होता है।

'प्रश्नभूषण' के अनुसार विवाह योग

(१) यदि चन्द्रमा तृतीय, पंचम, षष्ठ, सप्तम—इन में से किसी भाव में हो और सूर्य बुध और वृहस्पति से देखा जाता हो तो विवाहकारक योग होता है।

(२) चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति और शुक्र; ये चारों ग्रह यदि प्रश्न-कुण्डली के केन्द्र त्रिकोण—इन छः भावों में हों तो विवाह-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कारक योग होता है।

(३) यदि प्रश्न-लग्न का स्वामी स्वराशि या उच्चराशि में हो और वह और चन्दमा एक-दूसरे को देखते हों तो शीघ्र विवाह होता है।

(४) यदि लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो तो भी शीघ्र विवाह होता है।

स्त्री-पुरुष के परस्पर प्रेम-सम्बधी प्रश्न

यदि कोई पुरुष यह प्रश्न करे कि अमुक स्त्री मुझे प्रेम करती है या नहीं या कोई स्त्री प्रश्न करे कि अमुक पुरुष मुझे प्रेम करता है या नहीं तो प्रश्न-कुंडली बनाकर लग्नेश और सप्तमेश का विचार करना चाहिए।

(१)यदि लग्नेश और सप्तमेश मित्र दृष्टि से इत्थशाल करते हों तो प्रेम, शत्रु दृष्टि से इत्थशाल करते हों तो कलह। किन्तु यदि शत्रु दृष्टि होने पर भी चन्द्रमा से कम्बूल योग होता हो तो प्रेम ही कहना।

(२) यद्यपि ताजिक में १,४,७,१० इन दृष्टियों को शत्रु दृष्टि कहते हैं तथापि यदि लग्नेश और सप्तमेश एक ही भाव में हों तो परस्पर प्रेम ही कहना।

(३) यदि प्रश्न के समय सूर्य निर्बल हो तो पुरुष के लिए अशुभ, शुक्र निर्बल हो तो स्त्री के लिए अशुभ, दोनों निर्बल हों तो दोनों के लिए अशुभ, दोनों बली हों तो दोनों के लिए शुभ।

(४) **लग्नजायाधिपौ स्वस्थौ यदि वा व्यत्ययेन तौ।**
दिने दिनेऽधिका प्रीतिर्दम्पत्यो र्जायते ध्रुवम्॥

(प्रश्न भूषण, ८१-१)

(क)यदि लग्नेश और सप्तमेश अपने-अपने स्थान में हों अर्थात् लग्न में लग्नेश और सप्तम में सप्तमेश या (ख) लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में तो स्त्री-पुरुष दोनों में प्रतिदिन अधिकाधिक प्रीति होती जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५) यदि लग्नेश और सप्तमेश दोनों में मित्र दृष्टि हो अथवा लग्नेश मित्र दृष्टि से सप्तम को देखे और सप्तमेश मित्र दृष्टि से लग्न को देखे तो दम्पती की परस्पर पीयूष-सदृश प्रीति होती है।

परस्परं तदा प्रीतिः पीयूष-सदृशी भवेत्।

(६) यदि लग्न का स्वामी सप्तम स्थान में हो और प्रश्न-कर्त्ता पुरुष हो तो पुरुष स्त्री का आज्ञाकारी होता है। यदि प्रश्न करने वाली स्त्री हो तो स्त्री पुरुष की अज्ञाकारिणी होती है।

(७) यदि सप्तम स्थान का स्वामी लग्न में हो और प्रश्न-कर्त्ता पुरुष हो तो स्त्री पुरुष की आज्ञा में रहती है। किंतु यदि प्रश्न करने वाली स्त्री हो तो उसका पति उस स्त्री की आज्ञा में रहेगा।

(८) यदि प्रश्न लग्न का स्वामी अपनो उच्च राशि में हो तो प्रश्नकर्त्ता (अपनी स्त्री-पति की अपेक्षा) उच्च कुल या अधिक गुण वाला होता है।

(९) यदि सप्तम भवन का स्वामी अपनी उच्च राशि में हो तो प्रश्नकर्त्ता की स्वयं की अपेक्षा उसकी स्त्री-पति उच्च कुल की या अधिक गुणशाली होती-होता है।

इस प्रश्न-कुंडली में प्रश्नकर्त्ता की अपेक्षा उसकी स्त्री निम्न कुल की होगी।

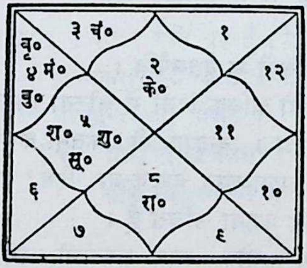

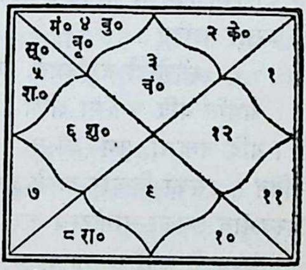

दूसरी प्रश्न-कुंडली में प्रश्नकर्त्ता स्त्री है। इस स्त्री की अपेक्षा उस का पति उच्च कुल का होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूठी हुई स्त्री के आगमन-सम्बन्धी प्रश्न

यदि कोई व्यक्ति प्रश्न करे कि मेरी स्त्री मुझसे रुष्ट होकर चली गई है वह आवेगी या नहीं तो प्रश्न-कुंडली में निम्नलिखित योग देखने चाहिये :—

(१) यदि लग्न द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ स्थान में सूर्य हो (प्रथम भाव मध्य से चतुर्थ भाव मध्य तक) तो लौटकर नहीं आती।

(२) यदि साथ में चतुर्थ भाव मध्य से सप्तम भाव मध्य तक शुक्र हो तो दृढ़तापूर्वक कहना चाहिए कि नहीं आवेगी। किंतु यदि शुक्र वक्री हो तो लौटकर आवेगी।

(३) यदि शुक्र सूर्य से योग कर आगे बढ़ गया हो तो भी लौटकर आती है।

नोट–यदि कोई स्त्री यह प्रश्न करे कि मेरा पति अप्रसन्न होकर चला गया है, लौटकर आवेगा या नहीं तो चतुर्थ भाव मध्य से सप्तम भाव मध्य तक सूर्य हो और सूर्य शुक्र का इत्थशाल होता हो तो पति लौटकर आवेगा ऐसा कहना चाहिए। यदि सूर्य नवम में हो या दशम भाव मध्य से लग्न भाव मध्य तक सूर्य हो तो भी पति लौटकर आवेगा ऐसा कहना चाहिए।

कितने दिन में लौटकर आवेगी या आवेगा यह विचार चन्द्रमा से करना चाहिए।

क्षीणेन्दौ बहुदिवसैः पूर्णविधौ च द्रुतमुपैति।

अर्थात् यदि चन्द्रमा क्षीण हो तो अधिक दिनों में लौटना होता है। यदि चन्द्रमा पूर्ण हो तो शीघ्र। चन्द्रमा की कितनी कला उदित हैं इसका विचार करते हुए प्रश्न लग्न चर है या स्थिर या द्विस्वभाव इसका सामंजस्य कर फल कहना उचित है।

प्रश्न के ग्रंथों में कन्या में "गुण, दोष, ज्ञान सम्वन्धी प्रश्न" अमुक स्त्री सती है या असती, पातिव्रत्य परीक्षा के प्रश्न आदि पर विवेचना की गई है। परन्तु ऐसे प्रश्न किसी के जीवन-प्रवाह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में काफ़ी उथल-पुथल पैदा कर सकते हैं और बसे हुए घर को उजाड़ सकते हैं। इसलिये यह उचित नहीं कि नवीन ज्योतिष सीखने वाले ऐसे प्रश्नों पर अपना हाथ आज़मावें। इस कारण इस विषय के प्रश्नों का विचार यहाँ नहीं दिया जा रहा है। जिनको विशेष जिज्ञासा हो वे 'प्रश्न भूषण' 'प्रश्न भैरव' 'ताजिक नीलकण्ठी' 'भुवन दीपक' आदि देखें।

मुद्दई मुद्दायला सम्बन्धी प्रश्न

(१) यदि कोई इस सम्बन्ध का प्रश्न करे तो लग्न से प्रश्नकर्त्ता और सप्तमेश से उसके प्रतिद्वन्द्वी का विचार करना चाहिए। यदि लग्नेश मन्दगति हो और केन्द्र में स्थित हो तो प्रश्नकर्त्ता को विशेष बलवान् समझना। यदि सप्तमेश मन्दगति होकर केन्द्र में हो तो उसे (फ़रीक दोयम) बली समझना।

(२) यदि संग्राम का प्रश्न हो और लग्न स्थित किंवा लग्नेश संयुत ग्रह चन्द्रमा से इत्थशाल करे तो प्रश्नकर्त्ता को बलवान् समझना। यदि सप्तम भाव स्थित या सप्तमेश संयुत ग्रह चन्द्रमा से इत्थशाल करे तो प्रश्नकर्त्ता के प्रतिद्वन्द्वी को बलवान् समझना चाहिए।

(३) मंगल, शनि और गुरु ये मन्दगति ग्रह हैं। बुध, शुक्र, चन्द्रमा ये शीघ्र गति ग्रह हैं। यदि मन्दगति ग्रह अधिक अंश वाले हों तो प्रश्नकर्त्ता की विजय। यदि चन्द्र, बुध, शुक्र अधिक अंश वाले हों तो प्रतिद्वन्द्वी की विजय।

(४) **वादिनो विजयप्रश्ने लग्ने क्रूरस्तदा जयः।**
यदि स्यात्सप्तमे क्रूरो विजयः प्रतिवादिनाम्।

(प्रश्नभूषण १३–१)

अर्थात् "मेरी जीत होगी या नहीं" यदि ऐसा प्रश्न हो और प्रश्न-कुंडली में क्रूरग्रह लग्न में हो तो पूछने वाले की जय होती है। यदि सप्तम में क्रूर ग्रह हो तो विरुद्ध फरीक की जय होती है यदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्न और सप्तम दोनों में क्रूर ग्रह हो तो यह विचार करना चाहिए कि अधिक क्रूर लग्न में है या सप्तम में। यदि दोनों ग्रह बली हों और इसराफ करते हों, तो भयंकर झगड़ा होता है। यदि इत्थशाल करते हो संधि की सम्भावना होती है।

(५) यदि लग्नेश और सप्तमेश शुभ ग्रह से और परस्पर मित्र दृष्टि से इत्थशाल करते हों तो अवश्य सन्धि होती है।

(६) यदि प्रश्नकर्त्ता की जन्म-कुंडली उपलब्ध हो तो प्रश्न कुंडली बनाकर यह देखना चाहिये कि प्रश्नकर्त्ता का जन्मराशि पति और जन्म-लग्न उपचय (प्रश्न-कुंडली के ३, ६, १०, ११,) स्थान में पड़ते हैं क्या? यदि ऐसा हो तो प्रश्नकर्त्ता की विजय होती है।

जन्मलग्न जन्मराशिस्तत्पतिः प्रश्नलग्नतः।
ततस्त्र्यायारिमध्यं स्यात् प्रश्न लग्ने तदा जयः॥

(प्रश्न भैरव)

वादी-प्रतिवादी सम्बन्धी कुछ अन्य योग

(१) प्रश्न-कुण्डलीमें यदि लग्नेश उपचय में हो और सप्तमेश से इत्थशाल करे तो दोनों फरीकों में संधि होती है।

(२) ऊपर जो वादी-प्रतिवादी के जय-पराजय सूचक योग दिए गए हैं वे यदि कोई भी योग प्रश्न-कुण्डली में न मिलते हों तो लग्नेश और सप्तमेश से ही विचार करना चाहिए कि कौन बली है।

(३) ऊपर बताया गया है कि मंगल, गुरु, शनि प्रष्टा (प्रश्न-कर्त्ता) के ग्रह हैं। और चन्द्र, बुध शुक्र दूसरे फरीक के। यदि दोनों प्रकार के ग्रह अस्त ग्रह से इसराफ करते हों तो बहुत दिन तक झगड़ा रहता है।

(४) यदि लग्नेश मन्दगति हो (सप्तमेश की अपेक्षा) और चन्द्रमा से कम्बूल योग करता हो तो प्रश्नकर्त्ता की विजय होती है। किन्तु ऐसे योग में भी सप्तमेश अस्त होकर केन्द्र में हो या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कम्बूल योग से दृष्टि करता हो तो प्रश्नकर्त्ता की हानि होगी।

(५) यदि लग्न से नीचे (द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम षष्ठ में) चन्द्र, बुध, शुक्र हों और लग्न से ऊपर (सप्तम भाव मध्य से लग्न भाव मध्यं तक) मंगल, गुरु शनि हों तो प्रश्नकर्त्ता को विजय प्राप्ति होती है।

(६) यदि लग्नेश अष्टम में बैठकर अष्टमेश से इत्थशाल करे तो प्रश्नकर्त्ता की मृत्यु का द्योतक है।

(७) यदि सप्तमेश अपने स्थान से अष्टम अर्थात् प्रश्न-कुण्डली के द्वितीय भाव में हो और प्रश्न-कुण्डली के द्वितीय भाव के स्वामी से इत्थशाल करे तो शत्रु का नाश होता है। (सप्तम भाव से प्रतिद्वन्द्वी का विचार किया जाता है। इस कारण प्रतिद्वन्द्वी का नाश होगा।

(८) यदि लग्नेश-दशमेश में इत्थशाल हो तो प्रश्नकर्त्ता की जय।

(९) यदि सप्तमेश और चतुर्थेश का इत्थशाल हो तो प्रतिद्वन्द्वी की जय।

(१०) लग्नेश और सप्तमेश इनके बलाबल का विचार करते समय जो ग्रह चर-राशि में हो उसे विशेष बली समझना। द्विस्व-भाव राशि में ग्रह पड़ा हो तो पराजयकारक होता है। (लग्नेश द्विस्वभाव में हो तो प्रश्नकर्त्ता की पराजय, सप्तमेश द्विस्वभाव में हो तो प्रतिद्वन्द्वी की पराजय।)

(११) यदि लग्नेश द्वादश में पड़ा हो तो प्रश्नकर्त्ता की पराजय। यदि सप्तमेश अपने स्थान से द्वादश अर्थात् प्रश्न-कुंडली के छठे भाव में पड़ा हो तो प्रतिद्वन्द्वी की पराजय।

(१२) यदि दशमेश लग्न में हो तो प्रश्नकर्त्ता को अन्य लोगों से सहायता मिलती है। यदि चतुर्थेश सप्तम में हो तो प्रतिद्वन्द्वियों को अन्य लोगों से सहायता प्राप्त होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१३) लग्नेश का रवि-चन्द्रमा से इत्थशाल हो तो प्रश्नकर्त्ता को बली समझना। यदि सप्तमेश का रवि-चन्द्रमा से इत्थशाल हो तो उसे बली समझना चाहिए। सूर्य-चन्द्र से इत्थशाल बलका द्योतक है। सूर्य-चन्द्र से इसराफ़ निर्बलता का द्योतक है।

अष्टम भाव-सम्बन्धी प्रश्न

अष्टम भाव से नदी पार करने का, किले का, शत्रु संकट का, मृतधन-प्राप्ति का तथा मृत्यु का विचार किया जाता है। प्रश्नों के ग्रन्थों में दुर्ग आदि का विस्तार से विचार किया गया है। किन्तु आजकल किले आदि के प्रश्न-दुर्ग भंग आदि का अवसर नहीं रहा। शत्रु-संकट का विचार मुख्य रूप में मुकदमे का रूप धारण कर लेता है। यह विचार पिछले पृष्ठों में किया जा चुका है। रोग और मृत्यु-सम्बन्धी विचार भी छठे भाव-सम्बन्धी प्रश्नों के अन्तर्गत कर चुके हैं।

इस कारण अष्टम भाव-सम्बन्धी कोई विशेष विचार यहाँ नहीं किया जा रहा है। यदि भू-गर्भ धन-लाभ सम्बन्धी प्रश्न हो (जमीन में गड़ा हुआ धन मिलेगा या नहीं) या मृत धन-मिलेगा या नहीं (विरासत में द्रव्य-प्राप्ति) तथा बीमा कम्पनी से धन प्राप्ति होगी या नहीं तो मुख्यत: धन स्थान और लाभ स्थान से विचार करना चाहिए। यदि अष्टम स्थान पर शुभग्रह की दृष्टि हो या अष्टम स्थान में शुभग्रह बैठा हो तो विरासत में या बीमा कम्पनी से धन प्राप्ति हो सकती है।

मृत्यु-सम्बन्धी प्रश्न में यदि लग्नेश और अष्टमेश को इत्थशाल हो तो मृत्यु कहना चाहिए। किन्तु नवीन ज्योतिषियों को सहसा 'मृत्यु' का उल्लेख करना उचित नहीं। 'शरीर-कष्ट है' इन शब्दों से अपना भाव व्यक्त करना उचित है

नवम भाव-सम्बन्धी विचार

यदि कोई प्रश्न करे कि मेरी यात्रा होगी या नहीं तो लग्नेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और नवमेश से विचार करना चाहिए।

(१) यदि लग्नेश केन्द्र में हो या नवमेश केन्द्र में हो और दोनों में इत्थशाल हो तो यात्रा होगी।

(२) नवमेश लग्न में हो और लग्नेश से इत्थशाल करता हो तो भी यही फल।

(३) लग्नेश नवम दृष्टि से नवमेश को देखता हो तो भी यात्रा होती है।

(४) लग्नेश-नवमेश दोनों एक स्थान में हों तो भी यात्रा का योग होता है।

(५) यदि लग्नेश केन्द्र में हो, तृतीय भाव में पापग्रह न हो और केवल शुभग्रह हों उससे लग्नेश इत्थशाल करे तो भी यात्रा का योग होता है।

(६) लग्नेश और नवमेश में यदि इत्थशाल हो और नवमेश पर पापग्रह की दृष्टि हो तो यात्रा के अन्त में प्रश्नकर्त्ता को कष्ट और धन-हानि ये फल होते हैं।

(७) यदि प्रश्न-कुंडली में केन्द्रों में क्रूरग्रह हों तो यात्रा नहीं होती। यदि सप्तम या अष्टम में क्रूरग्रह हों तो यात्रा नहीं होती या जिस कार्य के लिए मनुष्य प्रस्थान करता है उसमें विघ्न उपस्थित होता है। यदि दशम में पापग्रह हो तो राजकुल द्वारा या अपने से ज्येष्ठ व्यक्ति (पिता आदि जिसका प्रश्नकर्त्ता पर अधिकार हो) विघ्न उपस्थित करते हैं।

(८) यदि लग्नेश और नवमेश में इत्थशाल हो और नवमेश अष्टम में पड़ा हो तो यात्रा में कष्ट होता है। यदि नवमेश लग्न में पड़ा हो तो यात्रा सुखकर होती है।

(९) यदि प्रश्न-कुंडली में लग्न, सप्तम या अष्टम में सूर्य हो तो राजाओं की यात्रा नहीं होती।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्नास्तरन्ध्रगो भानुर्यदि वा भूमिनन्दनः ।
गमागमौ नरेन्द्राणां न करोति कदाचन ॥

('प्रश्न भैरव' श्लोक, ४२)

ऊपर श्लोक में लिखा है कि राजाओं की यात्रा नहीं होती किन्तु अन्य लोगों की यात्रा में भी इस योग को लगाया जा सकता है।

(१०) 'प्रश्न भैरव' के अनुसार यदि प्रश्न लग्न चर हो और लग्नेश लग्न में या धन स्थान में पापग्रह से युत हो तो अकस्मात् यात्रा होती है। यदि तृतीय स्थान में सूर्य, चन्द्रमा या मंगल से युत हो तो भी निश्चयकारक यात्रा योग बनता है।

(११) यदि प्रश्न लग्न चर हो, चन्द्रमा भी चर राशि में हो और चन्द्र शुभग्रहों से युत या दृष्ट हो तो यात्रा बहुत ही कल्याण-प्रद और जयप्रद होती है।

(१२) यदि प्रश्न लग्न स्थिर हो, चन्द्रमा भी स्थिर राशि में हो और सौम्यग्रहों से युत दृष्ट हो तो प्रश्नकर्त्ता की यात्रा नहीं होती। परन्तु अपने स्थान पर ही उसकी प्रसन्नता की वृद्धि होती है।

(१३) यदि प्रश्न-लग्न द्विस्वभाव हो और चन्द्रमा भी द्विस्व-भाव राशि में हो, और चन्द्रमा केवल पापग्रहों से युत दृष्ट हो तो यात्रा करने वाला बहुत कष्ट पाता है।

(१४) यदि प्रश्न-कुण्डली में ३, ६, ११—इन स्थानों में पापग्रह हों तो जिस कार्य के लिए यात्रा करता है, यदि केन्द्र में पापग्रह हो तो सिद्ध नहीं होता। यदि पापग्रह ३, ६, ११ स्थान में हों और चतुर्थ में शुभग्रह हों तो यात्रा पूरी होने के पहले ही कार्यसिद्धि हो जाती है और प्रश्नकर्त्ता मार्ग से ही लौट आता है।

यात्रा-प्रश्न में किस स्थान से क्या विचार करना

लग्न से मार्ग का अनुभव (रास्ता सुखमय होगा या कष्टमय), चतुर्थ भाव से कार्य का परिणाम, सप्तम स्थान से गम्य स्थान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(जिस स्थान के लिए यात्रा की जा रही है) तथा दशम से कार्य का विचार करना चाहिए। यदि लग्न विषम हो तो मार्ग विषम होता है। यदि लग्न का स्वामी शुभग्रह से युत वीक्षित हो तो यात्रा सुखप्रद होती है। चतुर्थ भाव शुभग्रहों से युत वीक्षित हो तो यात्रा का परिणाम शुभ होता है। सप्तम भाव शुभ हो तो गम्य स्थान पर पहुँचने पर आराम मिलता है। यदि दशम अच्छा हो तो कार्य के लिए जो प्रयास या उद्योग किये जाते हैं उनमें सफलता प्राप्त होती है।

यदि यात्रा के प्रश्न में लग्न या चन्द्रमा पापग्रह से युत वीक्षित हो तो मार्ग में कष्ट और भय की सम्भावना रहती है।

पथिक आवेगा या नहीं इस प्रकार के प्रश्न :—

ऊपर जो यात्रा-सम्बन्धी प्रश्न-विचार बताया गया है उसका उपयोग वहाँ करना चाहिए जहाँ प्रश्नकर्त्ता यह प्रश्न करे कि मेरी यात्रा होगी या नहीं—यात्रा में कार्यसिद्धि होगी अथवा नहीं और यात्रा का परिणाम क्या होगा।" अब दूसरा विषय बताया जा रहा है। यदि कोई मनुष्य बाहर गया हुआ है और उसके सम्बन्ध में कोई अन्य व्यक्ति प्रश्न करता है कि "वह गया हुआ व्यक्ति आवेगा या नहीं आवेगा, या कब आवेगा?" तो प्रश्न के समय की कुंडली बनाकर निम्नलिखित विचार करने चाहिए :

(१) यदि प्रश्न लग्न से चतुर्थ और दशम में पापग्रह हों तो पथिक का आना रुक जाता है।

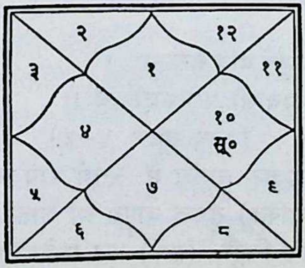

(२) यदि चतुर्थ और दशम में ग्रह हों तो यह देखना चाहिए कि चतुर्थ स्थान वाला ग्रह पंचम में कब आवेगा या दशम स्थान में जो ग्रह है वह एकादश में कब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आवेगा। जब ऐसा हो तब पथिक घर आवेगा।

उदाहरण के लिए दशम स्थान में सूर्य है। सूर्य के मकर राशि में १३ अंश हैं तो सत्रह दिन बाद सूर्य कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। इस कारण यह कहना चाहिए कि पथिक (गया हुआ व्यक्ति) १७ दिन बाद घर आवेगा।

(३) यदि पथिक शीघ्र ही घर आने वाला हो तो केवल चन्द्रमा से विचार करना चाहिए। यदि चन्द्रमा लग्न में हो तो यह देखिए कि वह द्वितीय में कब आवेगा। यदि चन्द्रमा चतुर्थ में हो तो यह देखिए कि पंचम में कब आवेगा। यदि चन्द्रमा दशम में हो तो यह देखिए कि एकादशं में कब आवेगा। उपर्युक्त तीनों योगों में जब चन्द्रमा अग्रिम राशि में प्रवेश करता है। तब पथिक वापिस आवेगा।

(४) यदि-प्रश्न-कुण्डली में चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो पथिक रास्ते में है—रवाना हो चुका है, यह कहना चाहिए।

(५) यदि नवमेश किसी भी राशि में हो किन्तु उसके १५ अंश से अधिक हों तो भी वही फल जो ऊपर नं० (४) में बताया गया है

(६) प्रश्न-कुंडली में लग्नेश लग्न से किस भाव में है यह देखना चाहिए। जिस भाव में हो उसे १२ से गुणा करें, जो संख्या आवे उतने दिन में पथिक लौटकर आवेगा। यदि शीघ्र आगमन की सम्भावना हो तो १२ से गुणा न करें। जितनी दूर-लग्न से लग्नेश है उतने दिन में आवेगा।

चरांगे चरभागेऽपि चतुर्थे यदि चन्द्रमाः ।
आयाति तत्क्षणादेव प्रवासी पत्रिकाऽपि च ॥

(प्रश्न भूषण, ४–५)

यदि चन्द्रमा चर राशि और चर नवांश में चतुर्थ भाव में हो तो प्रवासी (बाहर गया हुआ व्यक्ति) तुरन्त वापस आ जाता है। यदि चिट्ठी विषयक प्रश्न हो कि चिट्ठी (पत्र) कब आवेगी और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपर्युक्त योग घटित हो तो यह कहना चाहिए कि तत्काल ही चिट्ठी आने वाली है।

ऊपर के श्लोक का एक अर्थ और भी हो सकता है। यदि प्रश्न-लग्न में चर राशि और चर नवाँश आवे और चन्द्रमा यदि चतुर्थ में हो तो भी उपर्युक्त योग घटित होना चाहिए।

(८) यदि बृहस्पति, शुक्र या चन्द्रमा चतुर्थ में हो तो प्रवासी शीघ्र ही वापिस आता है।

(९) यदि बृहस्पति और शुक्र प्रश्न-कुण्डल के द्वितीय और तृतीय भाव में हों (दोनों द्वितीय में या दोनों तृतीय में या एक द्वितीय में एक तृतीय में) तो पथिक वापस घर आ पहुँचा है। यह कहना चाहिए।

(१०) यदि प्रश्न-लग्न चर हो और उसमें बुध, शुक्र, या शनि लग्न में हों तो प्रवासी (गया हुआ व्यक्ति) शीघ्र लौट कर आवेगा —यह कहना चाहिए। यदि चर लग्न में सूर्य हो तो भी यही फल होता है। ऊपर जो बुध, शुक्र, शनि का फल बताया गया है वह तभी घटित होता है जब वे मार्गी हों अर्थात् वक्री न हों।

प्रवासी के प्रश्न में किस स्थान से क्या विचार करना

प्रश्न-लग्न से स्थानच्युति, चतुर्थ से वृद्धि, सप्तम से निवृत्ति, (यात्रा से वापिस लौट आना) और दशम से प्रवास का विचार करना चाहिए।

यदि प्रश्न लग्न चर हो और शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो शीघ्र कार्यसिद्धि होती है। यदि स्थिर लग्न हो तो कार्यसिद्धि सम्भव नहीं होती। यदि द्विस्वभाव लग्न हो और शुभ ग्रह से युत, वीक्षित हो तो कार्यसिद्धि विलम्ब से हो जाती है। यदि पापग्रह से युत वीक्षित हो तो कार्यसिद्धि नहीं होती।

पथिक सम्बन्धी अनिष्ट योग

(१) यदि प्रश्न-कुण्डली में लग्नेश और चन्द्रमा अष्टमेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सहित छठे या सातवें स्थान में हो तो पथिक की बाहर ही मृत्यु हो जाती है, वह लौटकर नहीं आता है।

(२) यदि प्रश्न-लग्न मेष, वृषभ, कर्क, धनु या मकर हो और प्रश्न-लग्न शुभग्रह से युत वीक्षित हो या केन्द्र में पापग्रह पड़े हों तो भी प्रवासी को दुःख-संताप होता है।

पथिक सम्बन्धी कुछ अन्य योग

यदि पथिक सम्बन्धी प्रश्न किया जावे कि—

(१) पथिक आवेगा या नहीं।
(२) वह मर तो नहीं गया है।
(३) उसका द्रव्य नष्ट तो नहीं हो गया है।
(४) वह बीमार तो नहीं है।
(५) उसकी पराजय तो नहीं हो गई है।

इस प्रकार के प्रश्न में यदि स्थिर लग्न आवे तो उपर्युक्त पाँचों प्रश्नों के उत्तर में कहना चाहिए नहीं। यदि चर लग्न हो तो विपरीत फल होता है। यदि द्विस्वभाव लग्न हो तो मिश्रित फल। मिथुन का पूर्वार्द्ध स्थिर का फल करता है अपरार्द्ध चर का। कन्या, धनु और मीन का भी मिथुन की भाँति ही फल समझना चाहिए। विशेष यह है कि यदि द्विस्वभाव लग्न शुभग्रहों से दृष्ट हों तो शुभ फल यदि पापग्रहों से युत वीक्षित हों तो अशुभ फल। जिस प्रकार यहाँ चर, स्थिर द्विस्वभाव से विचार किया गया है उसी प्रकार चन्द्रमा (चर, स्थिर या द्विस्वभाव में है) से भी विचार करना चाहिए।

भाग्य-सम्बंधी प्रश्न

नवम स्थान भाग्य स्थान है। इससे भाग्य तथा धर्म-सम्बन्धी विचार भी किया जाता है। यदि प्रश्न केवल धन-विषयक हो तो द्वितीय तथा एकादश से विचार करना चाहिए किंतु यदि भाग्य-सम्बन्धी प्रश्न हो या धर्म-सम्बन्धी प्रश्न हो तो लग्न और नवम तथा लग्नेश और नवमेश से विचार करना चाहिए। शुभग्रहों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

युत, वीक्षित होने से शुभ फल, पापग्रहों से युत वीक्षित होने से अशुभ फल। वर्ष में जो इत्थशाल आदि षोडश योग बताये गये हैं उनका प्रश्न-कुण्डली में भी उपयोग करना चाहिए। यदि कोई धर्म-सम्बन्धी प्रश्न करे कि किस देवता का अनुष्ठान करने से मुझे सफलता प्राप्त होगी तो नवम स्थान पर जिस ग्रह की मित्र-दृष्टि हो या नवम स्थान में जो ग्रह हो उसके अधिष्ठाता—देव विग्रह की उपासना विशेष फलीभूत होगी यह कहना उचित है। किस ग्रह से किस देवता का विचार करना यह विस्तृत विचार है। जिज्ञासु पाठक इस सम्बन्ध में हमारा लिखित 'भगवद् भक्ति और नवग्रह' नामक लेख देखें। यह 'कल्याण' में छप चुका है।

२९वाँ प्रकरण

१०, ११, १२, भाव-सम्बन्धी प्रश्न

दशम भाव-सम्बन्धी प्रश्न

दशम स्थान कर्म स्थान है। मनुष्य की पद-प्राप्ति, पदोन्नति मान-प्राप्ति आदि का विचार दशम से किया जाता है। किंतु यदि कोई यह प्रश्न करे कि इस 'शहर' में जाने से या जिस शहर में रह रहा हूँ उस शहर में मुझे लाभ होगा या नहीं तो प्रश्न-कुण्डली में निम्नलिखित विचार करना चाहिए।

(१) यदि द्वितीयेश वक्री होकर लग्न में हो तो उस शहर में रहने से कार्य-सिद्धि नहीं होती।

(२) यदि द्वितीयेश अतिचारी* हो तो उस शहर में बहुत दिन रहने पर भी कार्य-सिद्धि नहीं होती। अतिचारी की परिभाषा २५८ पृ० पर दी गई है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) यदि द्वितीयेश तृतीय यां नवम स्थान में हो तो उस शहर में शीघ्र कार्य सम्पन्न कर मनुष्य अपने शहर को वापस आ जाता है।

(४) यदि द्वितीयेश प्रथम, दशम या एकादश भाव में हो तो शुभ फल समझना चाहिए।

(५) यदि द्वितीयेश क्रूरग्रह-सहित चतुर्थ में हो तो कलह होता है।

(६) यदि द्वितीयेश क्रूरग्रह-सहित सप्तम में हो तो मार्ग में विघ्न होता है।

(७) इस सम्बन्ध में 'प्रश्न भैरव' का निम्नलिखित मत है :

धनाधिपो वा यदि लग्नगश्चे–
द्धनस्थितो वा दशम स्थितो वा।
तृतीयगे वा नवमे दिनेशे
कार्यं शुभं सिद्धयति पृच्छकस्य ॥

अर्थात् यदि प्रश्न-कुण्डली में धनस्थान का स्वामी लग्न, द्वितीय या दशम स्थान में हो और सूर्य तृतीय या नवम में हो तो प्रश्न-कर्त्ता को सिद्धि होती है।

पद-प्राप्ति सम्बन्धी प्रश्न

दशम भाव को राज्य स्थान भी कहते हैं। पहले भारतवर्ष में छोटे-बड़े हजारों राज्य थे। छोटी-छोटी रियासतों के मालिक भी अपने को राजा कहते थे। दस-दस हजार रुपये सालाना की आमदनी वाले भी अपने को राजा कहते थे और अपने कुल के अनुसार यदि कोई छोटी जमींदारी का मालिक हो जाता तो उसे

नोट—जब कोई ग्रह एक वर्ष में कई बार वक्री-मार्गी होता हुआ अपनी स्वाभाविक गति से जितनी राशियों में भ्रमण करना चाहिए उससे अधिक राशियों में भ्रमण करता है—अधिक चलता है तो उसे अतिचारी कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राज्यप्राप्ति के बरावर हर्ष होता था। इसी प्रकार यदि किसी को अच्छी सरकारी नौकरी मिल जाती थी तब वह भी अपने को पदाधिकारी मानता था। इसलिए इन सब बातों का विचार राज्य भाव से किया जाता था। अब रियासतें और जमीदारियाँ तो नष्ट हो रही हैं किन्तु उच्चपद प्राप्ति का विचार या अधिकार-प्राप्ति का विचार दशम स्थान से ही करना उचित है।

(१) यदि लग्नेश का मित्र दृष्टि से दशमेश से इत्थशाल हो तो उच्चपद प्राप्ति होती है।

(२) यदि लग्नेश दशम में हो और दशम स्थान का स्वामी लग्न में हो तथा लग्न में कोई क्रूरग्रह न हो तो जिस पद के विषय में प्रश्न किया गया है उसकी प्राप्ति होती है।

(३) यदि लग्न में कोई शुभग्रह हो और वह दशमेश से इत्थशाल करे तो भी पद-प्राप्ति।

(४) यदि वलवान् मन्दगति ग्रह चतुर्थ स्थान में हो और क्रूर-ग्रह से शत्रु दृष्टि से दृष्ट हो तो अपवाद (वदनामी) प्राप्ति होती है। किन्तु क्रूरग्रह से दृष्ट न होकर शुभग्रह से मित्र दृष्टि से दृष्ट हो तो सुयश प्राप्त होता है।

(५) यदि चन्द्रमा निर्वल हो और (लग्नेश तथा राज्येश में) मंदगति ग्रह भी बलहीन हो तो लग्नेश और दशमेश का इत्थशाल होने पर भी बहुत भ्रमण करने के बाद पद-प्राप्ति होती है।

(६) यदि लग्नेश स्वगृही हो और मंगल मकर का हो तो पदप्राप्ति होती है।

(७) यदि लग्नेश और दशमेश में इत्थशाल हो और चन्द्रमा

नोट – ऊपर जो इत्थशाल के तीन योग बताये हैं उनमें यदि मन्दगति ग्रह पापग्रह पीड़ित हो (अर्थात् पापग्रह से युक्त या दीप्तांश के अन्तर्गत वीक्षित हो) तो पदप्राप्ति निकट आकर भी हाथ नहीं आती। अर्थात् पद-प्राप्ति नहीं होती।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रथम, चतुर्थ, सप्तम या दशम में स्थित होकर उन दोनों से कम्बूल योग करता हो तो उत्तम पद-प्राप्ति होती है।

(८) जिस राशि में लग्नेश हो उस राशि का स्वामी यदि अशुभ स्थान में हो (अर्थात् ६, ८, १२ या नीच राशि में या अस्तंगत हो) तो कार्य नहीं बनता।

(९) यदि प्रश्न लग्न का स्वामी अस्त हो तो बहुत क्लेश और उद्योग करने पर सम्भवतः कार्य बने। किंतु यदि इस प्रकार के अस्त लग्नेश को क्रूरग्रह दशम दृष्टि से देखता हो तो कलह होता है।

मेरा पद दृढ़ रहेगा या नहीं

चतुर्षु केन्द्रेषु यदाऽर्क पुत्रः
स्थाने तु कस्मिंश्चिदतो निवेद्यम्।
पदं स्थितं वा तनुवित्र नाथौ
युक्तेक्षितौ स्याद्विपरीतहानिः ।।

(प्रश्न भैरव—८९)

(१) अर्थात् यदि प्रश्न-कुण्डली में शनि प्रथम, चतुर्थ, सप्तम या दशम में हो तो पद-प्राप्ति को स्थिर समझना चाहिये।

(२) यदि लग्नेश व धनेश दोनों एक ही राशि में हों या इन दोनों में दृष्टि हो तो पद-प्राप्ति स्थिर रहती है।

(३) आचार्य नीलकंठ के मत से यदि कोई स्थान-प्राप्ति के बाद यह पूछे कि कैसी दशा रहेगी तो लग्न से शरीर का विचार करे, सप्तम से गृह-कर्म का, दशम से पद (राज्य का), एकादश से मित्र का, चतुर्थ से कार्य की समाप्ति या परिणाम का विचार करना चाहिए। द्वितीय से धन का, तृतीय से नौकर का और षष्ठ से शत्रुओं का विचार करे। जो स्थान शुभग्रह युत दृष्ट हो उसका शुभ फल और जो क्रूर ग्रहों से युत दृष्ट हों उसका अशुभ फल

नोट—पद-प्राप्ति के योगों में यदि चन्द्रमा कम्बूल योग करे और कर्क का चन्द्रमा हो तो विशेष उच्चपद की प्राप्ति होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समझना चाहिए।

(४) यदि लग्नेश नीच और दुर्बल हो तो अशुभ फल होता है। अर्थात् पद-प्राप्ति चिरस्थायी नहीं होती। यदि चन्द्रमा और लग्नेश का कम्बूल योग होता हो तो कुछ शुभ फल होता है। किंतु यदि लग्नेश पापाक्रांत हो तो अशुभ परिणाम ही समझना चाहिए।

(५) यदि लग्नेश व दशमेश एक राशि में हों और एक मंद गति ग्रह केन्द्र में हो तो पद स्थायी रहता है। किंतु यदि मन्दगति ग्रह वक्री हो या चतुर्थ में हो तो पदच्युति होती है। यदि चन्द्रमा का कम्बूल हो तो पुनः पद-प्राप्ति हो जाती है।

(६) यदि लग्नेश और दशमेश में इसराफ़ हो तो पद स्थायी नहीं रहता।

लाभ-सम्बन्धी प्रश्न

लाभ अनेक प्रकार से होता है। इसमें सर्वप्रथम क्रय-विक्रय द्वारा लाभ होगा या नहीं इस प्रकार के प्रश्नों का विचार किया जाता है। प्रश्न-कुंडली में लग्न-पति से माल खरीदने वाले का विचार करे और ग्याहवें से माल बेचने वाले का। जो व्यापारी प्रश्न कर रहा है वह यदि नया माल खरीदना चाहता है है और उसका प्रश्न यदि यह है कि, "माल खरीदूँ या नहीं, लाभ होगा या नहीं" तो प्रश्न-कुण्डली के लग्न से विचार करे। यदि लग्न और लग्नेश शुभ-ग्रह-युत हों तो खरीदने से लाभ होगा। यदि व्यापारी माल बेचना चाहता है तो एकादश भाव से विचार करे। यदि एकादश भाव और एकादश भाव का स्वामी, शुभग्रह युत दृष्ट हों तो माल बेचने में लाभ होगा।

तेजी-मंदी सम्बन्धी प्रश्न :

तेजी-मंदी प्रश्न में पहले यह विचार करना चाहिए कि कौन-सा ग्रह किस वस्तु का अधिष्ठाता है। इसका विवरण देखिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"व्यापार रत्न*" में। जिस वस्तु का विचार करना हो उसका अधिष्ठाता ग्रह बली है या नहीं। यदि निर्बल है तो वह वस्तु सस्ती रहेगी।

साधारण तेजी-मंदी के प्रश्न में लग्न से विचार करे। लग्न का स्वामी या शुभ ग्रह जब तक (जितने महीने या दिनों तक) लग्न में रहें या लग्न को देखते रहें उतने काल तक मन्दी रहती है। यदि लग्न क्रूर दृष्ट, क्रूराक्रान्त हो तो तेजी होती है।

अचिन्तित लाभ योग

यत्रान्यलाभयोगो न भवति नवमं च भवति शुभदृष्टम्।
तत्राचिंतितलाभः प्रष्टुर्गणकेन निर्देश्यः ॥

("भुवन दीपक"–१०३)

अर्थात यदि लाभ का प्रश्न हो और कोई विशेष लाभ का योग दिखाई न दे किंतु नवम भाव बलवान् हो और शुभ दृष्ट हो तो अचिंतित लाभ होता है।

लाभ-सम्बन्धी अन्य प्रश्न :

(१) यदि लग्नेश और लाभेश में इत्थशाल हो तो लाभ होता है।

(२) यदि लाभेश केन्द्र में स्थित होकर चन्द्रमा से कम्बूल योग करे तो लाभ होता है।

(३) लग्नेश और लाभेश में यदि इत्थशाल हो व इन दोनों में मंदगति ग्रह क्रूराक्रान्त हो तो लाभ होकर नष्ट भी हो जाता हैं। यदि शुभ ग्रह से भी युत व दृष्ट हो तो मिश्रित फल कहना।

---

*यह पुस्तक गोयल एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली – ६ से प्राप्त हो सकती है।

नोटः—उपर्युक्त योगों में यदि लाभेश चर राशि में हो तो शीघ्र लाभ स्थिर राशि में हो तो देर से लाभ और द्विस्वभाव राशि में हो तो मिश्रित फल कहना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुप्त कार्य सम्बन्धी, प्रश्न

गुप्तं कार्यमिदं मे सिद्ध्यति लग्नेश्वरेऽथ चन्द्रससि ।
शुभमुथशिलगे केन्द्र तन्निकटे वाऽथ सिद्धिः स्यात् ॥
("ताजिक नीलकंठी"–प्रश्न खंड–१४१)

अर्थात् कोई प्रश्न करे कि मैंने जो कार्य मन में विचार रखा है वह होगा या नहीं तो लग्नेश और चन्द्रमा का शुभग्रह से इत्थशाल होता है या नहीं यह विचार करना चाहिए। यदि केन्द्र या पणफर 2, 5, 8, 11. में स्थित होकर शुभग्रह से इत्थशाल करते हों तो कार्यसिद्ध होगा।

मित्र-सम्बन्धी विचार

लाभ स्थान से मित्रों का विचार किया जाता है। मित्र-प्राप्ति या मित्र से प्रीति बनी रहेगी या नहीं इस प्रकार के मित्र सम्बन्ध प्रश्नों में यदि–

(१) लग्नेश और एकादशेश एक-दूसरे के स्थान में स्थित हों, या

(२) लग्नेश और एकादशेश में मित्र दृष्टि और इत्थशाल हो तो प्रीति और मित्र प्राप्ति कहना।

(३) यदि लग्नेश और लाभेश दोनों (क) केन्द्र में हों तो पहले से ही प्रीति रहती है। यदि (ख) पणफर में हों तो आगे प्रीति होगी। (ग) यदि आपोक्लिम में होकर दोनों इत्थशाल करते हों तो भी अत्यन्त प्रीति कहना।

व्यय सम्बन्धी विचार

यदि व्यय स्थान का स्वामी मंगल हो और नीच राशि का हो तो परस्त्री के लिए व्यय होता है। यदि बृहस्पति व्ययेश हो तो धर्म-कार्य में व्यय। सूर्य व्ययेश हो तो गुरु-पूजा में। शुक्र व्ययेश हो तो विलास में, बुध व्ययेश हो तो वाणिज्य में। यदि व्ययेश का चन्द्रमा से इत्थशाल हो और व्ययेश तीसरे, छठे, ग्यारहवें स्थान में हो तो विशेष रूप से व्यय कहना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) यदि लग्नेश और व्ययेश को इत्थशाल हो तो व्यय-होता है ।

(३) शुभग्रह व्यय स्थान में हो तो शुभ व्यय-शुभग्रह की व्यय स्थान पर दृष्टि हो तब भी यही फल ।

(४) पापग्रह व्यय स्थान में हो तो असद् व्यय । पापग्रह की व्यय स्थान पर दृष्टि हो तब भी यही फल ।

नोटः—किस प्रकार का व्यय होगा यह विचार करते समय यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि किस भवन का स्वामी व्यय स्थान में स्थित है। उस भवन सम्बन्धी व्यय होता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित प्रश्न-कुंडली में सूर्य, शनि और मंगल द्वादश स्थान में हैं ।

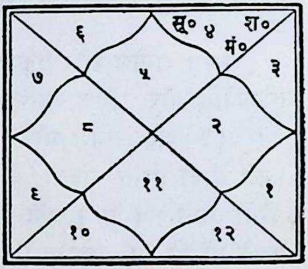

सूर्य प्रथम भाव का स्वामी है। और व्यय में है इस कारण शरीर-सम्बन्धी (इलाज आदि) में व्यय करावेगा। मंगल चतुर्थ और नवम का स्वामी है । भूमि, मकान तथा यात्रा में व्यय करा सकता हैं । शनि छठे तथा सातवें स्थान का स्वामी है—सट्टा व्यापार में हानि, शत्रु पीड़ा तथा नौकरों के गवन द्वारा घोर व्यय करा सकता है । सूर्य-मंगल राज-दंड भी कराते हैं। इस कारण इनकम टैक्स आदि में दंड लग सकता है। शनि-मंगल का योग होने से विशेषकर शनि के षष्ठेश और सप्तमेश होने से फ़ौजदारी मुकदमे में भी व्यय हो सकता है। लग्नेश सूर्य है। यदि सूर्य शनि से इत्थशाल करता हो और ऐसे व्यक्ति को रोग टी० बी० आदि की सम्भावना हो तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वादश से एकांतवास का विचार भी किया जाता है, इस कारण यह भी कह सकते हैं कि इस व्यक्ति को किसी एकांत स्थान, किसी जल प्रदेश के किनारे (क्योंकि कर्क जलराशि है) रहना पड़ेगा। व्यय के हजारों प्रकार हैं। मनुष्य की परिस्थिति से जो बात मेल खाये वह कहनी चाहिए ।

शत्रु सम्बन्धी प्रश्न

द्वादश स्थान से शत्रु निग्रह का भी विचार किया जाता है।

(१) यदि षष्ठेश बली हो तो शत्रु को प्रबल समझना चाहिए।

(२) यदि द्वादशेश बली हो तो प्रश्न-कर्त्ता को बली समझे।

(३) यदि प्रश्न-कर्त्ता शत्रु का नाम उच्चारण करे और सप्तमेश बली हो तो शत्रु को बली समझना चाहिए।

(४) यदि शत्रु का नाम उच्चारण न करे और द्वादशेश बली हो तो प्रश्न-कर्त्ता की विजय होती है।

————

३०वां प्रकरण

द्रेष्काण स्वरूप से चोर का निर्णय

प्रश्न के सम्बन्ध में किस प्रकार विचार करना चाहिए यह पहले बताया जा चुका है। प्रश्न-सम्बन्धी अनेक संस्कृत के ग्रंथ हैं, 'प्रश्न मार्ग', 'प्रश्न भूषण', 'प्रश्न, 'वैष्णव' 'केवल ज्ञान', 'प्रश्न-चूड़ामणि' आदि।

इसके अतिरिक्त "बृहज्जातक" के २५वें अध्याय में प्रत्येक 'द्रेष्काण' का स्वरूप बताया गया है। प्रति राशि में ३ द्रेष्काण होते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होते हैं। इस प्रकार ३६ द्रेष्काणों का पृथक्-पृथक् स्वरूप बताकर आचार्य (वराह मिहिर) कहते हैं कि कोई वस्तु चोरी चली जावे तो 'चोर' का स्वरूप द्रेष्काणके स्वरूप के तुल्य होता है। इस आधार पर 'चोर' का हुलिया बताना चाहिए। जिस 'द्रेष्काण' में सूर्य हो या चन्द्रमा हो या जाने वाला हो उस 'द्रेष्काण' से भी प्रश्न के उत्तर में सहायता लेनी चाहिये,

द्रेष्काणों के स्वरूप

मेष का प्रथम द्रेष्काण—पुरुष, जिसके कमर मेंस फेद वस्त्र लिपटा हुआ है। यह पुरुष स्वयं काले रंग का रौद्र(भयंकर) फ़रसा (शस्त्र)हाथ में लिये है। जवान है और औदार्यादि गुण सम्पन्न है। दूसरे की रक्षा में तत्पर है। इसके नेत्रो में ललाई है।

मेष का द्वितीय द्रेष्काण—लाल वस्त्र पहने हुए युवती है। इसके हृदय में भूषण की इच्छा है। इसका बड़ा पेट है। घोड़े की तरह लम्बा मुख (चेहरा) है। एक पैर पर खड़ी है (दूसरे पैर को हिला रही है या उस पैर में कुछ दोष है)। प्यासी है।

मेष का तृतीय द्रेष्काण—क्रूर कला-कुशल पुरुष है। कपिल वर्ण है। हाथ में दण्ड है। लाल वस्त्र धारण किये है। घातक प्रवृत्ति का है। अग्नि क्रिया (आग लगाना, गोली चलाना) आदि कार्य करने को उद्यत है।

वृषभ का प्रथम द्रेष्काण—स्त्री है, इसके सिर के केश कुछ घुंघराले और छिन्न हैं। इसका पेट घड़े की तरह है। इसका वस्त्र (साड़ी) एक स्थान पर जला है। अर्थात् इस द्रेष्काण का अग्नि से सम्बन्ध है। इसे भूख-प्यास लगी है। इसे आभूषणों की बहुत इच्छा है।

वृषभ का द्वितीय द्रेष्काण—खेत, धान्य, गृह, गाय आदि कला-विद्याओं की जानकारी युक्त पुरुष। गाड़ी तथा हल चलाने में कुशल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊंचे कंधे हैं। शरीर वृषभ (बैल के) समान है मुख बकरे के समान, कपड़े मैले पहने हुए है और इसे भूख लगी है।

वृषभ का तृतीय द्रेष्काण–हाथी की तरह बड़ा शरीर, बड़े दाँत, शरभ (पक्षिराज) की तरह पैर (शीघ्र चलने वाला), कुछ पीला शरीर, भेड़ के समान शरीर पर बड़े रोम। मृग के समान शरीर पर विचित्र रोम। देखने में व्याकुल चित्त।

मिथुन का प्रथम द्रेष्काण–सुन्दर स्त्री–सिलाई (कसीदा) आदि कार्य करने को उत्सुक। आभरण (वस्त्र, भूषण) कार्य में चित्त लगा हुआ है। इसके सन्तान नही हैं (या नष्ट हो गई है) ऋतुमती (रजस्वला) है।

मिथुन का द्वितीय द्रेष्काण–बाग में स्थित, कवच धारण किये, हाथ में धनुष लिये, शूर, गरुड़ के समान मुख, क्रीड़ा, अलंकार तथा स्वयं के विषय में (अपने स्वार्थ सम्बन्ध में) चिंता कर रहा है।

मिथुन का तृतीय द्रेष्काण–वरुण देवता की भाँति बहुत रत्नों से भूषित धनुष, तरकस तथा कवच धारण किये हुए, नाच, बाजा बजाने तथा कलाओं में विद्वान एवं कवि।

कर्क का प्रथम द्रेष्काण–पत्र, मूल, फल को धारण कियेबड़ा शरीर जंगल में चन्दन वृक्ष की इच्छा रखने वाला, बहुत शीघ्रगामी। वराह (सूअर) की तरह मुख वाला घोड़े के समान गर्दन।

कर्क का द्वितीय द्रेष्काण–इसका स्वरूप स्त्री की भाँति है। कमल पुष्पों से अलंकृत। सिर पर सर्प हैं, कर्कशा, युवती है, जंगल में जाकर रोती है। पलाश (वृक्ष विशेष) की शाखा (डाली) को पकड़े हुए है।

कर्क का तृतीय द्रेष्काण–सर्पों से वेष्टित पुरुष नाव में बैठकर अपनी भार्या के भरणपोषण निमित्त जा रहा है। सुवर्ण के आभूषण पहने है, गोल और चौड़ा-चपटा चेहरा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिंह का प्रथम द्रेष्काण—शाल्मलि वृक्ष के ऊपर गृद्ध है। वहाँ गीदड़ तथा कुत्ता भी है। मैले वस्त्र पहने हुए—माता-पिता से बिछड़ा हुआ मनुष्य रो रहा है।

सिंह का द्वितीय द्रेष्काण—घोड़े के सदृश बड़ा और चौड़ा शरीर; सिर पर सफ़ेद माला पहने मनुष्य है। वह काला मृगचर्म तथा कम्बल ओढ़े है। वह शेर की तरह दुस्साध्य है। हाथ में आयुध धारण किये है। इस मनुष्य की नाक आगे से झुकी है।

सिंह का ततीय द्रेष्काण—ऋक्ष (रीछ) की तरह चेहरा है। वानर के समान चेष्टा है। इस पुरुष के बड़ी-बड़ी दाढ़ी मूँछ हैं। इसके हाथ में डण्डा, फल और माँस है। इसके सिर के केश घुँघराले हैं।

कन्या का प्रथम द्रेष्काण—कन्या है; हाथ में घड़ा है जिसमें पुष्प भरे हैं। मैले कपड़े पहने है। इसकी मनोभिलाषा है कि द्रव्य और वस्त्र प्राप्त हो। गुरु के कुल की ओर जा रही है।

कन्या का द्वितीय द्रेष्काण—पुरुष है; समस्त शरीर में रोम हैं। इसका वर्ण श्याम है। सिर पर वस्त्र लिपटा हुआ है। हाथ में कलम है। आय-व्यय का हिसाब लिखने में तत्पर है। हाथ में धनुष है।

कन्या का तृतीय द्रेष्काण—कन्यां है (जो अभी रजस्वला नहीं हुई है) धुला हुआ, गीला उत्तम वस्त्र पहने है। उच्च शरीर है। हाथ में कुम्भ (घड़ा) तथा कटच्छ (कड़छली) है। मन्दिर या पूजा के कमरे की ओर जा रही है।

तुला का प्रथम द्रेष्काण—पुरुष है। राजमार्ग (बाज़ार) की दुकान में स्थित है। हाथ में नापने, तोलने (गज या तराजू) का यंत्र है। इस कार्य में वह बहुत दक्ष है। यह सोच रहा है कि इस बर्तन को किसे बेचूं?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुला का द्वितीय द्रेष्काण—पुरुष है। मुख गृद्ध के समान है। कलश लेकर जाने की इच्छा करता है। यह पुरुष भूखा और प्यासा है और अपने मन में अपनी स्त्री तथा पुत्रों के सम्बन्ध में विचार कर रहा है।

तुला का तृतीय द्रेष्काण- पुरुष है। धनुष धारण किए हुए है। रत्नों से अलंकृत है। सोने का तरकस तथा कवच धारण किए है किन्तु स्वय विकृत रूप है और जंगल में मृगों को डरा रहा है।

वृश्चिक का प्रथम द्रेष्काण—स्त्री है। वस्त्र और आभूषण से विहीन स्त्री, महा समुद्र के किनारे से आ रही है। इस स्त्री के दोनों पैरों में सर्प लिपटे हैं।

वृश्चिक का द्वितीय द्रेष्काण—यह स्त्री है। कछुए के समान गोल और घड़े के समान बड़ा पेट हैं। अपने पति के लिए स्थान सुख चाहती है। इसका सारा शरीर सर्पों से आवेष्टित हैं।

वृश्चिक का अन्तिम द्रेष्काण—यह पुरुष है। कछुए के समान चपटा और बड़ा मुख है। गर्दन से ऊपर नर (मनुष्य) का रूप और गले से नीचे सिंह का। कुत्ते मृग, शृगाल (गीदड़) सूअरों आदि के लिए भयंकर हैं। मलय देश से इसका सम्बन्ध हैं।

धनु का प्रथम द्रेष्काण—पुरुष है। गर्दन से ऊपर मनुष्य की भाँति हैं और नीचे का शरीर घोड़े की भाँति है; वस्त्र धारण किए, हाथ में वड़ा धनुष है, और तपस्वी तथा यज्ञोपयोगी पदार्थों की रक्षा करता है।

धनु का द्वितीय द्रेष्काण—स्त्री है। सोने के समान या चम्पक के पुष्प के समान उज्वल वर्ण वाली मनोरमा स्त्री है। इसका सुन्दर रूप हैं और यह सुन्दर आसन पर विराजमान है। समुद्र के रत्न, मोती, मूँगा आदि को हाथ से इतस्ततः कर रही हैं। यदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रश्न-लग्न में धनु-लग्न के दस अंश से लेकर बीस अंश तक कोई अंश आवे तो द्वितीय द्रेष्काण होने से यह कहना चाहिए कि किसी प्रतिष्ठित गौरांगी सुन्दरी ने चोरी की है।

धनु का तृतीय द्रेष्काण–पुरुष है; उत्तम आसन, डंडा लिए बैठा है। सुन्दर रेशमी वस्त्र तथा चर्म धारण किए हुए है। इसके बड़ी बड़ी दाढ़ी मूँछ हैं और शरीर का वर्ण चम्पे के पुष्प के समान है।

मकर का प्रथम द्रेष्काण—पुरुष है। इसका भयंकर मुख है और मगर के समान दाढ़ है। नीचे का शरीर सूअर के समान है और बदन में बहुत रोयें हैं। इसके हाथ में पशुओं के बंधन के यंत्र हैं (दाहिना आदि)।

मकर का द्वितीय द्रेष्काण—यह स्त्री है। इसके नेत्र कमल के समान हैं। युवती है। उत्तमोत्तम, अद्भुत वस्त्र आदि की इच्छा रखती है। विभूषण से अलंकृत है किन्तु कान में लोहा धारण कर रखा है। यह विविध कलाओं, विद्याओं में चतुर है।

मकर का तृतीय द्रेष्काणं– यह विकृत शरीर वाला पुरुष है। सारे शरीर पर कम्बल ओढ़े हुए है। धनुष, तर्कस तथा कवच धारण किये हुए है। रत्न-चित्रित घड़ा इसके कन्धे पर है। (इन द्रेष्काणों के स्वरूप से जब चोर के स्वरूप का अनुमान किया जाता है तो यह आवश्यक नहीं कि सब लक्षण ही मिलें। यदि प्रश्न के समय मकर का तृतीय द्रेष्काण आवे और जिस स्थान पर चोरी हुई है वहाँ पर कोई कुरूप पनिहारा हो तो कह सकते हैं कि इसने चोरी की है।)

कुम्भ का प्रथम द्रेष्काण–तैल, मदिरा, जल, भोजन, माँस आदि के लिए आकुल है। इसके पास बैठने का आसन तथा विस्तर कम्बल आदि हैं। गिद्ध के समान इसका मुख है तथा चर्म से इसका शरीर आवृत्त है। यह पक्षी द्रेष्काण है।

कुम्भ का द्वितीय द्रेष्काण—यह स्त्री द्रेष्काण है। शाल्मली वृक्ष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के वन में मलीन वस्त्र धारण किये कोई स्त्री जली हुई गाड़ी से लोह उतार रही है। इस स्त्री के सिर पर भाँड (बर्तन, घड़े आदि) हैं। यह आग्नेय द्रेष्काण है।

कुम्भ राशि का अन्तिम द्रेष्काण—श्याम पुरुष है, इसके कान पर बड़े-बड़े बाल हैं। चमडा, पत्ते, हींग, गुग्गुल, फल तथा लोह के पदार्थ लेकर चलता है।

मीन का प्रथम द्रेष्काण—यह पुरुष है। इसके हाथ में सुर्ख मुक्ता, शंख, यज्ञपात्र आदि हैं। भार्या के भूषण के लिए समुद्र में यातायात करता है। (आजकल की सामाजिक परिस्थिति में 'इम्पोर्ट' 'एक्सपोर्ट' करने वाला व्यक्ति)

मीन का द्वितीय द्रेष्काण—चम्पक के समान सुन्दर वर्ण वाली स्त्री है। बड़े ऊँचे झंडे वाले जहाज पर जा रही है। परिवार से युक्त है। (बम्बई आदि शहरों में चोरी का प्रश्न हो और कोई उच्च कुल की सुन्दरी विलायत आदि जा रही हो तो उसने चोरी की है यह इस द्रेष्कण से लक्षित होगा।

मीन का तृतीय द्रेष्काण—यह पुरुष है। कपड़े नहीं पहने है। सर्पों से इसका शरीर वेष्टित है। चोर और अग्नि से इसकी अन्तरात्मा व्याकुल है और हाहाकार कर रहा है।

द्रेष्काणों के अनेक प्रयोजन हैं। यदि सौम्य द्रेष्काण में (जिसका स्वरूप ऊपर सौम्य दिया गया हो) यात्रा की जाय तो शुभ फल होता है। यदि क्रूर द्रेष्काण में यात्रा की जावे तो अशुभ फल होता है। किन्तु यहाँ पर चोर के रूप, चोर के स्थान आदि का निर्देश द्रेष्काण से हो सकता है; यह बताने के लिए द्रेष्काणों का विवरण दिया गया है। यदि प्रश्न के समय जो द्रेष्काण आवे उसका सूर्य या चन्द्रमा से सम्बन्ध हो तो फलादेश विशेप ठीक बैठता है।

चोरी गई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं और किस दिशा में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिलेगी ? अचानक बिना किसी से कुछ कहे-सुने गया हुआ आदमी किस दिशा में गया है और आयगा या नहीं ? आदि का पता नक्षत्र से लगाया जाता है। जिस समय कोई वस्तु खो गई हो या कोई बच्चा खो गया हो या कोई मनुष्य बिना पता बताये हुए घर से अकस्मात् चला गया हो उस समय कौन-सा नक्षत्र था यह देख कर निम्नलिखित फलादेश करना चाहिए।

यदि अश्विनी नक्षत्र हो तो दक्षिण दिशा में वस्तु गई है। कोशिश करने से वापस मिल जायगी।

यदि भरणी नक्षत्र में कोई वस्तु खोई हैं तो वह पश्चिम दिशा में दूर गई। उसका यह पता अवश्य लगेगा कि उस वस्तु को अमुक व्यक्ति उड़ा के ले गया और इस समय वह अमुक स्थान पर है किंतु वस्तु पुनः प्राप्त नहीं होगी।

यदि कृत्तिका नक्षत्र हो तो चोरी गई वस्तु उत्तर दिशा को गई है। किंतु न तो वह पुनः प्राप्त होगी और न यह पता ही लगेगा कि कौन उसको चुराकर ले गया और वह कहाँ है।

यदि रोहिणी नक्षत्र में वस्तु खोई हो तो पूर्व दिशा को गई और शीघ्र लाभ होगा। अर्थात् शीघ्र ही वापस प्राप्त हो जावेगी। इसी प्रकार खोये हुए जानवर गाय भैंस आदि, खोये हुए बच्चे या बिना पता बताये हुए घर से गये आदमी का पता बताना चाहिए।

कुल सत्ताईस नक्षत्र होते हैं। जो फल ऊपर अश्विनी नक्षत्र का बताया गया है वही मृगशिर, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़ और शतभिषा नक्षत्र का है। अर्थात् इन सब नक्षत्रों में खोई हुई वस्तु यत्न करने से पुनः प्राप्त हो जाती है और किस दिशा में वस्तु गई है इसके उत्तर में कहना चाहिए—दक्षिण।

इसी प्रकार जो फल भरणी नक्षत्र का बताया गया है वही फल आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित् तथा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। अर्थात् इनमें खोई हुई वस्तु प्राप्त नहीं होती। केवल कुछ खबर लगती है।

जो फल कृत्तिका नक्षत्र का बताया गया है वही पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, मूल, श्रवण तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का है। इनमें जो वस्तु खोती है वह नहीं प्राप्त होती है।

जो फल रोहिणी नक्षत्र का बताया गया है वही फल पुष्य, उत्तराफाल्गुनी विशाखा, पूर्वाषाढ़, धनिष्ठा और रेवती का है। इन में खोई हुई वस्तु शीघ्र प्राप्त हो जाती है।

नष्ट धन, चोरी गई हुई वस्तु का विचार

(१) यदि प्रश्न-लग्न और नवांश में स्थिर राशि हो या वर्गोत्तम गत लग्न हो तो यह समझना चाहिए कि वस्तु चोरी नहीं गई है—जहाँ थी वहीं है। ऐसे योग में बहुत से आचार्य यह भी कहते हैं कि वस्तु के स्वामी ने स्वयं अपनी वस्तु को चुराया है।

(२) यदि प्रश्न-लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो समझना चाहिए कि चोरी गई वस्तु दरवाजे के आसपास है। यदि द्वितीय द्रेष्काण हो तो किसी घर के मध्य में रखी है। यदि तृतीय द्रेष्काण हो तो घर के अन्त में रखी है (पिछवाड़े आदि में)।

(३) यदि पूर्ण बलवान् चन्द्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और शीर्षोदय लग्न या लाभ स्थान में हो तो नष्ट वस्तु प्राप्त हो जाती है।

(४) यदि पूर्ण चन्द्र लग्न में बृहस्पति या शुक्र से दृष्ट हो और बली शुभग्रह एकादश स्थान में हो तो नष्ट वस्तु पुनः प्राप्त हो जाती है।

(५) प्रश्न-कुंडली में यह देखिये कि केन्द्र में कौन-कौन से से ग्रह हैं। यदि एक ही ग्रह केन्द्र में हो तो उस ग्रह की दिशा में (सूर्य की पूर्व, शुक्र की पूर्व-दक्षिण, मंगल की दक्षिण आदि) चोरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गया पदार्थ या अकस्मात् गायब हुआ मनुष्य गया हैं। यदि केन्द्र में एक से अधिक ग्रह बली हों तो जो ग्रह सबसे अधिक बलवान् हो उसकी दिशा माननी चाहिए। यदि केन्द्र में कोई ग्रह नहीं हो तो लग्न राशि से दिशा स्थिर करनी चाहिए।

प्रश्न चिन्तामणि में चोरी गई हुई वस्तुओं का विचार

भूमि में गड़ा हुआ द्रव्य मिलेगा या नहीं अथवा खोया हुआ आदमी या खोई हुई वस्तु का पुनः लाभ होगा या नहीं; इस सम्बंध की प्रश्न-कुंडली बनाकर निम्नलिखित योगायोग पर विचार करना चाहिए।

(१) यदि चतुर्थ स्थान का स्वामी चतुर्थ स्थान में हो तो भूमिगत द्रव्य प्राप्त होता है।

(२) यदि चन्द्रमा चतुर्थ में हो और चतुर्थ भावेश से दृष्ट हो तो भूमिगत द्रव्य लाभ होता है।

(३) यदि मंगल सप्तम या अष्टम स्थान में हो तो धन अन्य स्थान में है और उसकी प्राप्ति नहीं होती।

(४) लग्न में राहु और अष्टम में रवि हो तो लाभ नहीं होता।

(५) यदि चतुर्थ सप्तम, अष्टम और दशम स्थान में अपने-अपने घ र के स्वामी चन्द्रमा या बृहस्पति हों तो लाभ होता है।

(६) यदि लग्नेश सप्तम में हो और सप्तम स्थान का स्वामी लग्न में हो तो नष्ट धन का लाभ होता है।

(७) यदि लग्नेश और सप्तमेश में इत्थशाल हो तो चोरी गई वस्तु प्राप्त हो। यदि ये दोनों ग्रह लग्न में हों तो चोर स्वयं आकर वस्तु लौटा जाता है।

नोट—यदि पाप ग्रह का भी चतुर्थ स्थान से सम्बन्ध हो, युति या दृष्टि द्वारा, तो धन-प्राप्ति नहीं होगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(८) यदि सूर्य लग्न में और चन्द्रमा सप्तम में हो तो चोरी गई हुए वस्तु प्राप्त नहीं होती। यदि सूर्य लग्न में हो और चन्द्रमा अस्त हो तो भी यही फल कहना।

(९) यदि लग्नेश और दशमेश में इत्थशाल हो तो चोर धन लेकर शहर से भाग जाता है।

(१०) यदि सप्तमेश और चन्द्रमा अस्त हों तो धन सहित चोर पकड़ा जाता है।

(११) यदि सप्तमेश केन्द्र में हो तो चोर उसी स्थान में रहता है अर्थात् बाहर नहीं जाता।

(१२) यदि सप्तमेश तृतीयेश या दशमेश से इत्थशाल करे तो चोर बाहर चला गया है।

(१३) चन्द्रमा लग्न या दशम स्थान में हो तो चोरी गई वस्तु मिल जाती है।

(१४) यदि चन्द्रमा लग्न में और रवि या अन्य शुभ ग्रह से मित्र दृष्टि से देखा जाय तो धन-प्राप्ति होती है।

(१५) यदि लग्नेश और दशमेश में इत्थशाल हो तो उस ग्रह द्वारा या फ़ौजदारी मुकद्दमा करने पर चोरी का माल मिलता है।

(१६) यदि तृतीयेश, नवमेश और सप्तमेश में इत्थशाल होता हो तो दूसरे प्रदेश में धन चला गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिष अध्ययन अनुसन्धान केन्द्र
का. जि. ३३ नं. वाड नगर पंचायत
२०/१०० ज्ञानेश्वर काठमाण्डौ
नेपाल

चतुर्थ–भाग

मुहूर्त–विचार

३१ वाँ प्रकरण

शुभाशुभ प्रकरण

प्रतिपद् आदि तिथियों के क्रमशः निम्नलिखित देवता हैं। प्रयोजन यह है कि जिस देवता की विशेष रूप से पूजा या प्रतिष्ठा करनी हो उसकी उसी तिथि को प्रारम्भ करनी चाहिए।

१ अग्नि, २ ब्रह्मा, ३ पार्वती, ४ गणेश, ५ सर्प, ६ कार्तिकेय, ७ सूर्य, ८ शिव, ९ दुर्गा, १० यम, ११ विश्वदेव, १२ हरि, १३ काम, १४ शिव, १५, ३० (पूर्णिमा और अमावस्या) चन्द्र, पितर।

सिद्धि योग—१, ६ और ११ तिथि को नन्दा कहते हैं। यदि नन्दा तिथि और शुक्रवार का योग हो तो सिद्धि योग होता है। २, ७, १२, तिथि को भद्रा तिथि कहते हैं। इस दिन यदि बुधवार हो तो सिद्धि योग होता है। ३, ८, १३, को जया तिथि कहते हैं। मंगलवार और जया तिथि के मिलने से सिद्धि योग होता है। ४, ९, १४ तिथियों को रिक्ता कहते हैं। प्रायः रिक्ता तिथि को किसी भी बड़े कार्य में नहीं लेते। रिक्ता का अर्थ खाली है किंतु यदि रिक्ता तिथि को शनिवार पड़े तो इन दोनों के योग से सिद्धि योग बन जाता है। ५, १०, १५ (पूर्णिमा) तिथि को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्णा तिथि कहते हैं। बृहस्पतिवार और पूर्णा तिथि का योग सिद्धि योग कहाता है।

मृत्यु योग—निम्नलिखित वारों और तिथियों का योग होने से 'मृत्यु योग' होता है। इस योग में कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
	१	२	१	३	४	२	५
तिथि	६	७	६	८	९	७	१०
	११	१२	११	१३	१४	१२	१५

उदाहरण के लिए यदि पंचमी तिथि और शनिवार का योग हुआ तो मृत्यु योग हुआ।

दग्ध योग—रविवार और भरणी, सोमवार और चित्रा नक्षत्र, मंगलवार और उत्तराषाढ़ बुध और धनिष्ठा, बृहस्पति और उत्तरा फाल्गुनी, शुक्र और ज्येष्ठा तथा शनि और रेवती का योग 'दग्ध योग' होता है। यह अशुभ योग है। इसमें शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

अधम योग—निम्नलिखित तिथि वार 'से अधम' योग बनता है यह भी अशुभ है। रविवार और सप्तमी या द्वादशी तिथि सोमवार एकादशी, मंगलवार दशमी, बुधवार को प्रतिपदा या नवमी तिथि हो, बृहस्पति को अष्टमी, शुक्र को सप्तमी, और शनि को षष्ठी हो तो 'अधम योग' होता है।

यमघंट योग—रविवार को मघा नक्षत्र हो, सोम को विशाखा, मंगल को आर्द्रा, बुध को मूल बृहस्पति को कृत्तिका, शुक्र को रोहिणी और शनिश्चर को हस्त नक्षत्र हो तो 'यमघंट योग' होता है। इस योग में कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। यात्रा तो कथमपि नहीं करनी चाहिए। यात्रा के विशेष मुहूर्त्तों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का विचार यात्रा प्रकरण में किया गया है।

दग्ध योग, विषाख्य योग, हुताशन योग—दग्ध माने जला हुआ, विषाख्य योग अर्थात् जिसका नाम विष हो, और हुताशन योग का अर्थ है अग्नि योग। इन नामों से ही स्पष्ट है कि यह तीनों योग अशुभ हैं। इनमें कोई शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्परि	शुक्र	
दग्ध	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन	१२	६	७	८	९	१०	११

उदाहरण के लिए द्वादशी तिथि को रविवार हो तो दग्ध योग हुआ।

मास शून्य तिथि—निम्नलिखित मासों में निम्नलिखित तिथियाँ हों तो वे शून्य तिथियाँ कहलाती हैं। इनको मुहूर्त देखते समय बचाना चाहिए।

मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
कृष्ण तिथि	८, ९	१२	८, १४	६	२, ३	१, २	७, ८	५	७, ८	४, ५	५	४
शुक्ल तिथि	८, ९	१२	१३	७	२, ३	१, २	७, ८	१४	७, ८	४, ५	६	३

शून्य नक्षत्र—चैत्र में अश्विनी और रोहिणी, वैशाख में चित्रा और स्वाति, ज्येष्ठ में पुष्य और उत्तराषाढ़, आषाढ़ में पूर्वा फाल्गुनी और धनिष्ठा, श्रावण में उत्तराषाढ़ और श्रवण, भाद्र में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शतभिषा और रेवती, आश्विन में पूर्वाभाद्र, कार्तिक में कृत्तिका और मघा, अगहन में चित्रा और विशाखा, पौष में अश्विनी, आर्द्रा और हस्त, माघ में मूल और श्रवण, फाल्गुन में भरणी और ज्येष्ठा शून्य होते हैं अर्थात् उदाहरण के लिए यदि वैशाख में कोई कार्य करना है और उस दिन अन्य विचार से मुहूर्त्त शुभ बैठता है किन्तु चित्रा नक्षत्र हो तो कार्य नहीं करना चाहिये क्योंकि इस मास में यह शून्य नक्षत्र है। इसमें शुभ कार्य आरम्भ करने से धन-नाश होता है।

शून्य राशि—अब चैत्रादि मासों में शून्य राशि बताते हैं। चैत्र में कुम्भ, वैशाख में मीन, ज्येष्ठ में वृष, आषाढ़ में मिथुन, श्रावण में मेष, भाद्र में कन्या, आश्विन में वृश्चिक, कार्तिक में तुला, अगहन में धन, पौष में कर्क, माघ में मकर, फाल्गुन में सिंह शून्य है अर्थात् इन चैत्रादि मासों में ये सब राशियाँ शून्य हैं इस लिए इन लग्नों में कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।*

क्रकच योग-तिथि और वार इन दोनों की संख्या जोड़ने से जब १३ हो जायें तब क्रकच योग होता है। तिथि प्रतिपदा से और वार की संख्या रवि से गिननी चाहिए। क्रकच योग शुभ कामों में वर्जित है।

वर्ज्य योग—निम्नलिखित योगों को सदैव शुभ कार्यों में बचाना चाहिए। रविवार को यदि पंचमी तिथि और हस्त नक्षत्र हो, सोमवार को षष्ठी तिथि और मृगशिरा नक्षत्र हो, मंगलवार को

नोट—प्रतिपदा को पड़वा, द्वितीया को दूज, तृतीया को तीज, चतुर्थी को चौथ, पंचमी को पाँचें, षष्ठी को छठ, सप्तमी को सातें। अष्टमी को आठें, नवमी को नौमी, दशमी को दसमी, एकादशी को ग्यारस, द्वादशी को बारस या द्वादस, त्रयोदशी को तेरस, चतुर्दशी को चौदस, अमावास्या को मावस और पूर्णिमा को पूनौ कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सप्तमी तिथि और अश्विनी नक्षत्र हो, बुधवार को अनुराधा नक्षत्र और अष्टमी तिथि हो, बृहस्पतिवार को नवमी तिथि और पुष्य नक्षत्र हो,शुक्रवार को दशमी तिथि रेवती नक्षत्र हो और शनिवार को रोहिणी नक्षत्र और एकादशी तिथि हो तो सभी शुभ कार्यों के लिए र्वजित है। यह स्मरण रखना चाहिए कि ऊपर जो वार, नक्षत्र और तिथि बताई गई हैं। वे तीनों हों, तभी खराब योग होता है। उदाहरण के लिए बृहस्पतिवार और पुष्य का योग बड़ा उत्तम गिना जाता है। किन्तु यदि नवमी भी शामिल हो जावे तो वही निंदित हो जाता है।

द्विपुष्कर योग– यदि निम्नलिखित तिथियों में से कोई तिथि हो, कोई सा-वार हो और कोई सा-नक्षत्र हो तो द्विपुष्कर योग होता हैं।

तिथि—२,७, या १२।

वार—रवि, मंगल या शनि

नक्षत्र–धनिष्ठा, चित्रा या मृगशिर।

उपर्युक्त वार, नक्षत्र और तिथि का योग होने से—ऐसे योग में जो कार्य होता हैं वह एक बार और करना होता है अर्थात् संयोग ऐसा होजाता है कि वैसी ही बात बार-बार करनी पड़ती है। किसी की मृत्यु हो जाये तो थोड़े ही काल बाद किसी अन्य की भी मृत्यु हो। कोई चीज नष्ट या चोरी हो जाये तो पुनः कोई चीज नष्ट हो या घर में चोरी हो। यदि कोई शुभ कार्य किया जाय जैसे नवीन गहना बनवाया जाय तो पुनः ऐसा योग हो कि फिर एक बार गहना बनवाना पड़े।

---

* चैत्र को चैत, वैशाख को बैसाख, ज्येष्ठ को जेठ, आषाढ़ को साढ़ या हाढ़, श्रावण को सावन, भाद्र को भादों, आश्विन को क्वार, कार्तिक को कातिक, मार्गशीर्ष को मंगसिर, मग्ग। अगहन, पौष को पूस, माघ को माह और फाल्गुन को फागुन भी लौकिक भाषा में कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिपुष्कर योग—निम्नलिखित तिथि, वार और नक्षत्र का योग होने से त्रिपुष्कर योग होता है।

वार—रवि, मंगल या शनि।

तिथि—२, ७ या १२।

नक्षत्र—कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़ और उत्तराभाद्र।

त्रिपुष्कर का अर्थ है कि वैसा ही काम दो बार और होगा। अर्थात् कुल ३ बार प्रायः लोग शुभ कार्य (गहना बनवाना, मकान खरीदना आदि) के लिए त्रिपुष्कर योग देखते हैं, जिससे शुभ कार्य बारम्बार करने का अवसर हो।

सर्वार्थ सिद्धि योग— यदि रविवार को हस्त, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्र, पुष्य या अश्विनी नक्षत्र हो तो सर्वार्थि सिद्धि योग होता है। इसी प्रकार नीचे बताया जाता है।

सोमवार—श्रवण, रोहिणी, मृगशिर, पुष्य या अनुराधा।

मंगलवार—अश्विनी उत्तराभाद्र, कृत्तिका, आश्लेषा।

बुधवार—रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिर।

वृहस्पतिवार—रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य।

शुक्रवार—रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण।

शनिवार—श्रवण, रोहिणी, स्वाति।

जैसा कि सर्वार्थसिद्धि योग इस नाम से ही स्पष्ट है, यह बहुत शुभ योग है। किंतु इसका अपवाद 'वर्ज्य' योग के अन्तर्गत बताया जा चुका है। देखिये पृष्ठ २७६।

आनंदादि २८ योग—किस वार को कौनसा योग होता है यह नीचे के चक्र से स्पष्ट होगा, देखिये पृष्ठ २८२। प्रायः पंचांग में ये योग दिये हुए होते हैं। आनंद, धाता, सौम्य, केतु, श्रीवत्स छत्र, मित्र, मानस, सिद्धि, शुभ, अमृत, मातंग, सुस्थिर और प्रवर्द्धमान ये योग सर्वथा शुभ हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आनंदादि योग चक्र

योग	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
आनंद	अ०	मृ०	आश्ले०	हस्त	अनु०	उ० षाढ़	शतिभषा
कालदंड	भ०	आ०	म०	चि०	ज्ये०	अभि०	पू० भा०
धूम्र	कृ०	पुन०	पू० फा०	स्वा०	मू०	श्र०	उ० भा
धाता	रो०	पु०	उ० फा०	वि०	पू० पा०	ध०	रे०
सौम्य	मृ०	आ०	ह०	अनु०	उ० पा०	शत०	अ०
ध्वांक्ष	आर्द्रा	म०	चि०	ज्ये०	अभि०	पू० भा०	भ०
केतु	पुन०	पू० फा०	स्वा०	मू०	श्र०	उ० भा०	कृ०
श्रीवत्स	पु०	उ० फा०	वि०	पू० षा०	ध०	रे०	रो०
वज्र	आ०	ह०	अनु०	उ० पा०	शत०	अ०	मृग०
मुद्गर	म०	चि०	ज्ये०	अभि०	पू० भा०	भ०	आ०
छत्र	पू० फा०	स्वा०	मू०	श्र०	उ० भा०	कृ०	पुन०
मित्र	उ० फा०	वि०	पू० पा०	ध०	रे०	रो०	पु०
मानस	ह०	अनु०	उ० पा०	शत०	अ०	मृ०	आ०
पद्म	चि०	ज्ये०	अभि०	पू० भा०	भ०	आ०	म०
लुम्ब	स्वा०	मू०	श्र०	उ० भा०	कृ०	पुन०	पू० फा०
उत्पात	वि०	पू० पा०	ध०	रे०	रो०	पु०	उ० फा०
मृत्यु	अनु०	उ० पा०	शत०	अ०	मृ०	आ०	ह०
काण	ज्ये०	अभि०	पू० भा०	भ०	आ०	म०	चि०
सिद्धि	मू०	श्र०	उ० भा०	कृ०	पुन०	पू० फा०	स्वा०
शुभ	पू० पा०	ध०	रे	रो०	पृ०	उ० फा०	वि०
अमृत	उ० पा०	श०	अ०	मृग०	आ०	ह०	अनु०
मुसल	अ०	पू० भा	भ०	आ०	म०	चि०	ज्ये०
गद	श्र०	उ० भा०	कृ०	पुन०	पू० फा०	स्वा०	मू०
मातंग	ध०	रे०	रो०	पु०	उ० फा०	वि०	पू० पा०
रक्ष	श०	अ०	मृ०	आ०	ह०	अनु०	उ० पा०
चर	पू० भा०	भ०	आ०	म०	चि०	ज्ये०	अभि०
सुस्थिर	उ० भा०	कृ०	पुन०	पू० फा०	स्वा०	मू०	श्र०
प्रवर्धमान	रे०	रो०	पु०	उ० फा०	वि०	पू० पा०	ध०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(क) धूम्र योग की प्रथम एक घड़ी वर्जित है।
(ख) काण और मुसल योग की प्रथम दो घड़ी वर्जित हैं।
(ग) पद्म और लुम्ब योग की प्रथम ४ घड़ी वर्जित हैं।
(घ) ध्वांक्ष वज्र, मुद्गर की प्रारम्भिक ५ घड़ी वर्जित हैं।
(ङ) गद योग की प्रथम ७ घड़ी वर्जित हैं।
(च) चर योग अच्छा नहीं गिना जाता।
(छ) कालदंड, उत्पात, मृत्यु तथा रक्ष योग सर्वथा वर्जित हैं।

त्याज्य नक्षत्रादि—जन्म-नक्षत्र, जन्म-मास, जन्म-तिथि, व्यतीपात योग, भद्रा, वैधृति योग, अमावास्या तिथि, माता व पिता के मरने की तिथि; क्षय तिथि, (जिस दिन ३ तिथियाँ हो जायें तो बीच की तिथि क्षय तिथि कहलाती है) ; वृद्धि तिथि, क्षय मास व अधिक मास (जिसे पुरुषोत्तम या मल मास कहते हैं); ये सब कार्यों में वर्जित हैं।

कुलिक, अर्द्धयाम, महापात और विषकुम्भ भी सब कार्यों में वर्जित हैं।

कुछ योगों के वर्जित अंश—३रे प्रकरण में जो योग बतायेगये हैं उनमें किस योग का कौनसा भाग त्याज्य है यह नीचे बताया जाता है।

(क) परिघ योग का पहला आधा हिस्सा।
(ख) शूल योग की प्रथम ५ घड़ी।
(ग) गंड व अतिगंड योग की प्रथम ६ घड़ी।

कुलिक, कालवेला, यमघंट, कंटक ;

दिन को १६ भागों में बाँटिये (उदाहरण के लिए यदि दिन और रात बराबर हैं तो दिन १२ घंटे का हुआ और प्रत्येक भाग ४५ मिनट का हुआ। दिनमान का $\frac{1}{16}$ भाग 'मुहूर्त' कहलाता है। निम्नलिखित चक्र से स्पष्ट होगा कि किस वार को कौनसा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुहूर्त कुलिक ; कौनसा कालवेला ; कौनसा यमघंट और कौनसा कंटक है। यह शुभ कार्यों के लिए निषिद्ध हैं।

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	वार
मुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२	कुलिक
मुहूर्त	८	६	४	२	१४	१२	१०	कालवेला
मुहूर्त	१०	८	६	४	२	१४	१२	यमघंट
मुहूर्त	६	४	२	१४	१४	१०	८	कटक

विषघटी —अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में निम्नलिखित घड़ियों के उपरांत ४ घड़ी का समय विष घटिका कहलाता है। अश्विनी ५०, भरणी २४, कृत्तिका ३०, रोहिणी ४०, मृगशिर १४, आर्द्रा २१, पुनर्वसु ३०, पुष्य २०, आश्लेषा ३२, मघा ३०, पूर्वा फाल्गुनी २०, उत्तरा फाल्गुनी १८, हस्त २१, चित्रा २०, स्वाति १४, विशाखा १४, अनुराधा १०, ज्येष्ठा १४, मूल ५६, पूर्वाषाढ़ २४, उत्तराषाढ़ २०, श्रवण १०, धनिष्ठा १०, शतभिषा १८, पूर्वा भाद्र १६, उत्तराभाद्र २४, रेवती ३०। उदाहरण के लिए अश्विनी नक्षत्र में जब चन्द्रमा हो तब विष नाड़ी का समय कौनसा होगा ? ५० घड़ी के उपरान्त ४ घड़ी–५४ घड़ी तक। भरणी में २४ घड़ी के उपरान्त ४ घड़ी–२८ घड़ी तक। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिए।

विष घटी को बहुत से लोग विष नाड़ी भी कहते हैं इसमें बहुत से शुभ कार्यों का निषेध है। यदि कोई लग्न विष नाड़ी में पड़े तो उस लग्न को भी किसी शुभ कार्य में त्याज्य समझना चाहिए। ऊपर नक्षत्रों में विष घटी का प्रमाण 'मुहूर्त मार्त्तण्ड' के आधार पर बताया गया है। 'दैवज्ञ मनोहर' के अनुसार तिथियों में भी विष घटिका होती है। किस तिथि में कितनी घड़ी के उपरान्त ४ घड़ी का समय विष नाड़ी समझा जाय यह नीचे बताया जाता है।

(१) १५ (२) ५ (३) ८ (४) ७ (५) ७ (६) ५ (७) ४ (८) ८ (९) ७ (१०) १० (११) ३ (१२) १३ (१३) १४ (१४) ७ (१५) या (३०) ८।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उदाहरण के लिए प्रतिपदा तिथि को १५ घड़ी के उपरांत (जब प्रतिपदा तिथि प्रारम्भ हो उसके बाद गिनना प्रारम्भ करना चाहिए।) ४ घड़ी का समय विष नाड़ी होगा। ऊपर कोष्ठों ( ) के अंदर तिथि-संख्या दी गई है। बहुत से विद्वान् वार में भी विष घटी मानते हैं। रविवार २०, सोमवार २, मंगलवार १२, बुधवार १०, बृहस्पतिवार ७, शुक्रवार ५, शनिवार को २५ घटी के उपरांत ४ घटी का समय विष घटी होगा। उदाहरण के लिए बुधवार को सूर्योदय के १० घड़ी के बाद १४ घड़ी तक का समय विष घटी होता है।

ऊपर जो चार घड़ी का प्रमाण बताया गया है वह तब ठीक होगा जबकि तिथि या नक्षत्र भी ६० घड़ी हो। यदि ६० घड़ी से अधिक या कम हो तो ४ घड़ी के काल को भी अनुपात से अधिक या कम कर लेना चाहिए।

'फलप्रदीप' के अनुसार यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह के वर्गों में हो तो विष-घटी-जनित दोष को हटाता है। 'ज्योतिसागर' का वचन है कि :

विवाह व्रत चूडासु गृहारंभ प्रवेशयोः ।
यात्रादि शुभ कार्येषु विघ्नदा विषनाडिकाः ॥

वार बेला

एक दिन या रात में ८ अर्घ प्रहर (१३ घंटे का समय) होते हैं। रविवार को ४था, ५वाँ अर्घ प्रहर, सोमको ७वाँ और २रा, मंगल को ६ठा और २रा, बुधको ५वां और ३रा, बृहस्पति को ७वां तथा ८वाँ, शुक्र को ४था और ३रा और शनिवार को १ला ६ठा तथा ८वाँ ये अर्घपहर सर्व कार्यो के लिये निषिद्ध हैं। इसे वार वेला दोष कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बत्तीसवाँ प्रकरण

विविध विचार

तिथि के आधे भाग का नाम 'करण' है। भद्राभी एक 'करण' है।

भद्रा विचार—किन-किन तिथियों के अर्ध भाग ($\frac{1}{2}$ भाग को) भद्रा कहते हैं यह नीचे बताया जाता है।

कृष्ण पक्ष	तिथि	पहिला $\frac{1}{2}$ भाग या दूसरा $\frac{1}{2}$ भाग
(क) ,, ३ ,,	३	अन्तिम $\frac{1}{2}$ तिथि मान
(ख) ,, ,,	७	प्रथम ,, ,, ,,
(ग) ,, ,,	१०	अन्तिम ,, ,, ,,
(घ) ,, ,,	१४	प्रथम ,, ,, ,,
(ङ) शुक्ल पक्ष	४	अन्तिम ,, ,, ,,
(च) ,,	८	प्रथम ,, ,, ,,
(छ) ,,	११	अन्तिम ,, ,, ,,
(ज) ,,	१५	प्रथम ,, ,, ,,

उदाहरण के लिए कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि यदि ५८ घड़ी है तो अन्त की २९ घड़ियों में भद्रा मानी जावेगी। भद्रा में प्राय: शुभ कार्य नहीं करते हैं। क्रूर कर्म, मारण, उच्चाटन, भैंस, ऊँट या घोड़ा सम्बन्धी कार्य, अग्नि-कर्म, बंधन आदि उग्र-कर्म भद्रा में किये जा सकते हैं। कुछ शास्त्रकारों का मत है कि यदि भद्रा के समय मेष, वृष, कर्क या मकर में चन्द्रमा हो तो भद्रा स्वर्ग लोक में रहती है और इसमें शुभ कर्म कर सकते हैं। यदि सिंह, वृश्चिक, कुंभ या मीन राशि का चन्द्रमा भद्रा के समय हो तो वह पृथ्वी लोक पर वास करती है और इस समय किया हुआ सर्वकार्य विनाश होता है। यदि भद्रा के समय मिथुन, कन्या, तुला या धन का चन्द्रमा हो तो पाताल लोक में भद्रा रहती है और धनागम कराती है। एक दूसरा मत यह है कि ऊपर जो (क), (ग), (ङ) और (छ) में भद्रा बताई गई है वे यदि दिन में होवें और (ख), (घ), (च),

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और (ज) प्रकार की भद्रा यदि रात्रि में होवे तो शुभ है। एक अन्य मत यह भी है कि कृष्ण पक्ष की भद्रा सर्पिणी होती है इसलिए इसका प्रारंभिक भाग (क्योंकि सर्पिणी के मुख में विष होता है) सदैव त्याग करना चाहिए। और शुक्ल पक्ष की भद्रा वृश्चिक (बिच्छु) होती है इस कारण इसकी अन्तिम ५ घड़ी, (क्योंकि बिच्छू के पीछे के भाग में विष होता है) अवश्य त्याग करना चाहिए। हमारा विचार यह है कि भद्रा का सदैव शुभ कर्म में त्याग करना उचित है। आवश्यकता पड़ने पर स्वर्ग-पाताल वास आदि या सर्पिणी आदि का विचार करना चाहिए।

वैसे तो भद्रा में सभी शुभ कर्म त्याज्य हैं किंतु रक्षाबन्धन अर्थात् राखी बाँधना तथा होली जलाना ये दो कथमपि नहीं करने चाहिए।

भद्रायां द्वैन कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।
श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी॥

जन्म-प्रकरण

किस पाये में बालक का जन्म हुआ

प्रायः समस्त राजस्थान में यह प्रथा प्रचलित है कि जन्म-नाम के साथ-साथ ही वालक किस पाये में जन्मा है यह भी बता दिया जाता है। इस 'पाये' का अर्थ अन्य प्रदेशों के ज्योतिषी नहीं समझते।

जिस तरह पलंग के चार पाये होते हैं—उसी प्रकार द्वादश भावों को ४ भागों में विभाजित कर दिया गया है।

(१) प्रथम भाव, छठा भाव, एकादश भाव इसका नाम रखा गया है सुवर्ण पाद (सोने का पाया)।

(२) द्वितीय भाव, पंचम भाव, नवम भाव इसका नाम रखा गया है रजतपाद (चाँदी का पाया)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) तृतीय भाव, सप्तम भाव, दशम भाव इसका नाम रखा गया है ताम्र पाद (ताँबे का पाया)।

(४) चतुर्थ भाव, अष्टम भाव, द्वादश भाव (इसका नाम रखा गया है लौहपाद (लोहे का पाया)।

जन्म-लग्न से जिस भाव में चन्द्रमा हो उस भाव के अनुसार 'पाया' निर्धारित किया जाता है। प्रायः देहात के लोगों को यह याद नहीं रहता कि बालक का जन्म किस लग्न में हुआ था। नक्षत्र-चरण का ज्ञान नाम के प्रथमाक्षर से हो जाता है और नक्षत्र-चरण से चन्द्रमा का ज्ञान हो जाता है। 'पाये' से यह मालूम हो जाता है कि जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा किस भाव में है। इस प्रकार जन्म-लग्न, जन्म चन्द्र तथा महादशा का स्थूल भभोग ज्ञात हो जाने से–बिना जन्म-कुंडली जाने भी काफी पता लग जाता है। यदि किसी को जन्म का वर्ष, मास यह भी मालूम हो तो नामाक्षर एवं 'पाए' की मदद से पूर्ण कुंडली तैयार हो सकती है। प्रायः 'चाँदी का पाया' सर्वश्रेष्ठ, उसके बाद 'ताँबे का पांया' समझा जाता है। सुवर्ण का पाया तृतीय श्रेणी का तथा चतुर्थ 'लौह पाद' निकृष्ट समझा जाता है।

साधारणतः षष्ठ, अष्टम, द्वादश के अतिरिक्त अन्य स्थानों में चन्द्रमा अच्छा समझा जाता है। परन्तु इसमें जो स्थूल विभाग किया है वह, मालूम होता है 'गोचर' विचार से प्रभावित होकर किया गया है––इसी कारण चतुर्थ, अष्टम, द्वादश को निकृष्ट कोटि में रखा गया है।

बालक के जन्म के समय अरिष्ट विचार

गंडान्त विचार—:–(१) पड़वा, षष्ठी और एकादशी तिथि के प्रारंभ की एक-एक घड़ी और अमावास्या, पंचमी, दशमी तथा पूर्णिमा तिथियों की अन्तिम एक-एक घड़ी को गंडान्त कहते हैं।

(२) आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्रों की अन्तिम दो-दो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घड़ियाँ तथा अश्विनी, मघा और मूल नक्षत्रों की प्रारम्भिक दो-दो घड़ियों को नक्षत्र-गंडान्त कहते हैं ।

(३) कर्क, वृश्चिक और मीन लग्नों की अन्तिम आधी-आधी घड़ी तथा सिंह, धनु और मेष लग्नों की प्रारम्भ की आधी-आधी घड़ी को लग्न-गंडांत कहते हैं ।

'सारावली' में लिखा है :

"जातो न जीवति नरो मातुर पथ्यो भवेत्स्वकुल हन्ता ।
यदि जीवति गंडान्ते बहुगजतुरगो भवेद्भूपः ॥

अर्थात् गंडान्त में जन्म लेने वाला बालक प्रायः नहीं जीता है यदि जीवित रहता है तो माता के लिए क्लेशकारक होता है किंतु स्वयं बहुत ऐश्वर्यशाली होता है ।

सारावलीकार ने कर्क—सिंह, वृश्चिक—धनु, मीन—मेष, इन लग्नों की संधियों को गंडान्त माना है ।

जन्म-नक्षत्र से अरिष्ट विचार—लोकाचार यह है कि यदि (क) निम्नलिखित किसी भी नक्षत्र में बालक या बालिका का जन्म हो तो जन्म के २७ वें दिन के बाद जब पुनः जन्म-नक्षत्र आवे तब उस नक्षत्र की शांति करनी चाहिए ।

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, रेवती ।

(ख) जिस नक्षत्र में संतान पैदा हुई है यदि संतान के माता या पिता या सहोदर भाई या बहन का वही नक्षत्र हो तो इसकी भी शांति करनी चाहिए । इसे 'एक नक्षत्र-जनन-शांति' कहते हैं ।

आश्लेषा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्रों का विशेष विचार

(१) यदि आश्लेषा नक्षत्र की प्रथम ५ घड़ी में बालक का जन्म हो तो ऐश्वर्य-प्राप्ति; दूसरी ७ घड़ी में जन्म हो तो पिता को कष्ट; तीसरे भाग की २ घड़ी में माता को कष्ट; चौथे भाग की ३ घड़ी में विशेष कामी हो; पाँचवें भाग की ४ घड़ी में पितृ-भक्ति; छठे भाग की ८ घड़ी में बली (शक्ति सम्पन्न); सात

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाग की ११ घड़ी में स्वघ्न (अपना नाश करने वाला); आठवें भाग की ६ घड़ी में त्यागी; नवें भाग की ९ घड़ी में भोगी और १० वें भाग की ५ घड़ी में धनवान होता है। ये जो १० विभाग किये गये हैं वे आश्लेषा नक्षत्र का समय ६० घड़ी मान कर किये गये हैं। यदि सम्पूर्ण आश्लेषा नक्षत्र ६० से अधिक या कम हो तो उसी अनुपात से प्रत्येक भाग को बढ़ा या घटा लेना चाहिए।

(२) **ज्येष्ठा नक्षत्र विचार**—ज्येष्ठा नक्षत्र के छै-छै घड़ी के १० भाग करे। प्रत्येक भाग में उत्पन्न बालक-बालिका का निम्नलिखित फल है :

१ ली ६ घड़ी—नानी को अशुभ।
२ री " "—नाना को कष्ट।
३ री " "—मामा को कष्ट।
४ थी " "—माता को कष्ट।
५ वीं " "—स्वयं बालक-बालिका को।
६ ठी " "—गोत्रक्षय (कुटुम्ब में अन्य व्यक्ति को)।
७ वीं " "—दोनों परिवारों को (मातृ-कुल तथा पितृ कुल)।
८ वीं " "—बड़े भाई को कष्ट।
९ वीं " "—श्वशुर को कष्ट।
१० वीं " "—सब कुटुम्ब को कष्ट।

यदि नक्षत्र-मान ६० से कम या अधिक हो तो उसी हिसाव से प्रत्येक ६ घड़ी का भाग अधिक या कम कर लेना चाहिए।

(३) **मूल नक्षत्र जन्म का फल**—मूल नक्षत्र को एक वृक्ष मान कर इसका मान ६० घड़ी मान निम्नलिखित फलादेश किया गया है।

मूल वृक्ष =६० घड़ी

१ ला भाग—८ घड़ी—जड़—मूल नाश।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ रा भाग—६ " —स्तंभ (तना)—धन हानि ।
३ रा " —११ " —त्वचा (छाल)—भ्रातृ नाश ।
४ था " —६ " —शाखा (डालियाँ)—मातृ कष्ट ।
५ वाँ " —१४ " —पत्ते—परिवार-क्षय ।
६ ठा " —५ " —पुष्प—ऐश्वर्य प्राप्ति—(राजमंत्री हो) ।
७ वाँ " —४ " —फल—राजा के समान हो ।
८ वाँ " —३ " —शिखा (वृक्ष की चोटी)—अल्पायु हो ।

उपर्युक्त फल नक्षत्र मान ६० घड़ी मान कर किया गया है । यदि नक्षत्र मान अधिक-कम हो तो अनुपात से भिन्न भागों में परिवर्तन कर लें । जन्म के समय कष्ट-कारक नक्षत्र हो तो उसकी शांति करनी चाहिए । शांति का प्रकरण कर्म-काण्ड की पुस्तकों में देखिये ।

तेतीसवाँ प्रकरण

मेलापक

विवाह मेलापक चक्र

किसी कन्या और किसी वर की कुंडलियाँ देखकर यह बताना कि दोनों का विवाह शुभ रहेगा या नहीं, जन्म-कुण्डली मिलाना कहलाता है । इसे मेलापक भी कहते हैं । वैसे तो प्रत्येक कुण्डली को अलग-अलग भी देखकर यह कहा जा सकता है कि पति-सुख या स्त्री-सुख कैसा है । किन्तु बहुत बार ऐसा होता है कि अलग-अलग दोनों जन्म-कुण्डलियाँ अच्छी होने पर भी—यदि उन दोनों व्यक्तियों का विवाह हो जाये तो परिणाम अशुभ हो जाता है । उदाहरण के लिए मधु (शहद) स्वयं उत्तम पदार्थ है और घी भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तम पदार्थ हैं किन्तु यदि दोनों को समान मात्रा में मिला दिया जाय तो विष बन जाता है। या अन्य उदाहरण लीजिए—नीबू का रस अपने शुद्ध रूप में उत्तम वस्तु है। पीतल का गिलास भी अपनी जगह उत्तम वस्तु है किन्तु यदि नीबू के रस को पीतल के गिलास में रख दीजिए तो विकृत हो जावेगा। यही सिद्धान्त कन्या और वर की कुण्डली में लागू होता है। दोनों कुण्डलियों का स्वतंत्र विचार तो करना ही चाहिए कि शरीर सुख, संतान भाव, पति सुख (या स्त्री सुख), भाग्य, राज योग आदि कौन-कौन से भाव अच्छे हैं और किनमें न्यूनता है। इस प्रकार के विचार में जब कुण्डली ठीक हो तब ही मिलान करना चाहिए।

यदि किसी वर की कुण्डली में अल्पायु योग हो और प्रबल मारकेश की दशा आने वाली हो, क्रूर ग्रह केन्द्र में हो, लग्न और लग्नेश निर्बल हो तो ऐसे वर की कुण्डली मिलानी ही नहीं चाहिए। प्रथम खण्ड में जन्म-पत्र-सम्बन्धी बहुत से सिद्धान्त दिये गये हैं, इसलिए उनकी पुनरावृत्ति यहाँ नहीं की जा रही है। यदि आप कन्या की ओर से जन्म-कुण्डली मिला रहे हैं तो सर्वप्रथम यह देखिये कि जिस वर का जन्म-पत्रआपके पास आया है वह दीर्घायु है या नहीं। यदि आप वर की ओर से जन्म-कुण्डली मिला रहे हैं तो यह देखिये कि जिस कन्या की जन्म-कुण्डली आपके पास आई है वह 'विष-कन्या' तो नहीं है। निम्नलिखित योगों में 'विष-कन्या' उत्पन्न होती है।

(१) द्वितीय तिथि, रविवार और शतभिषा नक्षत्र या आश्लेषा नक्षत्र।

(२) द्वादशी तिथि, रविवार, कृत्तिका, विशाखा या शतभिषा नक्षत्र।

(३) सप्तमी तिथि, मंगलवार और आश्लेषा, शतभिषा या विशाखा नक्षत्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) द्वादशी तिथि, मंगलवार, शतभिषा नक्षत्र ।
(५) द्वितीया तिथि, शनिवार, आश्लेषा नक्षत्र ।
(६) सप्तमी तिथि, शनिवार, कृत्तिका नक्षत्र ।
(७) द्वादशी तिथि, शनिवार, कृत्तिका-नक्षत्र ।

ग्रहों से भी 'विष-कन्या' योग होते हैं, वे निम्नलिखित हैं :

(१) छठे स्थान में एक पाप ग्रह और दो सौम्य ग्रह हों ।
(२) लग्न में शनि, पंचम में सूर्य और नवम में मंगल हो ।
(३) दो पाप ग्रह छठे स्थान में, एक पाप ग्रह, लग्न में दो शुभ ग्रह हों ।

मूल नक्षत्रादि दोष

इसके अतिरिक्त चाहे वर हो चाहे कन्या निम्नलिखित नक्षत्रों में पैदा हुए वर या कन्या क्या प्रभाव उत्पन्न करते हैं यह नीचे दिया जाता है—

(१) यदि मूल नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय या तृतीय चरण में उत्पन्न हो तो ऐसा लड़का-लड़की श्वशुर के लिए अनिष्ट-कारक है ।

(२) यदि आश्लेशा नक्षत्र के द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ चरण में उत्पन्न हो तो सास के लिए हानिकारक है ।

(३) यदि विशाखा के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हो तो ऐसी लड़की देवर (या लड़का हो तो छोटे साले के लिए) कष्टकर है ।

(४) यदि ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हो तो लड़की अपने जेठ के लिए (पति के बड़े भाई) और लड़का पत्नी के बड़े भाई के लिए कष्टकारक होता है ।

विष-कन्या आदि दोषों का परिहार

ऊपर जो दोष बताये गये हैं, उनमें उत्पन्न लड़के या लड़की के लिए शांति करनी चाहिये । और यदि कन्या में मंगलीक दोष या विष-कन्या दोष अधिक हो तो ऐसे वर से विवाह करे जिसकी जन्म-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुंडली में दीर्घायु योग उत्तम हो और मंगलीक दोष अधिक हो। ऐसा होने से कन्या का मङ्गलीक दोष कम हो जाता है। यदि कन्या की जन्म-कुंडली में विष-कन्या दोप या वैधव्य दोष हो किन्तु जन्मलग्न या चन्द्रलग्न से सप्तम स्थान में सप्तमेश या शुभग्रह हो तो विषकन्या-जनित दोष तथा वैधव्य दोष को दूर करते हैं:

लग्नाद् विधोर्वा यदि जन्म काले
शुभ ग्रहो वा मदनाधिपश्च ।
द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्य दोषं
वैधव्य दोषं च विषांगनाख्यम् ।।

यदि सप्तमेश वलवान् शुभ स्थान स्थित हो और सप्तम भाव पर शुभग्रहों की, विशेषकर वलवान् बृहस्पति की विशेष दृष्टि हो तो अन्य दोषों की निवृत्ति करते हैं।

मंगलीक दोष विचार

सूर्यादि नौ ग्रहों में चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, शुक्र—मेलापक विचार में शुभ माने जाते हैं। मंगल सबसे अधिक क्रूर समझा जाता है। शनि भी क्रूर गिना जाता है राहु और केतु भी क्रूर माने जाते हैं। सूर्य को भी क्रूर मानते हैं। जन्म-कुंडली विचार में मङ्गल को सबसे अधिक पापी मानने के कारण इस दोष को वोलचाल की भाषा में मङ्गलीक दोष कहते हैं, परन्तु वास्तव में मं०, श०, रा०, के०, सू०, इन पाँचों का विचार करना चाहिए। मंगलीक दोष की फौज में ये पाँचों ही हैं। इनका नेता मंगल है।

(१) यदि किसी जन्म-कुंडली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश स्थान में मङ्गल हो तो मङ्गलीक दोष होता है। कोई-कोई जन्म-लग्न से द्वितीय भी मङ्गल दोष मानते हैं।

(२) जिस प्रकार ऊपर जन्म-लग्न से विचार किया गया है उसी प्रकार चन्द्रलग्न से भी विचार करना चाहिए। जितना दोष जन्म-लग्न से विचार में माना जाये उससे आधा चन्द्र-लग्न से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मानना चाहिए। जन्म-कुंडली में चन्द्रमा जिस राशि में हो उस राशि को जन्म लग्न मानकर जिस राशि में जो ग्रह हो वैसा ही स्थापित करने से चन्द्रलग्न की कुंडली बनती है।

(३) जिस प्रकार चन्द्रलग्न से विचार किया है उसी प्रकार शुक्र लग्न से भी विचार करना चाहिए। जो दोष जन्म-लग्न से विविध स्थानों में मङ्गल का बताया गया है उसका चतुर्थ शुक्र लग्न से मानना चाहिए।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय भर्त्ता पत्नीविनाश कृत्।
जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशेवापिभौमदोषविनाशकृत्॥

इसका आशय यह है कि ऊपर (१) में जिन स्थानों में मङ्गल को दोषयुक्त माना है उन स्थानों में दूसरी जन्म-कुंडली में मङ्गल हो या शनि हो तो एक-दूसरे के दोष को काटता है।

शनिर्भौमोऽथ वाकश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवननेष्वेव भौमदोष विनाशकृत्॥

इस श्लोक का आशय यह है कि शनि, भौम या अन्य पाप-ग्रह--जितने दोषकारक स्थानों में वर की कुण्डली में हों उतने ही कन्या की जन्म-कुंडली में भी होने चाहिए।

तुलनात्मक विचार

हमारे विचार से यदि मंगल के दोष की मात्रा १६ आना मानी जावे तो शनि की १२ आना, राहु की १० आना, केतु की ८ आना और सूर्य की ४ आना दोष की मात्रा माननी चाहिए। इसमें भी यह तारतम्य कर लेना उचित है कि जिस क्रूर ग्रह का विचार किया जा रहा है वह लग्न, द्वितीय आदि किस स्थान में है।

(क) जो क्रूर ग्रह सप्तम या अष्टम में होते हैं वे विशेष पीड़ा-कारक होते हैं। उनकी अपेक्षा चतुर्थ और द्वादश में कम पीड़ा करते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं, उनकी अपेक्षा लग्न में कम और द्वितीय में उससे भी कम ।

(ख) जिस क्रूर ग्रह का विचार किया जा रहा हो । वह यदि उच्च राशि या स्वगृही हो तो कम दोष करता है यदि अधिमित्र या मित्र राशि में हो तो सामान्य दोष करता है । यदि अधिशत्रु या शत्रु राशि में हो या नीच राशि में हो तो बहुत अधिक मात्रा में दोष करता है । इस प्रकार ग्रह किस स्थान और किस राशि में हैं यह विचार कर तथा किन वर्गों में है और किन ग्रहों से वीक्षित है इसका विचार करते हुए जब दोनों जन्म-कुण्डलियों में क्रूर ग्रह-जनित दोष समान आवें तब निम्नलिखित प्रकार से कितने गुण मिलते हैं यह निश्चय करना चाहिए ।

गुण:—कुल गुण ३६ होते हैं । 'वर्ण' का १,'वश्य' के २, 'तारा' के ३, 'योनि' के ४, 'राशीश' ग्रह के ५, 'गण' के ६, 'भकूट' के ७, तथा 'नाड़ी' के ८। इस प्रकार कुल ३६ गुण हुए । यदि वर और कन्या के १८ गुण मिल जावें तो विवाह ज्योतिषसम्मत हो जाता है । एक अन्य मत है कि १६ गुण मिलें तो निंद्य (निंद-नीय), २० मिलें तो मध्यम, ३० मिलें तो उत्तम और ३० के ऊपर उत्तमोत्तम समझना चाहिए ।

गुणैः षोशडभिर्निन्द्यं मध्यमा विंशतिस्तथा ।
श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम् ।।

ये गुण जन्म-नक्षत्र के आधार पर मिलाये जाते हैं । शुद्ध पंचांग द्वारा सर्वप्रथम यह निश्चय करना चाहिए कि जन्म के समय चन्द्रमा किस नक्षत्र में था । जन्म-नक्षत्र के अनुसार वर्ण, वश्य, आदि निम्नलिखित होते हैं । यदि जन्म का नक्षत्र ज्ञात न हो तो दोनों के नाम के प्रथम अक्षर से नक्षत्र स्थिर करना चाहिए ।

अज्ञातजन्मनां नृणां नाम्निभं परिकल्पयेत् ।
तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत् ।।
जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम् ।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनं भवेदिति ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् यदि जन्म-नक्षत्र ज्ञात न हो तो नाम के प्रथमाक्षर से मेलापक विचार करना चाहिए। किन्तु ऐसा न करे कि एक का तो जन्म-नक्षत्र ले ले और दूसरे के नाम का अक्षर। ऐसा मेलापक अशुभ होता है। किस नाम के प्रथम अक्षर से कौन-सा नक्षत्र लेना यह २५वें पृष्ठ पर बताया गया है।

(१) यदि जन्म-नक्षत्र अश्विनी हो तो मेष राशि, क्षत्रिय वर्ण, चतुष्पद वश्य, अश्व योनि, राशीश मंगल, देव गण, आदि नाड़ी होती है।

(२) भरणी नक्षत्र हो तो मेष राशि, क्षत्रिय वर्ण, चतुष्पद वैश्य, गज योनि, राशीश मंगल तथा मध्य नाड़ी होती है।

(३) (क) कृत्तिका नक्षत्र का प्रथम चरण हो तो मेष राशि, क्षत्रिय वर्ण, चतुष्पद वैश्य, छाग योनि, राशीश मंगल, राक्षस गण और अंत नाड़ी होती है।

(ख) कृत्तिका नक्षत्र का द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ चरण हो तो वृष राशि, वैश्य वर्ण, चतुष्पद वश्य, छाग योनि, राशीश शुक्र, राक्षस गण तथा अन्त नाड़ी होती है।

(४) यदि रोहिणी नक्षत्र में जन्म हो तो वृष राशि, वैश्य वर्ण, चतुष्पद वैश्य, सर्प योनि, शुक्र राशीश, मनुष्य गण तथा अंत नाड़ी होती है।

(५) (क) मृगशिर नक्षत्र के प्रथम और द्वितीय चरण में जन्म हो तो वृष राशि, वैश्य वर्ण, चतुष्पद वैश्य, सर्प योनि, राशीश शुक्र, देव गण तथा मध्य नाड़ी होती है।

(ख) मृगशिर नक्षत्र के तृतीय तथा चतुर्थ चरण में जन्म हो तो मिथुन राशि, शूद्र वर्ण, मानव वैश्य, सर्प योनि, राशीश शुक्र, देवगण तथा मध्य नाड़ी होती है।

अश्व (घोड़ा), गज (हाथी), मेष (मैंढा), श्वान (कुत्ता), मार्जार (बिल्ली), मूषक (चूहा), महिष (भैंस), व्याघ्र (शेर), मृग (हरिण), वानर (बन्दर), नकुल (नेवला), सिंह (शेर)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) यदि आर्द्रा नक्षत्र हो तो मिथुन राशि, शूद्र वर्ण, नर वैश्य, श्वान योनि, राशीश बुध, मनुष्य गण और आदि नाड़ी होती है।

(७) (क) यदि पुनर्वसु नक्षत्र का पहला, दूसरा, तीसरा चरण हो तो मिथुन राशि, शूद्र वर्ण, नर वैश्य, मार्जार योनि, राशीश बुध, देवगण तथा आदि नाड़ी होती है।

(ख) यदि पुनर्वसु नक्षत्र का चौथा चरण हो तो कर्क राशि, ब्राह्मण वर्ण, वैश्य जलचर, मार्जार योनि, राशीश चन्द्रमा, देवगण तथा आदि नाड़ी होती है।

(८) यदि पुष्य नक्षत्र हो तो कर्क राशि, ब्राह्मण वर्ण, जलचर वैश्य, छाग योनि, राशीश चंद्र, मनुष्यगण तथा मध्य नाड़ी होती है।

(९) यदि आश्लेषा नक्षत्र हो तो कर्क राशि, ब्राह्मण वर्ण, जलचर वैश्य, मार्जार योनि, चन्द्रमा राशीश, राक्षस गण तथा अंत नाड़ी होती है।

(१०) यदि मघा नक्षत्र हो तो सिंह राशि, क्षत्रिय वर्ण, वनचर वैश्य, मूषक योनि, राशीश सूर्य, राक्षस गण तथा अंत नाड़ी होती है।

(११) पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र होने से सिंह राशि, क्षत्रिय वर्ण, वनचर वैश्य, मूषक योनि, राशीश सूर्य, मनुष्य गण तथा मध्य नाड़ी होती है।

(१२) (क) उत्तरा फाल्गुनी का पहला चरण हो तो सिंह राशि, क्षत्रिय वर्ण, वश्य वनचर, गौ योनि, सूर्य राशीश, मनुष्य गण तथा आदि नाड़ी होती है।

(ख) उत्तरा फाल्गुनी का दूसरा, तीसरा तथा चौथा चरण होने से कन्या राशि, वैश्य वर्ण, नर वैश्य, गौ योनि, राशीश बुध, मनुष्य गण तथा आदि नाड़ी होती है।

(१३) हस्त नक्षत्र होने से कन्या राशि, वैश्य वर्ण, वैश्य नर,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महिष योनि, राशीश बुध, देव गण तथा आदि नाड़ी होती है।

(१४) (क) चित्रा नक्षत्र का पहला तथा दूसरा चरण हो तो कन्या राशि, वैश्य वर्ण, नर वैश्य, व्याघ्र योनि, राशीश बुध, राक्षस गण तथा मध्य नाड़ी होती है।

(ख) परन्तु यदि चित्रा नक्षत्र का तीसरा तथा चौथा चरण हो तो तुला राशि शूद्र वर्ण, नर वैश्य, व्याघ्र योनि, राशीश शुक्र, राक्षस गण और मध्य नाड़ी होती है।

(१५) स्वाति नक्षत्र हो तो तुला राशि, शूद्र वर्ण, नर वैश्य, महिष योनि, राशीश शुक्र, देव गण तथा अंत नाड़ी होती है।

(१६) (क) यदि विशाखा नक्षत्र का पहला, दूसरा, तीसरा चरण हो तो तुला राशि, शूद्र वर्ण, वैश्य नर, व्याघ्र योनि, राशीश शुक्र, राक्षस गण तथा अंत नाड़ी होती है।

(ख) यदि विशाखा नक्षत्र का चौथा चरण हो तो वृश्चिक राशि, राशीश मंगल, ब्राह्मण वर्ण, कीट वैश्य, व्याघ्र योनि, राक्षस गण तथा अंत नाड़ी होती है।

(१७) अनुराधा नक्षत्र हो तो वृश्चिक राशि, ब्राह्मण वर्ण, वैश्य कीट, मृग योनि, राशीश मंगल, देव गण तथा मध्य नाड़ी होती है।

(१८) ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो वृश्चिक राशि, राशीश मंगल, ब्राह्मण वर्ण, कीट वैश्य, मृग योनि, राक्षस गण तथा आदि नाड़ी होती है।

(१९) यदि मूल नक्षत्र हो तो धनु राशि, राशीश बृहस्पति, क्षत्रिय वर्ण, नर वैश्य, श्वान योनि, राक्षस गण तथा आदि नाड़ी होती है।

(२०) **यदि** पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो तो धन राशि, राशीश बृहस्पति, क्षत्रिय वर्ण, वानर योनि, मनुष्य गण तथा मध्य नाड़ी होती है। विशेष यह है कि यदि पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के ८ हिस्से किये जावें और प्रथम आठवें हिस्से में जन्म हो तो नर वैश्य, यदि बाकी के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७ हिस्से में जन्म हो तो चतुष्पद वैश्य होता है।

(२१) (क) यदि उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का प्रथम चरण हो तो धन राशि, राशीश बृहस्पति, क्षत्रिय वर्ण, चतुष्पद वैश्य, नकुल, योनि, मनुष्य गण तथा अंत नाड़ी होती है।

(ख) यदि उत्तरषाढ़ा नक्षत्र का दूसरा, तीसरा, चौथा चरण हो तो मकर राशि, राशीश शनि, वैश्य वर्ण, चतुष्पद वैश्य, नकुल योनि, मनुष्य गण तथा अंत नाड़ी होती है।

(२२) यदि श्रवण नक्षंत्र हो तो मकर राशि, राशीश शनि, वैश्य वर्ण, वानर योनि, देव गण तथा अंत नाड़ी होती है। यदि श्रवण नक्षत्र के ८ हिस्से किये जावें तो प्रथम, द्वितीय, तृतीय $\frac{1}{8}$ भागों में चतुष्पद वैश्य होता है, बाकी के पाँच $\frac{1}{8}$ भागों में जलचर वैश्य होता है।

(२३) (क) यदि घनिष्ठा नक्षत्र का पहला और दूसरा चरण हो तो मकर राशि, राशीश शनि, वैश्य वर्ण, जलचर वैश्य, सिंह योनि, राक्षस गण तथा मध्य नाड़ी होती है।

(ख) यदि धनिष्ठा नक्षत्र का तीसरा और चौथा चरण हो तो कुंभ राशि, राशीश शनि, शूद्र वर्ण, नर वैश्य, सिंह योनि, राक्षस गण तथा मध्य नाड़ी होती है।

(२४) शतभिषा नक्षत्र हो तो कुंभ राशि, राशीश शनि, शूद्र वर्ण, नर वैश्य, अश्व योनि, राक्षस गण तथा आदि नाड़ी होती है।

(२५) (क) यदि पूर्वाभाद्र नक्षत्र का पहला, दूसरा तथा तीसरा चरण हो तो कुंभ राशि, राशीश शनि, शूद्र वर्ण, नर वैश्य, सिंह योनि, मनुष्य गण तथा आदि नाड़ी होती है।

(ख) परन्तु यदि पूर्वाभाद्र नक्षत्र का चौथा चरण हो तो मीन राशि, राशीश बृहस्पति, ब्राह्मण वर्ण, जलचर वैश्य, सिंह योनि, मनुष्य गण तथा आदि नाड़ी होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२६) यदि उत्तराभाद्र नक्षत्र हो तो मीन राशि, राशीश बृहस्पति, ब्राह्मण वर्ण, जलचर वैश्य, गौ योनि, मनुष्य गण तथा मध्य नाड़ी होती है।

(२७) यदि रेवती नक्षत्र हो तो मीन राशि, राशीश बृहस्पति ब्राह्मण वर्ण, जलचर वैश्य, गज योनि, देव गण तथा अन्त नाड़ी होती है।

ऊपर जन्म-नक्षत्र के अनुसार वर्ण, वैश्य, योनि, राशि, राशीश, गण और नाड़ी ये ७ बातें बताई गई हैं। ८ वीं चीज़ है तारा-विचार। यह नीचे दिया जाता है। वर के जन्म-नक्षत्र से कन्या का जन्म-नक्षत्र गिनना चाहिए और यदि ९ से अधिक आवे तो ९ से भाग देकर शेष निकाल लीजिये। इसी प्रकार कन्या के नक्षत्र से वर के जन्म-नक्षत्र तक गिनिये। यहाँ भी यदि ९ से अधिक आवे तो ९ से भाग देकर शेष ले लीजिये। अब जो दो संख्यायें आई हैं उनको नीचे के चक्रों में देखिये। 'वर' के नीचे खड़ी पंक्ति में और कन्या के सामने आड़ी पंक्ति में और कोष्टक में जो संख्या आवे और कितने गुण प्राप्त हुए यह लिख लीजिये। इसी प्रकार नीचे के वर्ण, वैश्य, योनि, राशि, राशीश, गण, तारा, और नाड़ी मिलानमें कितने-कितने गुण प्राप्त हुए यह भी लिखकर जोड़िये कि ३६ में से कितने गुण प्राप्त होते हैं।

४ योनिगुणाः । वर

	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	२	२	२	२	०	२	२	२
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	३	३	१	२	०	४	३	३	२	३	२	१	१
गौ	३	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	३	१	२	२	४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

१ विवाहे वर्णगुणाः । वरः

कन्या		ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुणाः । वरः

कन्या		च.	मा.	ज.	ब.	की.
	चतुष्पद	२	१	१	०	१
	मानव	१	२	॥	०	१
	जलचर	१	॥	२	१	१
	बनचर	०	०	१	२	०
	कीट	१	१	१	०	२

पुरुषको राशिबाट स्त्रीको राशि छैटो आठौ परे अशुभ हुन्छ/

६ गणगुणाः । वरः

कन्या		दे.	म.	रा.
	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

८ नाडी गुणाः । वरः ।

कन्या	आ.	म.	अं.
आदिः	०	८	८
मध्या	८	०	८
अन्त्या	८	८	०

७ भकूटगुणाः ।

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृ.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिं.	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
क.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुं.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

३ तारागणाः ।

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

५ ग्रहमैत्र्यागुणाः । वरः ।

कन्या	सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.
सूर्य्यं	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मङ्गल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	[illegible]
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक उदाहरण देकर यह स्पष्ट किया जाता है। मान लीजिये वर का जन्म-नक्षत्र हस्त है और कन्या का जन्म-नक्षत्र पुष्य है तो मेलापक चक्र निम्नलिखित होगा :

	पूर्ण गुण	वर	प्राप्त गुण	कन्या
वर्ण	१	वैश्य	०	ब्राह्मण
वश्य	२	नर	२	जलचर
तारा	३	पंचम	१½	षष्ठ
योनि	४	महिष	३	मेष
राशीश	५	बुध	१	चन्द्रमा
गण	६	देव	६	देव
राशि	७	कन्या	७	कर्क
नाड़ी	८	आदि	८	मध्य
योग	३६		२७	

इस प्रकार ३६ में से २७ गुण मिलने से कुंडलियों का मिलान अच्छा समझा जाता है। अब मेलापक सम्बन्धी कुछ विशेष नियम बताकर यह प्रकरण समाप्त किया जाता है।

(१) यदि वर और कन्या दोनों की राशि एक हो और नक्षत्र अलग-अलग हों तो श्रेष्ठ है। यदि दोनों की राशियाँ भिन्न हों तो मध्यम। परन्तु यदि एक ही नक्षत्र एक ही राशि हो तो त्याज्य है। किसी-किसी का मत यह भी है कि यदि एक नक्षत्र में जन्म होने पर भी यदि भिन्न चरण में जन्म हो तो विवाह सम्मत है। (२) यदि अन्य गुण मिलते हों और नाड़ी में एक भी गुण प्राप्त न हो तो वर और कन्या—यदि दोनों ब्राह्मण हों तो विवाह नहीं करना चाहिए। क्षत्रियों में गण मैत्री का विशेष विचार करना चाहिए। (३) कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र यदि द्वितीय पड़े तो अच्छा नहीं समझा जाता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चौंतीसवाँ प्रकरण

स्वामी-सेवक मेलापक-विचार

यदि यह देखना हो कि दो व्यक्तियों में स्वामी-सेवक का सम्बन्ध निभेगा या नहीं तो निम्नलिखित बातों का विचार करना चाहिए। जिसकी नौकरी की जाये या जो अपना अफसर हो उसकी स्वामी संज्ञा, जो नौकरी करे या मातहत हो उसकी सेवक संज्ञा।

(१) स्वामी और सेवक दोनों के नाम के प्रथम अक्षर से विचार करे कि दोनों के क्या-क्या नक्षत्र होते हैं। देखिए पृष्ठ २५। इसके बाद उन नक्षत्रों की क्या योनि है यह २९७-२९९ पृष्ठ पर देखिये। मेलापक चक्र में बहुत से लोग योनि का अश्लील अर्थ लेते हैं किंतु वास्तव में मेलापक चक्र में जो योनि संज्ञा है उसका अर्थ है कौनसा जीवधारी--कुत्ता, बिल्ली, मृग, वानर, गज, सर्प, नकुल, मनुष्य आदि ८४ लाख योनि के जीव इस पृथ्वी पर हैं। यही योनि का शुद्ध अर्थ है। जैसे कुत्ते–बिल्ली या हरिण--शेर या सर्प–नेवला या बिल्ली--चूहे का मेल नहीं हो सकता उसी प्रकार यदि दो मनुष्यों की भिन्न-भिन्न योनियों में परस्पर शत्रुता हो तो चाहे वे स्त्री-पुरुष हों चाहे वे स्वामी-सेवक, चाहे वे अफसर-मातहत हों खटपट चलती है।

(२) दोनों के नाम के अनुसार जो राशि आवे उन राशियों के स्वामी परस्पर मित्र हों तो दोनों व्यक्तियों में प्रेम रहता है। यदि दोनों की राशि के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो दोनों व्यक्तियों में शत्रुभाव रहता है। यदि दोनों राशियों के स्वामी में एक मित्र हो और दूसरा शत्रु हो (जैसे चंद्रमा का बुध मित्र है किन्तु बुध का चन्द्रमा शत्रु है) तो एक व्यक्ति तो मित्र भाव रखता है किन्तु दूसरा मित्रभाव रखने पर भी शत्रुता रखता है। मित्रामित्र चक्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पृष्ठ ३४ पर दिया गया है राशियों के स्वामी ३१वें पृष्ठ पर बताये गये हैं।

(३) दोनों की राशि एक-दूसरे से ६ठी, ८वीं नहीं होनी चाहिये।

(४) वर्ग काकिणी विचार

(१) अ से अः तक गरुड़ वर्ग ;
(२) क से ङ तक मार्जार वर्ग।
(३) च से ञ तक सिंह वर्ग।
(४) ट से ण तक श्वान वर्ग।
(५) त से न तक सर्प वर्ग।
(६) प से म तक मूषक वर्ग।
(७) य र ल व मृग वर्ग।
(८) श ष स ह क्ष त्र ज्ञ मेंढ़ा वर्ग।

इन आठों वर्गों को क्रम से गिनना चाहिए। पांचवाँ वर्ग अपना शत्रु होता है।

गरुड़-सर्प वैर, मार्जार-मूषक वैर, सिंह-मृग वैर, श्वान—मेंढा वैर। अपने वर्ग को दूना करना दूसरे का वर्ग जोड़ देना। जो जोड़ आवे उसको आठ से भाग देकर जो शेष बचे वह लिख लीजिए। इसी प्रकार दूसरे व्यक्ति के वर्ग को दुगना करना, अपना वर्ग जोड़ देना। जो जोड़ आवे उसमें ८ का भाग देकर जो शेष रहे वह लिख लीजिए। अब देखिए दोनों शेषों में से कौनसा शेष अधिक है। इस शेष को 'काकिणी' कहते हैं।

जिसका अधिक शेष हो वही दूसरे का ऋणी (कर्जदार) होता है।

उदाहरण के लिए भगवानदास उर्फ भानु और कुशकुमार इन दो व्यक्तियों का विचार करना है तो निम्नलिखित विचार होगा।

कुशकुमार के नाम के प्रारंभ में क आता है इसलिए मार्जार वर्ग हुआ इसकी संख्या २ है। भगवानदास या भानु का प्रथम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अक्षर भ है—इसका वर्ग मूषक है। इसकी संख्या ६ है। दोनों एक-दूसरे से पाँचवे हैं इस कारण मैत्री का परिणाम तो कोई बहुत अच्छा नहीं होगा परन्तु 'वर्ग काकिणी' विचार निम्नलिखत प्रकार से किया जावेगा।

कुश का 'काकिणी शेष'

अपना नाम कुश २ × २ = ४ (अपने वर्ग को २ से गुणा किया जाता है)

दूसरे का नाम भानु ६ (दूसरे के वर्ग को वैसा ही रखा जाता है)

योग १० इसको आठ से भाग दिया तो शेष काकिणी २

भानु का 'काकिणी शेष'

अपना नाम भानु ६ × २ = १२ अपने वर्ग को २से गुणा किया जाता है दूसरे का नाम कुश = २ है दूसरे के वर्ग को नहीं)

योग १४ इसको ८ से भाग दिये तो बाकी वचे ६। यह भानु की 'काकिणी' हुई।

भानु की शेष ६ है, यह कुश के शेष से अधिक है इसलिए भानु ऋणी या कर्ज़दार हुआ। पिछले जन्म में इसने कर्ज़ खाया था सो चुकाया नहीं सो इस जन्म में चुकायगा अर्थात् इस जन्म में कुशकुमार को भगवानदास उर्फ भानु से लाभ होगा।

विशेष यह है कि विवाह में तो जन्म-नक्षत्र की प्रधानता है किन्तु स्वामी-सेवक विचार में 'नाम' की प्रधानता है। इसी प्रसिद्ध नाम से 'योनि' 'वर्ग' तथा 'राशि' का विचार करना चाहिए।

विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रह गोचरे।
जन्मराशेः प्रधानत्वं नाम राशिं न चिंतयेत्॥
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नामराशेः प्रधानत्वं जन्म राशिं न चिंतयेत्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् सर्वमंगल कार्यों में, यात्रा में, ग्रह-गोचर में, विचार में नाम की राशि का विचार न करे। देश, ग्राम, गृह, युद्ध, सेवा, (नौकरी), व्यवहार (मुकदमा या व्यापार) में प्रचलित (प्रसिद्ध) नाम की ही प्रधानता है। इसी से विचार करे।

ऊपर 'ग्राम' शब्द आया है। अधिकतर लोग ग्रामों में ही रहते हैं। इस कारण ग्राम कहा। 'नगर' का विचार भी प्रसिद्ध नाम से करना चाहिए।

उदाहरण के लिये गोपेश कुमार ओझा नाम के व्यक्ति को दिल्ली अनुकूल होगा या नहीं इसका 'वर्ग काकिणी' के अनुसार

गो··· २×२=४
दि ·· =५
=९÷८=शेष १

दि··· ५×२=१०
गो··· =२
१२÷८=शेष ४

पैंतीसवाँ प्रकरण

यात्रा-प्रकरण

वैसे तो यात्रा शब्द के अन्तर्गत सभी प्रकार की यात्रायें आ जाती हैं किंतु विवाह-यात्रा द्विरागमन यात्रा (गौना) आदि यात्रायें ऐसी हैं जिनमें बहुत सी बातें देखनी पड़ती हैं। ऐसे मुहूर्त तो उत्तम पञ्चांग में ही देखकर निश्चित करने चाहिए। अच्छे पंचाँगों में विवाह और गौने के मुहूर्त्त दिए रहते हैं। उसके आसपास जो मुहूर्त्त यात्रा-विचार से शुभ हो यात्रा के काम में लाना चाहिए।

नोट— मैंने स्वयं अपने नाम तथा जिस नगर में मैं रहता हूँ 'दिल्ली' का उदाहरण दिया है।

दिल्ली में रहने से लाभ होगा, क्योंकि दिल्ली का शेष 'काकिणी' अधिक है—सूचक दिल्ली लाभी हुई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्य प्रकार की यात्रा में क्या-क्या विचार करना यह नीचे बताया जाता है।

दिक्‌शूल— इसे लौकिक भाषा में दिशाशूल भी कहते हैं। सोमवार और शनिवार को पूर्व की ओर दिक्‌शूल रहता है इसलिए इन दोनों वारों को पूर्व की ओर नहीं जाना चाहिए। रविवार और शुक्रवार को पश्चिम की ओर दिशाशूल रहता है इसलिए पश्चिम की ओर यात्रा न करे। मंगल और बुधवार को उत्तर की ओर दिशाशूल रहता है, इस कारण इन दोनों वारों को उत्तर की यात्रा मना है। बृहस्पतिवार को दक्षिण की ओर दिक्‌शूल होने के कारण उस दिशा की यात्रा का निषेध है।

यदि कोई स्थान (जहाँ जाना है) पूर्व से कुछ दक्षिण या उत्तर की ओर झुका हो तो उसे यात्रा के लिए पूर्व ही मानना चाहिए। इसी प्रकार नक्शा देखकर यह स्थिर करना उचित है कि गन्तव्य स्थान किस दिशा में है। थोड़ा-बहुत इधर या उधर होने से दिशा में अन्तर नहीं मानते किंतु यदि नक्शा देखने पर गन्तव्य स्थान बिलकुल दो दिशाओं के बीच में पड़े तो ईशान, वायव्य, नैऋत्य, और आग्नेय कोणों में निम्नलिखित वारों को दिक्‌शूल मानना चाहिए। शनि और बुध को ईशान (पूर्वोत्तर) की ओर दिक्‌शूल रहता है। मंगल को वायव्य (पश्चिमोत्तर) कोण की ओर। सूर्य, शुक्र को नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम कोण) और चन्द्रमा तथा बृहस्पतिवार को आग्नेय (पूर्व-दक्षिण कोण) में दिक्‌शूल रहने के कारण यात्रा निषिद्ध है। सामने दिक्‌शूल सर्वथा त्याज्य है। बहुत लोग दाहिने दिक्‌शूल को भी त्याज्य समझते हैं। उदाहरण के लिए सोमवार को पूर्व की ओर दिक्‌शूल होता है और आपको उत्तर की ओर यात्रा करनी है और आप उत्तर की ओर मुँह करके खड़े हों तो पूर्व आपके दाहिनी ओर पड़ेगा। इस कारण सोमवार को उत्तर यात्रा में दाहिना दिक्‌शूल हुआ। दाहिना या बायाँ या सामने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

या पीछे—किस दिशा में शूल है यह विचार करते समय चार मुख्य दिशाओं का ही विचार किया जाता है।

पीठ पीछे दिक्शूल होना या बायाँ दिक्शूल होना यात्रा में उत्तम गिनते हैं। बहुत से लोग विशेष आवश्यकता होने पर, रात्रि को यदि यात्रा की जाये तो वार (रविवार, सोमवारादि) के कारण जो दिक्शूल बताया गया है, उसके दोष को नहीं मानते किंतु अधिकतर विद्वानों का मत यही है कि—चाहे दिन हो चाहे रात हो—दिक्शूल में यात्रा नहीं करनी चाहिए और दाहिना दिक्शूल भी बचाना चाहिए।

अति आवश्यकता होने पर यदि दिक्शूल के दिन यात्रा करनी पड़े तो बृहस्पति के वचनानुसार रविवार को घी खाकर, सोमवार को दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुध को तिल खाकर, बृहस्पतिवार को दधि भोजन कर, शुक्रवार को जौ खाकर और शनि को उड़द खाकर यात्रा करे तो दिशाशूल का दोष कम हो जाता है।यथा–

सूर्यवारे घृतं प्राश्य सोमवारे पयस्तथा ।
गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि ।।
गुरुवारे दधि प्राश्य शुक्रवारे यवानपि ।
माषाभुक्त्वा शनेर्वारे गच्छञ्शूले न दोषभाक् ।।

समय-शूल—जिस प्रकार वार के कारण दिशाशूल होता है उसी प्रकार समय शूल का भी निषेध है। उषाकाल में पूर्व की ओर यात्रा नहीं करनी चाहिए। गोधूलि के समय पश्चिम यात्रा का निषेध है। मध्याह्न काल में दक्षिण की ओर यात्रा न करे और मध्य रात्रि में उत्तर की ओर यात्रा निषेध है।

पूर्वाह्न में (प्रातःकाल से १०$\frac{1}{2}$ बजे तक) रोहिणी, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तरा भाद्र इन नक्षत्रों में यात्रा नहीं करनी चाहिए। मध्याह्न (१०$\frac{1}{2}$ से ३ बजे तक) में पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रौर पूर्वाभाद्र, भरणी तथा मघा नक्षत्र में यात्रा निषिद्ध है। दक्षिण की श्रोर नक्षत्र-शूल रहता है। अपराह्ण (३ बजे से ७ बजे तक) निम्नलिखित नक्षत्र हों तो यात्रा न करे—हस्त, अश्विनी, पुष्य, क्योंकि इस समय नक्षत्र शूल रहता है। पूर्व रात्रि में निम्नलिखित नक्षत्रों में यात्रा निषिद्ध है : चित्रा, अनुराधा तथा रेवती। इसी प्रकार यदि मध्य रात्रि में यात्रा करना हो तो उग्र नक्षत्रों में यात्रा उचित नहीं। निम्नलिखित उग्र नक्षत्र हैं—आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा श्रौर मूल। श्रौर यदि रात्रि के अन्त में—३ बजे के बाद यात्रा करनी हो तो पुनर्वसु, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषा में यात्रा करना उचित नहीं। कुछ नक्षत्रों की विशेष त्याज्य घड़ियाँ बताई गई हैं आवश्यकता होने पर उन घड़ियों को छोड़कर यात्रा की जा सकती है। (देखिए पृष्ठ २८४)

नक्षत्र शूल—यदि ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो पूर्व की श्रोर नक्षत्र शूल रहता है। पूर्वाभाद्र पद में दक्षिण की श्रोर शूल होता है। रोहिणी नक्षत्र में पश्चिम की श्रोर, श्रौर उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर शूल होने के कारण यात्रा का निषेध है।

योगिनी विचार—प्रतिपद् से आरम्भ कर पूर्व, उत्तर, आग्नेय नैऋत्य, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य श्रौर ईशान कोण में योगिनी भ्रमण करती है। इस मतानुसार किस तिथि को किस दिशा की यात्रा शुभ है, किस दिशा को मध्यम (न शुभ न अशुभ), किस दिशा को अनिष्ट श्रौर किस दिशा को महाभयकारक यह आगे के चक्र से स्पष्ट होगा। कुछ विद्वानों का मत यह है कि योगिनी सम्मुख या वाईं श्रोर रहे तो हानिकारक होती है।

ऊपर हिन्दू विश्वविद्यालय काशी से प्रकाशित 'विश्व पंचांग के आधार पर 'योगिनी' का विचार दिया गया है।

यात्रा के समय योगिनी सामने या बायीं श्रोर नहीं होनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाहिए। 'सम्मुख वामगा न शस्ता'। नीचे योगिनी वासचक्र दिया जाता है।

वा०	उत्तर	ई०
७.१५	२.१०	८.३०
पश्चिम		पूर्व
६.१४		१.६
ने०	दक्षिण	आ०
४.१२	५.१३	३.११

योगिनी के विषय में एक अन्य मत है कि बायीं ओर अच्छी होती है। यह मत पंडित सम्प्रदाय में विशेष में प्रचलित है :

"योगिनी सुखदावामे
पृष्ठे वांछित दायिनी।
दक्षिणे धनहंत्री च
सम्मुखे मरणप्रदा।।

इस प्रकार विभिन्न मत हैं। हमारे मतानुसार अन्तिम मत विशेष प्रचलित है।

लग्नः किस दिशा में किस लग्नः का क्या फल है यह नीचे दिया जाता है। किसी भी लग्न में आठवें बारहवें कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिये।

पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१/५/६	२/१०/६	३/७/११	४/८/१२	शुभ
२/६/१०	३/७/११	४/८/१२	१/५/६	मध्यम
४/८/१२	१/५/६	२/६/१०	३/७/११	अनिष्ट
३/७/११	४/८/१२	१/५/६	२/६/१०	महाभयम्

पथिराहु चक्र -यात्रा में यदि विशेष विचार करना हो तो इस चक्र का भी विचार किया जाता है। निम्नलिखित नक्षत्रों को धर्म नक्षत्र कहते हैं। अश्विनी, पुष्य, आश्लेषा, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा—सात नक्षत्र। भरणी, पुनर्वसु, मघा, स्वाति, ज्येष्ठा, श्रवण, पूर्वाभाद्र ये ७ नक्षत्र 'अर्थ' या 'धन' नक्षत्र कहलाते हैं। इसी प्रकार निम्नलिखित ६ नक्षत्रों को 'काम' नक्षत्र कहते हैं। कृत्तिका, आर्द्रा, पूर्वा फाल्गुनी, चित्रा, मूल और उत्तराभाद्र। बाकी के ७ नक्षत्र–रोहिणी, मृगशिर, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ और रेवती को 'मोक्ष' नक्षत्र कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) यदि सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा 'धन नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ ।

(२) यदि सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा "मोक्ष" नक्षत्र में तो यात्रा शुभ होती है ।

(३) किन्तु यदि सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा धर्म नक्षत्र या काम नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ नहीं होती ।

(४) यदि सूर्य धन नक्षत्र में हो और चन्द्रमा धर्म या मोक्ष नक्षत्र में तो यात्रा शुभ ।

(५) किन्तु यदि सूर्य धन नक्षत्र में हो और चन्द्रमा 'अर्थ' या 'काम' नक्षत्र में हो तो यात्रा अशुभ होती है ।

(६) यदि सूर्य 'काम' नक्षत्र में हो और चन्द्रमा 'धर्म', 'अर्थ' या 'मोक्ष' नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होती है ।

(७) किन्तु यदि सूर्य काम नक्षत्र में हो और चन्द्रमा भी काम नक्षत्र में हो तो यात्रा अच्छी नहीं ।

(८) यदि सूर्य 'मोक्ष' नक्षत्र में हो और चन्द्रमा 'धर्म' नक्षत्र मे तो यात्रा शुभ समझनी चाहिए ।

(९) किन्तु यदि सूर्य 'मोक्ष' नक्षत्र में हो और चन्द्रमा 'अर्थ', 'काम' या 'मोक्ष' नक्षत्र में हो तो यात्रा अच्छी नहीं होती ।

सूर्ये धर्म्मगते चन्द्रो धनेमोक्षे शुभ प्रदः
सूर्ये धनगते धर्म मोक्ष मार्गे शुभः शशी ।
कामेऽर्के धर्ममोक्षार्थे संस्थश्चन्द्रो जयप्रदः
मोक्षेऽर्के धर्मगश्चन्द्रः शुभोऽन्यत्र न शोभनः ॥

चन्द्रमा विचार :

मेष, सिंह और धनु राशि पूर्व दिशा की समझी जाती हैं, वृषभ, कन्या और मकर दक्षिण दिशा की, मिथुन तुला और कुंभ पश्चिम दिशा की तथा कर्क, वृश्चिक और मीन उत्तर दिशा की । यात्रा के समय चन्द्रमा सम्मुख हो तो बहुत उत्तम गिना जाता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दक्षिण चन्द्र को भी प्रशस्त मानते हैं। पृष्ठ चन्द्र अर्थात् चन्द्रमा यदि पीठ पीछे हो तो यात्रा नहीं करनी चाहिए। वाम चन्द्र अर्थात् यात्रा के समय यदि चन्द्रमा बाईं ओर हो तो भी यात्रा सफल नहीं होती। विशेष यह है कि वाम चन्द्र में धनक्षय होता है।

उदाहरण के लिए आज सिंह का चन्द्रमा है और आज आपको पूर्व की ओर यात्रा करनी है तो सम्मुख चन्द्र होगा। यदि आप दक्षिण दिशा को यात्रा करें तो वाम चन्द्र होगा। यदि आप उत्तर दिशा को जारहे हैं तो सिंह का चन्द्रमा दाहिना होगा और पश्चिम को जायेंगे तो पृष्ठ चंद्र होगा अर्थात् पीठ पीछे चन्द्रमा होगा। इसी प्रकार अन्यत्र समझना चाहिए।

यात्रा के समय यदि सम्मुख चन्द्र हो तो अन्य दोषों का प्रभाव कम हो जाता है।

सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः।
पृष्ठतो मरणं चैव वामे चंद्रे धनक्षयः।
सर्वे दोषा लयं यांति पूर्णे चन्द्रे हि सम्मुखे॥

नक्षत्र विचार : नक्षत्र-शूल अर्थात् किस दिशा में किस नक्षत्र में यात्रा नहीं करना यह ३१०वें पृष्ठ पर बताया जा चुका है।

धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध (अंतिम आधा भाग) शतभिषा, पूर्वाभाद्र, उत्तराभाद्र तथा रेवती इन नक्षत्रों में जब चन्द्रमा रहता है तो इसे पंचक कहते हैं। इन नक्षत्रों में दक्षिण की ओर यात्रा करना निषिद्ध है।

अब यह बताया जाता है कि यात्रा की दृष्टि से कौन से नक्षत्र उत्तम हैं, कौन से मध्यम और कौन से निंदनीय।

(१) यात्रा के लिये प्रशस्त नक्षत्र निम्नलिखित हैं :

अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। इन नौ नक्षत्रों में किसी भी दिशा मे यात्रा को जा सकती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) रोहिणी, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, पूर्वाभाद्र, उत्तराभाद्र, ज्येष्ठा, मूल और शतभिषा मध्यम नक्षत्र हैं। यदि चन्द्र सम्मुख हो तो यात्रा कर सकते हैं।

(३) भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा ये निन्दनीय नक्षत्र हैं। यदि बचाया जा सके तो इन नक्षत्रों में यात्रा नहीं करनी चाहिए।

प्रशस्त तिथियां—यात्रा में ६, ८, १२ तिथियाँ, शुक्ल पक्ष की पड़वा, अमावास्या और पूर्णिमा निषिद्ध हैं।

विशेष यह है कि यदि यात्रा करना आवश्यक हो तो पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ और पूर्वाभाद्र नक्षत्रों की प्रारम्भिक १६-१६ घड़ी छोड़कर बाकी समय में यात्रा की जा सकती है। इसी प्रकार आश्लेषा, स्वाति, विशाखा और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों की प्रारम्भिक १४–१४ घड़ियाँ विशेष त्याज्य हैं। भरणी नक्षत्र की प्रारम्भिक ११ घड़ियाँ ; कृत्तिका की शुरू की २१ घड़ियाँ तथा मघा नक्षत्र की प्रारम्भिक ११ घड़ियाँ छोड़कर यात्रा कीजा सकती है। चित्रा नक्षत्र के सम्बन्ध में यह नियम है कि जब तक कन्या का चन्द्रमा रहे तब तक यात्रा की जा सकती है।

सिद्धियोग और मृत्युयोग

तिथि और वार के योग से सिद्धियोग तथा 'मृत्युयोग' होते हैं :

(क) यदि शुक्रवार हो और १, ६, ११ तिथि हो,

(ख) यदि बुधवार हो और २, ७, १२ तिथि हो,

(ग) यदि मंगलवार हो और ३, ८, १३ तिथि हो,

(घ) यदि बृहस्पतिवार हो और ५, १०, १५ (पूर्णिमा) तिथि हो,

(ङ) यदि शनिवार और ४, ६, १४ तिथि हो तो ये पाँचों योग सिद्धियोग कहलाते हैं। इनमें यात्रा सिद्धिदायक होती है। इसके विपरीत—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) रविवार या मंगलवार हो और १, ६, ११ तिथि,
(२) सोमवार या शुक्रवार हो और २, ७ या १२ तिथि,
(३) बुधवार और ३, ८, १३ तिथि,
(४) बृहस्पतिवार और ४, ९, १४ तिथि,
(५) तथा शनिवार और ५, १०, १५ (पूर्णिमा), ३० (अमावास्या) तिथि ।

ये पाँचों 'मृत्युयोग' कहलाते हैं। इनमें यात्रा नहीं करनी चाहिए ।

लग्न विचार—जिस प्रकार जन्म के समय या प्रश्न के समय लग्न को बहुत महत्त्व दिया जाता है उसी प्रकार यात्रा के समय लग्न की भी बहुत महिमा कही गई है । चन्द्रमा की जो दिशा ३१२वें पृष्ठ पर बताई गई है वही लग्न की भी दिशा समझनी चाहिए । उदाहरण के लिए मेष लग्न, सिंह लग्न और धनु लग्न पू दिशा की ओर होता है । जैसे सम्मुख चन्द्र को बहुत उत्तम गिनते हैं उसी प्रकार सम्मुख लग्न में यात्रा करने से कार्यसिद्धि होती है । यदि दाहिना लग्न हो तो भी उत्तम है । (उदाहरण के लिए आपको उत्तर दिशा पर जाना है, मेष लग्न पूर्व का है इस कारण दाहिना लग्न हुआ) । वाम लग्न को बचाना चाहिए पृष्ठलग्न में यात्रा निषिद्ध है देखिए पृष्ठ ३११ । लग्न का विचार करते समय लग्न और लग्नेश का बल विचार करना

वारों में सबसे प्रशस्त रविवार है । सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार भी बहुत उत्तम हैं । जिस समय दवा आरम्भ की जावे द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या धनु या मीन) लग्न होना चाहिए । यदि लग्न में शुभग्रह हों तो विशेष अच्छा मुहूर्त समझना चाहिए ।

नोट—रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ तथा उत्तराभाद्र इन ६ नक्षत्रों में सधवा स्त्री (जिसका पति जीवित हो) नवीन वस्त्र, मूँगा, हाथीदांत आदि [illegible] न करे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(७) शुक्र लग्न से सातवें अच्छा नहीं ।

लग्न-सम्बन्धी अन्य योग—

(१) लग्न से तृतीय, छठे या ग्यारहवें भाव या भावों में मंगल और शनि हों और शुभ ग्रह केन्द्र तथा त्रिकोण में बलवान् हों तो कार्यसिद्धि होती है ।

(२) लग्न में बृहस्पति, छठे भाव में सूर्य हो तो चन्द्रमा अष्टम स्थान में अच्छा गिना जाता है ।

(३) यदि सूर्य दशम या एकादश भाव में हो और वृहस्पति केन्द्र में हो तो कल्याण नामक शुभ योग होता है ।

(४) यदि लग्नेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो तो अन्य सब शुभ फलों को नष्ट कर अशुभ फल देता है ।

(५) बुध, वृहस्पति और शुक्र—ये तीनों शुभ ग्रह हैं । यदि इनमें से एक भी ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो तो इसे 'योग' कहते हैं । यदि इनमें से दो केन्द्र, त्रिकोण में हों तो 'अधियोग' और यदि तीनों केन्द्र, त्रिकोण में हों तो 'योगाधियोग' होता है । यह उत्तरोत्तर श्रेष्ठ है ।

(६) यदि लग्नेश अस्त हो, नीच राशि में हो, छठे या आठवें भाव में हो, या किसी ग्रह से हार गया हो तो ऐसे लग्न में की हुई यात्रा का वहुत अशुभ परिणाम होता है ।

कुंभ लग्न तथा कुंभ नवांश (अन्य लग्नों में) यात्रा में निषिद्ध हैं मीन लग्न में यदि यात्रा की जाये तो रास्ता टेढ़ा हो जाता है— जैसे दिल्ली से जाना है कलकत्ते बीच, में चले गये लखनऊ या मार्ग लम्बा हो जाता है । मोटर से यात्रा करते समय जैसे कोई भटक कर लम्बी सड़क घूमकर जाने वाली पकड़ ले ।

अब तक यात्रा के विषय में केवल वे बातें बताई गई हैं जा सब व्यक्तियों के लिए समान रूप से लागू हैं । अब कुछ ऐसी बातें बताई जाती हैं कि जो व्यक्ति यात्रा कर रहा है उसके जन्म लग्न,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म नक्षत्र, जन्म राशि आदि से विचार करनी चाहिए।

घात चक्र—सबसे पहले घात चक्र दिया जाता है। वैसे तो प्रत्येक कार्य में घात चक्र का विचार करना चाहिए किंतु यात्रा में इसका विशेष विचार उचित है।

सर्वघातचक्र

जन्म रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
सू. घा.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं. घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं. घा.	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४
बु. घा.	२	६	१०	३	७	११	३	८	५	९	१२	१
गु. घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु. घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	११	२	५	६
श. घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा. घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के. घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
ति. घा.	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५
वार घात	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	गु.	शु	शु.	मं.	गु.	शु.
न. घा.	म	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो	आ.	श्ले.
यो. घा.	वि.	शू.	प	धृ.	प्री.	शु.	शु.	ब्र.	वै.	गं.	व्या.	व.
ल. घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५

घात चक्र नीचे समझाया जाता है। मान लीजिये किसी व्यक्ति की मेष राशि है अब मेष के नीचे और चं० घा० के सामने देखिए '१' लिखा है। इसका अर्थ यह हुआ कि मेष राशि वाले को प्रथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(७) शुक्र लग्न से सातवें अच्छा नहीं।

लग्न-सम्बन्धी अन्य योग—

(१) लग्न से तृतीय, छठे या ग्यारहवें भाव या भावों में मंगल और शनि हों और शुभ ग्रह केन्द्र तथा त्रिकोण में बलवान् हों तो कार्यसिद्धि होती है।

(२) लग्न में बृहस्पति, छठे भाव में सूर्य हो तो चन्द्रमा अष्टम स्थान में अच्छा गिना जाता है।

(३) यदि सूर्य दशम या एकादश भाव में हो और बृहस्पति केन्द्र में हो तो कल्याण नामक शुभ योग होता है।

(४) यदि लग्नेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो तो अन्य सब शुभ फलों को नष्ट कर अशुभ फल देता है।

(५) बुध, बृहस्पति और शुक्र—ये तीनों शुभ ग्रह हैं। यदि इनमें से एक भी ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो तो इसे 'योग' कहते हैं। यदि इनमें से दो केन्द्र, त्रिकोण में हों तो 'अधियोग' और यदि तीनों केन्द्र, त्रिकोण में हों तो 'योगाधियोग' होता है। यह उत्तरोत्तर श्रेष्ठ है।

(६) यदि लग्नेश ग्रस्त हो, नीच राशि में हो, छठे या आठवें भाव में हो, या किसी ग्रह से हार गया हो तो ऐसे लग्न में की हुई यात्रा का बहुत अशुभ परिणाम होता है।

कुंभ लग्न तथा कुंभ नवांश (अन्य लग्नों में) यात्रा में निषिद्ध हैं मीन लग्न में यदि यात्रा की जाये तो रास्ता टेढ़ा हो जाता है—जैसे दिल्ली से जाना है कलकत्ते बीच, में चले गये लखनऊ या मार्ग लम्बा हो जाता है। मोटर से यात्रा करते समय जैसे कोई भटक कर लम्बी सड़क घूमकर जाने वाली पकड़ ले।

अब तक यात्रा के विषय में केवल वे बातें बताई गई हैं जो सब व्यक्तियों के लिए समान रूप से लागू हैं। अब कुछ ऐसी बातें बताई जाती हैं कि जो व्यक्ति यात्रा कर रहा है उसके जन्म लग्न,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म नक्षत्र, जन्म राशि आदि से विचार करनी चाहिए।

घात चक्र—सबसे पहले घात चक्र दिया जाता है। वैसे तो प्रत्येक कार्य में घात चक्र का विचार करना चाहिए किंतु यात्रा में इसका विशेष विचार उचित है।

सर्वघातचक्र

जन्म	रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
सू.	घा.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं.	घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं.	घा.	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४
बु.	घा.	२	६	१०	३	७	११	३	८	५	९	१२	१
गु.	घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु.	घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	११	२	५	६
श.	घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा.	घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के.	घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा	घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
		१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
ति.	घा.	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
		११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५
वार	घात	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	गु.	शु.	शु.	मं.	गु.	शु.
न.	घा.	म	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो	आ.	श्ले.
यो.	घा.	वि.	शू.	प	धृ.	प्री.	शु.	शु.	व्र.	वै.	गं.	व्या.	व.
ल.	घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५

घात चक्र नीचे समझाया जाता है। मान लीजिये किसी व्यक्ति की मेष राशि है अब मेष के नीचे और चं० घा० के सामने देखिए '१' लिखा है। इसका अर्थ यह हुआ कि मेष राशि वाले को प्रथम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् मेष राशि का चन्द्रमा ही घात चंद्र हुआ। वृष राशि वाले को '५', वृष से पाँचवाँ कन्या राशि का चन्द्रमा घात चंद्र गिना जावेगा। राज सेवा, विवाद, मुकदमा, युद्ध आदि कार्यों में त्यागना चाहिए।

घात लग्न का विचार निम्नलिखित रूप से करना उचित है। मेष राशि वाले को मेष लग्न ही घात लग्न है। वृष राशि वाले को वृषभ लग्न। मिथुन राशि वाले को कर्क लग्न। कर्क राशि को तुला लग्न आदि। ऊपर के चक्र में लग्नों की ही संख्या दे दी गई है।

चन्द्र विचार– जिस मनुष्य को यात्रा करनी हो उसकी जन्म-राशि से चौथा या आठवाँ चंद्रमा यात्रा के समय नहीं होना चाहिए।

नक्षत्र विचार—कुल २७ नक्षत्र होते हैं। जिस मनुष्य के लिए यात्रा का मुहूर्त्त देख रहे हों उसके जन्म-नक्षत्र से यात्रा का नक्षत्र गिनना चाहिए। यदि ६ से अधिक हो तो ९ का भाग देकर शेष निकाल लें। इसका फल निम्नलिखित है।

१ जन्म; २; सम्पत्; ३ विपद्; ४ क्षेम; ५ प्रत्यरि; ६ साधक; ७ वध; ८ मित्र; ९; परम मित्र। यदि जन्म-नक्षत्र से यात्रा-नक्षत्र तक गिनने पर उपर्युक्त प्रकार से १, ३, ५ या ७ शेष बचें तो अनिष्ट है। यदि कृष्ण पक्ष में यात्रा कर रहे हों तो तारा का विशेष विचार करना चाहिए।

लग्न-विचार—जिस मनुष्य के लिए यात्रा का मुहूर्त्त निकालना हो उसके जन्म लग्न या जन्म राशि से अष्टम लग्न में यात्रा करना निषिद्ध है। यदि इन आठवीं राशियों के स्वामी यात्रा-लग्न में हों तो भी निषिद्ध है।

(२) यदि किसी मुकद्दमे या युद्ध के लिए यात्रा कर रहे हों तो शत्रु की जन्म-लग्न या जन्म-राशि से छठे लग्न में यात्रा न करें। इसी प्रकार शत्रु की जन्म-राशि या जन्म-लग्न का स्वामी यात्रा-लग्न में नहीं होना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यात्रा मुहूर्त्त में कुछ अन्य विचार—वार-वेला में यात्रा करना निषिद्ध है। किस वार के किस हिस्से को वार वेला कहते हैं यह २८५वें पृष्ठ पर वताया गया है।

गोरख पत्रा—यात्रा में गोरख पत्रा के नाम से (किस मास) किसी तिथि को, किस दिशा में यात्रा करने से क्या फल होता है। यह विचार ३२० पृष्ठ पर देखें।

अमृत घटी—यदि यह आवश्यक हो कि आज ही यात्रा करनी है और यात्रा का मुहूर्त्त न बनता हो, लग्न का विचार करने वाला कोई ज्योतिषी न मिले तो 'अमृत घटी' में यात्रा करनी चाहिए। अमृत घटी कब से कब तक रहती है यह आगे वताया जाता है।

यात्रा के लिए ही क्या प्रत्येक कार्य के लिए अमृत घटी श्रेष्ठ मानी जाती है। दिन या रात्रि को आठ भागों में बाँटकर शुभाशुभ विचार करना ('चौघड़िया) विचार कहलाता है।

पाठकों के लाभार्थ चौघड़िया चक्र पृ०३२१ पर दिया जाता है दिन को आठ भागोंमें विभक्त कीजिये इसप्रकार रात्रि को भी आठ भागों में विभक्त कीजिए। इन अष्टमांशों के नाम शुभ, अमृत, चर (चंचल), रोग, काल, लाभ तथा उत्पात हैं जो नीचे के चक्र से स्पष्ट होगा।

प्रत्येक कार्य के लिए 'शुभ', 'लाभ' तथा 'अमृत' श्रेष्ठ है। अमृत घटी सर्वश्रेष्ठ हैं।

एक-एक भाग करीव पौने चार घड़ी का होता है। इस कारण इसे चौघड़िया कहते हैं परन्तु वास्तव में दिनमान का अष्टमांश दिन का $\frac{1}{8}$ भाग होता है और रात्रिमान का अष्टमांश रात्रि का $\frac{1}{8}$ भाग होता है। जाड़े और गर्मी में दिनमान के अनुसार प्रत्येक भाग के मान में अन्तर हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यात्रा में गोरख-पत्रा

पौ०	मा०	फा०	चै०	वै०	ज्ये०	आ०	श्रा०	भा०	आ०	का०	मा०	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सुख	क्लेश	अनिष्ट	धन प्राप्ति
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	निर्धनता	निर्धनता	मिश्रित फल
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	धन हानि	दुःख	कार्यसिद्धि	धन
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सुख	शुभ	धन लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	धन-प्राप्ति	धन	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	धन लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	धन लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सुख	श्रमसे लाभ	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सुख	लाभ	कार्य सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	दुःख	कष्ट से सिद्धि	धन	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	धन लाभ	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सुख	मृत्यु	अति कष्ट

उदाहरण :— यदि पौष मास में पड़वा को पूर्व दिशा की ओर यात्रा की जावे तो इसका फल 'सुख' अर्थात उत्तम है, यदि इसी दिन दक्षिण दिशा को यात्रा की जावे तो इसका फल 'क्लेश' अर्थात् कष्टकारक है। पश्चिम की ओर भी इस दिन यात्रा करने से अनिष्ट' परिणाम होगा। किन्तु यदि इस दिन उत्तर की ओर यात्रा की जावे तो 'धन प्राप्ति' होगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिन का चौघड़िया

र	चं	मं	वु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	च	का
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
ला	शु	च	का	उ	अ	रो
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का

रात का चौघड़िया

र	चं	म	बु	गु	शु	श
शु	चं	का	उ	अ	रो	ल
अ	रो	ला	शु	च	का	उ
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला

शिवद्विघटिका मुहूर्त—दो-दो घड़ी का शुभाशुभ मुहूर्त निकालने का एक अन्य प्रकार शिवद्विघटिका मुहूर्त के नाम से प्रसिद्ध है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगं करणं तथा ।
शिवस्याज्ञां समादाय देवकार्यं विचिन्तयेत् ॥
माहेन्द्रममृतं वक्रं शून्यं क्षणचतुष्टयम् ।
क्रियते ज्यौतिषाचार्यैं यत्रोद्वाहादिमङ्गले ।
माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम् ।
वक्रेगतिविलम्बः स्याच्छून्ये च मरणं भयम् ॥

माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, श्रावण और भाद्रपद

र. दिन—मा. २ अ. ८ व. १० शू. ८ अ. २
रात्रि—शू. २ मा. २ शू. २ अ. ४ शू. २ व. ६ शू. ६ मा. २ अ. ४

चं. दि—मा. ४ व. ८ अ. ६ व. ६ अ. ४ शू. २
रा.—व. ४ मा. ४ अ. २ व. ८ अ. ४ शू. ४ व. २ शू. २

मं. दि.—अ. ६ शू. २ व. २ अ. ६ शू. ८ अ. ४ शू. २
रा.—व. ४ मा. ४ अ. २ व. ६ अ. ४ शू. २ व. ३ मा. ꞉ अ. ४

बु. दि.—व. ४ अ. ४ व. ६ अ. ४ शू. २ व. ४ मा. २ अ. ४
रा.— शू. २ अ. ६ मा. ४ व. ४ शू. ४ अ. १०

गु. दि.—अ. ६ शू. २ व. ४ अ. ६ व. ८ अ. ४
रा.—व. ४ मा. ४ अ. २ व. ८ अ. ४ शू. ४ अ. ४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शु. दि.—शू. २ अ. १६ व. ८ अ. २ शू. २
रा.—व. ४ शू. २ अ. ६ व. ६ मा. ६ शू. २ अ. ४

श. दि.—शू. ४ व. २ शू. २ अ. ८ शू. [illegible] शू. ४ अ. ४ श. २
रा.—व. ६ अ. ६ [illegible] ४ अ. ४ श. २ अ. ४

ज्यो स्व श्री ... मल्ल ज्यूको संकलनमा रहेका पुस्तकहरु सार्वजनिक प्रयोगका लागि प्रदान गरिएको छ। ... मल्ल

ज्येष्ठ और आषाढ

र. दि.—अ. ६ व. ८ अ. ८ शू. २ मा. [illegible]
रा.—शू. २ अ. [illegible] व. ४ मा. ४

चं. दि.—अ. ४ व. ४ अ. ६ व. १६
रा.—व. ६ अ. ८ व. [illegible]

मं. दि.—शू. ४ व. ६ अ. ४ शू. ४ व. ६ शू. २ अ. ४
रा.—शू. २ अ. ८ व. ६ अ. ६ व. ६ मा. २

बु. दि.—शू. २ मा. ४ अ. ४ व. ६ शू. २ व. ४ अ. ६ शू. २
रा.—व. ४ अ. ४ व. ८ अ. ६ शू. ८

गु. दि.—अ. ४ व. ६ अ. ४ शू. ४ व. ६ शू. २ अ. ४
रा.—व. ८ अ. ६ व ६ अ. ६ व. ४

शु. दि.—अ. २ व. २ अ. ६ व. ६ अ. ८ शू. २ व. ४
रा.—व. ४ अ. ४ शू ४ अ. २ व. ४ अ. ४ शू. ८

श. दि.—मा. २ शू. ६ अ. ८ व. १० शू. ४
रा.—शू. २ व. ४ मा. २ अ. ४ शू. १० अ. २ व. २ श. २ अ २

आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष और पौष

र. दि.—शू. ४ अ. ६ व. ६ अ. ६ व. ४ अ. २ शू. २
रा.—शू. ४ अ. ४ व. ६ अ ६ शू. ४ व. ६

च. दि.—अ. ८ मा. ४ शू. ६ अ. ६ मा. ६
रा.—व. ६ अ. ८ व. ६ अ. ४ शू २ व. ४

मं. दि.—अ. ४ व. ६ अ. २ शू. ४ मा. ६ शू. ६ व. २
रा.—व. ६ अ. ८ व. ६ अ ४ शू. २ व. ४

बु. दि.—शू. २ मा. ४ अ. ८ व. ६ शू ८ व. २
रा.—अ. १० शू. २ व ८ अ. ६ शू. २ व. २

गु. दि.—अ. २ शू. ४ व. ६ अ. ४. शू. २ व. ४ अ. ६ मा. २
रा.—शू. ४ व. ४ शू २ अ. ६ व. ६ शू. २ व. ६

शु. दि.—व. ८ अ. ४ शू. २ अ. २ व. ४ अ. ६ मा. ४
रा.—व. ४ शू. २ अ. ६ शू. ६ मा. २ शू. २ व. ८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घा. दि.—शू. ४ अ. ४ शू. ४ अ. ८ शू. २ व. ४ शू. २ मा. २
रा.—शू. २ व ४ अ. ६ व. ४ अ. ६ व. ४ अ. ४

अर्थात् ऊपर जो शू. अ. र. मा. ये जो चार संकेत दिए गये हैं उनका क्रमशः अर्थ निम्नलिखित है।

मा० माहेन्द्र—इस समय यात्रा करने से विजय होती है।

अ० अमृत—इस समय यात्रा करने से कार्य सफल हो जाता है।

व० वक्र—इस समय कार्य करने से विलम्ब लगता है।

शू० शून्य—इसका अनिष्ट अशुभ फल है।

ऊपर जो दिन और रात्रि का मान ३०-३० घड़ी लिया गया है वह यदि दिन वड़ा या कम हो या रात्रि बड़ी या कम हो तो अनुपात से अधिक या कम कर लेना चाहिए।

प्रस्थान—यदि किसी विशेष दिन यात्रा करना सुविाधजनक हो और उस दिन मुहूर्त्त अच्छा न हो तो ५ दिन पहले तक प्रस्थान कर सकते हैं। अपने पहनने के वस्त्र, मांगलिक द्रव्य आदि का एक पैकेट या असबाब या अदद अपने घर से दूर शुभ मुहूर्त्त में दूसरे के यहाँ रखवा दे और जाते समय वहाँ से ले जावे। परन्तु प्रस्थान रखवाने के बाद उस घर पर या उस घर के सामने से जहाँ प्रस्थान रखा हो (बीच में) नहीं जाना चाहिए।

छत्तीसवाँ प्रकरण

नक्षत्र-प्रकरण

वार और नक्षत्र

(१) **ध्रुव**—उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तरा भाद्रपद और रोहिणी नक्षत्र की 'ध्रुव' संज्ञा है। रविवार ध्रुव वार होता है। इस मुहूर्त्त में बीज बोना, गृह प्रवेश आदि स्थिर कार्य करने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाहिए। नारद के मतानुसार राजा का अभिषेक, मंगल कार्य, नौकरी प्रारंभ करना, सवारी, अस्त्र धारण, दवा, धातु का कार्य, युद्ध आदि रविवार को प्रशस्त हैं।

(२) **चर**—स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा नक्षत्र तथा सोमवार चर-संज्ञक हैं। इसमें बाग की सैर के लिए जाना (जैसे सप्ताह के अन्त में दो दिन के लिए अंग्रेज जाते हैं,) सवारी पर चढ़ना, गहना बनवाना आदि उत्तम हैं। आगे 'लघु' संज्ञक नक्षत्रों में जो कार्य बताये गये हैं वे भी चर संज्ञक नक्षत्रों में बताये गये हैं। नारद के मतानुसार शंख, मोती, जल, चाँदी, वृक्ष, ईख, स्त्री, भूषण, पुष्प, गान-वाद्य, यज्ञ, दुग्ध तथा खेती के कार्यों के लिए सोमवार बहुत उत्तम है।

(३) **उग्र**—पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वा भाद्रपद, भरणी और मघा नक्षत्र 'उग्र' नक्षत्र कहलाते हैं। मंगलवार भी उग्र वार है। इस मुहूर्त्त में शैतानी का कार्य, विष-प्रयोग, शस्त्र-प्रयोग, मारण, बंधन, झगड़ा करना, युद्ध करना, आसव बनाना (द्राक्षासव, शराब आदि) अच्छा है।

नारद जी के वचनानुसार विष और अग्नि-सम्बन्धी कार्य, वन्धन, चोरी, संधि (सुलह या राजीनामा), युद्ध, आसव, धातु-कार्य (लोहा, ताँबा आदि का कार्य), प्रवाल (मूँगा), स्त्री भोग तथा स्त्री सम्बन्धी कार्य मंगलवार को करना उचित है।

(४) **मिश्र**:—विशाखा, कृत्तिका, नक्षत्र मिश्र नक्षत्र कहलाते हैं। बुध मिश्रवार है। इस मुहूर्त्त में अग्नि होम, वृषोत्सर्ग (विजार छोड़ना), कार्य करना उचित है। नारद के वचनानुसार नृत्य, शिल्प कला, गीत लिखना, पृथ्वी के रसों का संग्रह, विवाह, अन्य संग्रहादि कार्य बुधवार को प्रशस्त हैं।

(५) **लघु**—हस्त, अश्विनी और पुष्य नक्षत्र लघु या 'क्षिप्र' नक्षत्र कहलाते हैं। बृहस्पतिवार क्षिप्रवार है। इन मुहूर्त्तों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

लीजिये, धनेश बृहस्पति उच्च का होकर नवम में हैं, तो ६, २१, ३३, ४५, ५७, ६१, ८१ वें वर्ष में धनागम।

इस विषय में अंग्रेजी तारीख के हिसाब से (जिस अंग्रेजी तारीख को जातक का जन्म हो) शुभाशुभ वर्ष ज्ञात करने के लिए देखिए हमारी लिखित 'अंक विद्या' (ज्यौतिष)।

खाङ्गार्थाम्बुनवर्क्षेशे लग्नादाद्यन्तवद्भभे।
तुंगाद्यस्थे धनी मुख्यो बाल्ययौवनवार्धके ॥१७॥

यदि कोई उच्च ग्रह प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, नवम या दशम का स्वामो हो, तो भाग्योदयकारक होता है।

यदि बलवान शुभग्रह लग्न से चतुर्थ तक हों तो बाल्यावस्था में सुखी यदि पंचम से अष्टम तक हों तो मध्यावस्था में सुखी; यदि नवम से द्वादश तक हों तो वृद्धावस्था में सुखी।

राशौ नवनवाब्दांश्च स्थाप्यावस्थात्रयं वदेत्।
कोणांगात् वार्धतः पुष्टाः यत्रेष्टास्तत्र वित्तदाः ॥१८॥

लग्न से लेकर द्वादश भाव तक-प्रत्येक भाव के ९वर्ष समझे। लग्न के जन्म से ९ वर्ष तक, धन के १० से १८, तृतीय के १९ से २७, चतुर्थ के २८ से ३६ इत्यादि।

यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, नवम या दशम का स्वामी उच्च होकर किसी भाव में पड़े, तो ९ वर्ष के क्रम से जो अवस्था आवे उसमें शुभफल कहे। मान लीजिए, चतुर्थेश बुध कन्या का चतुर्थ में है तो २८ से ३६ वर्ष तक उसका विशेष शुभ प्रभाव। मान लीजिए कुंभ लग्न है। चतुर्थेश शुक्र उच्च का होकर मीन में द्वितीय स्थान में पड़ा है तो १० से १८ वर्ष की अवस्था में धनागम।

यो जातोऽब्दाहमासादौ वा मध्येद्युनिशोर्जयी।
मासान्तर्यतमे योऽह्नि ततमेब्दे भवेत्सुखी ॥१९॥

इसमें तीन योग बताए हैं:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) वर्ष मास के खंड करके फल कहे, यदि प्रथम खंड में जन्म हो तो सुखी।

(२) दिन के मध्य में या रात्रि के मध्य में जिसका जन्म होता है, वह धनी होता है। मध्य मे तात्पर्य है मध्याह्न की एक घटी और मध्यरात्रि की एक घटी।

(३) जन्म-तिथि तुल्य वर्ष संख्या में शुभफल।

लग्ने लाभे च तत्पे वा पुष्टे पूर्णायुरुच्यते।
एकस्मिन् मध्यमं हीनं द्वयोः संख्या तदंकतः ॥२०॥

इसमें तीन योग बताये हैं—

(१) यदि लग्नेश लग्न में हो, लाभेश लाभ में हो या लग्नेश-लाभेश दोनों बलवान् हों तो पूर्णायु होता है।

(२) यदि उपर्युक्त दोनों (लग्नेश, लाभेश) में एक बलीं, एक निर्बल हो तो मध्यायु होता है।

(३) यदि दोनों निर्बल हों तो अल्पायु होता है।

केन्द्रेज्येऽपोग्रशुक्रेक्ष्ये वेज्येलाभे विधौज्ञभे।
खेऽब्जे सद्दृगयुते वा स दीर्घायुर्वाम्बुगैः शुभैः ॥२१॥

इसमें तीन योग बताए हैं—

(१) यदि शुक्र-दृष्ट बृहस्पति केन्द्र में हो और बृहस्पति पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो जातक पूर्णायु होता है।

(२) यदि बृहस्पति और पूर्ण चन्द्र लाभ में बुध की राशि में हो तो जातक पूर्णायु होता है।

(३) यदि शुभ ग्रह के साथ, शुभग्रह-दृष्ट चन्द्रमा दशम में हो और चतुर्थ में शुभग्रह हों तो जातक पूर्णायु होता है। इस अध्याय में ८८ योग बताये हैं।

दैवज्ञानां च लाभाय द्रष्टुं कर्म शुभाशुभम्।
जन्माब्धिं चततुं पोतो वेदर्षीन्दुमितिप्रियः ॥२२॥

ज्योतिषियों के लाभ के लिए, कर्म का शुभ या अशुभ परिणाम देखने के लिए जीवन-समुद्र को पार करने के लिए इस ग्रन्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu